प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय, मन्त्री
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : जनवरी १९४९
मूल्य
अजिल्द २) सजिल्द २॥)

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्रकाशककी ओरसे

पूज्य गांधीजी आगा खा-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बादसे सध्याकी प्रार्थना-सभामें नियमित-रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परपरा उनके महानिर्वाणके एक दिन पहले यानी २९ जनवरी १९४८ तक बराबर चलती रही।

दिल्लीकी सभाओंमें दिये गये १ अप्रैल १९४७ से २६ अक्तूबर १९४७ तकके प्रवचन पहले खडमे प्रकाशित हो चुके है। २७ अक्तूबर १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तकके प्रवचन इस सग्रहमे दिये जा रहे है।

ये गांधीजीके अंतिम उद्गार हैं और जिन समस्याओंपर व्यक्त किये गये है, उनमेंसे बहुत-सी आज भी मौजूद है। इन प्रवचनोमे गांधीजीने सक्षेपमें सर्वसाधारणके समझने-योग्य भाषामे बहुत कामकी बातें कही हैं और बहुत जगह तो अपनी हार्दिक वेदना जनताके सामने रखी है। गांधीजीके अन्य लेखो और भाषणोसे इनका एक अलग और महत्त्वका स्थान है।

अधिकाश प्रवचन गाधीजीकी भाषामें ही है। 'हिंदुस्तान'के उप-सपादकोने समय-समयपर 'हिंदुस्तान'के लिए उनकी रिपोर्ट ली थी। बादके प्रवचनोके रेकार्ड 'आल इडिया रेडियो'ने लिये थे। उनमेसे कुछ प्रवचन 'भाइयो और बहनो'के नामसे चार छोटी-छोटी पुस्तिकाओंमें सरकारकी ओरसे छपे है। इस सग्रहमें इन तथा जिन अन्य आधारोंकी सहायता ली गई है, उनके हम विशेष कृतज्ञ है।

विनोबा का प्रणाम

20.12.48

(बापूके प्रार्थना-प्रवचनकी आवृत्ति, जो आपने प्रकाशित की है, देखी। अल्प मोली और बहुगुणी है। बापूके विचार लोगोमे फैलानेका उत्तम उपाय उनके साहित्यको, उन्हीकी भाषामें और बिना किसी भाष्यके, प्रगट करना है। और वही आपने किया है। यह आपने एक भगवद् उपासना की है।)

भाइयो और बहनो

प्रार्थना-प्रवचन

दूसरा खंड

: १३० :

मौनवार, २७ अक्तूबर १९४७

(लिखित संदेश)

मेरे पास बराबर इस बातकी शिकायतें आ रही है कि यूनियनके मुसलमानोंको अपने बाप-दादाओके घरोको छोडनेपर और पाकिस्तान जानेके लिए मजबूर किया जा रहा है। यह कहा जाता है कि उनको तरह-तरहकी तरकीबोंसे अपने घरोको छुड़वाकर कैंपोंमे रहनेपर मजबूर किया जा रहा है, जहासे उन्हे रेलद्वारा अथवा पैदल भेज दिया जाय। मुझे विश्वास है कि मन्त्रिमडलकी यह नीति नही है। जब मै शिकायत करनेवालोको यह बात सुनाता हू तो वह हँसते है और जवाबमे कहते है कि या तो मेरी जानकारी गलत है या कर्मचारी उस नीतिके अनुसार चलते नही है। मै जानता हूं कि मेरी जानकारी बिलकुल सही है। तब क्या कर्मचारी बेवफा है? मुझे उम्मीद है कि ऐसा नही है। फिर भी यह शिकायत आम है। कही जानेवाली बेवफाईके मुख्तलिफ कारण दिये जाते है। जो कारण सबसे संभव हो सकता है वह यह है कि फौज और पुलिसका अधिकांश रूपमें फिर्केवाराना बटवारा किया गया है और वह मौजूदा द्वेषभावमें बह जाते है। मैंने अपनी राय दे दी है कि अगर ये कर्मचारी जिनपर शाति और कानूनको कायम रखनेका भार निर्भर है, फिर्केवाराना प्रभावमे पड़ जायं तो सुसंगठित हकूमतकी जगह बदअमनी आ जाना लाजमी है

और यदि यह चलती रहे तो समाज नष्टप्राय हो जायगा। यह उच्च कर्मचारियोंका कर्तव्य है कि वह फिर्केवाराना जहनियतसे ऊपर उठे और फिर अपनेसे नीचे तबकेके कर्मचारियोंको भी उसी सद्भावनासे प्रभावित करे।

यह जोरके साथ कहा जाता है कि देशमें जनताद्वारा सरकारें कायम की गई हैं उनको वह वकार[1] हासिल नहीं हुआ है जो विदेशी हकूमतको अपनी तलवारके जरिये हिंदुस्तानी कर्मचारियोंको डराकर अपने काबूमें रखनेके लिए हासिल था। यह कुछ हृदतक ही ठीक है। क्योंकि अवाम[2]की हकूमतके हाथमें एक नैतिक शक्ति है जो विदेशी हकूमतके शक्ति-बलसे, जिसे वह अपनी मददके लिए बरत सकती थी, निस्संदेह ऊंचे दर्जेकी है। इस नैतिक शक्तिके लिए यह पहलेसे माना जाता है कि अवामकी राय हकूमतके साथ है।

आज इसकी कमी हो सकती है। हमारे पास इसकी परीक्षाका और कोई साधन नहीं है सिवा इसके कि केंद्रीय सरकार इस्तीफा दे दे। इस जगह हम खास तौरपर यह जांच रहे हैं कि केंद्रीय शासनकी क्या हालत है। इसे किसी हालतमें भी कमजोर न बनना चाहिए और न कभी कमजोर लगना चाहिए। उसे तो अपनी शक्तिका अहसास[3] होना चाहिए। इसलिए यदि इसमें कुछ भी सचाई है कि कर्मचारी पूरी तरह आज्ञाका पालन नहीं करते हैं तो ऐसे नाफरमाबरदारोंको[4] तुरत निकल जाना चाहिए या मिनिस्ट्री अथवा संबंधित मंत्रीको त्यागपत्र देकर ऐसी शक्तिको स्थान देना चाहिए जो सफलताके साथ कर्मचारियोंकी नाफरमाबरदारीको दूर कर सके। जब कि मैं उन शिकायतोंको, जो मेरे पास आती रहती हैं, संकोचके साथ आपको सुनाता हूं, मुझे यह आशा रखनी चाहिए कि इसकी तहमें कुछ नहीं है और यदि कुछ है भी तो उच्च अधिकारी यथाशक्ति कामयाबीके साथ उनको ठीक कर लेंगे।

यूनियनके उन नागरिकोंका, जो इसके प्रभावमें आते हैं, क्या फर्ज है? यह साफ बात है कि ऐसा कोई कानून नहीं है जो किसी नागरिकको अपना मकान छोड़नेपर मजबूर करे।

---

[1] प्रभाव [2] जनता [3] अनुभव [4] आज्ञा न पालनेवाले।

अधिकारीवर्गको खास अधिकार अपने हाथमे लेने पड़ेगे ताकि वह ऐसे हुक्म निकाल सके, जैसा कि कहा जाता है, वे निकालते है। जहा-तक मुझे पता है, किसीको कोई लिखित हुक्म नही दिया गया है। कहा जाता है कि मौजूदा मामलेमें हजारोको जवानी हुक्म दिया गया है। ऐसे लोगोकी मदद करनेका कोई साधन नही है जो डरके मारे किसी भी वावरदी[1] व्यक्तिके हुक्मके सामने अपना सर झुका दे। ऐसे सब लोगोको मेरी जोरके साथ यह सलाह है कि वह लिखित हुक्म मांगे और यदि सबसे उच्च अमलदार भी उसको सतोष न दे सके तो शककी हालतमे वह अदालतसे उस हुक्मकी सचाई मालूम करे। आम जनताको, जो इस मामलेमे वहुसख्यावाली है, अपनेको सख्तीके साथ कानूनको हाथमे लेनेसे रोकना चाहिए। अगर वह ऐसा नही करेंगे तो वह अपने पैरोमे खुद कुल्हाडी मारेंगे। यह ऐसी गिरावट होगी जिससे उठना कठिन हो जायगा। ईश्वर करे जल्द-से-जल्द उनको समझ आ जाय। उनको वुरी घटनाओंकी खवरसे, चाहे वह सच ही हो, प्रभावित न होना चाहिए। उनको अपने चुने हुए मन्त्रियोपर भरोसा रखना चाहिए कि वह इन्साफके लिए, जो जरूरी होगा वह सब करेंगे।

: १३१ :

२८ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

दिल्लीके एक भाई खतमे लिखते है, "मैने शरणार्थियोके लिए थोडे खेमे और कनात वगैरा एक मुसलमान भाईसे लिये थे। वह तो यहासे चले गए। अब उनको कहा रखना चाहिए?" ये कोई शरीफ आदमी है, इसीलिए पूछते है कि उनका क्या करना है। और वात भी ठीक है कि वह अगर यहासे चले गए, तो क्या हम इनको हज्म

---

[1] वरदी वाले।

करके बैठ जाए? लेकिन मेरे पास तो कोई इतजाम है नही कि जो मैं रख सकू। यह तो होम डिपार्टमेंट[1] की बात है। सरदारजीसे पूछ लेना चाहिए या और कोई जो इस कामको करता है, उससे या नियोगी साहब जो नियुक्त हो गये हैं, उनसे पूछ लेना चाहिए। अगर उनको उस मुसलमान भाईका पता लग जायगा तो यह या इसकी कीमत उसको पहुचा देनी होगी।

अलीगढमें जो यूनिवर्सिटी है उसका एक लडका मेरे पास आया था। वहा पश्चिमी पजाब और सरहदी सूबेके भी कुछ विद्यार्थी पढते हैं। वे वहासे वापस नही पहुच पाए और जो यहा हैं वे जा नही सकते। वे क्यों न वहा जाए और आए? आखिर जो पाकिस्तान होना था वह तो हो गया। फिर आपस-आपसमे झगडा कैसा? क्यो यहाके इतने मुसलमान पाकिस्तानमें जायं और वहाके हिंदू और सिख यहा आए? लेकिन उनका यह इरादा है कि हम मुसलमानोके पाससे कबल वगैरा लेकर उन हिंदू और सिख शरणार्थियोको दे जो परेशान होकर कैंपोमें रह रहे हैं। अच्छा है, उनको इसकी दरकार भी है और अगर उनको मिल जाय तो इससे उनकी मोहब्बत तो प्रकट होगी। लेकिन सच्चा काम तो यह है कि वे पाकिस्तानमें मुसलमानोसे जाकर कहें कि हिंदू और सिखोको वहासे आना ही क्यो पड़ता है? मेरे पास तो ढेर पडा है कागजोका, जिनमे शिकायतें ही भरी है। वे झूठी तो है नही। हा, उनमें कुछ अतिशयोक्ति हो सकती है, ऐसा मुझको लगता है। लेकिन अतिशयोक्ति होने पर भी, उसमें जो मूल है, वह तो ठीक है। वे क्यो वहासे भागें, उनको वापस बुलाओ, वे क्यो न अपने घरोमें आकर रहे? ऐसा अगर वे कर सके तो हम सारी दुनियाको यह बता सकेंगे कि हम आपस-आपसमें कभी लडे ही नहीं। पीछे जो आज हमारी नाक कट गई है, वह कल फिर साबुत हो जायगी। ऐसा मैंने उन लडकोको कहा है। उन्होने इसको मान भी लिया और पीछे कैसा वे करते हैं, यह तो ईश्वर ही जानता है।

लेकिन आज जो बात मैं कहना चाहता हू, वह तो एक बडी बात है। मेरा खयाल है कि मैं जब बिहारमें बैठा था तब वहा ऐसा

---

[1] गृह-विभाग।

चलता था कि लोगोने यह सोच लिया कि चलो, स्वराज्य तो अब मिल ही गया, तो फिर रेलमे बैठकर जानेमे टिकटकी क्या दरकार है? यही नही, वे कभी-कभी तो बडी ज्यादती और जबर्दस्ती भी करते हैं। उस जमानेमे हम आपस-आपसमें तो नही लडते थे, लेकिन ऐसा मान लिया कि जब स्वराज्य मिल गया तो पीछे और क्या चाहिए? उसपर मैंने काफी लिखा ,उसका असर हुआ और बादमे वहा वह बद भी हो गया। लेकिन अभी कुछ दिनोसें तो ऐसा हो गया है कि सारे हिंदुस्तानमें या कहो कि सारी यूनियनमे काफी लोग रेलोमें बगैर टिकट चलते है। बड़े-बडे लोग भी यह सोचते हैं कि चलो, अब तो रेले हमारी हो गई है। रेलें तो हमारी हो गई है, इसमे तो कोई शक नही, लेकिन इस तरहसे करनेका नतीजा यह हुआ है कि हमारा ८ करोड़ रुपया बर्बाद हो गया है। ८ करोड रुपया किसको कहते है? एक करोड भी किसको कहते है? जब काग्रेसमे हमें एक करोड रुपया इकट्ठा करना था तो कितनी परे-शानी हम लोगोंको हुई थी और कितने लोगोको निकलना पडा था। मै भी घर-घर घूमकर इकट्ठा करता था, और लोगोंको भी अपने साथ ले जाता था। तब जाकर बडी मुश्किलसे वह हुआ था। ऐसे हम गरीब लोग इस देशमें है। आज तो हम एक करोड रुपया खर्च कर लेते है और मिल गया है तो कुछ पता भी नही चलता। किस तरहसे हम उसको खर्च करें यह तो हम अभी जानते ही नही। लेकिन चूंकि काम ऊपर आ पडा है इसलिए कर रहे है। लोग अगर यह सोच लें कि चलो, रेलोमे मुफ्त सैर करें या कही कामसे भी जाय तो उसमे किराया क्या देना, तो यह बड़ी ज्यादती है। मेरे हिसाबसे तो यह बिलकुल लूट है। इस तरहसे तो हिंदुस्तान कगाल हो जायगा और न हमारे पास रेलगाडिया रहेगी और न कुछ और होगा। पीछे हम लोग रोएगे कि अब कैसे कही जाय। आठ करोड रुपया कोई कम थोडे ही होता है। पहले जो हमें रेलोसे मिलता था उससे तो रेलवे कपनीको अपने रुपयेका ब्याज भी मिल जाता था। करोड़ों लोग रेलोमे सफर करते है। अगर सब पैसा दे तो खासी कमाई हो सकती है। बिना टिकट तो लोग उस जमानेमे भी जाते थे, लेकिन आजकी तरह कोई हजारोकी तादादमें

नही जाते थे। गाडियोमें इस्पेक्टर रहते थे और बाकायदा सारा हिसाब चलता था। आज तो ऐसा हो गया है कि गार्ड है तो उसको मारो और ड्राइवर आता है तो उसको मारो। रोज बरोज पैसेका खर्च बढता ही जाता है। कोई रेलगाडिया तो मुफ्त चल नही सकती। उनमे जो नौकर लोग काम करते है वे ऐसा थोडे ही मान लेंगे कि मुसाफिर बिना पैसा दिये सफर करते है तो वे भी अपने वेतन न ले, अगर वे ऐसा सोचें तो खाएगे क्या? इसलिए रेलोमें करोडो रुपएका खर्च है और करोडोकी कमाई है। पहले तो इसमे नुकसान होता नही था। तीसरे दर्जेके मुसाफिरोसे काफी पैसे मिल जाते थे, क्योंकि उनपर खर्च तो कम होता था और आमदनी अधिक थी। इसलिए कुछ पैसे नफेमे बच जाते थे। लेकिन कल जो मैंने ८ करोड रुपएका घाटा सुना तो मुझको बडा दर्द हुआ। इस तरहसे अगर हर तरफसे लूट-ही-लूट रही तो हमारा भला नही हो सकता। इसपर भी हम आपस-आपसमें लडे, एक-दूसरेको कत्ल करे और लूटें, क्योकि इसमे भी तो हमे कोई फायदा तो होता नही, करोडोका खर्च ही होता है। जब लोगोंको उनके घर छुडवाकर पाकिस्तान भेजनेके लिए कहा जाता है तो वे कोई मुफ्त थोडे ही चले जाते है। उनको खाना खिलाना और पहननेके लिए कपडा देना पडता है। यह सब खर्च मुफ्तमें हमें करना पडता है। हिंदुस्तान कोई बनिकोका मुल्क तो है नही कि जो यह सब करता ही चला जाय। वह तो हो नही सकता। इसलिए अगर एक भी आदमी रेलमें मुसाफिरी करता है तो बिना पैसा दिये न करे। उसको पैसे देने ही चाहिए। जब अग्रेजी हुकूमत चलती थी तब पुलिसके सिपाही या दूसरे अमलदार भी काफी पैसे खा जाते थे। मै चूकि तीसरे दर्जेमे मुसाफिरी करता हू इसलिए मुझको इसका पता तो चल जाता था। हरिद्वारमे कुभ-मेलेके समय जब मै गया था तो उस जमानेमे वहाके स्टेशनमास्टरको, पीछे तो बदलते रहते है, ऊपरके पैसे दिये बिना कोई जा नही सकता था। इस तरहसे हजारो रुपए रिश्वतमे उठ जाते थे। अब तो मेरे दिलमें ऐसा है कि हम सब शरीफ बन गए है। जो स्टेशनमास्टर, सिगनलर, इंस्पेक्टर या गार्ड लोग है, उन सबको अपने हक और सचाईमें जो

पैसा मिलता है, वही खाकर अपना जीवन बसर करना चाहिए। उन्हे लोगोके पाससे पैसे नही छीनने चाहिए। जो मुसाफिर है, उन्हे रेलोको अपनी चीज समझकर इस्तेमाल करना चाहिए। वे रेलोको साफ-सुथरी रखे, उनमें थूके नही, बीडी न फूके, बिना जरूरत जजीर न खीचे और पैसे दिये बिना एक भी मुसाफिर न चले। तब तो मै कह सकता हू कि हमे सच्ची आजादी मिली है। मेरी बातको सुननेवाले कोई हजारो लोग तो यहा है नही और फिर रेलोंमे तो लाखो लोग सफर करते है, तो उनको कौन सुनाएगा? अगर मै रेलवे मैनेजर या रेलवे मिनिस्टर होता तो मेरे मातहत जितने लोग काम करते, उनको यह हुक्म देता कि जितने लोग रेलोमे तुम्हारे सामने चलते है उनको यह कह दो कि हम मारपीट तो करेंगे नही, रेल आपकी है, हम आपके नौकर है, लेकिन बिना पैसा दिये हम आपको ले जा नही सकते। अगर रेल जगलमे भी जा रही है तो उसे रोककर वही खडी कर दे। अगर फिर भी वे न मानें तो एजिन ड्राइवरको यह हुक्म देना चाहिए कि वह एजिनको गाडीसे अलग करके ले जाय। तब न किसीको गाली देना है और न किसीको मजबूर करना है, सिर्फ गाडीको वही खडी रहने दें। जब-तक लोग मुफ्तमे सफर करे तबतक यही करना चाहिए। आखिर यह कोई शरा-फत नही है कि आप मुफ्त गाडीमें बैठ जाए, मारपीट करें और जहा चाहा वही उसको रोक ले। यह तो मैंने आपको यहाकी बात सुनाई। लेकिन मैंने सुना है कि पाकिस्तानमे भी लोग ऐसे ही मुफ्त रेलोमें घूमते है। वहां भी क्यों न लोग मुफ्त चले? आखिर हम एक ही हवामे पैदा हुए है, एक ही-जैसा नमक खाते है, तो पीछे वहा भी क्यो न वही हो जो यहा होता है। अगर यही हाल जारी रहा तो दोनों दिवालिया हो जायंगे। इस तरहसे किराया न देकर रेलोमे सफर करे, जहा रिश्वत खाना है वहां रिश्वत खाए और जिसको मारना है उसको मारें, तो पीछे हम बिल्कुल लुटेरे लोग बन जायेंगे। आजादीके आनेसे हमारी जो कीमत बढ गई थी, वह कीमत बिलकुल चली जायगी। इसलिए जितने लोग सुन सकते है, वे सुने और मिनिस्टर भी सुन ले, क्योंकि एक जानकार आदमीकी हैसियतसे मै कह रहा हू कि अगर यह सिलसिला न रुका तो आपको गाडिया बद करनी होगी। गाडिया चलेगी नही और जो चलेगी उसमे कोई आदमी मुफ्त जा नही सकता।

: १३२ :

२६ अक्तूबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आपने आजका बहुत मीठा भजन तो सुना। जिन्होने हमको यह मीठा भजन सुनाया उन्हे आप लोग सब जानते तो होगे नही। उनका नाम दिलीपकुमार राय है। उन्होने हर जगहका भ्रमण किया है। उनके कठका माधुर्य जैसा है वैसा हिंदुस्तानमे तो कम लोगोके पास है। मै तो कहता हू कि शायद सारी दुनियामे भी बहुत कम लोगोके पास है। मेरे पास ये दोपहरको आ गए थे। तब कोई अधिक समय तो मेरे पास था नही, सिर्फ १० मिनट थे। उस वक्त उन्होने 'वन्देमातरम्' सुनाया, जिसको उन्होने अपने मधुर स्वरमे बिठाया। क्योकि वे बगाली है इसलिए तो उन्हे जानना ही चाहिए। चूकि वे मुझको सुनाना चाहते थे, इसलिए सुन लिया। लेकिन मै कोई सगीत-शास्त्री तो हू नही। उनको मुझसे मुहब्बत है, जो एक दूसरेके साथ बन जाती है। पीछे उन्होने इकबालका 'सारे जहासे अच्छा' भजन सुनाया। उसको भी उन्होने एक नए स्वरमे बिठाया है। मुझको यह बडा अच्छा लगा। वे ऋषि अरविंदके आश्रममे, जो पाण्डूचेरीमे है, कई वर्षोसे रहते है। वहा कोई तालीम तो उन्होने ली नही। जब वहा गए तब भी वे सगीत-शास्त्री थे। पीछेसे अपनी कलाको बढाते रहते है।

इस भजनका रहस्य तो यही है न, कि कबीर कहते है कि तुम्हारे पास तो यह हाथी, घोडे तथा करोडोकी दौलत पडी है, लेकिन मेरे पास तो केवल मुरारीका ही नाम है। मै तो उसीसे धनपति हू और तुम्हारे पास जो इतना धन पडा है वह निकम्मा है। वह आज है कल चला जायगा, लेकिन मेरे पास जो धन है, वह कभी जा नही सकता। राम-नामकी महिमा कितनी बडी है, यही इसमे बताया गया है। और जो चीजे भजनमे है वे तो आपने सुन ही ली। लेकिन अरविंदका आश्रम क्या चीज है यह भी तो आपको जानना चाहिए। यो तो वहा लोगोंकी एक धारा चल रही है। वहा हमेशा काफी लोग जाते है।

उनके काफी भक्त है, हिंदू क्या, मुसलमान क्या किसीके लिए वहा घृणा तो है ही नही। सर अकवर हैदरी, अव तो वह मर गए, प्रतिवर्ष वहा जाते थ, उसका तो मै गवाह हू। श्रीअरविंद तो दीनभक्त है, किसीसे मिलते नही है। ऊपरसे उनका दर्शन हुआ तो हुआ, नही हुआ तो नही, लेकिन लोग जाते थे। उनके पास यह रहते है। इनके दिलमे भी ऐसी कोई घृणा नही है। तो इतना तो हम सीख ले कि हमारे दिलमे क्यो घृणा होनी चाहिए।

लेकिन मै तो आज काश्मीरमे जो हो रहा है उसके बारेमें कहना चाहता हू। और कहना भी चाहिए। अखवारोमे तो आप देख ही रहे है। वह तो एक अजीव वात है। तीन दिनकी वात है। किसीको पता नही था। मुझको भी पता नही था कि क्या होने वाला था। लेकिन वह एक युगकी वात हो गई ऐसा हम कह सकते है। अभी कहते तो ऐसा है कि वहा अफ्रीदी और दूसरे लोग वदूकोंके साथ घुस गए है और कोई तो यह भी कहते है कि यह तो पाकिस्तानकी कारस्तानी है। वह हो, उससे तो मुझे कोई वास्ता नही है। मै तो जो वहा हो रहा है उसको देख रहा हू। एक तरफ तो वे पुछ तक चले गए और वहासे भी आगे, श्रीनगरसे २२ मीलतक के फासलेतक पहुच गए। वहासे तो सीधी सड़क पडी है। कोई रुकावट हो नही सकती है।

जव काश्मीरके महाराजाने यह देखा तो उन्होने कहा कि मै भारतीय सघमे आ जाता हू। महाराजाने लार्ड माउटवैटनको खत लिखा, जिसका उन्होने जवाव दिया कि आप आ सकते है। पीछे जव आ गए तो शरणागत वने और उनकी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन रक्षा करें कहासे? रास्तेसे तो जा नही सकते, हवाई जहाजसे ही जा सकते है। लेकिन हवाई जहाजसे कितना लश्कर जा सकता है, चद आदमी आ-जा सकते है। उनको अपने हथियार ले जाने है, खुराक ले जानी है, कपड़े भी ले जाने है और मोटे कपड़े भी होने चाहिए। एक रतल वजन हो गया तो वजन वढ गया। ऊपर पक्षीके माफिक चलना है तो कितने लोग जा सकते है। शायद आज भी कुछ गये है। कुल १००० गये होगे, ज्यादा-

से-ज्यादा १५०० गये होंगे। एक ओर तो ये १५०० आदमी और दूसरी तरफ कबाइली इलाकेसे बहुतसे लोग आ गये हैं। वे भी तो लडनेवाले है, वे लडते हैं। उसमें आप क्या सोचें और मै क्या सोचू। आखिर मेरा जीवन तो ऐसे ही काममें चला गया है। मै तो शस्त्र-युद्धको माननेवाला नहीं हू, लेकिन मुझको समझना तो चाहिए कि वह क्या बात है। एक ओर तो वे १५०० आदमी और दूसरी तरफ इतने अफ्रीदी और दूसरे लोग। फिर वहा शेख अब्दुल्ला साहब हैं। शेरे काश्मीर उसको कहते है। याने बाघ है, सिंह है। वह बडा तगडा है। आपने उसका चित्र तो देखा ही होगा। मै तो उसको पहचानता भी हू। उसकी बेगमको भी पहचानता हू। बेगम तो आज यहा पडी है। तो एक आदमीसे जितना हो सकता है वह वे कर रहे है। वे कोई लडनेवाले तो है नही। यो तो काश्मीरमे तगडे मुसलमान पडे है, तगडे हिंदू भी पडे है, राजपूत और सिख भी पडे है। तो उसने तय कर लिया है कि जितना हो सकता है वह करूगा। वह तो मुसलमान है। काश्मीरमें मुसलमानोंकी बडी आबादी है। यहासे तो ये लोग बंदूक लेकर जाते है, लेकिन वहाके मुसलमान क्या करे और क्या न करे। माना कि हम तो यहा जाहिल बन गए है, यहा कहो या पाकिस्तानमें कहो, कोई पागलपन बाकी नही रखा है। क्या वहा वे लोग भी जाहिल बन जाय और जिनको काटना है उनको काटे, औरतोको काटे, बच्चोको काटें, इस बुरे हालसे मरे यह हाल काश्मीरका हो। तो प० जवाहरलाल नेहरू और मंत्रिमडलके सभी सदस्योने सोचा कि कुछ-न-कुछ तो किया जाय, तो इतने आदमी भेज दिये। वे क्या करें? इतना ही करे कि आखिरी दमतक लडते रहे और लडते-लडते मर जाय। जो लडनेवाले या शस्त्रधारी होते है उनका यही काम होता है कि वे आगे बढते है और हमला करने-वालोको रोक लेते है। वे मर जाते है, लेकिन पीछे तो कभी हटते नही है। इसका क्या परिणाम होगा, वह तो ईश्वर ही जानता है। जैसा भजनमें बताया गया है। हमारा धन तो मुरारी ही है। करोड़ोकी दौलत हमारा धन नही है। शस्त्र है, वह भी हमारी दौलत नही है। जो कुछ करना है वह मुरारी ही करता है, लेकिन पुरुषार्थ करना तो

हमारा काम है। वह हम करे। तो इन १५०० आदमियोने पुरुषार्थ किया। लेकिन कब, जब वे श्रीनगरके बचानेमे सारे-के-सारे कट जाते है। पीछे श्रीनगरके साथ काश्मीर भी बच जायगा। इसके बाद क्या होगा ?

यही होगा न, कि काश्मीर काश्मीरियोका होगा। शेख अब्दुल्ला जो कहते है वह तो मै सपूर्णतया मानता हू कि काश्मीर काश्मीरियोका है, महाराजाका नही। लेकिन महाराजाने इतना तो कर लिया है कि उन्होने शेख अब्दुल्लाको सब कुछ दे दिया और कह दिया है कि तुमको जो कुछ करना है सो करो। काश्मीरको बचाना है तो बचाओ। आखिर महाराजा, तो काश्मीरको बचा नही सकते। अगर काश्मीरको कोई बचा सकता है, तो वहा जो मुसलमान है, काश्मीरी पडित है, राजपूत है और सिख है, वे ही बचा सकते है। उन सबके साथ शेख अब्दुल्लाकी मोहब्बत है, दोस्ती है। हो सकता है कि शेख अब्दुल्ला काश्मीरका बचाव करते-करते मर जाते है, उनकी जो बेगम है वह मर जाती है, उनकी लडकी भी मर जाती है और आखिरमे काश्मीरमे जितनी औरते पडी है वे सब मर जाती है, तो एक भी बूद पानी मेरी आखोमेसे आनेवाला नही है। अगर लडाई होना ही हमारे नसीबमे है तो लडाई होगी। दोनोको ही लडना है या किस-किसके बीच होगी, यह तो भगवान ही जानता है, हमलावरोकी पीठपर अगर पाकिस्तानका बल नही है या पाकिस्तानका उसमे कोई उत्तेजन नही है, तो वे वहा कैसे टिक सकते है, यह मै नही जानता। लेकिन माना कि पाकिस्तानकी उत्तेजना नही है, तो नही होगी। जब काश्मीरके लोग लडते-लडते सब मर जायगे तो काश्मीरमे कौन रह जायगा ? शेख अब्दुल्ला भी चले गए, क्योकि उनका सिहपन, बाघपन तो इसीमे है कि वे लड़ते-लडते मर जाते है और मरते दमतक उन्होने काश्मीरको बचाया वहाके मुसलमानोको तो बचाया ही, उसके साथ वहाके सिख और हिंदुओको भी। वे ठेठ मुसलमान है। उनकी बीवी भी नमाज पढती है। उन्होने मधुर कठसे मुझे 'औज अबिल्ला' सुनाया था। मै तो उनके घरपर भी गया हू। वे मानते है कि जो हिंदू और सिख यहा है वे पहले मरे और मुसलमान पीछे, यह हो नही सकता। वहा हिंदू और सिखकी तादाद कम है,

तो भी क्या हुआ। अगर शेख अब्दुल्ला ऐसे हैं और उनका असर मुसलमानोपर हैं तो हमारा सबका क्षेम है। आज जो जहर हममे फैल गया है वह होना नही चाहिए और काश्मीरके मारफत हमारा यह जहर भी चला जायगा। अगर उस जहरको मिटानेके खातिर काश्मीरमें इतनी कुरबानी हो जाती है तो उससे पीछे उनकी आखें भी खुल जायगी। जो कबाइली लोग है, उनका काम तो मारना ही है। वे चले तो गए, वहा अपनी शक्ति भी बता दी। वहा उनके साथ कौन-कौन है, उसका तो मुझे पता है, लेकिन उसका नतीजा तो यह आता है कि काश्मीरमें जितने हिंदू-मुसलमान पड़े है अगर वे सब-के-सब शहीद हो जाते हैं तो हमारी भी आखें खुल जाती हैं। हम समझेंगे कि सब मुसलमान पाखडी और पाजी नही हैं, उनमे भले भी रहते हैं। इसी प्रकार हिंदू और सिखो में भी सब अच्छे या फरिश्ते है, यह भी झूठ है, या सब निकम्मे है या काफिर है, वह भी गलत बात है। इसीपर मेरा तो खयाल है कि जो लोग भले है वे हिंदू-मुसलमान-सिख सभीमें हैं और इन्ही भले आदमियोपर दुनिया चलती है, न कि हथियार रखनेवालो पर।

यह जो मधुर कठमें हमने भजन सुना है उसका भी निचोड यही है। काश्मीरमें अगर सारे लोग भी रक्षा करते-करते मर जाय तो मैं नाचनेवाला हू। मेरे दिलमें तो कोई रज नही होनेवाला है। दुनियाका काम चलता ही रहता है। यह तो सब ईश्वरका खेल है। लेकिन पुरुषार्थ तो है और वह यही कि हम सच्चा काम करते हुए मर जायं।

: १३३ :

३० अक्तूबर १९४७

(आज सायकाल प्रार्थना-सभाके समय कुरान-शरीफकी आयत पढे जानेपर एक व्यक्तिद्वारा आपत्ति की गई जिसके कारण प्रार्थना न हो सकी। लोगोने आपत्ति करनेवालेको अपना विरोध वापस ले लेनेको समझाया, लेकिन बाहर जाकर वह फिर भीतर आ जाया करता

था। इसलिए गांधीजीको प्रार्थना-सभाके लिए आते समय तीन बार लौटना पड़ा। अतमे जब वह आदमी चला गया तब लोगोके अनुरोध करनेपर गांधीजीने थोड़े समयके लिए भाषण करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

यहा क्या हो रहा था यह मुझे पता चलता रहता था। इससे मुझे दु ख हुआ। मै आज तो यह बता देना चाहता हू कि यह एक निजी आदमीका घर[1] है। यहा गोलमाल नही होना चाहिए। जो लोग बाहरसे यहा आ जाते है वे आए, लेकिन आनेके बाद शिकायत करना यह सभ्यता नही है। आज एक भाई कहते है कि आज प्रार्थना नही होने दूगा। तब मुझे विचार करना पड़ा कि इस हालतमे मुझे प्रार्थना करनी चाहिए या नही। शिकायत करनेवालेको आपने कहा तो वे चले गए, फिर आए, फिर चले गए, फिर आए। यह मेरे लिए अच्छा नही है। इसका मतलब यह है कि उसका दिल दु खित होता है। यो तो मै समझता हू कि आप लोगोमेसे काफी लोग दु खित होगे कि प्रार्थनामे कुरान-का एक टुकडा होता है। लेकिन मै लाचार हू, क्योकि वह मेरी प्रार्थना-का एक अविभाज्य अग है। यहा प्रार्थना नही होगी, तो क्या मै प्रार्थना नहीं करूगा? एक तरफ धर्म बताता है कि मै प्रार्थना करू। मै यहा प्रार्थना नही करूगा, इसलिए घरमें प्रार्थना न करू ऐसी बात नही है। दुनियामे मेरे साथ कोई भी न रहे तो भी प्रार्थना करूगा। दिलमे ही प्रार्थना हो सकती है। मुझको यहा अहिंसाकी दृष्टिसे सोचना पडता है। उसी निगाहसे देखना चाहिए कि मेरा धर्म क्या है? यदि वह भाई चला जाता है तो मै प्रार्थना करू, यह मुझे अच्छा नही लगता। मैं आज प्रार्थना तो करना नही चाहता हू, बहस भी नही करना चाहता हूं, तो भी करूगा, क्योकि समय भी नाजुक पडा है। इसलिए लोग सुनना चाहते है कि गांधी क्या कहता है। मै भी कहना चाहता हू कि लोग मुझे समझ तो ले कि मै क्या कहना चाहता हू। लेकिन मै लाचार बन गया, इसलिए बहस नही करूगा।

---

[1] बिड़ला-भवन।

मुझे सोचना है कि मै जो प्रार्थना करता हू उसे बद कर दू और क्या बहसमें ही रहू ? यह बडा प्रश्न है। इस प्रश्नपर मुझे सोचना पडेगा। आज मै कहना नही चाहता और बहस भी नही करना चाहता। बहस ही करू तो प्रार्थना छोड दू। मै इसके बारेमे एक प्रेस-वक्तव्य निकाल दूगा।

जब देखा कि आप लोग है तो मै आ गया। मेरी सभ्यता और अहिंसा बताती है कि मै अपना दिल खोलकर आपके सामने रख दू और बता दू कि मै कौन हू। मेरे पास इस जगतमें सत्य और अहिंसाके सिवा कोई दूसरी चीज नही है। आप सत्य और अहिंसाको पहचान लें तो दुनियामें बडे-बडे काम हो सकते है। मै कोई नयी-चोटी बात नही करना चाहता। दुनियामे बडी-बडी बाते होती है, लेकिन ईश्वरका जो नियम है उसे कौन फेर सकता है और दुनियामें जो बडे-बडे नियम है उन्हे ईश्वर फेर नही सकता। मैं समझता हू कि हम अभिमानमे पडे है, अज्ञानमे पडे है, इसलिए यह मान लेते है कि सत्य तो इतनी बडी चीज है कि वह व्यापारमे कैसे चल सकती है ? व्यवहारमे कैसे चल सकती है ? अहिंसा चलेगी कैसे ? मुझे लोग गाली देते है तो लोग कहते है कि जब कोई मुझे दो गाली देता है तो मै एक गाली तो दू। गालीके सामने थप्पड क्यो न लगा दू। इसके पीछे क्या होता है कि हम आगे नही बढते है। लेकिन हमको तो आगे बढना ही है, यही मै समझता हू कि जन्म लेनेके मानी है। मै स्थिर रह नही सकता हू। स्थिर तो एक ईश्वर है; लेकिन स्थिर होते हुए उपनिषदमे बताया गया है कि वह स्थिर भी है और गतिमान भी है। हमेशा गति करता है—ऐसा जो गति करता है वह स्थिर है, ऐसा लगता है। हम कहा जानते थे कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अस्थिर है; लेकिन अब हम सीख गए कि गति-सी जो लगती है वह स्थिर है। ईश्वरकी ऐसी माया बन गई है। जो स्थिर और अस्थिर है, वह ईश्वर ही है। हममें स्थिरता-जैसी कोई चीज नही है, गति है, गति है तो हमको बढना है। हम मांके पेटसे निकले और बढे। आगे जाते-जाते वृद्ध होते है। ऐसा काम दुनियामें चलता है। जो जन्मता है उसको आगे बढना है, वह बढता ही है। कुछ

लोग वृद्धावस्थाको गिरना मानते हैं। लेकिन मैं वैसा नही मानता। वृद्धावस्था पका हुआ फल है। तो शरीर छूटता है, आत्मा थोड़े छूटता है। वह न मरता है और न गिरता है। आत्माकी गति बढ़ती ही रहती है लेकिन दुनियामे सत्य और अहिंसाके विना काम नही चलता। मै अब भी दावेके साथ कहता हू कि सत्य और अहिंसा ऐसी चीज है जिसे बच्चेको भी सीखना चाहिए। इसे अगर माता सीख लेती है तो अपने बच्चेको सिखा सकती है। माता आज-के-आज तो सीख नही सकती है, लेकिन कहते है कि हम तो आदिकालसे, करोडो सालसे है तो उस विकासको देखना है। इसके लिए हममे धैर्य तो होना ही चाहिए। मै इसके बारेमे अधिक तो कहना नही चाहता; लेकिन सिवा सत्य और अहिंसाके कुछ नही हो सकता। हम विकास नही कर सकते।

मै आज बहस तो करना नही चाहता। आप कल भी आएंगे। यदि कल भी किसीको कुरानकी आयत पढे जानेपर आपत्ति होगी तो उसपर मै सोचूगा कि मुझको बहस करना है या नही। यदि किसीको शिकायत होगी तो बोलेगा कि शिकायत है, नही तो बोलेगे कि हम प्रार्थना सुनना चाहते है और बहस भी। लोगोको समझ लेना चाहिए कि हम गुस्सेमे नही आयगे। हा, पीछे कोई ठान ले कि हम किसीको सुनने न देगे और चीखे तो मै कहूगा कि आपकी हिंसाकी कसौटी हो जायगी और मेरी अहिंसाकी परीक्षा हो जायगी ? यह भी मालूम हो जायगा कि आप कहांतक जाते है ? यदि आप मेरे साथ रहेगे और अहिंसाका साथ देगे तो अहिंसाके सामने हिंसा रह नही सकती, ऐसा मै दावेके साथ कह सकता हू। लेकिन शर्त यह है कि मै जैसा कहू वैसा आप करे। आप कहे कि हम अकुशमे रहनेवाले है, निग्रहमे रहेगे और दिलमे गुस्सा न करेगे। वह भाई अज्ञानी है जो कुरानकी आयतपर आपत्ति करता है। कुरानशरीफने क्या गुनाह किया है ? यहाके मुसलमान बिगडे, इसलिए कुरान बिगडे यह बात नही है। वह तो बुलद है, सनातन है, अरबीमे है। जो उससे घृणा करता है उससे अधिक अज्ञानी मै और किसीको नही समझता। इसी तरहसे शिकायत करनेवालेको आप समझा दे। हां, अगर कोई कहे कि वह प्रार्थना सुनना ही नही चाहता तो मै प्रार्थना

करूंगा और बादमें भी। लेकिन मैं प्रार्थना बंद करता हूं, उसके लिए किसीको आप मारें यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। यदि मैं अकेला रहूं और पांच आदमी आयें और कहें कि हम आपको मार डालेंगे तो मैं कहूंगा कि मेरा सिर आपके सामने है। मैं कहूंगा कि पांच क्यों लगें, एक ही आदमी गला काट सकता है। लेकिन तो भी मैं प्रार्थना करूंगा। जब आपका दिल ऐसा हो जायगा तब आप न किसीको मारेंगे और न किसीपर गुस्सा करेंगे। शिकायत करनेवाला, जिसे हम असभ्य कह सकते हैं, अगर बार-बार भी शिकायत करेगा तो भी हम प्रार्थना करेंगे। कल प्रार्थना होगी और बादमें भी। यदि कल कोई शिकायत करे तो वह शिकायत करके चला जाय। उसके पीछे मैं शिकार नहीं होना चाहता। मैं गुस्सेको काबूमें रखूं, धीरज रखूं तब मेरी सारी बात बन सकती है। मैं आज इतना ही सुनाना चाहता हूं। अब आप शांतिसे घर जाइए और बहस न करें। घर जाकर इसपर विचार कीजिए।

: १३४ :

३१ अक्तूबर १९४७

(आज सायंकाल भी गांधीजीकी प्रार्थना-सभामें कुरानकी आयत पढ़ी जानेपर दो आदमियोंने आपत्ति की। फलस्वरूप प्रार्थना आरंभ करनेसे पहले गांधीजीने इस बारेमें कहा—)

भाइयो और बहनो,

मेरे विचारमें दो या तीन आदमियोंकी खातिर बाकी करीब ३०० आदमियोंको निराश करना भी एक तरहकी हिंसा है। इन आदमियोंको विरोध करनेका तो हक है, लेकिन सभ्यता और शिष्टाचार कहता है कि उन्हें अपने इस हकको इस जगहपर, जो कि बिड़लाजीकी निजी मिल्कियत है, इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। लेकिन अगर वे करते हैं तो कौन रोक सकता है? तो फिर सभाके शेष लोगोंको चाहिए कि वे बर्दाश्त करें, अपने दिलोंमें गुस्सा न करें और जो लोग विरोध करते

है, उनको यहां और बाहर भी कुछ न कहें। अगर आप लोग ऐसा करेंगे तो मैं अपनी प्रार्थना करूंगा और उसमें कुरानशरीफकी आयत भी रहेगी। आप लोग, जो बहुमतमें है, ऐसा न सोचें कि चूंकि हम इतनी बड़ी तादादमें हैं, इसलिए विरोध करनेवालोंकी दरकार ही नहीं है। यदि आप ऐसा सोचें तो वह हिंसा हो जाती है। जो अल्पमतमें हैं उनकी हमें ज्यादा दरकार होनी चाहिए, यही तालीम मैं अबतक देता आया हूं। आगे भी मैं ज्यादा-से-ज्यादा यही तालीम दूंगा कि अहिंसा किस तरहसे काम करती है।

सत्य और हिंसाके जो मौलिक सिद्धांत है उनमें कोई खास गुत्थी नहीं रहती। उनको सीखनेके लिए कोई खास डिग्री लेनेकी जरूरत नहीं होगी। अंग्रेजी तो क्या उसके लिए मादरी जबान[1] भी सीखनेकी जरूरत नहीं होगी। उनको जानने लायक चीज तो हम बचपनमें अपने मां-बापसे सीख लेते हैं। उसपर अमल करना तो इससे भी आसान है। इसलिए अगर आप लोगोंमें उनका विरोध बर्दाश्त करनेकी शक्ति है तो मैं उनका विरोध होते हुए भी प्रार्थना करूंगा। सभ्यताका नियम तो यह है कि जिन लोगोंको कुरानशरीफकी आयतपर आपत्ति है वे अपना विरोध प्रकट करके चले जाएं और बादमें मुझको समझाएं कि मैं इससे किस प्रकारसे हिंदू-धर्मको नुकसान पहुंचाता हूं। मैं समझदार आदमी हूं। इसलिए अगर वे मुझे समझा सकेंगे तो मैं उनकी बात मान लूंगा। मैं तो समझता हूं कि मैंने इससे हिंदू-धर्मको फायदा ही पहुंचाया है। यह मैं आजसे थोड़े ही करता हूं—एक अर्सेसे मैं ऐसा कर रहा हूं और मैं समझता हूं कि उससे हिंदू-धर्मको कोई धब्बा नहीं लगा। उसके द्वारा जो मुसलमान मेरे दोस्त हैं उनको मैं और अधिक अपना सका हूं। यह तो मैंने कोई बुरा नहीं किया। इसी तरहसे मैं अगर सारी दुनियाको अपना सकूं और कोई मेरा दुश्मन या विरोधी न हो तो कितना अच्छा हो। लेकिन ऐसा तो कहांसे मैं परिपूर्ण आदमी हूं कि जिससे मेरा कोई विरोध न कर सके; लेकिन जो विरोध करते हैं उनको

---

[1] मातृभाषा।

मैं बर्दाश्त करना तो सीख लूं। अगर आप लोग भी उनका विरोध बर्दाश्त कर ले तो वे लोग भी सोचेंगे कि ये तो सब शरीफ आदमी हैं—हमको कोई कुछ कहता ही नही, सब सद्भावनासे हमको अपनाते है। अगर हम सब ऐसा कर सके तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदलनेवाली है, इसमें कुछ शक नही है। इसलिए मैं आपको पूछता हू कि क्या आप इसे बर्दाश्त कर लेंगे? पुलिस भी उनको कुछ न कहे।

(गाधीजीके यह पूछनेपर सब लोगोने रजामदी प्रकट की। तब प्रार्थना हुई। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने भाषण करते हुए सबसे पहले शाति रखनेके लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और उन्होने सभाके बाकी लोगोको भी उन दो व्यक्तियोके विरोधको बर्दाश्त करनेपर बधाई दी।)

अगर ऐसा ही चलता रहा तो उसका परिणाम हमको अच्छा ही मिलनेवाला है। 'मन-मदिरमे प्रीति बसा ले'—श्रीदिलीपकुमार रायक, जिन्होने इस भजनको आजकी प्रार्थना-सभामे गाया है, कठमें जो माधुर्य है और उनके गानेमे जो कला है, वह मुझको मीठे लगे। वैसे तो यह मामूली चीज है, लेकिन उसे जिस ढगसे सुंदर बनाया गया, उसीका नाम कला है। इस भजनमे यह चीज है कि अपने मनको मदिर बनाओ और उस मदिरमें प्रीति बसाओ। तो इसमे भी अहिंसाका शिक्षण है। इस भजनका कवि आदमीको कहता है कि तू मूर्ख और भोलाभाला क्यो बनता है? अगर तू केवल अपने मन-मदिरमे ज्योति जगा लेगा तो तेरा सारा काम बन जायगा। उसके बाद तो सारी दुनियामे ज्योति या प्रकाश ही दीखेगा। अधेरा कही रहेगा ही नही। इसी तरहका चमत्कार सत्य और अहिंसामे भरा है। यह बडी सीधी-सादी चीज है; लेकिन अगर हम इतनी चीज भी सीख ले तो दुनियामे हमारा सारा व्यवहार सरल हो जाता है।

नवाखालीमें मैने देखा कि वहाके अमीर लोग गरीबोको वही छोडकर भाग गए। वहाके देहातोमें वे लोग, जिनको कि हम मूर्खता-वश अछूत कहते है भरे पडे है। क्योकि मैं उधर घूमा हू, इसलिए मैंने देखा कि वे लोग बडे परेशान थे। वहाकी स्त्रिया चूडिया पहनना तथा माथेपर सिंदूर लगानातक भूल गई थी। पजाब या दूसरे स्थानोसे जो लोग

यहा आ रहे हैं उनमें भी मैं देखता हू कि धनी लोग तो कुछ-न-कुछ अपना धधा कर ही लेते है। उनके पास पैसे होते हैं और दोस्त भी मिल जाते हैं। लेकिन गरीब क्या करे? वे कहा जाय? नवाखालीमें तो हिंदू ही थे, लेकिन बिहारमें मैंने देखा कि मुसलमान परेशान पडे थे। मैंने उनको कहा कि आपमेंसे जो मर गए, वे मर गए और बाकी जो धनी हैं और वे जो बाहर जाना चाहते है वे चले जाय, लेकिन गरीबोका बेली[1] परमेश्वर ही है। परतु ईश्वरको अपने हाथ या मुहसे तो काम करना नही है, वह तो दूसरोको प्रेरणा देता है और उनकी मारफत अपना काम करा लेता है। लेकिन क्या धनिक लोग इतने कठोर और नास्तिक बन जाय कि ईश्वरको भी भूल जाय और अपने धनको ही परमेश्वर मानकर बैठ जायं? लेकिन धनिक लोग तो वहासे भाग गए और वहा जो गरीब लोग रह गए वे मुझको लिखते हैं कि हमारा कुछ तो करो। चूकि मैं कई वर्षोंसे गरीबोंका काम करता आया हू, इसलिए वे मेरी ओर देखते हैं। लेकिन मैं क्या कर सकता हू? मेरे पास न तो कोई ताकत है और न सत्ता है। चूकि वे मुझे लिखते हैं, इसलिए मुझे उनका ज्ञान तो हो जाता है।

अभी हमारे यहा दिल्लीमे जो शिविर चलते हैं उनमें भी काफी गरीब लोग पड़े हैं। धनी भी हैं और उन धनी व्यक्तियोमे कुछ अच्छे भी हैं जो गरीबोको खाना खिलाकर खाना खाते हैं। इसलिए मैं कहता हू कि जो लोग यहां आ गए हैं वे अपने अदर धनी और गरीबका भेद नही करे। अगर अमीर गरीबोको घृणासे देखेंगे तो वह धर्म नही अधर्म हो जायगा। इसलिए मैं साफ कहूगा कि जो धनी लोग हैं वे गरीबोको अपने साथ लेकर चलें। तभी हम सगठित रूपमे रह सकते हैं।

अभी हालमें दो यूरोपियनोने, जो पति-पत्नी थे, हमारे कुछ शिविरो-को देखा। वे उनको देखकर खुश हुए। उन्होने कहा कि गरीब और अमीरके विभाग तो हैं, लेकिन फिर भी सब लोग अच्छी

---

[1] सहायक।

तरहसे रहते है। वे यहां सेवा करनेके ही उद्देश्यसे आये है। अगर हम सब लोग ईश्वरका नाम लेकर काम करें तो जैसे दूधमें शक्कर मिल जाती है वैसे ही पजावके शरणार्थी भी दिल्लीके लोगोमें मिल जायगे।

दिल्लीमे अभी काफी मुसलमान पड़े है। मैंने आज एक फेहरिस्त देखी है, जिसमे अगर अतिशयोक्ति नही है तो मालूम होता है कि यहां सैकड़ो मुसलमानोंको जबरन हिंदू या सिख बनाया गया है। जिन लोगोका इस तरहसे धर्म-परिवर्तन किया गया है, उनको मैं कहना चाहता हू कि अगरचे आपकी मुसलमानी शक्ल बदल दी है, लेकिन अगर खुदा सचमुच आपके दिलमें बैठा है तो आपको न तो दाढ़ी मुडानेकी जरूरत है न चोटी रखनेकी। जो लोग स्वेच्छासे गीताजीको पढना चाहें खुशीसे पढ सकते है, जैसे मैं कुरानशरीफ को पढता हू और मेरी आत्मा खुश होती है। लेकिन अगर कोई मुझको हुक्म करे कि तुम्हें कुरानशरीफ पढ़नी ही होगी, नही तो हम मार डालेंगे तो मैं कहूंगा कि मुझे आपकी कुरानशरीफ नही चाहिए, भले ही उसमें रत्न भरे हो। इसलिए जो मुसलमान हिंदू या सिख बन गए हैं उनसे कहूंगा कि उन्हें अपने धर्मपर कायम रहना है। अगर हम उनके साथ जबरदस्ती करते है तो हम हिंदू-धर्मका नाश करते हैं। हिंदुस्तानमे ऐसा हमेशा हो नहीं सकता है और अगर होता है तो हम गिर जाएंगे और जो आजादी हमने ली है उसको हम खो देंगे। वह स्वप्नकी तरह हो जायगी, इसमें मुझे कोई शक नही है। इसलिए जितने मुसलमान यहा हैं उनको निडर होकर रहना चाहिए। जिन्होंने धर्म-परिवर्तन कर लिया है वे कहे कि तब तो हम डर गये थे, लेकिन अब हम समझ गये हैं कि जो खुदापरस्त या ईश्वर-भक्त होते हैं वे किसीसे नही डरते, अगर किसीसे डरते हैं तो केवल ईश्वरसे। ईश्वरसे डरना तो अच्छी बात है, क्योकि वह प्रेमका धाम है, दयाका सागर है। उससे डरनेसे तो हम कृतार्थ हो जाते हैं। लेकिन इन्सानसे कभी नही डरना है। इसलिए वे कह देंगे कि हम धर्म-परिवर्तन करनेसे तो मरना अच्छा समझेंगे। चाहें तो आप हमें पाकिस्तान भेज दें,

लेकिन पाकिस्तानके जानेके लिए भी कोई मजबूर नही कर सकता।

लियाकतअली साहब और हमारे प्रधान मंत्रीमे भी यही समझौता हुआ है न, कि जो पाकिस्तान जाना चाहे वे पाकिस्तान चले जाय; लेकिन लियाकतअली साहब, सरदार और जवाहरलाल भी किसीको मजबूर नही कर सकते। कोई कानून नही है। इसलिए जो मुसलमान यहा रहते है उनको हमे प्रेमसे रखना चाहिए। अगर मै जिदा रहू तो इसके सिवा कोई दूसरा दृश्य देखना नही चाहता। पहले मै १२५ वर्ष जिदा रहनेकी बात सोचता था, लेकिन अब वह भूल गया हू। अगर हिंदुस्तानके नसीब खराब है तो मुझको तो ईश्वर उठा ले। और अगर उसका नसीब बुलंद है और पल्टा होनेवाला है और होना तो चाहिए तो तू मुसलमानके दिलको बदल दे और उनका दिल तेरेसे ही भर दे। खुदाका नाम तो वे लेते है, लेकिन खुदाका काम नही करते। इसी तरहसे हिंदू भी अगर कृष्ण या रामका नाम तो ले, लेकिन पीछे कत्ल करें और एक दूसरेको काटे तो वह रामका काम नही कहा जा सकता।

कुछ लोग कहते है कि लड़ाई तो छिड गई है, काश्मीरमें क्या होगा? मै कहता हू कि कुछ नही होगा। काश्मीरमे जो लोग है वे बहादुर है। वहा हिंदू, मुसलमान और सिख सब एक-सा रहते है। जो हमला करने गये है उनको वे कह दें कि अपने घर वापस जाओ, अगर हमला करोगे तो हमारी लाशपर खड़ा होना है, श्रीनगर आपको वैसे नही मिल सकता। पीछे हमारा जो लश्कर वहां गया है उसको कोई छूएगा नही। अगर वे मर जाते है तो वे अमर हो जायगे तब हम नाचकर गा सकते है और अगर किसी वक्त यहा भी ऐसा मौका आ गया तो श्रीदिलीपकुमार रायसे कहूगा कि ऐसा भजन सुनाओ कि जिससे लोग नाचने लगे; क्योकि जो लोग मर गये वे तो अमर हो गये और जो बचे है वे तो मृतप्राय है। मुझको तो इसका कोई दर्द नही होगा। हां, दर्द तब होगा जब लोग पागल बने और पाकिस्तान भी पागल बने। जो अफ्रीदी लोग है वे भी तो हमारे भाई है और जो कबायली इलाका है वह भी हमारा ही है, तो वे

क्यो ऐसा काम करें ? उनको इमदाद[1] कौन देता है यह समझनेकी बात है। मै तो कहूगा कि उन सबमे ईश्वरका वास हो और मन-मदिरमे प्रीतिकी ज्योति हो। तो हमारा अधेरा मिट जाता है और सब जगह प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता है। यही मेरी प्रार्थना है और आप लोग भी मेरी इस प्रार्थनामें शामिल हो कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ऐसा प्रकाश पैदा हो जाय जिससे आपस-आपसमे मोहब्बतसे रहें। पीछे हम खुराक और कपडा पैदा करनेमे लग जाय, जिसकी आज देशमे कमी है। और हम भूल जाय कि हममें दुश्मनी थी, और दोस्त बन जाय। बस यही मै चाहता हू कि हम सब इस काममे लग जाय।

: १३५ :

१ नवबर १९४७

(आज भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे उसी व्यक्तिने कुरानशरीफकी आयत पढनेपर आपत्ति की जिसने कल और परसो की थी। इसलिए प्रार्थना आरभ करनेसे पहले गाधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझको ब्रजकिशनजी कहते है कि जिस भाईने कल विरोध किया था उसीका आज भी विरोध है। उनका विरोध तो मुझे अच्छा लगता है और बुरा भी। अच्छा तो इसलिए कि कल जिस शाति और सभ्यतासे उन्होने विरोध किया वैसा विरोध तो बराबर रह सकता है। जब उनके दिलमे विरोध है तब उसे बाहर क्यो न प्रकट कर दें। आप लोग भी यहा और बाहर, दोनो जगह शात रहे और उनको कुछ नही कहा। इस लिहाजसे तो मुझे अच्छा लगा, लेकिन दु ख इसलिए होता है कि जिस विनय और दृढतासे मैंने कल समझाया था उसको उन्होने नही समझा। वह कोई गभीर बात तो थी नही,

---

[1] मदद।

एक साधारण बुद्धि भी उसे ग्रहण कर सकती थी। मगर जब आदमीके दिलमे रोष हो जाता है तो मुझे प्रिय लगता है कि वे उस रोषको शातिसे जाहिर करते है। इसलिए मुझे दुःख होता है और सुख भी। मै समझ लेता हूं कि जैसे आप लोगोने कल उत्साह बताया था और दिलमे उनके प्रति कोई रोष न रखते हुए मोहब्बत ही बताई, वैसे ही मुझको उम्मीद है कि आज भी आप वही करेगे। तब तो मै अपनी प्रार्थना शुरू करूगा। अगर इस सभ्यतासे विरोध करे तब तो उसमे मै कोई हानि नही समझता हूं। उससे तो हमे शातिका ही पाठ मिलेगा और बुलद अहिंसा कैसे काम करती है उसे हम सीख लेगे। अगर ऐसा ही करते रहे तो हम समझ जायगे कि इसमे कितना चमत्कार भरा है।

(इसके बाद प्रार्थना शांतिपूर्वक हुई और श्रीदिलीपकुमार रायने यह भजन गाया—'हम ऐसे देशके वासी है जहाँ शोक नही और आह नही।' बादमे गाधीजीने कहा—)

आज भी आपने उसी मधुर कठसे मधुर भजन सुना। उसमे तो यही कहा गया है न कि 'हम ऐसे देशके वासी है, जहां शोक नही और आह नही।' पीछे उसमे और भी कहा है कि 'वहा मोह नही, लोभ नही' और भी हमारे जो इस प्रकारके रिपु है वे वहा नही है। लेकिन वैसा देश कहा हो सकता है? पहले जब सुचेतादेवीने यह भजन सुनाया था तब मैंने उस प्रार्थना-सभामें उसके दो अर्थ समझाए थे। एक तो मैंने यह बताया कि वह देश कविने हिंदुस्तानको कहा। उसकी एक इच्छा थी, स्वप्न था कि हमारा देश ऐसा हो, लेकिन आज तो वैसा है नही। वह भजन तो १५ अगस्तके पहलेका लिखा हुआ है, लेकिन उस वक्त भी देश तो ऐसा नही था। वहां शोक, लोभ, राग, मद, मोह, मत्सर, ये जो ६ हमारे दुश्मन माने गये है, सब वहा थे। इन छहोमे और भी सब दुश्मन आ जाते है। तब तो उसमे भूख भी थी, भीख भी थी, कपडे भी नही थे—ये सब विपत्तिया उस समय भरी हुई थी, लेकिन कविको तो ऐसी आशा थी न, कि हमारा देश ऐसा बने। कैसे बने, इसमे दूसरा अर्थ आ जाता है। यह भी तो देश है न, कि भगवद्गीतामे जिसको कुरुक्षेत्र

भी कहा गया है और धर्मक्षेत्र भी। अगर मनमे भगवानका मदिर है तब तो वह धर्मक्षेत्र हुआ और अगर मन स्वेच्छाचारी हो जाता है तब वह कुरुका धाम बन जाता है। कौरवरूपी दुश्मन तो कितने ही है, जिनके पिता अधे है, लेकिन धर्मक्षेत्र तो युधिष्ठिरके रूपमे ही है न, इसलिए युधिष्ठिरका नाम धर्मराज हुआ। ऐसा जो हमारा देश है उसमें न आह है, न शोक है। वैसे हम सब हो सकते है, लेकिन शर्त भी बताई है न! तब हमारा देश कौन-सा है, जिसमे भगवान भरा है। कविने उसे पीछे स्वदेश भी कहा और स्वराज भी कहा। ठीक कहा उसने। जब हम स्वराज पा लेते है तब पीछे हिंदुस्तान ऐसा बन जायगा जिसमें न आह होगी, न शोक होगा। लेकिन देश आज जितना कगाल है उतना तो मैने कभी नही पाया। मैने जो बचपनसे कुछ इतिहास पढा है उसमे भी उसको ऐसा नही बताया गया है जैसा आज है। उस चीजको मिटानेके लिए ही यह भजन है। उसमे बताया गया है कि अगर हम अपने मनको मदिर बना लें और उसमें भगवानकी प्रतिष्ठा कर ले तो सब खैर हो जाती है।

आज एक तरफ तो लोग भूखो मर रहे है और नगे है। यहा तो हम सब कपडे पहने हुए बैठे है। ठड न लगे इसलिए मैने भी चादर ओढ लिया। आज मेरे पास बेचारी एक डाक्टरनी आ गई। वह आज कुरुक्षेत्रसे आई थी। वह पजाबमे बडा काम कर रही थी। वहा वह हिंदू, मुसलमान, सिख सबकी शुश्रूषा करती थी। वहासे उसको भागना पडा। वहांसे निराश्रित होकर आ गई थी। सुशीलाजीने उनको कहा कि जब और कोई काम नही तब कुरुक्षेत्रमें काम करो तो वह उनको वहा अपने साथ ले गई। आज थोडा वहाका हाल सुनानेके लिए यहा आ गई थी। आज हमारे मुशीजी यहा है। उनकी लडकी भी डाक्टर बन गई है। वह कहती है कि मै कुछ तो करू, खामखा यहां खाली बैठे क्या करूगी। वह भी वहा चली गई। उस डाक्टरनीने आज मुझे यह भी सुनाया कि वहा लोगोकी शुश्रूषा तो होती है, लेकिन डाक्टर काफी नही है। वहा इतने लोग भरे है, इतनी आपत्ति और व्याधि भरी है की जो दो-तीन महिला डाक्टर है वे काफी नही है। वहा

काफी डाक्टरोकी जरूरत है। अगर डाक्टर जाते है तो वे सेवा कर सकते है—कोई मेरे-जैसे नीम-हकीम तो है नही, उनके पास तो विलायती दवा होनी चाहिए, क्योकि वे विलायती डॉक्टर होते है। उनके पास पूरी दवा नही है, लेकिन वह उन्हे मिल जानी चाहिए। औरते पडी है, बच्चे पडे है। वे हमेशा भिखारिन तो थी नही। ऐसी भी औरतें है कि उनका एक बच्चा भीतर है और एक गोदमे। ऐसे हमारे हाल है।

इसमे हम किसको क्या दोष दे? कोई ऐसा कहे कि हुकूमत नालायक है, लेकिन हकूमत क्या जानती थी कि इतनी परेशानी होगी। हमने तो कभी हकूमत चलाई नही थी। अभी तो हकूमतको चलाते दो ही महीने हुए। जब ऐसी आपत्ति आ पडती है तो हम कैसे उसको पहुच सकते थे। इसको तो हमे बर्दाश्त करना ही है, लेकिन इसे बर्दाश्त करते हुए हम पागल बन जाय, रोषको कम न करे और कहें कि वहा उन्होने एक मुक्का मारा तो हम दो मारेगे, दो मारे तो हम चार लगायगे, चार मारे तो आठ मारेगे। तब तो यह सिलसिला कही मिटना ही नही है। पीछे हमको यह भजन गानेका अधिकार नही रहता है। अगर गाय तो सच्चे दिलसे गाना चाहिए। अगर हमारा मधुर कठ है तो वह केवल मधुर गानेके लिए नही होना चाहिए। उसको भगवानकी भक्तिके लिए इस्तेमाल किया जाय। अगर उस माधुर्यमे किसीके दिलमें भगवान बैठ जाय और वहा उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है तो ठीक है।

एक तरफ तो हमारा यह हाल है और दूसरी तरफ काश्मीरका मामला है। यहासे जितने हवाई जहाज जा रहे है, उनमें मुझको ऐसा लगता है कि फौजके आदमी ले जा रहे है। वहांसे कुछ लोग जो डरपोक है, भाग-कर आ रहे है। उनको भागना क्या था! और भाग कर जायगे कहा? वे क्यो न वही बहादुरीसे मर जायं? इस तरहसे सारा काश्मीर भी जमीदोज[1] हो जाय तो मुझपर कुछ असर होनेवाला नही है। मै तो हँसते-हँसते आपको यही सुनानेवाला हू कि उसपर आप

---

[1] धराशायी।

सब नाचें। लेकिन शर्त यह है कि वहा सब लोग बहादुरीसे मर जाते है—बूढे और बच्चे भी। अगर कोई कहे कि बच्चे क्यो, तो मै कहूगा कि वे बच्चे कहा जाएगे? आखिर वे अपने मा-बापके साथ रहते है। तो वे सब वहा पड़े है, लेकिन उन सबको हथियार कहासे दे? मेरे-जैसेको तो हथियारकी दरकार नही रहती। आखिर जान है तो सब चीजपर फिदा करना है। तब तो हम कह सकते है कि हमारी जो आत्मा है वह अमर है। अगर हम ऐसा नही करते तो उसका मतलब यह है कि हम शरीरको ही आत्मा मान लेते है। और उसकी पूजा करते है; लेकिन शरीरको भी एक दिन तो मरना है ही। चूकि बच्चा माकी गोदमें रहता है, इसलिए अगर मा मर जाती है, तो बच्चेको भी मर जाना है। मरना ही है तब खुशीसे मरना चाहिए। वे कहें कि अगर अफरीदी लोग तबाह करने आए है तो हम खुद अपने-आप तबाह हो जाते है। जितने लश्करके लोग वहा गए है वे भी नाचते-नाचते मरेंगे। मरनेके लिए तो वे वहा गये ही है। जिंदा कब रहेंगे? तब जब कि यह मालूम हो जाय कि अब यहा खैर है, काश्मीरपर कोई चढाई नही करता है, पूर्ण शाति हो गई है। अब तो काश्मीर शेख अब्दुल्लाके हाथमें पडा है। वह हिंदू, मुसलमान, सिख, सबको भाई-जैसा समझता है। बाहरसे भी जो लोग काश्मीरमें आकर रहते है, और अंग्रेज भी जो वहा जाते है, उन सबका वह दोस्त है। वह तो सबको बुलाता है कि आओ, और यहाकी खूबिया देखो, यहाके फल खाओ। वहांकी कारीगरी तो बहुत ही सुदर है। लोग हाथसे बहुत खूबसूरत कपड़ा बुनते है और पेट भरके उसका दाम लेते है। लें क्यो नही, क्योकि काश्मीर तो आखिर इसीपर जिंदा है। तो अब शेख अब्दुल्ला काश्मीरका मालिक बन गया है। महाराजा तो है, लेकिन उनके नामपर ही वह मालिक बना है। महाराजाने ही उनको कहा है कि कुछ करना है तो करो, अगर काश्मीरको रहना है तो रहेगा, और जाता है तो जायगा।

एक तरफ तो कुरुक्षेत्रमें, दूसरी तरफ काश्मीरमें क्या हो रहा है और तीसरी तरफ देखो तो हमको यहा इन चीजोको भी बर्दाश्त करना

पड़ रहा है। पाकिस्तानमे इतने मुसलमान भाग गए है, जो विना सवव भागते है वे जायं, उनको कौन रोक सकता है। लेकिन कुछ हमारे डरसे भी जाते हैं। कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आते है तो मुझे शर्म आती है। वे कहते है कि हम अब खडे नही रह सकते, पता नही कब मार दिये जायगे। डरने उनके हृदयमे इस तरहसे प्रवेश कर लिया है। मुझको यह बुरा लगता है। इसी तरहसे एक औरत आती है और कहती है कि मुझे डर लगता है, वहा पठान मेरे पीछे पड़ा है। यह सुन कर मेरा हृदय रोता है। मै कहता हू कि जिसके पीछे भगवान है तो पठान या कोई भी हो, उसकी उसको परवाह क्या? लेकिन यह तभी हो सकता है जब उसको यह पता हो कि मेरे पास भगवान है। अगर कोई बदमाश आता है, चाहे वह पठान हो, हिंदू हो या सिख हो, क्योकि बदमाशी पठानका ही क्षेत्र हो ऐसा थोडा ही है, बदमाश तो सब जगह पडे है, वे भी ऐसे वदमाश और व्यभिचारी हो सकते है तो पतिव्रता स्त्री उसे देखकर काप उठेगी। लेकिन वह क्यो काप उठे? आप तो यह मानते ही है कि सीताजी कभी नही डरी। रावणके कबेपर रहते हुए भी वह नही डरी। तब भी उसको सुनाती थी कि राम मेरा पति है, वह मेरे पास पड़ा है। तो राम तो भगवान ही था न, इसलिए वह सुनाती थी कि खबरदार, यदि तूने मुझे छुआ तो भस्म हो जायगा। वह छोटी-सी लडकी थी, लेकिन उसमे पवित्रता थी, जिसकी वजहसे वह डरी नही। पवित्रता सवसे बडा हथियार होता है। अगर हम इस बलासे मुक्ति पाना चाहते है तो जैसा कि अभी भजनमे कहा है वैसा हम सब बन जाय। हर एक स्त्री और पुरुष जो प्रार्थनामें आते है वे अगर सब ऐसे बन जाय तो वह गुलाबकी खुशबू-की मानिंद सारे हिंदुस्तानमे फैल जायगा। तो आज जो हम पागल-से बन गये है और जो विपत्ति आ गई है, वह पवित्रताके आनेसे कचरेकी तरहसे साफ हो जायगी। मै तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करूगा कि हम अच्छे बने, काश्मीरमे जो हो रहा है उस भयसे मुक्त हो जाय और लोग जो निराधार होकर आ गये है, उनका भी भला हो।

कुरुक्षेत्रमें तो, जैसे डाक्टरनी मुझे बताती है, कुछ बदमाश आदि

भी आ गये है। जब एक दफा एक आदमीको कम्बल मिल गया तो वही आदमी दूसरी तरहसे कम्बल लेने आता है। वे इतना नहीं जानते कि सब लोगोंको ओढने और पहननेको तो मिला ही नही। बहुत-सी औरतें ऐसी है जो वहासे जो कपडे पहनकर आई है वही उनके शरीरपर अबतक है। मुझको तो सुनकर भी यह बर्दाश्त नही होता—देखनेके पीछे न जाने क्या होगा? तो वे डाक्टरनी कहती है, अतिशयोक्ति तो वे कर नही सकती, कि मैने अपनी आखोसे देखा है कि यह सब इसी तरहसे चलता है। इतनी बातें उसने मुझको सुनाई।

मै तो इतना ही कहता हू कि हम समझ जाय कि हमारा अधर्म हमे कहा ले जा रहा है? हम कहीपर स्थिर होते है या नही और तब हम पीछे सोचें कि हम ऐसे देशके वासी है या नही कि जहा न आह है, न शोक है।

: १३६ :

२ नवबर १९४७

(प्रार्थना-सभामें आज कई लोगोने कुरानशरीफकी आयत पढे जाने-पर आपत्ति की। फलस्वरूप गाधीजीने प्रार्थना आरम करनेसे पहले कहा—)

भाइयो और बहनो,

कुरानशरीफके कुछ टीकाकारोने जो अर्थ लगाए है वे सही नहीं है। मै तो उसे पढकर हिंदू-धर्मसे नीचे नही गिरता हू, ऊचा ही जाता हूं। मै दावा करता हू कि हिंदुस्तानमें या उससे बाहर भी सबसे आला दर्जेका जो हिंदू है उससे मै कम नही हू, क्योकि मै वेदको मानने-वाला हू, गीताको पढता हू और उसमें जो लिखा है उसपर अमल करता हू। मुझको तो बचपनसे ही यह सिखाया गया है कि दुनियामे कोई ऐसी जगह नही है जहा ईश्वर न हो।

ब्रजकिशनजी सुनाते है कि विरोध करनेवालोंका सघ आज कुछ

बडा है। वे कहते है कि हमको विरोध तो है, किंतु चूकि मुझको सुनना चाहते है, इसलिए बर्दाश्त कर लेते है। मैं कहता हू कि इसको बर्दाश्त क्या करना था। इससे न तो आपको फायदा होगा, न मुझको। अगर आपको मेरे साथ बैठकर प्रार्थना करना है तब तो उस विरोधको बर्दाश्त करना ठीक है। आप इसलिए बर्दाश्त न करे कि मैं महात्मा हू या मैंने हिंदुस्तानकी सेवा की है। आप मेरा दर्शन करना चाहते है। इसलिए मैं पूछता हू कि क्या आप दिलसे प्रार्थना करना चाहते है।

(सब लोगोद्वारा रजामदी प्रकट करनेपर प्रार्थना आरम्भ हुई और प्रार्थना शातिसे हुई। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने भाषण करते हुए कहा—)

आप लोगोंने तो अखबारोमें देखा ही होगा, लेकिन मुझको भी कुछ पता चल जाता है कि काश्मीरमे क्या हो रहा है। अब तो वहा खैर है, यही कहना चाहिए। खैरके माने यह कि काश्मीरमे श्रीनगर अबतक साबित पड़ा है। लुटेरे लोग अबतक उसपर कब्जा नही ले पाए और पीछे तो दिन-प्रतिदिन कब्जा करना उनके लिए मुश्किल ही होना चाहिए। लुटेरे जो होते है वे लड़ाकू तो होते नही। क्योंकि वे कोई हकसे तो वहां गये नही। इसलिए जगतमे उनकी निंदा ही होनेवाली है। ज्यो-ज्यो दिन जाते है त्यो-त्यो उनका दबदबा क्षीण होता जाता है। जो लश्कर जाता है उसको सुभीता रहता है, वक्त मिल जाता है। और वह वक्त मिल रहा है। हवाई जहाजसे अधिक लश्कर तो जा नही सकता, बहुत मुसीबत होती है, लेकिन हकूमतकी सब मदद कर रहे हैं ऐसा मै सुनता हू। वे सब शौकसे मदद करते है, इसलिए आरामसे सब हवाई जहाज जाते है। हवाई जहाज हकूमतके तो है नही, वे सब अपनी-अपनी निजी कपनियोके है और अच्छा काम समझकर अपने हवाई जहाज हकूमतको दे देते है।

एक बात और है—वह यह है कि जो आजाद हिंद फौज सुभाष बाबूने बनाई थी और उसके लिए हम सब सुभाष बाबूकी होशियारी, बहादुरीकी तारीफ करते है और तारीफ करनेकी बात है; क्योंकि जब वह हिंदुस्तानसे बाहर था तब उसने सोचा कि चलो,

थोड़ा फौजी काम भी कर लू। वह कोई लडवैया तो था नही। एक मामूली हिंदुस्तानी था। जैसे दूसरे वकील, बैरिस्टर रहते हैं वैसे सुभाष बाबू भी थे। फौजकी कोई तालीम तो पाई नही थी, हा, सिविल सर्विसमें जैसा आमतौरपर होता है, थोडी घुडसवारी सीख ली होगी। लेकिन पीछे उन्होने फौजी-शास्त्र थोडा पढ लिया होगा। इस प्रकार उनके मातहत जो सेना बनी थी, मै सुनता हू कि उसके दो बडे अफसर, जिनसे मै जेलमें तथा उसके बाहर भी मिला था, काश्मीरपर हमला करनेवालोसे मिले हुए है, यह मुझको बहुत चुभता है। ये सुभाष बाबूके मातहत खास काम करनेवाले थे और हमेशा उनके साथ रहा करते थे। सुभाष बाबू लश्करसे कोई बात छिपाकर रख तो सकते नही थे क्योंकि उन्हे उनके मारफत काम लेना पडता था। वे आज लुटेरोके सरदार होकर जाते है तो मुझको चुभता है। अगर उनको अखबार मिलते है या जो मै कहता हू उसको वे सुन ले तो मै अपनी यह नाकिस[1] आवाज उनको पहुचाता हू कि आप इसमें क्यो पडते है और सुभाष बाबूके नामको क्यो डुबाते है ? आप ऐसा क्यो करते है कि हिंदूका पक्ष लें या मुसलमानका पक्ष ले, आपको तो जातिभेद करना नही चाहिए। सुभाष बाबू तो ऐसे थे नही, उनके साथ हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई, हरिजन आदि सब रहते थे। वहा न हरिजनका भेद था न इतर जनका। वहा तो हिंदुस्तानियोमें जातपातका कोई भेदभाव था ही नही। यो तो सब अपने धर्मपर कायम थे, कोई धर्म तो छोड बैठे थे नही। लेकिन सुभाष बाबूने कब्जा कर लिया था, उनके चित्तका हरण कर लिया था, शरीरका हरण नही किया था। ऐसा तो चलता नही था कि अगर आजाद हिंद फौजमे शामिल नही होता है तो काटो। लोगोको इस तरह काटकर वे हिंदुस्तानको रिहाई दिलानेवाले नही थे। इस तरहसे बडे हुए और बडप्पन पाया। तब आप इतने छोटे क्यो बनते है, और इस छोटे काममें क्यो पडते है। अगर कुछ करना ही है तो सारे हिंदुस्तानके लिए करो। वहा जो मुसलमान है, अफरीदी है उनको

---

[1] अकिंचन।

कहे कि यह जाहिलपन क्यो करना ? लोगोको लूटना और देहातोको जलाना क्या ? चलो महाराजासे मिले, शेख अब्दुल्लासे मिले, उनको चिट्ठी लिखे कि हम आपसे मिलना चाहते है, हम यहा कोई लूट करने तो आए नही है। आप इस्लामको दबाते है, इसलिए आपको बताने आए है, यह तो मै समझ सकता हू। तब तो आप सुभाष बाबूका नाम उज्ज्वल करेगे और उन अफरीदी लोगोके सच्चे शिक्षक बनेगे। अफरीदी लोग कैसे रहते है, उनमे भी लुटेरे है या नही है, यह मै नही जानता हू। लेकिन मेरी निगाहमे वे भी इन्सान है। उनके दिलमे भी वही ईश्वर या खुदा है, इसलिए वे सब मेरे भाई है। अगर मै उनमें रहू तो उनसे कहूंगा कि लूट क्या करना, एक दूसरेपर गुस्सा क्या करना। मै यह तो कहता नही कि तुम्हारे पास जो बदूकें या तलवारे है, उन्हे छोड दो। उनको रखो, लेकिन जो दूसरे लोग डरे हुए है, मुफलिस है, औरते है, बच्चे है उनको बचानेके लिए। उसमे क्या है, चाहे वे हिंदू हो या मुसलमान। तो मै कहूगा कि ये जो दो अफसर है, जिनका नाम मैने सुन लिया है, वे सुभाष बाबूका नाम याद करे। वे तो मर गए, लेकिन उनका नाम नही मरा, काम तो नही मरा।

अब मेरा दिल आगे बढता है कायदे आजम जिन्नाकी तरफ। उनको मै पहचानता हूं। मै तो उनके घर जाता था और एक दफा तो १८ बार गया था। मै उसको तपश्चर्या मानता हू। बादमें भी उन्होने और मैने एक चीजमे दस्तखत किये थे और उसमे भी हम दोनों हिस्सेदार बन गये थे। तब भी उनके साथ मीठी बाते होती थी। इसलिए मै तो उनसे, लियाकतअली साहबसे और उनके मंत्रिमडलसे कहूगा कि यह क्या बात है कि आप जवाहरलाल-जैसे आदमीको कहते है कि आप धोखेबाजी करते है। जवाहरलाल और उनकी सरकारको इसमें धोखेबाजी क्या करनी थी ! मै कहूगा कि जवाहर तो किसीसे भी धोखा करनेवाला नही है, जैसा उसका नाम है वैसा उसका गुण है। उनकी सरकारमें सरदार या जो दूसरे आदमी है उनको भी मै पहचानता हू। वे भी कोई धोखेबाज नही है। अगर वे काश्मीरसे मशविरा करना चाहते है तो उसका यह मतलब नही है कि वे फुसला रहे है। जवाहरलाल

तो पहले भी उनसे बात करता था और अकेला शेख अब्दुल्लाके लिए उनसे लड़ता था। तो उसको इसमे धोखा क्या करना था? धोखेबाजी करनेसे हिंदुस्तान या कोई और मुल्क बच थोड़े सकता है। तब वे ऐसा क्यो कहते है ? तो काश्मीरमें जो अफरीदी लोग चले गये है, उनको कुछ-न-कुछ उत्तेजना तो पाकिस्तानसे मिलती ही होगी तभी तो वे कोई काम कर सकते है, नही तो वे कैसे कर सकते थे? अगर मै पाकिस्तानमें होता तो मै उनको ऐसा काम करनेसे रोक देता। पाकिस्तानके उदासीन रहनेपर तो वे ऐसा काम कर नही सकते थे, लेकिन यहा तो उदासीन ही नही उससे ज्यादा है।

मेरे पास दो हिंदू—एक कराचीसे और दूसरे लाहौरसे, आये है। मुझको सुनाते है कि कराचीमें बुरा तो हुआ, लेकिन अब दिन-प्रति-दिन अच्छा होता जाता है। तब क्या तुम वहाके लोगोसे कुछ कहोगे कि वे क्यो घबराते है ? वहा जो सिंधी मुसलमान है, वे हिंदुओंके साथ मिल-जुलकर रहे है, बाज दफा झगडा तो हुआ है, लेकिन उसके बाद फिर दोस्त बन गये है, उसका तो मै गवाह हू। वहां सब कुछ ठीक हो गया है, ऐसी बात नही है। लेकिन मन्त्रिगण ऐसा चाहते है। दूसरे सज्जन बताते है कि लाहौरमें जितनी बड़ी-बड़ी हवेलिया थी वे सब बेकार हो गई है। वहा हिंदू तो कोई ज्यादा है नही—केवल मुट्ठीभर रहे है। लेकिन जो मन्त्रिमडल है, वह चाहता है कि हिंदू-सिख सब रहें। हा, सिखोके रहनेपर तो कुछ एतराज है, लेकिन तो भी वे काफी वहा है। मैने वहा खूबीकी बात यह सुनी कि लाहौरमें एक मुसलमान, जो शरीफ आदमी है, किसी सिखको अपने यहा रखा हुआ है। तो उन्होने जो आंखो देखा है वह सुनाया कि उसी मुसलमानके घरमे एक कमरा है, जहा उन्होंने गुरुग्रथ साहब खोलकर रखा है और बड़ी अदबसे उसको रखता है। चूकि वह मुसलमान उस सिखका दोस्त है, इसलिए उसको बचा लिया। यह मुझको अच्छा लगता है। पीछे एक सिख ही मुझको सुना गये है कि ऐसा बहुत जगह हुआ है, जहा मुसलमान दोस्तोंने हमें अपने घरोंमें रखा। दोनो ही जगहोंसे मुझे ऐसी ही खबरे मिली है। तो पीछे क्या वजह है कि यहासे इतनी बड़ी

सख्यामे मुसलमानोंको पाकिस्तान भगाया जाय ? क्या वजह है कि हिंदू और सिख वहासे भागकर यहा आते हैं ? इसका क्या नतीजा आना है ? यही न कि हम सब बरबाद होते हैं। जब लोग अपना घर-बार छोडकर जाय तब ऐश-आरामसे तो वे रह नही सकते। ऐश-आराम तो अपने घरमे ही रहकर मिल सकता है। घर छोड़नेके बाद न तो अच्छा खाना मिलता है और न पहननेको मिलता है। अभी शिविरोमे ठडमे पड़े रहकर लोग थरथर कापते हैं। तो वे कहते है कि हमारे साथ यह क्या हुआ ? हमारी हकूमतने यह क्या किया ? हमने क्या गुनाह किया कि जिस कारणसे हमे इस परेशानीमे पडना पड़ा है। उनको तो ऐसा लगता है कि वहा तो इर्दगिर्दमें मुसलमान पड़े है और यहां इर्दगिर्दमें हिंदू पड़े हैं। तब यह बर्बादी कहातक चले और कबतक चले। इसका क्या नतीजा निकलेगा ? नतीजा तो भगवान ही निकाल सकता है, लेकिन मुझको तो यह बुरा ही लगता है।

पाकिस्तानके कायदे आजम ऐसा क्यों कहते हैं कि हिंदू और सिख तो हमारे दुश्मन हैं। मैले आदमी तो हिंदू, सिख, मुसलमान सबमे ही पड़े हैं, लेकिन सारी जातिको दुश्मन कहना बहुत बुरी बात है। मै तो बड़े अदबसे सारे मन्त्रिमडल और लोगोको कहूगा कि अगर आप चाहते है कि हिंदुस्तान बर्वाद न हो और वह दूसरोंके हाथोमे न चला जाय तो पीछे आपको शरीफ बनना है।

जिन आदमियोने आज कुरानशरीफकी आयत पढनेपर जिस शराफतसे विरोध किया उसके लिए मै उनको जितना धन्यवाद दू उतना कम है। इससे वे भी अहिंसासे काम लेना सीख लेंगे। उन्होने ठीक ही कहा कि हमको कुरानशरीफकी आयत तो पसंद नही है, लेकिन प्रार्थना निर्विरोध चलने दी, यह मुझे अच्छा लगा। इस तरहसे हम हिंदुस्तानके वास्ते दैवी शक्ति पैदा कर रहे हैं, आहिस्ता-आहिस्ता हो रहा है, छूमतर करनेसे तो पैदा हो नही जाती, लेकिन आखिरमें यह शक्ति पैदा हो जायगी। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हू कि आजाद हिंद फौजके उन दो बड़े अफसरोको सद्बुद्धि दे। और हिंदुस्तानका जहाज, जो आज डावाडोल हो रहा है, वह सीधे-सादे शांत पानीमे चले।

: १३७ :

३ नवबर १९४७

(लिखित सदेश)

यदि एक जहर दूसरे जहरसे मिल जाय तो इस बातका निश्चय कौन करेगा कि उनमे पहले कौन-सा डाला गया था। और यदि इस बातका निश्चय हो भी जाय तो इससे फायदा क्या होगा ? लेकिन हम यह जानते है कि यह जहर तमाम पश्चिमी पाकिस्तानमे फैल गया है, लेकिन वहाकी हकूमतने शायद इसमें जहर नही माना है। ईश्वर करे कि यह जहर महदूद[1] रहे और काबूमें रहे। तब हम इस बातकी आशा कर सकेंगे कि समय आनेपर यह जल्दी ही दोनो हिस्सोसे निकाल दिया जायगा।

डा० राजेंद्रप्रसादजीने प्रातीय प्रधानो या उनके प्रतिनिधियो तथा और लोगोकी जो मीटिंग उनको खुराक-कट्रोलके मसलेपर मशवरा देनेके लिए बुलाई है, मै समझता हूं कि आज मुझे उसी बहुत जरूरी मामलेपर कुछ कहना चाहिए।

अबतक जो कुछ मैने इन दिनोंमें सुना है उससे मै तिलभर भी अपनी इस रायसे नही हटा हू कि कट्रोल जल्द बिल्कुल हट जाने चाहिए और यदि वह रहे भी तो छः माहसे अधिक तो हरगिज न रहें। एक दिन भी नही गुजरता जो मेरे पास तार या पत्र न आते हो और उनमें बाज-बाजमे तो बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तियोके होते है, जो यह बडे जोरके साथ कहते है कि दोनो कट्रोल हटा देने चाहिए। मै फिलहाल दूसरे कट्रोल अर्थात् कपडेके कट्रोलको छोड देना चाहता हू। कट्रोलसे धोखा बढता है, सत्यका दमन होता है, काला बाजार बढता रहता है और बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे ज्यादा तो यह लोगोंको कमजोर बना देता है, वह निरुत्साही हो जाते है, और उनमें अपने पैरोपर खडे रहनेकी शिक्षा जिसे एक पीढीसे वह सीखते आये है,

---

[1] सीमित।

भुला बैठते हैं। वह सदा दूसरोके मुहकी ओर ताकते रहते है। इस दुर्घटनासे बढ़कर, यदि कोई दूसरी हो सकती है तो वह है, मौजूदा भाई-भाईका कतल, जो एक बड़े पैमानेपर चल रहा है, और पागलपनसे तबादला[1]-आबादी, जिसके कारण बिला जरूरत मौते, भूखो मरना, रिहायश[2] और कपड़ेका न मिलना—खासकर इस आनेवाले जाड़ेके मौसममे—हो रहा है, शायद कंट्रोलकी दुर्घटना इसके बराबर हो।

दूसरी दुर्घटना देखनेमे बढी-चढी मालूम होती है, लेकिन हमे पहलीको भी भूलना नही चाहिए, जो इतनी दिखाई नही देती।

यह खुराकका कंट्रोल हमें पिछली बड़ी लडाईकी खतरनाक विरासतमें मिला है। उस वक्त कंट्रोल शायद जरूरी था, क्योकि अनाज और दूसरी खुराक बहुत बड़ी मिकदारमे बाहर देशोमें भेजी जाती थी। इस गैर-कुदरती निर्यातका परिणाम यह आना जरूरी था कि अनाजकी कमी हो जाय, और बहुत-सी बुराइयोके होनेपर भी राशनिंग जारी करना पड़ा। अब अगर हम चाहे तो निर्यातको बद कर सकते हैं। दुनियाके उन भूखे प्रदेशोकी हम मदद कर सकते हैं, यदि हम बाहरसे हिंदुस्तानके लिए अनाज आनेकी उम्मीद छोड़ दें; क्योकि इतना अनाज उनके लिए बच जाता है। मैने अपने जीवनमे, जिसकी दो पीढ़ी गुजर गईं, कई कुदरती दुष्काल देखे हैं; लेकिन मुझे याद नही आता कि कभी राशनिंगका खयाल भी आया हो।

ईश्वरकी कृपा है कि इस वक्त बरसात ठीक-ठीक हुई है। इसलिए खुराककी सच्ची कमी नही है। हिंदुस्तानके देहातोमे काफी अनाज, दालें और तेलके बीज मौजूद है। कीमतोपर जो बनावटी कंट्रोल होता है अनाज पैदा करनेवाले उसे समझ ही नही सकते, इसलिए वह खुशीसे अपना अनाज जिसकी कीमत खुले बाजारमे उनको अधिक मिल सकती है, देना पसद नही करते। इस हकीकतको सब लोग जानते है। इसके लिए जरूरी नही है कि कोई ऐदाद-ओ-शुमार[3] जमा किये

---

[1] परिवर्तन; [2] स्थान; [3] संख्या और अंक।

जाए या इसको साबित करनेके लिए कि अनाजकी कमी है, लंबे-लंबे लेख और मजमून लिखे जाए। इतनी उम्मीद रहती है कि हमें कोई आबादी बढ जानेका भूत दिखाकर नही डरायगा।

हमारे मंत्री जनताके है और जनतामेसे है। उनको इस बातका अभिमान नही करना चाहिए कि उनका ज्ञान उन अनुभवी लोगोसे अधिक है जो हकूमतकी गद्दियोपर नही बैठे है, लेकिन जिनका दृढ विश्वास है कि कंट्रोल जितनी जल्दी हटे उतना अच्छा होगा। एक वैद्यका कहना है कि खूराकके कंट्रोलके कारण, वे लोग जो राशनपर रहते है उनके लिए यह नामुमकिन कर दिया है कि खाने लायक अनाज उनको मिल सके, और इसलिए ये लोग गैर-जरूरी तौरपर ऐसी बीमारियोके शिकार हो रहे है, जो सडे अनाजके खानेसे पैदा होती है। बजाय कंट्रोलवाली खूराकके सरकार बडी आसानीसे उन्ही गोदामोको अच्छा अनाज बेचनेके काममे ला सकती है जिसे वह खुले बाजारमे खरीद सकेगी। ऐसा करनेसे कीमतें अपने-आप ठीक हो जाएगी और जो अनाज, दालें तथा तेलके बीज छुपे पडे है सब बाहर निकल आएगे। क्या सरकार अनाज बेचने और पैदा करनेवालोका विश्वास नही करेगी?

जमहूरियतमें[1] अगर लोगोको मध्य हकूमतकी रस्सीमें बाधा जाय तो टूट पडेंगे। वे एतबार करनेसे ही बढ सकते है।

अगर लोग इस कारणसे मरने लगेगे कि वे मेहनत नही करना चाहते और एक दूसरेको धोखा देते है तो ऐसे लोगोके मरनेका स्वागत किया जाय। फिर लोग काहिल[2] और खुद-गर्ज रहनेके पापको नही दोहराएगे।

---

[1] जनतंत्र; [2] आलसी।

: १३८ :

४ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो सिर्फ हमारे पुराने 'सभ्य मित्रने ही कुरानकी आयत पढ़नेपर एतराज उठाया है। इसलिए मै एक पजाबी हिंदू निराश्रितके दर्दभरे खतकी चर्चा करूगा। उन्होने पजाबमे बहुत कुछ सहा है। कुरानकी आयत पढ़नेका उन्होने विरोध किया है। मै नही जानता कि वे भाई यहा मौजूद है या नही। वे यहा हों या न हो, लेकिन मै उस खतकी उपेक्षा नही कर सकता। वह गहरे दर्दसे लिखा गया है। उसमे काफी अच्छी दलीलें दी गई है। लेकिन वह अज्ञानसे भरा हुआ है, जो गुस्सेकी उपज है। उसकी हर लाइनमे गुस्सा भरा हुआ है। आजकल करीब-करीब मेरा सारा समय हिंदू या सिख निराश्रितो या दिल्लीके दु खी मुसलमानोकी दर्दभरी कहानियां सुननेमे ही जाता है। मेरी आत्माको भी उतना ही दु ख और उतनी ही चोट पहुचती है। लेकिन अगर मै रोने लगू और उदास बन जाऊ, तो वह अहिंसाका सच्चा रूप नही होगा। अगर मै अहिंसासे इतना कोमल बन जाऊ, तो दिन-रात रोता ही रहू और मुझे ईश्वरकी उपासना करने, खाने-पीने या सोनेका भी समय न मिले। लेकिन मैने तो बचपनसे ही अहिंसक होनेके नाते दु.खोको देख-सुनकर, रोनेकी नही, बल्कि दिलको कठोर बना लेनेकी आदत डाल ली है, ताकि मै दु खोंका मुकाबला कर सकू। क्या पुराने ऋषि-मुनियोने हमें यह नही बताया है कि जो आदमी अहिंसाका पुजारी है, उसका दिल फूलसे भी कोमल और पत्थरसे भी कठोर होना चाहिए ? मैने इस उपदेशके मुताबिक जीनेकी कोशिश की है। इसलिए जब इस खतकी शिकायतो-जैसी शिकायतें मेरे पास आती है, या जब मै अपने मुलाकातियोके मुहसे गुस्से और रजभरी कहानिया सुनता हू, तो मै अपने दिलको कड़ा बना लेता हू। सिर्फ इसी तरह मै मौजूदा सवालोका सामना कर सकता हू। वह खत उर्दू लिपिमे लिखा है। इसलिए मैने श्रीब्रजकिशनजीसे कहा कि उस खतकी खासखास बाते मुझे लिख दें।

खतमें पहला इलजाम मुझपर अपना वचन तोडनेका लगाया गया है। उन्होने लिखा है, 'क्या आपने यह नही कहा है कि आपकी प्रार्थना-सभामे अगर एक भी आदमी कुरानकी आयत पढनेपर एतराज उठाएगा, तो आप उसका मान रखेंगे और उस शामको प्रार्थना नही करेंगे ?' यह आधा सच है, और पूरे झूठसे ज्यादा खतरनाक है। जब मैंने पहले-पहल एतराज उठानेपर अपनी प्रार्थना बद की थी, तब मैंने यह जाहिर किया था कि मैं प्रार्थना इस डरसे बद करता हू कि सभाके इतनी बडी तादादवाले लोग विरोध करनेवालेपर गुस्सा होकर उसके साथ मारपीटतक कर सकते है। यह कई महीने पहलेकी बात है। तबसे लोगोंने अपनेपर काबू रखनेकी कला सीख ली है। और, जब लोगोने मुझे इस बातका वचन दिया कि विरोध करनेवालेके खिलाफ न तो वे अपने मनमें गुस्सा रखेंगे और न किसी तरहका वैर, तो मैंने फिर आम प्रार्थना करनेकी बात मान ली। और जैसा कि मैं जानता हू, इसका नतीजा अच्छा ही हुआ है। विरोध करनेवालोका बर-ताव बिलकुल सभ्यताका होता है और अपना विरोध दर्ज करानेके सिवा वे प्रार्थनामे किसी तरहकी रुकावट नही डालते। इसलिए मैं आशा करता हू कि खत लिखनेवाले भाई यह देखेंगे कि मैंने अपना वचन भग नही किया है, और विरोध करनेपर भी प्रार्थना चालू रखनेका नतीजा अभीतक बिलकुल अच्छा ही रहा है। मै आप लोगोंको यकीन दिलाता हू कि जहातक मै अपने बारेमें जानता हू, मैंने जन-सेवकके नाते अपनी इतनी लबी जिंदगीमे दिया हुआ वचन तोडनेका कभी अप-राध नही किया है।

खत लिखनेवाले भाईने मुझपर दूसरा यह इलजाम लगाया है कि 'जब आप कुरानकी आयतें पढते है और यह भी कहते है कि सब धर्म समान है, तब आप जपजी और बाइबिलमेंसे क्यो नही पढते ?' इस बातसे भी लिखनेवाले भाईका अज्ञान जाहिर होता है। वे मेरे उस बयानको नही जानते, जिसमें मैंने बताया था कि पूरी भजनावली किस तरह तैयार हुई। आश्रम-भजनावलीमें बाइबिल और ग्रथसाहिब-मेंसे भी काफी भजन लिये गए है।

उन भाईकी तीसरी शिकायत यह है कि 'आपके बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता पश्चिमी पजाब या पश्चिमी पाकिस्तानके दूसरे किसी हिस्सेको छोडकर यहां आए है। लेकिन यूनियनमे वे निराश्रितोकी तरह रहकर दूसरे निराश्रितोकी कठिनाइयो और मुसीबतोमे साथ नही देते। पाकिस्तानमें उनके पास जैसी हवेलिया थी, उनसे ज्यादा अच्छी हवेलिया उन्होने यहा ले ली है और उनमें मौजसे रहते है। ये कांग्रेसी नेता उन निराश्रितोंसे विलकुल अलग रहते है, जिनके पास न तो रहने के मकान है न सर्दीसे बचनेके लिए गरम कपडे। गरम कपडोकी बात तो दूर रही, बहुतसोके पास बदलनेके दूसरे कपडे ही नही है; न उन्हे अच्छा खाना मयस्सर[1] होता है।' अगर यह शिकायत सच है, तो यह हालत शर्मनाक है। मैने तो अपनी प्रार्थना-सभाओमे साफ शब्दोमे उन धनी निराश्रितोकी निंदा की है, जो गरीब निराश्रितोके साथ मुसीबतें उठानेके बजाय उनका साथ छोडकर मौज मारते है। यह धर्म नही, अधर्म है। धनियोको अपने गरीब भाइयोके सुख-दुखमे साथ देना चाहिए।

इसके बाद उन भाईने मुझे यह ताना मारा है कि आप पाकिस्तान जानेका इरादा रखते थे, लेकिन अभीतक गए नही। यहा दिल्लीमे आपका क्या काम है? आप दुखी हिंदुओ और सिखोकी मदद करनेके लिए पाकिस्तान जानेके बजाय अपने मुसलमान दोस्तोकी मदद करना क्यो ज्यादा पसद करते है? लेकिन शिकायत करनेवाले भाई यह नही जानते कि दिल्लीके अपने फर्जको भुलाकर मै पाकिस्तानके हिंदुओ और सिखोके दुखोको कम करनेकी आशासे पाकिस्तान नही जा सकता। मै कबूल करता हू कि मै मुसलमानों और दूसरोका दोस्त हू, क्योकि मै हिंदुओ और सिखोका भी वैसा ही दोस्त हू। अगर मै किसी आदमीकी सेवा करता हू, तो इसी भावनासे प्रेरित होकर करता हू कि वह सिर्फ हिंदुस्तानका या किसी एक धर्मका ही नही, बल्कि सारी मनुष्य-जातिका अग है। दिल्लीके हिंदू और सिख

---

[1] प्राप्त।

निराश्रितो और दूसरोको यहाके मुसलमानोके दोस्त बनकर यह साबित कर दिखाना है कि दिल्लीमे मेरे रहनेकी कोई जरूरत नही है। तब मै इस पूरे विश्वासके साथ पाकिस्तानकी तरफ दौड जाऊगा कि मेरा वहाका दौरा बेकार नही जायगा।

शिकायत करनेवाले भाईने कस्तूरबा-फडको भी नही छोडा। उन्होने पूछा है कि कस्तूरबा-फडका कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है और उसे निराश्रितोको राहत पहुचानेके काममें क्यो नही खर्च किया जा सकता? पहली बात तो यह है कि वह फड एक खास मकसदसे[1], तब इकट्ठा किया गया था जब मै जेलमें था। यानी वह हिंदुस्तानके गावोकी औरतो और बच्चोकी सेवाके लिए जमा किया गया था। उसका एक ट्रस्टी-मडल है। हमेशा सावधान रहनेवाले ठक्कर बापा उसके सेक्रेटरी है। और उसका पाई-पाईका हिसाब रखा जाता है, जिसे जनता देख सकती है। इसलिए लिखनेवाले भाईके सुझावके मुताबिक वह फड निराश्रितोकी सेवामें नही खर्च किया जा सकता। और ऐसा करनेकी जरूरत भी नही है। निराश्रितोकी राहतके लिए उदारतासे पैसा दिया जा रहा है और सब जानते है कि मेरी कबलोकी अपीलका जनताने कितनी उदारतासे स्वागत किया है। सरदार पटेलने इस बारेमे एक खास अपील निकाली है। लोगोने उदारतासे उसका स्वागत किया और आज भी किया जा रहा है।

खत लिखनेवाले भाईकी आखिरी शिकायत है 'जब पाकिस्तानमे सूअरोके कत्लपर रोक लगा दी गई है, तब यूनियनमें गो-हत्या क्यो नही बद की जा सकती?' मुझे इसकी जानकारी नही है कि पाकिस्तानमे सूअरके कतलपर कानूनी रोक लगाई गई है। अगर शिकायत करनेवाले भाईकी सूचना सच है, तो मुझे दुःख है। मै जानता हू कि इस्लाममें सूअरका गोश्त खानेकी मनाही है। लेकिन ऐसा होनेपर भी मै इसे ठीक नही मानता कि गैर-मुस्लिमोको भी सूअरका गोश्त खानेसे रोका जाय।

क्या कायदे आजमने यह नही कहा है कि पाकिस्तान ईश्वरशाही

---

[1] उद्देश्य।

राज नही है और उसमे धर्मको कानूनका रूप नही दिया जायगा? लेकिन बदकिस्मतीसे यह बिलकुल सच है कि इस दावेको हमेशा अमलमे सच साबित नही किया जाता। क्या हिंदुस्तानी सघ ईश्वरशाही राज बनेगा और क्या हिंदू-धर्मके उसूल गैर-हिंदुओपर लादे जायगे? मुझे यह आशा नही है। ऐसा हुआ तो हिंदुस्तानी सघ आशा और उजले भविष्यका देश नही रह जायगा। तब वह ऐसा देश नही रह जायगा जिसकी तरफ सारी एशियाई और अफ्रीकी जातिया ही नही, बल्कि सारी दुनिया आशाभरी नजरसे देखती है। दुनिया यूनियन या पाकिस्तानके रूपमे हिंदुस्तानसे ओछेपन और धार्मिक पागलपनकी उम्मीद नही करती। वह हिंदुस्तानसे बडप्पन, भलाई और उदारताकी आशा करती है, जिससे सारी दुनिया सबक ले सके और आजके फैले हुए अधेरेमें प्रकाश पा सके।

मै गायकी भक्ति और पूजामे किसीसे पीछे नही हू, लेकिन वह भक्ति और श्रद्धा कानूनके जरिये किसीपर लादी नही जा सकती। वह मुसलमानों और दूसरे सारे गैर-हिंदुओके साथ दोस्ती बढाने और सही बरताव करनेसे पैदा हो सकती है। गुजराती और मारवाडी लोग गायकी रक्षा करनेमें सबमे आगे माने जाते है। लेकिन वे हिंदू-धर्मके उसूलोको इतने भूल गए है कि दूसरो पर तो वे खुशीसे पाबदिया लगाएगे और खुद गाय और उसकी सतानके साथ बहुत बुरा बरताव करेंगे। आज दुनियामे हिंदुस्तानके मवेशी ही सबसे ज्यादा उपेक्षित क्यो है? जैसा कि माना जाता है, वे दुनियामे सबसे कम दूध देनेके कारण देशपर बोझ क्यो बन गए है? बोझ ढोनेवाले जानवरोके नाते बैलोके साथ इतना बुरा बरताव क्यो किया जाता है?

हिंदुस्तानके पिंजरापोल ऐसे नही है जिनपर गर्व किया जाय। उनमे बहुत पैसा लगाया जाता है, लेकिन वहा पशुओंका साइसी और बुद्धिमानी-भरा पालन-पोषण शायद ही किया जाता हो। ये पिंजरापोल हिंदुस्तानके जानवरोको नया जन्म कभी नही दे सकते। वे मवेशियो-के साथ हमदर्दी और दयाका बरताव करके ही ऐसा कर सकते

है। मेरा यह दावा है कि मुसलमानोके साथ दोस्ती बढा सकनेके कारण मैने, कानूनकी मदद लिये बिना, दूसरे किसी हिंदूके बनिस्बत ज्यादा गायोको कसाईके छुरेसे बचाया है।

: १३६ :

५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मुझे आप लोगोसे कुरानशरीफकी आयतके विरोधके बारेमे कुछ कहना नही है। यह मै हमारी धन्य घड़ी मानता हूं। एक भाईको आपत्ति है ही, लेकिन वे तो हमारे मित्र बन गए है। वे विरोध तो करते है, लेकिन सभ्यतासे। उसके बाद वे बिलकुल खामोश रहते है, इसको मै विरोध मानता ही नही। ऐसा सब लोग भी विरोध करें तो हम कुछ खोते नही है। विरोध रहते हुए भी वे पीछे प्रार्थनामे मग्न रहते है ऐसा मैने उनकी जबानसे सुना है। तो यह अच्छा ही है।

आज आपने जो भजन सुना है वह एक हरिजन बालकका है। उसका कठ मधुर है यह तो आपने सुन ही लिया। रामधुन भी उसने अच्छी तरह चलाई। यह मेरा एक ही अनुभव नही है। मै तो हरिजनोके बीचमे रहना हू और सारे हिंदुस्तानमें तो मैने बहुत दफा यात्रा की है और सारे देशके हरिजनो के सपर्कमें आया हू। अगर हम खुद नही जानते हो और हमको कोई परिचय न दें तब तो हम हरिजनको किसी तरह पहचान नही सकते। जो गुण दूसरे इन्सानमें है वे सब उनमें भी है। कुछ दुर्गुण भी है, लेकिन वे उन्हीमें हो ऐसा थोडा ही है। और लोगोमें भी है। सद्गुण और दुर्गुण आखिर सबमें भरे है। लेकिन हरिजनोमें मुझको एक विशेपता तो लगती है, और वह यह है कि अगर किसी हरिजन बालकको थोडा सगीत-शिक्षण देते है तो वह आगे बढ जाता है। चूकि हमने उनको अबतक गिराकर रखा है, इसलिए अब अगर उनसे कोई मोहब्बतसे बात करता है और

मोहब्बतसे काम सिखाता है तो पीछे वे ध्यान रखकर मेहनत करते हुए आगे बढ जाते है। धनी लडके तो गुमानमें पडे रहते है और यह सोचकर कि हमारे मा-बापके पास काफी पैसा है, अपने काममें ध्यान नही देते। लेकिन चूकि हरिजन लोग आमतौरपर गरीब है और उनको अछूत मानते है, कोई उनको अपने नजदीक नही बैठने देता तब अगर कोई उनको अपने पास बिठाते है, साथ ही खाते-पीते है और सब कुछ करते है तब उनका हृदय भर जाता है। सब तो ऐसे नही है—मैंने ऐसे लापरवाह हरिजनोको भी पाया है कि उनके लिए चाहे जितना करो, उसकी कोई कीमत ही नही करते। ऐसे दूसरे भी पड़े है—सब कोई ऐसे हरिजन थोडे है। उनको हिंदू-धर्मने सैकडों वर्षोसे गिरानेकी कोशिश की है, लेकिन तो भी वे अपने धर्मपर कायम रहते है और दूसरोकी निस्बत[1] उनमे अधिक गुण पाये जाते है।

पंढरपुरका नाम तो आपने नही सुना होगा। महाराष्ट्रमे वह यात्राका एक स्थान है। वहा जो मूर्तिया है उनके लिए इतनी दंत-कथा भरी है कि मै उन सबको सुनाना नही चाहता हू। तो वहांका मदिर हरिजनोके लिए खुलता नही था। इसपर साने गुरुजी वहां जाकर बैठ गए और मदिरके ट्रस्टियोसे कहा कि जब सब जगहके मदिर खुल गए है तो यह क्यों न खुले ? जब नही खुला तब उन्होंने उपवास शुरू कर दिया। साने गुरुजी तो भक्त पुरुष था, तो वे उसको कैसे मरने देते ? उनके दिलमे ज्ञान आया, रहम आया; लेकिन कहा कि हम क्या करे, कैसे खोले, उसमे काफी टेकनिकल रुकावटे है, जिन्हे दूर करना होगा। पीछे मावलकरजी वहा पहुचे और उनके कहने-सुनने-पर उन्होने उपवास छोड दिया, लेकिन इस शर्तपर कि अगर वह नही खुला तो उनका फाका फिर चलेगा। अब मेरे पास तार आया कि जो बिल बननेवाला था वह बना लिया और वह मदिर हरि-जनोके लिए खुल गया। सबने राजी होकर खोला और हजारोकी

---

[1] अपेक्षा।

तादादमें लोग वहा गए—कोई विरोध नही हुआ—एक-दोका रहा होगा शायद हजारोंमें। तो पढरपुरका इतना भारी मदिर इतनी मेहनतके बाद आखिर खुलकर रहा। जितनी ज्यादतिया हमने हरिजनोपर की हैं अगर वे हट जाय तो सारा हिंदुस्तान बहुत ऊचे चला जाता है। लेकिन आज तो हम गिरते जा रहे है, क्योकि हममें वैमनस्य भर गया है। हिंदुस्तान कोई हमेशाके लिए तो दीवाना बना नही रहेगा, ऐसी उम्मीद करके मैं बैठा हू—आगे भगवान जाने।

मेरे पास दो-चार प्रश्न आ गए है—वैसे तो वे अलग-अलग खतोमें है, लेकिन उनको इकट्ठा कर लिया गया है। पहले प्रश्नमें तो एक मुसलमान भाई पूछते है। जैसा कि कल बताया था कि हम गोमास छुड़वानेके वास्ते किसीको मजबूर नही कर सकते, उनसे विनय कर सकते है और समझा सकते है। अगर उनकी समझमें आ जाय और उसको छोड दें, फिर चाहे वे हमारे प्रति मोहब्बत दिखानेके लिए करते हो तो वह बडी अच्छी बात है। लेकिन ऐसे भी हिंदू बहुतसे है जो मास खाते है चाहे वह मछली हो या और कोई दूसरा मास हो। ऐसे तो बहुत थोडे हिंदू है जो धर्म समझकर मास नही खाते। तो क्या आप उनको मजबूर करेंगे और कहेंगे कि अगर मास खाना नही छोडते तो हिंदुस्तानको छोडो नही तो मार डाले जाओगे? अगर ऐसा नही हो सकता तो मुसलमानोंने क्या गुनाह किया? उनको क्यो मजबूर किया जाय? मै जानता हू कि ऐसे पागल हिंदू भी पडे है जो मुसलमानोको मजबूर करते है। मै तो कहूगा कि यह अत्याचार है जिससे हमें बचना चाहिए।

दूसरा प्रश्न एक और है जिसमें एक हिंदू लिखते है कि यह तो ठीक है कि सब हिंदू तो वैमनस्यसे नही भरे है लेकिन तुम बात तो करते हो कि मुसलमानोको अपने घर नही छोडने चाहिए, अगर मरना है तो मर जाय। ऐसी ज्ञान-वार्ता तो तुम सुनाते हो, लेकिन इससे सबको ज्ञान तो नही मिल जाता है। एक तरफ तो यह ज्ञान-वार्ता चलती रहे और दूसरी तरफ मुसलमानोको यहातक परेशान किया जाय कि वे अपने घरोसे बाहर कही जा नही सकते—उनको ये धमकिया

दी जायं कि यहासे भागते हो या नही, नहीं तो मार डाले जाओगे। मुसलमान जिस मुहल्लेमें रहते हैं वहांसे अगर बाहर जाय तो कट जाय, लेकिन अगर मुहल्लेमे ही रहे तो खायं कहासे? उनमे कारीगर या मजदूर लोग होते हैं। मान लीजिए कि एक जुलाहा है और वह कपडा बुनता है तो पीछे हिंदू कहे कि हम तो उसका कपड़ा नही लेंगे और अगर कोई लेनेकी जुर्रत[1] करे तो उसको भी काट डालेंगे तो फिर आपने अगर उसे यहा रहने भी दिया तो उसका कोई अर्थ नही रह जाता। मजदूरी करनेवाला अपने मुहल्लेके अदर ही कैसे सीमित रह सकता है? वह तो गुलामसे भी बदतर हो जाता है। छोटा-सा तो मुहल्ला है और उसमेंसे बाहर नही जा सकता तो गुजारा कैसे करे? कोई धनी मुसलमान तो ऐसे छोटे मुहल्लेमे रहता नही है और गरीब लोग अगर बाहर न जाय तो गुजारा कैसे करें। एक ओर तो उनपर ऐसी ज्यादतिया करे और दूसरी ओर मेरे-जैसे आदमी कहे कि मर जाओ तो वह निकम्मी बात हो जाती है।

हम लोग गुमानसे ऐसा कहते है कि दिल्लीमे तो सब कुछ ठीक हो गया, कोई बड़ी घटनाए तो होती नही; लेकिन मै तो कहूंगा कि अगर थोडा-सा भी है तो वह हमें चुभना चाहिए। मुझे तो बार-बार यह कहना और सुनाना होगा कि जब हिंदुस्तानमे ऐसी बातें हो रही हैं तो हम किस मुहसे मुसलमानोको हिंदुस्तानमे रहनेको कहे। जितने मुसलमान है वे पाकिस्तान चले जायं और वहा जितने हिंदू और सिख है वे यहा आ जायं, तब तो हम हमेशाके लिए एक दूसरेके दुश्मन बन गए। और पीछे पेट भरकर हमको लडना है। ऐसी वाहियात चीजसे तो हम बच जाय।

एक तीसरा प्रश्न है—वह थोडा पेचीदा है। है भी और नही भी है। मुझको एक मुसलमान भाई लिखते है कि बता दो तो मुझको और सब मुसलमानोको अच्छा लगेगा। इसी बीचमे ब्रजकिशनजी-ने कहा कि यह तो हिंदूका प्रश्न है। किंतु किसीने भी किया हो, प्रश्न

---

[1] हिम्मत।

तो वह है न। पूछने लायक है और नही भी। "तुमने तो अपनी यह अहिंसा अंग्रेजोको भी वताई थी जब वे हार रहे थे और उनको हथियारोसे लड़ाई न लडकर अहिंसक होनेकी सलाह दी थी। वहा तो तुमने इतनी जुर्रत की, लेकिन यहाकी हकूमतको अहिंसाकी लडाई लडनेको क्यो नही कहते !" मैंने तो वता दिया कि मैं हू कहा, और कौन मेरी मानता है। कहते तो है कि सरदारजी तो तुम्हारे है, पडितजी तुम्हारे नही है तो कौन है, मौलाना भी तुम्हारे है। मेरे है भी और नही भी है। मैंने तो अपनी अहिंसा छोडी नही है। मैं तो उसको सीखता ही आया हू और वह तवतक चली जबतक आजादी नही मिली थी। अव वे कहते है कि अहिंसासे कारोवार कैसे चला सकते है, तो पीछे लश्कर तो है ही, और उस लश्करको लेकर बैठ गए है। अब मेरी कीमत नही रही है। जब मेरी कीमत ही नही है तब मैं लोगोमें क्यो पडा हू। लेकिन इसी आशासे कि शायद लोग मेरी सुन लें। आखिर आप-जैसे थोडेसे लोग तो आते ही है और सभ्यतासे बैठकर मेरे साथ प्रार्थना करते हैं। जैसे आप हैं ऐसे शायद दूसरे भी हो जाय और पीछे सबमे ज्ञान हो जाय। मेरी बातका कुछ असर हो जाय। इसी लालचके वशमे पडा हू और इतना कर रहा हू। मै नही जानता कि कहातक ईश्वर मुझसे काम कराना चाहता है। वह चाहे तो आज भी मुझको वद कर सकता है। अव अगर यहा बैठे-बैठे सास उडा दे तो मै खत्म हो जाता हू। इसलिए जो चीज मैंने हिटलर-मुसोलिनी, चर्चिल तथा जापानको कही थी उसी चीजपर मै आज भी कायम हू और अपनी हकूमतको भी वही कहता हूं। लेकिन काश्मीरमे तो शेख अब्दुल्ला है जो वडी वहादुरीसे लड़ रहे है—वहादुरीकी मैंने हमेशा तरीफ की है। यह ठीक है कि वे हिंसा करते है, लेकिन उसमे वहादुरी तो है, उसकी तारीफ तो मै करूगा। मै तो सुभाष वावूकी भी तारीफ करता हूं, कोई इसलिए थोडे करता हू कि मुझे उनकी हिंसा पसद थी। जो आजाद हिंद फौज वनाई वह मेरेसे थोडे वन सकती थी। जव मैं अच्छी चीज देखता हू और अच्छीको अच्छी न वताऊ तो मैं अहिंसक नही हो सकता। अगर शेख अब्दुल्ला वहा आखिर-

तक लडता रहे और हिंदुओं और सिखोको साथ रखे तो वह बुलंद काम हो जायगा। जो लोग यहा पड़े है उनपर भी इसका वडा असर होनेवाला है इसमे मुझे जरा भी शक नही है। लेकिन अगर मेरी अहिंसा चले और सव मेरी वात माने तो जो लश्कर हम भेजते है वे भी न भेजे। अगर भेजे तो वे भी अहिंसक लश्कर भेजे। वे वहा जाते है, अगर अफरीदी लोग मार डालते है और वे खुशीसे मर जाय तो वह अहिंसक युद्ध हो जायगा; क्योकि वे अहिंसक होकर मरते है। शेख अब्दुल्ला भी उन अफरीदियोसे कहेगा कि आप श्रीनगर ले सकते है, लेकिन तव, जब हम सव मर जाय। किंतु वे तो हथियारोसे लडनेवाले है और वहादुरीसे लड़ते है। तव वे भी अहिंसक वन सकते है, हाला कि वह अहिंसाका रूप नही होता। मान लीजिए कि एक लाख अफरीदियोका दल यहां आ जाता है और उन सवके पास हथियार है और मुट्ठीभर लोग मासूम वच्चो और स्त्रियोकी रक्षाके लिए हथियार लेकर उनसे लडते है और लडते-लड़ते मर जाते हैं तव हथियारवद होते हुए भी अहिंसक-जैसे वन जाते है। लेकिन मैं किसको वताऊ? आज तो आपस-आपसमे जहर फैल गया है और एक-दूसरेको वुरी तरहसे वहशियाना तौरसे काटते है। उसमे भी मै यह अहिंसाका सरल पाठ नही वता सकता हू। उस वक्त चर्चिल साहव तो नही कह सकते थे लेकिन आज शेख अब्दुल्ला तो कह सकते है और जो लश्कर गया है वह भी कह सकता है कि अगर तुम्हारी अहिंसा दिल्लीमें काम नही कर सकती, वहां तो वहशियाना काम हो रहा है; लेकिन हम जो करते है वह वहशियाना भी नही है तव उनको यह कहनेका हक मिल जाता है और मै उसको कवूल करता हूं। अगर मै यहाके सव हिंदू, मुसलमान, सिखोको अपनी अहिंसा समझा दू तो पीछे वे मुझको कुछ कह नही सकते। तव तो मै खुद एक अहिंसक सेना लेकर काश्मीरमे या कहो पाकिस्तानमे या हर जगह जा सकता हू और मेरा काम वहुत सरल हो जाता है और उस अहिंसाका प्रभाव इतना पडे कि वह देखने लायक हो। लेकिन ऐसा अवसर कहासे आए? मेरी अगर आप लोग सुने और

जो कहता हू उसपर अमल करे, मेरे शब्दोमें ज्यादा शक्ति, हृदयमें ज्यादा बल हो, मेरी तपश्चर्या चाहे वह कितनी भी है और उससे भी आगे बढ जाय, और मेरे एक-एक शब्दोमें इतनी शक्ति हो कि वह सारे हिंदुस्तानको पकड ले तो मेरा काम बन जाय। लेकिन आज तो मैं लाचार-सा हू। अगर आप लोग भी ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वे मेरे शब्दोमें प्रभाव डाले और जहातक मुझे लाया है उससे भी आगे ले जाय और इस शरीरसे और भी ज्यादा काम करा ले तो हिंदुस्तानका प्रभाव सारे जगतपर पड सकता है।

इन दिनो जो एशियाई प्रादेशिक श्रम-सम्मेलन हो रहा है उसमे इग्लंड, चीन, अमरीका तथा पाकिस्तानके प्रतिनिधि आए थे और कहते थे कि तुमने तो बडा काम किया है। उनकी यह तारीफ मुझे चुभती थी। आज तो मै दिवालिया बन गया हू—आज तो मै कुछ सुना नही सकता और कल सुनाया था उसकी अब कोई कीमत नही। आज तो मैं तारीफके लायक तभी बन सकता हू जब लोगोपर मेरा प्रभाव पडे, लेकिन वह दिन तो आज है ही नही, मै तो आज लाचारीका प्रदर्शन आपके सामने कर रहा हू।

: १५० :

६ नवबर १९४७

(प्रार्थनाके बाद गाधीजीने एक दोस्तद्वारा भेजी हुई अखबारोकी दो कतरनोका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

मै लेखकका नाम जानता हू। लेकिन मै न तो उनका नाम बताना चाहता और न उन लेखोका ब्योरा ही देना चाहता हू। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि वे लेख हिंदू-धर्मकी सेवा करनेके ख्यालसे लिखे गए है। लेकिन उनमे जान-बूझकर झूठी बातें कही गई है। जब नई बाते नही कही जाती, तो हकीकतोको तोड-मरोड-

कर पेश किया जाता है। लेकिन मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि ऐसा करनेसे कोई मकसद पूरा नही होता—धर्मका तो बिलकुल नही। जब इलजामोंकी बुनियाद सचाईपर नही बल्कि झूठपर होती हैं, तब जिनपर इलजाम लगाया जाता है उन्हे कोई चोट नही पहुचती। इसलिए मै जनताको चेतावनी देता हू कि वह ऐसे अखबारोंका समर्थन न करे, भले उसके लेखक कितने ही मशहूर क्यों न हो।

खुराक-मत्रीने गैर-सरकारी लोगोकी जो कमेटी बनाई थी, उसने अपनी रिपोर्ट उनके सामने पेश कर दी है। उस कमेटीकी सिफारिशोंपर कोई फैसला करनेमें डा० राजेंद्रप्रसादको मदद देनेके लिए सूबोंके जो मत्री या उनके प्रतिनिधि दिल्ली आए थे, उनसे मैं मिला था। जब मैंने इस मीटिंगके बारेमें सुना, तो मैंने डा० राजेद्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे उन लोगोके सामने अपनी बात रखनेका मौका दे, ताकि मै उनके शकोको दूर कर सकू। क्योकि मुझे इसका पूरा यकीन है कि अनाजका कट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डा० राजेद्रप्रसादने तुरत मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मत्रियों या उनके प्रतिनिधियोके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। मैं यह कहता रहा हू कि जहा-तक साप्रदायिक झगडोके बारेमें मेरी रायका संबंध है, आज उसे कोई नही मानता। लेकिन यह कह सकनेमे मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवालपर मेरी रायके बारेमें ऐसी बात नही है। जब बगालके गवर्नर मि० कैसीसे मेरी कई मुलाकाते हुई थी, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिंदुस्तानमे अनाज या कपडेपर कट्रोल रखनेकी बिलकुल जरूरत नही है। उस समय यह मालूम नही था कि मुझे लोगोका समर्थन प्राप्त है या नही। लेकिन हालकी चर्चाओमें यह जानकर अचरज हुआ कि मुझे जनताके जाने और अनजाने मेंबरोका बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमे मेरे पास जो बेशुमार खत आते हैं, उनमें मुझे एक भी खत ऐसा याद नही आता जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय जाहिर की हो। मै श्री घनश्यामदास बिड़ला और लाला श्रीराम-जैसे बडे-बडे लोगोकी राय नही जानता, न मैं यही

जानता हूं कि इस बारेमें मुझे समाजवादी पार्टीका समर्थन मिलेगा या नहीं। हां, जब डा० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो उन्होंने अनाजका कंट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा-पूरा समर्थन किया। मुझे यह कहनेमें कोई हिचकिचाहट नहीं होती कि आज देशको अनाजकी जिस तंगीका सामना करना पड़ रहा है, उसमें डा० राजेंद्रप्रसादकी रहनुमाई[1] उनकी कमेटीके एक या ज्यादा मेंबर करें न कि उनका पूरा स्टाफ।

अब मैं कपड़ेके कंट्रोलकी चर्चा करूंगा। हालां कि अनाजके कंट्रोलको हटानेके बनिस्बत कपड़ेके कंट्रोलको हटानेके बारेमें मेरा ज्यादा पक्का विश्वास है, फिर भी मुझे डर है कि कपड़ेके कंट्रोलके बारेमें मुझे उतना समर्थन प्राप्त नहीं है जितना कि अनाजके कंट्रोलके बारेमें है। कांग्रेसने मेरी इस रायका खुशीसे समर्थन किया था कि खादी देशी या विदेशी मिलके कपड़ेकी पूरी जगह ले सकती है। इसने स्व० जमनालालजीके मातहत एक खादी-बोर्ड कायम किया था, जिसे मेरे यरवदा जेलसे रिहा होनेके बाद अखिल भारत-चरखा-संघका विशाल रूप दे दिया गया था। हिंदुस्तानमें ४० करोड़ लोग रहते हैं। अगर पाकिस्तानका हिस्सा उसमें अलग कर दिया जाय, तो भी उसमें ३० करोड़से ऊपर लोग बचेंगे। उनकी जरूरतकी सारी कपास देशमें पैदा होती है। उनकी कपासको बुनने लायक सूतमें बदलनेके लिए देशमें काफी कातनेवाले मौजूद हैं। और उनके हाथकते सूतको बुननेके लिए हिंदुस्तानमें जरूरतसे ज्यादा जुलाहे भी हैं। बहुत बड़ी पूंजी लगाए बिना भी हम देशमें अपनी जरूरतके चरखे, करघे और दूसरा जरूरी सामान आसानीसे बना सकते हैं। इसलिए जरूरत सिर्फ इस बातकी है कि हम अपने-आपमें पक्का विश्वास रखें और खादीके सिवा दूसरा कोई कपड़ा न इस्तेमाल करनेका इरादा कर लें। आप जानते हैं कि देशमें महीन-से-महीन खादी तैयार की जा सकती है और मिलोंसे भी ज्यादा अच्छे डिजाइन बनाए जा सकते हैं। अब चूंकि

[1] पथ-प्रदर्शन।

हिंदुस्तान विदेशी जुएसे आजाद हो गया है, इसलिए खादीका ऐसा विरोध नही हो सकता, जैसा कि विदेशी शासकोके नुमाइदे किया करते थे। इसलिए मुझे यह देखकर सबसे ज्यादा ताज्जुब होता है कि जब हम अपनी मरजीका काम करनेके लिए पूरी तरह आजाद है, तब न तो कोई खादीके बारेमे चर्चा करते है, न खादीकी सभावनाओमे श्रद्धा रखते है। और, हम हिंदुस्तानको कपड़ा पुरानेके लिए मिलके कपडेके सिवा दूसरी बात ही नही सोच सकते। इसलिए मुझे रत्तीभर शक नही कि खादीका अर्थ-शास्त्र ही हिंदुस्तानका सच्चा और फायदेमद अर्थशास्त्र हो सकता है।

: १४१ :

७ नवबर १९४७

(गाधीजी दिल्लीके पास तिहाड नामक गावके मुसलमानोसे मिलने गए थे। वहा उन्हें उम्मीदसे ज्यादा समयतक रुकना पड़ा। इसलिए वे लौटनेपर सीधे प्रार्थना-सभामे चले गए। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने अपने दौरेका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और वहनो,

मुझे दु ख होता है कि तिहाड और उसके आसपासके मुसलमानोको बिला जरूरत मुसीबते झेलनी पडती है। उनमेसे बहुतसे जमीनोके मालिक है, लेकिन सताए जानेके डरसे वे अपनी जमीनें जोत नही पाते। उन्होने अपने मवेशी, हल और दूसरा सामान बेच डाला है। फौज उनकी रक्षा कर रही है। दो हजारसे ऊपरकी तादादमे जो दु खी लोग मेरे आसपास इकट्ठे हुए थे, उन्होने अपने अगुआकी मारफत मुझसे कहा कि 'हम पाकिस्तान जाना चाहते है, क्योकि यहां जीना असभव हो गया है। हमारे बहुतसे दोस्त और रिश्तेदार पाकिस्तान जा भी चुके है। इसलिए, अगर सरकार हमे जल्दी-से-जल्दी लाहौर भेज दे, तो बडी दया होगी। हमे फौजके लोगोके खिलाफ कोई शिकायत नही है।'

लेकिन आजका समय मै तिहाडकी सभाका पूरा बयान करनेमें नही दूगा। मैने उन लोगोसे कहा कि मेरे हाथमे कोई सत्ता नही है, लेकिन मै आपका सदेशा खुशीसे प्रधान मत्री और उप-प्रधान मत्री तक, जो गृहमत्री भी है, पहुचा दूगा।

मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग दिल्लीमें एक समस्या बन गए है। मुझे बताया गया है कि चूकि पाकिस्तानमे निराश्रितोके साथ जुल्म किये गए है इसलिए वे यह मानते है कि उन्हें कुछ खास हक हासिल है। जब वे दुकानपर कोई सामान खरीदने जाते है तो यह आशा करते है कि दुकानदार कभी उन्हे जरूरतकी चीजें मुफ्त दे दिया करे और कभी काफी कम दामोंमें बेचा करें। कभी-कभी तो एक-एक आदमी सैकडो रुपएका सौदा खरीद लेता है। कुछ निराश्रित तागेवालोंसे यह उम्मीद करते है कि वे उनसे बिलकुल भाडा न लें या मामूलीसे कम भाडा ले। अगर यह रिपोर्ट सच है, तो यह कहना मेरा फर्ज है कि निराश्रित लोग वह सबक नही सीख रहे है, जो मुसीबतें दुखियोको आम तौरपर सिखाती है। ऐसा करके वे अपने-आपको और देशको नुकसान पहुचाते है और काफी पेचीदा बने हुए सवालको और भी पेचीदा बना रहे है। अगर उनका ऐसा बरताव जारी रहा, तो वे दिल्लीके दुकानदारोकी हमदर्दी जरूर खो देंगे।

साथ ही, मै यह नही समझ पाता कि निराश्रित लोग, जिनके बारेमे यह कहा जाता है कि वे पाकिस्तानमे अपना सब कुछ खो-कर यहा आए है, सैकडो रुपयोका सामान कैसे खरीद सकते है। मै यह भी चाहूगा कि कोई निराश्रित विरले और जरूरी मौकोको छोड-कर घूमनेके लिए भगवानके दिये हुए पावोके सिवा दूसरी किसी चीजका उपयोग न करें। इसके अलावा मुझे यह बताया गया है कि दिल्लीमें जबसे लाखों निराश्रित आए है, तबसे तेज शराबोसे होनेवाली आमदनी बहुत ज्यादा बढ गई है। दरअसल उन्हे यह समझना चाहिए कि जब केंद्र और सूबोकी सरकारे काग्रेसकी मागोको पूरा करेंगी, तो हिंदुस्तानी सबमें न तो तेज शराबें मिलेगी और न अफीम-गाजे-जैसी दूसरी नशीली चीजें देखनेको मिलेगी। यही हाल पाकिस्तानका भी हो सकता

है। क्योंकि हमारे मुसलमान दोस्तोको पूरी शराव-बदीका ऐलान करनेके लिए काग्रेसके ठहरावकी जरूरत नही पड़ेगी। क्या निराश्रित लोग, जिन्होने वड़ी-वडी मुसीबतें सही है, शराव और दूसरी नशीली चीजोके इस्तेमालमे या ऐश-आराममें डूबनेसे अपने-आपको रोक नही सकते? मुझे आशा है कि निराश्रित भाई और वहन मेरी उस सलाहको मानेंगे, जो मैने अपने पिछले भापणोमे उन्हें दी है। वह सलाह यह है कि निराश्रित जहा कही जाय, वहाके लोगोमें दूधमें शक्करकी तरह घुल-मिल जायं और उनपर वोझ न वननेका पक्का निश्चय कर ले। धनी और गरीब निराश्रित एक ही अहाते या कैंपमें साथ-साथ रहे और पूरे सहयोगसे काम करे, ताकि वे आदर्श और स्वावलवी नागरिक वन सके।

: १४२ :

८ नवबर १९४७

(आज हमेशाके विरोध करनेवाले सज्जनके सिवा दूसरे तीन भाइयोने कुरानकी आयत पढ़नेका विरोध किया। इसलिए प्रार्थना शुरू करनेसे पहले गाधीजीने सभाके लोगोसे पूछा—)

भाइयो और वहनो,

क्या आप लोग इस पहली शर्तको पूरा करेंगे कि आप अपने मनमें विरोध करनेवालोके खिलाफ कोई गुस्सा या वैर नही रखेंगे और प्रार्थना खत्म होनेतक शाति और खामोशीके साथ एकाग्र मनसे बैठेंगे?

(लोगोने तुरत एक आवाजसे कहा कि हम उस शर्तको पूरा करेंगे। विरोध करनेवाले पूरी प्रार्थनामे चुप रहे। प्रार्थना विना किसी रुकावटके हुई। इसपर गाधीजीने अतमे सबको वधाई दी। गाधीजीने बादमें कहा—)

मुझे एक सिख दोस्तका खत मिला है। उन्होने लिखा है कि वे हमेशा प्रार्थना-सभामे आते है और उसे पसद करते

हैं। वे प्रार्थनाके पीछे रही रवादारीकी[1] भावनाकी तारीफ करते हैं। खास तौरपर उन्होंने मेरी ग्रथ साहव, सुखमणि, जपजी वगैराके बारेमें कही गई बातोंकी तारीफ की हैं। उन्होंने लिखा है कि 'अगर आप भजनावलीमें इकट्ठे किये गये सिख-धर्मग्रथके हिस्सोमेंसे कुछ चुन लें और अपनी प्रार्थना-सभामें रोज पढें, तो इसका सिखोंपर बडा असर पडेगा। मुझे लगता है कि मैं यह बात सारी सिख-जातिकी तरफसे कह सकता हू। वे चुने हुए हिस्से मैं आपके सामने पढकर सुना सकता हू।' मुझे खत लिखनेवाले भाईकी वह बात मजूर है। लेकिन इस बात पर मैं कोई फैसला तभी करूगा, जब मै खुद उन भाईके मुहसे कुछ भजन सुन लू। इसके लिए उन्हे श्री ब्रजकिशनजीसे समय ले लेना चाहिए।

मैंने एक बार यह बात कही थी कि निराश्रितोको रूई, केलिको (छपा हुआ कपडा) और सुइया मिलनी चाहिए, ताकि वे खुद अपने इस्तेमालके लिए रजाइया बना सकें। इससे लाखो रुपए बच सकते हैं और निराश्रितोको आसानीसे ओढनेके कपडे मिल सकते हैं। मेरी इस अपीलके जवाबमें बबईके रूईके व्यापारियोंने लिखा है कि वे ये चीजें देनेके लिए तैयार हैं। इस तरीकेसे निराश्रित खुद अपनी नजरमें ऊचे उठेंगे और वे सुदर सहकारका पहला सबक सीखेंगे। लेकिन दिल्लीमें ही कपडेकी मिलोंकी कमी नही हैं। शहरमें कई मिले चलती हैं, फिर भी मैं बबईकी भेटका स्वागत करता हू, क्योंकि मैं मरजीसे दान देनेवालोपर गैर-जरूरी बोझ नही डालना चाहता। दान देनेवाले जितने ज्यादा होगे, उतना ही निराश्रितो और देशको फायदा होगा। इसलिए मुझे आशा है कि बबईके रूईके व्यापारी जितनी भी गाठें भेज सकेंगे जल्दी-से-जल्दी भेजेंगे। धनी लोगोका ऐसा सहयोग सरकारके बोझको कम करेगा। जब हम आजाद हो गए हैं तब तो हर शख्स अपनी इच्छासे देशकी सरकारके काममें भागीदार बन सकता है, बशर्ते वह आजाद देशके नागरिककी पूरी-पूरी जिम्मेदारियोंको समझकर अपना फर्ज अदा करें।

---

[1] शुभचिंतना।

मुझे इसमे कोई शक नही कि जब रूईकी गाठे आ जायगी, तो मै मिल-मालिकोको रजाइयोके लिए काफी छीट देनेके लिए राजी कर सकूगा। रूईकी गाठोंकी बातपरसे कपडेका कंट्रोल याद आ गया। मेरी रायमे हिंदुस्तानके सारे लोगोके लिए हाथसे काफी खादी तैयार करना सभव है और आसान भी है। इसकी एक शर्त यही है कि देशमे काफी रूई मिल जाय। मै नही जानता कि हिंदुस्तानमे कभी रूईका अकाल पडा हो। हमारे यहा रूईकी तगी हो ही नही सकती, क्योकि हम देशकी जरूरत से हमेशा ज्यादा रूई पैदा करते है। देशके बाहर हजारों-लाखो गाठें भेजी जाती है, फिर भी हिंदुस्तानकी मिलोंके लिए कभी रूईकी कमी नही होती। मै पहले ही इस सचाईकी तरफ आप लोगोका ध्यान खीच चुका हू कि हिंदुस्तानमे हाथसे धुनने, कातने और बुननेके सारे जरूरी औजार मिल सकते है। साथ ही, काम करनेवाले भी बडी भारी तादादमें मौजूद है। इसलिए, मै तो यही कह सकता हू कि लोगोके आलसके सिवा दूसरी कोई ऐसी बात नही है जो उन्हे यह सोचनेपर मजबूर करती हो कि देशमे कपडेकी तगी है। आज देशमें कोई भी कपडेका कट्रोल नही चाहता। न मिले, न मिल-मजदूर और न खरीदार जनता। कट्रोल आलसी लोगोकी फौजको वढाकर देशको बरबाद कर रहे है। ऐसे लोग कोई काम न होनेसे हमेशा दगे-फसादकी जड़ वने रहते है।

अगर निराश्रितोने अपने-आपको फायदेमद कामोमे लगानेका इरादा कर लिया है, तो पहले वे अपने लिए रजाइयां तैयार करेंगे, और वादमे सव औरत और मर्द अपना एक-एक पल कपाससे विनौले निकालने, रूई धुनने, कातने-बुनने वगैरामें खर्च करेंगे। लाखो निराश्रितों-द्वारा इस सहकारी काममे लगाई गई ताकत सारे देशमे विजली-सी पैदा कर देगी। वे लोगोको अपने पीछे चलनेकी और हर फालतू वक्तको ज्यादा अनाज पैदा करने और अपने ही घरोमे खादी बनानेमे खर्च करनेकी प्रेरणा देंगे। यह याद रहे कि अगर गाठें वनानेके वजाय कपास सीधे खेतोसे ही पडोसके कातनेवालोके घर पहुचे, तो एक काम कम हो जायगा, रूई विगड़ेगी नही, धुननेका काम आसान होगा

और गावोमे विनौले भी बच रहेंगे।

लेडी माउटबैटेन मुझसे मिलने आई थी। वह दयाकी देवी बन गई है। वह हमेशा दोनो उपनिवेशोका दौरा किया करती है, अलग-अलग छावनियोमे निराश्रितोसे मिलती है, बीमारो और दु.खियोको देखती है और इस तरह जितना भी ढाढस उन्हें बधा सकती है बधानेकी कोशिश करती है। जब वह कुरुक्षेत्र-छावनी देखने गई, तो उनसे लोगोने पूछा कि गाधीजी कब आएगे। लेडी माउटबैटेनके सामने इतने लोगोने मुझे देखनेकी इच्छा जाहिर की कि उन्हे पूरी उम्मीद हो गई कि मै कुरुक्षेत्र-छावनीका मुआइना करने जरूर जाऊगा। मैने उन्हे यकीन दिलाया कि आपका ऐसी उम्मीद रखना बिलकुल ठीक है। सच पूछा जाय तो मैने पानीपत जानेका बदोबस्त कर लिया है, जहाके हिंदू और मुसलमान दोनो मुझसे मिलनेके लिए बडे उत्सुक है। उसी दौरेमे मैने कुरुक्षेत्रके दौरेको भी शामिल करनेकी बात सोची थी। लेकिन मुझे पता चला कि पानीपतके दौरेमे कुरुक्षेत्र-छावनीको शामिल नही किया जा सकता। इसलिए ए० आई० सी० सी० (अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटी) की अगली मीटिंगके खत्म होनेतक कुरुक्षेत्रका दौरा मुलतवी रखना जरूरी हो गया है। फिर भी मुझे यह सुझाया गया है कि कुरुक्षेत्र-जैसे बडे भारी कैंपमे लाउड स्पीकरका बदोबस्त करना कठिन काम है, लेकिन कैपके लोगोसे रेडियोपर बोलनेमे कोई कठिनाई नही होगी, बशर्ते जरूरी सबध जोडनेवाली मशीन कैंपमे लगा दी जाय। ऐसा बदोबस्त हो जानेपर मै मगल या बुधको कुरुक्षेत्र-छावनीके लोगोको अपनी बात सुना सकूगा और बादमें उनसे मिलने भी जा सकूगा। इसी बीच उम्मीद है कि मै अपना पानीपतका दौरा खत्म कर लूगा।

: १४३ :

मौनवार, ६ नवबर १९४७

(लिखित सदेश)

"मुझे खेद है कि चूकि मुझे कल पानीपत जाना है, इसलिए मुझे आज मौन जल्दी लेना पड़ा, ताकि मै वहा पहुचकर हिंदू और मुसलमानोसे बात कर सकू। मेरी आशा है कि मै कल शामकी प्रार्थनाके समयतक वापस लौट आऊगा और आकर बोल सकूगा। अखबारोमे यह समाचार गलत छपा है कि मै कल कुरुक्षेत्र जा रहा हूं। मैने यह साफ-साफ बताया था कि मेरा इरादा कुरुक्षेत्र जानेका है लेकिन ए० आई० सी० सी० की मीटिंगके समाप्त होनेसे पहले नही। मेरी उम्मीद है कि मै वहाके शरणार्थियोसे बुधके दिन रेडियोपर बोलूगा। समयकी सूचना दे दी जायगी।

कुछ दिनो पीछे दीवाली आ रही है। एक बहन, जो स्वय शरणार्थिन है, लिखती है—

"सविनय निवेदन है कि इस वर्ष दीपावली मनाई जाय या नही? मै इस विषयमें आपके समुख टूटे-फूटे शब्दोमे अपना विचार प्रकट करना चाहती हू। मै भी पाकिस्तान[1]से आई हुई हू। और हमारा भी सब कुछ वहापर नष्ट हो चुका है, परतु फिर भी हमारे हृदयोमें इस बातका महान् हर्ष है कि हम स्वतत्र है और यह दीपावली स्वतत्र हिंदुस्तानकी पहली दीपावली है। अत. इस वर्ष हमे सब कष्टोको भूलकर उत्साह और समारोहके साथ अपनी स्वाधीन मातृभूमिको दीपमालासे अवश्य ही अलकृत करना चाहिए। आपके हम शरणार्थियोके प्रति जो उदार भाव है कि हम दुखित है, इसलिए स्वतत्र भारतकी सब खुशियां हमारे लिए पीछे रख दी जाए इसके लिए हम हृदयसे कोटि कोटि धन्यवाद देते है। अब आप भी सब शरणार्थियोको और यहाके निवासियोको आज्ञा दे कि समस्त इडियामे

---

[1] गुजरांवाला।

दीपमाला अवश्य मनाई जाय और जो लोग समर्थ है, वे शरणार्थियोकी सहायता करे। ईश्वर हमे शक्ति दे कि स्वाधीनताका प्रत्येक त्यौहार हम उत्साहके साथ मनाकर अपनी स्वतत्र माताकी शोभा बढाए।"

यद्यपि मै इस बहन और उन-जैसे दूसरोकी प्रशसा करता हू, लेकिन मै यह कहे बिना नही रह सकता कि वह बहन और दूसरे जो उनके-जैसा विचार रखते है, गलतीपर है। इस बातको हर एक जानता है कि जब किसी घरमे मातम[1] हो जाता है तो जहातक होता है वे लोग किसी मेले-तमाशोमें शरीक नही होते। यह इस बातका एक छोटा-सा नमूना है कि हम सब एक है। कूप-मडूक बनना छोडो तो हिंदुस्तान एक कुटुब बन जाता है, अगर सब बधन गायब हो जाते है तो सारा ससार एक कुटुब बन जाता है, जो वास्तवमें है। इन बधनोको पार न करनेका मतलब यह है कि हम उन सद्भावनाओकी ओरसे, जो मनुष्यको मनुष्य बनाती है, कठोर बन जाते है। हमे अपना ही विचार नही करते रहना चाहिए, नही हमे भावुक बनकर असलियतको भुलाना चाहिए। मै जो खुशी न मनानेकी राय देता हू, उसका मूल कई पक्के विचारोपर निर्भर है। यहा शरणार्थियोकी समस्या हमारे सामने है जिसका प्रभाव लाखो हिंदू, मुसलमान और सिखोपर पड रहा है। इसके अलावा खुराक और कपडेकी कमी, अगरचे यह मनुष्यकी बनाई हुई है, मूल कारण है। उन लोगोकी बेईमानी जो जनताकी रायको निर्माण कर सकते है, पीडितोकी जिद कि अपने कष्टोसे पाठ नही सीखते और इन्सानकी इन्सानके साथ बेरहमी—मै इस मुसीबतमे खुशी मनानेका कोई कारण नही देखता। यदि हम दृढता और अक्लमदीके साथ इस बातका निश्चय कर ले कि हम खुशी नही मनाएगे तो इससे हमें प्रेरणा मिलेगी कि हम अतर्मुख और पवित्र बने। हमें कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे हम उस आशीर्वादको फेंक दें, जिसे

[1] शोक।

हमने इतनी मेहनत और मुसीबतके बाद प्राप्त किया है।

अब मैं अपने उन चंद मित्रोंका जिक्र करना चाहता हूं जो फ्रेंच भारतसे इस सप्ताह मुझसे मिलने आए थे। उनकी यह शिकायत थी कि मैंने चंद्रनगरके सत्याग्रहके संबंधमें जो कुछ कहा था उसका फ्रेंच भारतकी इन भावनाओंको कि वह हिंद यूनियनके नीचे रहते हुए और फ्रेंच संस्कृतिका प्रभाव रखते हुए अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकें, दबानेके लिए गलत इस्तेमाल किया गया है।

उन्होंने मुझे यह भी बताया कि अंग्रेजी राज्यकी तरह फ्रेंच भारतमें भी पंचम स्तंभवाले मौजूद हैं, जो अपने स्वार्थ-साधनके लिए फ्रेंच हकूमतका साथ दे रहे हैं और वहांकी हकूमत लोगोंकी कुदरती भावनाओंको दबानेका प्रयत्न कर रही है। यदि फ्रेंच भारतसे आए हुए मित्रोंका कहना सही है तो मुझे बड़ा दुख है। ताहम,[1] मेरी राय साफ है। छोटे-छोटे विदेशी उपनिवेशोंके रहनेवालोंके लिए यह नामुमकिन है कि उनके करोड़ों देशवासी ब्रिटिश हकूमतसे आजाद हो जाएं और वह गुलाम बने रहें। मुझे आश्चर्य है कि चंद्रनगरकी ओर मेरा जो मित्र-भाव है उसका यह गलत अर्थ किया जाय कि मैं यह कभी बरदाश्त कर सकता हूं कि भारतके इन छोटेसे विदेशी उपनिवेशोंका नीचा दर्जा रहे। इसलिए मेरी यह उम्मीद है कि जो खबर मुझे दी गई है उसकी वास्तवमें कोई बुनियाद नहीं है। और महान् फ्रांसीसी जाति इस बातकी कभी हिमायत न करेगी कि लोगोंको चाहे वह काले हों या भूरे, हिंदमें हों या और कहीं, दबाकर रखा जाय।

---

[1] तथापि।

: १४४ :

१० नवबर १९४७

(आज शामकी प्रार्थनामें गाये गए भजन का ज़िक्र करते हुए गाधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

अगर मीराबाईकी तरह हम सिर्फ भगवानके ही सेवक बन जाय, तो हमारी सारी तकलीफोका खात्मा हो जाय। इसके बाद जो कुछ मैं कहनेवाला हू उसे सुननेपर आप इस सकेतको समझेंगे। आपने अखबारोमें जूनागढके बारेमें सारी बाते पढी होगी। राजकोटसे मेरे पास आए हुए दो तारोसे मुझे सतोप हो गया कि अखबारोमें छपी हुई खबर बिलकुल ठीक है। जूनागढके प्रधान मत्री भूटो साहब और वहाके नवाब साहब कराचीमें है। उप-प्रधान मत्री मेजर हारवे जोन्स जूनागढमें है। जूनागढके हिंदुस्तानी सघमें शामिल होनेके काममें इन सबका हाथ है। इसपरसे आप लोगोको यह नतीजा निकालनेका अधिकार है कि इस काममें कायदे आजम जिनाकी भी सम्मति है। अगर यह ठीक है तो आप इस नतीजेपर पहुच सकते है कि काश्मीर और हैदराबादकी मुश्किलें भी खत्म हो जायगी। और अगर मैं आगे बढू, तो कहूगा कि अब सारी बाते शातिकी तरफ झुकेंगी, दोनो उपनिवेश दोस्त बन जायगे और सारे काम मिल-जुलकर करेंगे। मैं कायदे आज़मके बारेमें गवर्नर जनरलकी हैसियतसे नही सोच रहा हू। गवर्नर जनरलके नाते कायदे आजमको पाकिस्तानके कामोमें दखल देनेका कोई कानूनी हक नही है। इस नाते उनकी वही स्थिति है, जो लॉर्ड माउटबेटनकी है, जो सिर्फ एक वैधानिक गवर्नर जनरल है। लॉर्ड माउटबेटन उस व्यक्तिकी शादीमें शामिल होनेके लिए गए है, जो उनके लिए अपने लडकेसे बढकर है और जिसकी इग्लैंडकी भावी महारानीसे शादी हो रही है। वे अपनी कैबिनेटकी इजाज़त लेकर ही वहा जा सके है, और २४ नवबर १९४७ तक यहा वापस आ जाएगे। इसलिए जिना साहबके बारेमें मेरा खयाल है कि वे

मौजूदा मुस्लिम लीगके बनानेवाले है और उनकी जानकारी और इजाजतके बगैर पाकिस्तानके बारेमे कुछ नही किया जा सकता। इस-लिए मै सोचता हू कि अगर जूनागढके हिंदुस्तानी सघमे शामिल होनेके पीछे जिना साहबका हाथ है, तो यह एक अच्छा शकुन है।

आप लोगोको मै पानीपतके अपने मुआइनेके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। इस मुआइनेमे मौलाना अबुल कलाम आजाद मेरे साथ थे। राजकुमारी भी मेरे साथ जानेवाली थी, मगर वह गवर्नमेंट हाउसमे थी और मै अपनी घडीके मुताबिक साढे दस बजेके बाद नही ठहर सकता था। मुझे खुशी है कि मै पानीपत गया था। वहां मैने अस्पतालमे मुसलमान मरीजोको देखा। उनमेसे कुछको बहुत गहरे घाव लगे है, मगर उन-पर जहातक मुमकिन है, पूरा ध्यान दिया जाता है; क्योकि राज-कुमारीने चार डॉक्टर, नर्से और तबीबी[1] सहायक वहा भेजे है। इसके बाद हम मुसलमानो, मुकामी हिंदुओं और निराश्रितोके नुमाइदोंसे मिले। वहा निराश्रितोकी तादाद २० हजारसे ऊपर बताई जाती है। हमसे कहा गया कि वे रोजाना ज्यादा-ज्यादा तादादमे आते जा रहे है, जिससे वहाके डिप्टी कमिश्नर और पुलिस सुपरिंटेंडेंटको भय मालूम होता है। मुझे यह बतलानेमें खुशी होती है कि इन अफसरोकी हिंदू और मुसलमान दोनो बहुत तारीफ करते है, और निराश्रितोका तो कुछ कहना ही नही। वे तो उनसे सतुष्ट है ही।

म्युनिसिपल भवनके पास जमा हुए निराश्रितोसे भी हम लोग मिल सके। पाकिस्तानमें और पानीपतके अव्यवस्थित जीवनमे निराश्रितोको भयानक मुसीबते उठानी पडी और उठानी पड रही है—उनमेंसे कुछको रेलवे स्टेशनके प्लेटफार्मपर रहना पड़ता है और बहुतोको आसमानके नीचे बिलकुल खुलेमें रहना पड रहा है,—फिर भी उनके मनमे और चेहरोपर जरा भी गुस्सा न देखकर मुझे बडी खुशी हुई। हमारे वहा जानेसे वे लोग बडे प्रसन्न हुए। पानी-पतके डिप्टी कमिश्नर या दूसरे लोगोको पहलेसे सूचना किये बिना इतने

[1] चिकित्सक।

निराश्रितोको पानीपतमे इकट्ठे कर देना मुझे अधिकारियोकी बेरहमी मालूम हुई। पानीपतके अफसरोको निराश्रितोकी सच्ची तादाद तब मालूम हुई जब ट्रेने स्टेशनके प्लेटफार्मपर आकर रुकी। यह सबसे बडी बदकिस्मतीकी बात है। पानीपतके निराश्रितोमे औरतें, बच्चे और बूढे भी है। मुझे यह बताया गया कि निराश्रितोमे ऐसी औरतें भी है, जिन्हे स्टेशनके प्लेटफार्मो पर बच्चे पैदा हुए है।

यह सब पूरबी पजाबमे हो रहा है, जिसके प्रधान मत्री डॉ० गोपीचद है। डॉ० गोपीचद मेरे साथी कार्यकर्ता है। मै उन्हे बहुत मानता हू। मै बरसोसे उन्हे एक योग्य सयोजकके नाते जानता हू, जिनका पजाबियोपर बडा प्रभाव है। उन्होने हरिजन-सेवक-सघ, अखिल भारत-चरखा-सघ और अखिल भारत-ग्रामोद्योग-सघके लिए काफी काम किया है। मुझे यह नही सोचना चाहिए कि पूरबी पजाबका काम उनकी ताकतके बाहर है। लेकिन अगर पानीपत उनकी कार्य-कुश-ताका नमूना हो, तो यह उनकी सरकारके लिए बडी बदनामीकी ।त है। पहलेसे बिना सूचना दिये इतने निराश्रित पानीपतमे क्यो उतारे गए? उन्हें ठहरानेके लिए वहा नाकाफी बदोबस्त क्यो है? अफ-सरोको पहलेसे ही यह सूचना क्यो नही दी जानी चाहिए कि कौन और कितने निराश्रित पानीपत भेजे जा रहे है? उसके साथ ही कल ुझे यह भी सूचना मिली है कि गुडगाव जिलेमे तीन लाख ऐसे मुसल-मान है, जिन्होने डरकर अपना घर-बार छोड दिया है। आम सडकके दोनो तरफ खुलेमे इस आशाने पडे है कि उन्हे अपने औरत-बच्चो और सबंधियोके साथ पजाबकी कडी सर्दीमे ३०० मीलका रास्ता तय करना है। मै इस बातमे विश्वास नही करता। मेरा खयाल है कि मुझे दोस्तोने जो बात सुनाई है उसमे कुछ गलती है। अभी भी मै आशा करता हू कि यह बात गलत है या बढा-चढा-कर कही गई है। लेकिन पानीपतमे मैने जो कुछ देखा, उसमे मेरा यह अविश्वास डिग गया है। फिर भी मुझे आशा है कि डॉ० गोपीचद और उनकी कैबिनेट समय रहते चेत जायगे और तबतक चैन नही लेंगे, जबतक सारे निराश्रितोकी अच्छी देखभालका पूरा इतजाम

नही हो जाता । यह बदोबस्त दूरंदेशी[1] और हद दरजेकी सावधानीसे ही किया जा सकता है।

: १४५ :

११ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल मैंने आपको यह खबर सुनाई थी कि जूनागढके प्रधान मत्री और उप-प्रधान मत्रीकी विनतीपर वहाकी आरजी सरकारने जूनागढ रियासतमे प्रवेश किया है। यह खबर सुनाते हुए मुझे अचरज भी हुआ और खुशी भी हुई, क्योकि जूनागढके लोगोकी और उनके तरफसे लडी जानेवाली लडाईके इतने सुख दिखाई देनेवाले अतकी मैने आशा नही की थी। मैने यह डर भी जाहिर किया था कि अगर जूनागढके अधिकारियोकी विनतीके पीछे कायदे आजम जिनाकी मजूरी न हुई, तो अभीसे खुशी मनाना ठीक न होगा। इसलिए आपको यह जानकर दुख और अचरज हुए बिना न रहेगा कि पाकिस्तानके अधिकारियोने जूनागढकी जनताकी तरफसे आरज़ी सरकारके जूनागढपर अधिकार करनेका विरोध किया है और यह माग की है कि "हिंदुस्तानी फौजे रियासतकी सीमासे हटा ली जाय, जूनागढका राजकाज वहाकी अधिकारी सरकारको सौप दिया जाय और हिंदुस्तानी सघकी जनताद्वारा रियासतपर किये गए हमले और हिंसाको रोका जाय।" उनका यह भी कहना है कि जूनागढके नवाब या वहाके दीवानको हिंदुस्तानी सघके साथ किसी तरहका अस्थायी या स्थायी समझौता करनेका कानूनी हक नही है। पाकिस्तानकी नजरमे हिंद-सरकारने यह कार्रवाई करके "पाकिस्तानकी सीमाको साफ-साफ लाघा है और इस तरह अतरराष्ट्रीय कानून का भग किया है।"

---

[1] दूरदर्शिता।

कल अखबारोमे जो बयान निकले है, उनको देखते हुए इस मामलेमे न तो मुझे अतरराष्ट्रीय कानूनका भग मालूम होता और न यूनियन सरकारकी रियासतपर कब्जा करनेकी कार्रवाई दिखाई देती है। जहातक मै समझ सकता हू, जूनागढकी जनताकी तरफसे वहाकी आरजी हुकूमतने जो आदोलन किया, उसमे मुझे कोई गैर-कानूनी चीज नही दिखाई देती। यह जरूर है कि काठियावाडके राजाओकी विनतीपर सारे काठियावाडकी सलामतीके लिए यूनियन सरकारने अपनी फौजकी मदद भेजी। इसलिए मुझे इस सारी कार्रवाईमें कोई गैर-कानूनीपन नही दिखाई देता। इसके खिलाफ जूनागढके दीवानने जाहिरा तौरपर अपनी राय बदलकर जो कुछ किया वह गैर-कानूनी था। इस सारे मामलेको मै इस नजरसे देखता हूं—जूनागढके नवाब साहबको अपनी प्रजाकी मजूरीके बिना, जिसमें मुझे बताया गया है कि ८५ फीसदी हिंदू है, पाकिस्तानमे शामिल होनेका कोई हक नही था। गिरनारका पवित्र पहाड और उसके सारे मदिर जूनागढका एक हिस्सा है। उसपर हिंदुओने बहुत पैसा खर्च किया है और सारे हिंदुस्तानसे हजारो यात्री गिरनारकी यात्राके लिए वहा जाते है। आजाद हिंदुस्तानमे सारे देशपर जनताका अधिकार है। उसका जरा-सा भी हिस्सा खानगी तौरपर राजाओका नही है। जनताके ट्रस्टी बनकर ही वे अपना दावा कायम रख सकते है, और इसलिए उन्हें अपने हर एक कामके लिए जनताके समर्थनका सबूत पेश करना होगा। यह सच है कि अभी राजा-नवाबोने यह महसूस नही किया है कि वे प्रजाके ट्रस्टी और प्रतिनिधि है और यह भी सच है कि कुछ रियासतोकी जाग्रत प्रजाको छोडकर बाकी रियासती प्रजाने, कुल मिलाकर, अभीतक यह महसूस नही किया है कि अपने राजकी सच्ची मालिक वही है। लेकिन इससे मेरेद्वारा बताए गए उसूलकी[1] कीमत कम नही होती।

इसलिए अगर दो उपनिवेशोमेंसे किसी एकमें शामिल होनेका

---

[1] सिद्धान्त।

किसीको कानूनी हक है, तो वह किसी खास रियासतकी प्रजाको ही है और अगर आरज़ी[1] सरकार किसी भी स्टेजपर जूनागढकी रैयतकी नुमाइंदगी[2] नही करती, तो वह अन्यायसे रियासतपर कब्जा करनेवालोकी टोलीमात्र है और उसे दोनो उपनिवेशोद्वारा निकाल दिया जाना चाहिए। अगर कोई राजा अपनी ज़ाती[3] हैसियतसे किसी उपनिवेशमे शामिल होता है, तो वह उपनिवेश दुनियाके सामने इस चीजको न्यायोचित सावित करनेके लिए खडा नही हो सकता। इस अर्थमे मेरा मत है कि जबतक यह सावित न हो जाय कि जूनागढकी प्रजाने नवावके सघमें शामिल होनेके फैसलेपर अपनी स्वीकृतिकी मोहर लगा दी है, तबतक नवाव साहवका सघमे शामिल होना शुरूसे ही बेबुनियाद है। जूनागढ आखिर किस उपनिवेशमे शामिल हो, इस मामलेमे झगडा खडा होनेपर उसे सिर्फ सारी प्रजाकी रायसे यानी रेफरेंडमके जरिए ही सुलझाया जा सकता है। यह काम ठीक तरहसे किया जाय और उसमें कही भी हिंसाका या हिंसाके दिखावेका उपयोग न किया जाय। पाकिस्तानकी सरकारने और अब जूनागढके प्रधान मत्रीने भी जो रुख अख्तियार किया है, उससे एक अजीव हालत पैदा हो गई है। पाकिस्तान और सघ-सरकारमे से कौन सही और कौन गलत रास्तेपर है इसका फैसला कौन करेगा ? तलवारके जोरसे कोई फैसला करनेकी वात सोची भी नही जा सकती। एकमात्र सम्मानपूर्ण तरीका तो पचोके जरिए फैसला करनेका है। देशमे वहुतसे गैर-तरफदार व्यक्ति मिल सकते है, और अगर सबधित पार्टिया हिंदुस्तानियोको पच मुकर्रर करनेकी वातपर राज़ी न हो सकें, तो कम-से-कम मुझे तो दुनियाके किसी भी हिस्सेके किसी गैर-तरफदार आदमीके चुनावपर कोई एतराज नही होगा।

जो कुछ मैंने जूनागढके वारेमे कहा है, वह काश्मीर और हैदरावादपर भी उसी रूपमे लागू होता है। न तो काश्मीरके महाराजा साहव और न हैदरावादके निजामको अपनी प्रजाकी सम्मतिके

---

[1] तात्कालिक; [2] प्रतिनिधित्व; [3] निजी।

बगैर किसी भी उपनिवेशमे शामिल होनेका अधिकार है। जहातक मै जानता हू, यह बात काश्मीरके मामलेमें साफ कर दी गई थी। अगर अकेले महाराजा सघमें शामिल होना चाहते, तो मै उनके ऐसे कामकी कभी ताईद नही कर सकता था। सघ-सरकार काश्मीरको थोडे समयके लिए सघमे शामिल करनेपर सिर्फ इस वजहसे राजी हुई कि महाराजा, और काश्मीर व जम्मूकी जनताकी नुमाइदगी करनेवाले शेख अब्दुल्ला—दोनो यह बात चाहते थे। शेख अब्दुल्ला इसलिए सामने आये कि वे काश्मीर और जम्मूके सिर्फ मुसलमानोके ही नही बल्कि सारी जनताके नुमाइदे होनेका दावा करते है।

मैने लोगोको यह कानाफूसी करते सुना है कि काश्मीरको दो हिस्सोमें बाटा जा सकता है। इनमेसे जम्मू हिंदुओके हिस्से आएगा और काश्मीर मुसलमानोके हिस्से। मै ऐसी बटी हुई वफादारी और हिंदुस्तानी रियासतोके कई हिस्सोमें बटनेकी कल्पना नही कर सकता। इसलिए मुझे उम्मीद है कि सारा हिंदुस्तान समझदारीसे काम लेगा और कम-से-कम उन लाखो हिंदुस्तानियोके लिए, जो लाचार निराश्रित बननेके लिए बाध्य हुए है, तुरत ही इस गदी हालतको टाला जायगा।

: १४६ :

१२ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज दीवालीका दिन है, इसलिए मै आप सबको बधाई देता हू। हमारे हिंदू सालका यह बहुत बडा दिन है। विक्रम-सवत्‌के मुताबिक नया साल कल गुरुवारसे शुरू होगा। आपको यह समझना चाहिए कि दीवालीका दिन हमेशा रोशनी करके क्यो मनाया जाता है। राम और रावणके बीचकी भारी लड़ाईमें राम भलाईकी ताकतोके प्रतीक

थे और रावण बुराईकी ताकतोका। रामने रावणपर विजय पाई, और इस विजयसे हिंदुस्तानमे रामराज्य कायम हुआ।

लेकिन अफसोस है कि आज हिंदुस्तानमे रामराज्य नही है। इसलिए हम दीवाली कैसे मना सकते है? वही आदमी इस विजयकी खुशी मना सकता है, जिसके दिलमे राम है। क्योकि भगवान ही हमारी आत्मा को रोशनी दे सकता है, और ऐसी ही रोशनी सच्ची रोशनी है। आज जो भजन गाया गया, उसमें कविकी भगवान-को देखनेकी इच्छापर जोर दिया गया है। लोगोकी भीड़ दिखावटी रोशनी देखने जाती है, लेकिन आज हमें जिस रोशनीकी जरूरत है वह तो प्रेमकी रोशनी है। हमारे दिलोमे प्रेमकी रोशनी पैदा होनी चाहिए। तभी सब लोग बधाइया पाने लायक बन सकते है। आज हजारों-लाखो लोग भयानक दुःख भोग रहे है। क्या आप लोगोमेसे हर एक अपने दिलपर हाथ रखकर यह कह सकता है कि हर दुःखी आदमी या औरत—फिर वह हिंदू, सिख या मुसलमान कोई भी हो—मेरा सगा भाई या बहन है? यही आपकी कसौटी है। राम और रावण भलाई और बुराईकी ताकतोके बीच हमेशा चलनेवाली लड़ाईके प्रतीक है। सच्ची रोशनी भीतरसे पैदा होती है।

पडित जवाहरलाल नेहरू जख्मी काश्मीरको देखकर कैसे दुःखी मनसे अभी-अभी लौटे है। वे कल और आज तीसरे पहरकी वर्किंग कमेटीकी बैठकोमे शामिल नही हो सके। वे मेरे लिए बारामूलासे कुछ फूल लाये है। कुदरतकी यह भेट मुझे हमेशा सुदर मालूम होती है। लेकिन आज लूट-पाट और खूरेजीने[1] उस सुहावनी धरतीकी सारी सुदरता बिगाड़ दी है। जवाहरलालजी जम्मू भी गए थे। वहाकी हालत भी बहुत अच्छी नही है।

सरदार पटेलको श्री शामलदास गांधी और ढेबरभाईकी विनती-पर जूनागढ जाना पड़ा, जो उनकी रहनुमाई चाहते थे। जिना साहब और भूटो साहब दोनो नाराज है, क्योकि उन्हें लगता है कि

---

[1] रक्तपात।

हिंद-सरकारने उन्हें धोखा दिया है और वह जूनागढको यूनियनमें शामिल होनेके लिए दवा रही है।

सारे देशमें शांति और सद्भावना कायम करनेके लिए हर एकका यह फर्ज है कि वह अपने दिलसे नफरत और शकको निकाल दे। अगर आप अपनेमें भगवानकी हस्ती[1] महसूस नही करेंगे और अपने सारे छोटे-छोटे आपसी झगडोको नही भूलेंगे, तो काश्मीर या जूनागढकी विजय बेकार साबित होगी। जबतक आप डरके मारे यहासे भागे हुए सारे मुसलमानोको वापस हिंदुस्तान नही लाते, तबतक सच्ची दिवाली नही मनाई जा सकती। अगर पाकिस्तानने वहासे भागे हुए हिंदुओ और सिखोके साथ ऐसा ही नही किया, तो वह भी जिंदा नही रह सकेगा।

(इसके बाद गाधीजीने अपने ब्राडकास्ट-भवन जानेका जिक्र किया, उन्होने रेडियोपर कुरुक्षेत्रके निराश्रितोको सदेश दिया था। कमेटीकी बैठकोके बारेमे गाधीजीने कहा—)

इनके बारेमें जो मुमकिन होगा, कहूगा। मुझे उम्मीद [illegible] साल, जो गुरुवारसे शुरू होनेवाला है, आप और हिंदुस्तान, सुखी रहेंगे और भगवान आपके दिलोको प्रकाशित करेगा, [illegible] आप आपसमें एक दूसरेकी और हिंदुस्तानकी ही नही, बल्कि [illegible] जरिए सारी दुनियाकी सेवा कर सकें।

: १४७ :

१३ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल दिवाली थी और आज नए वर्षका पहला दिन है। मैंने सुना है और कल रातको तो और भी ज्यादा सुना कि दिल्लीमें

---

[1] अस्तित्व।

दिवालीके रोज बहुत रोशनी होती है, जैसी बबईमें होती है और शायद उससे भी ज्यादा होती है। बबईमे तो बहुत बडी रोशनी होती है। लेकिन कल मै यह सुनकर खुश हुआ कि लोग समझ गए है कि आज दिवालीका उत्सव मनानेका दिन है ही नही। मगर तो भी एक भ्रमणा[1] पैदा हो गई है कि दिवालीपर कुछ-न-कुछ बत्तिया तो जलानी ही चाहिए, इसलिए किसी-किसी जगहपर थोडे तेलके दीपक जल रहे थे और बिजलीकी बत्तिया भी थी, लेकिन बहुत कम। मै घरसे बाहर तो कही जाता नही, मगर पता तो चल ही जाता है।

आजसे नया वर्ष आरंभ होता है। मैने कल इशारा तो किया था, लेकिन अच्छा है कि मै आज फिर दुहरा दू। नए वर्षके दिनमे कोई शुभ-चिंतन या कोई शुभ इरादा कर लेते है और पीछे ईश्वरकी कृपा बनी रहे तो सारे वर्षभर उसपर चलनेकी कोशिश करते है। ऐसा अगर हम करे और आज जो फिजा[2] है, वह बदल जाय और हिंदू-मुसलमान सब भाई-भाई बनकर रहते है, तब दूसरी जो दिवाली हमारे सामने आती है, उस वक्त हमे दिये-बत्तिया जलानेका अधिकार हो जाता है। अगर हम एक-दूसरेको दुश्मन मानकर बैठ जाते है तो पीछे कोई काम बनता नही है। इसलिए मैने कहा कि आज तो बाहरकी दिवाली मनानेका अवसर है ही नही। लेकिन दिलमें जो ज्योति होनी चाहिए उसको प्रकट करनेकी कोशिश हमे करनी है। हमारे दिलमें राम विराजमान है और वहा भी युद्ध चलता है राम और रावणके बीचमे। अगर हृदयमे, उसके बाहर नही, रामपर रावणकी जीत होती है तो उसका मतलब है कि हृदयमें ज्योति नही है, अंधेरा है। अगर रामकी रावणपर जय होती है और रावण बेकार हो जाता है या परास्त हो जाता है, तब हमारे भीतर तो ज्योति है ही, बाहर भी दिये-बत्ती जलानेका हमको हक हो जाता है। इसलिए अगर बाहरकी रोशनी भीतरकी ज्योतिका ही नमूना

---

[1] भ्रमधारण; [2] हालत।

है तब तो खैर है और अगर भीतर अधेरा है और बाहर हम दिये-बत्ती जलाते है और ऐसा मान लेते है कि यह तो सब चलता है, तब हम पाखडी और झूठे बनते है। मेरी उम्मीद है कि हम झूठे तो कभी न बने।

मैने कल आपसे कहा था कि काग्रेस-कार्य-समितिकी जो बैठके हो रही है, उस बारेमे कुछ तो मै आपसे कह सकूगा। कल तो समय नही रहा था, क्योकि १५ मिनटसे ज्यादा तो मै लेना नही चाहता। आज कार्यसमितिकी बैठकका तीसरा दिन है और अभी भी वह बैठी हुई है। एक बात तो जो बहुत बडी मुझको आपसे कहनेका अधिकार है, वह यह कि आज तीन दिनसे कांग्रेसके ये लोग, जो कि कार्य-समितिमे है और दूसरे भी जिनको कि आचार्य कृपलानीने विशेष रूपसे बुलाया है, सब बैठे है। यह अच्छी बात है कि सब ऐसा मानते है कि काग्रेसकी, जबसे वह बनी है तबसे, अर्थात् ६० वर्षसे, यही एक नीति रही है कि काग्रेस कोई धर्मका प्रचार करनेवाली सस्था नही है। काग्रेसमे सब धर्मोके माननेवाले है या ऐसा कहो कि सब धर्मियोकी है, इसलिए किसी एक धर्मकी नही है। वह आम लोगोकी सस्था है और जो राज्य-प्रकरण है उसको मद्दे-नजर रखकर ही काग्रेसको चलना है। ऐसे अगर वह चलती है तो पीछे वह धार्मिक सस्था नही रहती। मान लीजिए, राज्य-प्रकरणमे एक चीज यह है कि हमे सबको खाना देना है, तब अगर काग्रेस सच्ची है तो उसे जितने इन्सान यहा रहते है उन सबको खाना देना चाहिए। अगर काग्रेस ऐसा करे कि जो लोग उसके साथ है या ऐसा कहो कि हिंदुओ और सिखोको ही खाना दे, क्योकि वे उसमे बडी तादादमे है और बाकी लोग भूखो मरे और ऐसा कहे कि हमको उनकी क्या पर्वाह पडी है, तब वह कहनेमे तो धार्मिक सस्था होगी, लेकिन असलमें अधर्मकी सस्था बन जायगी। अगर वह यह कहे कि जो लोग इसके पीछे है उनकी सेवा करो और दूसरोको काटो, तो वह कोई धर्म नही, बल्कि धर्मके नामपर अधर्म करना हुआ।

लेकिन अगर मै रामका नाम लेता हू, और कोई दूसरा नाम नही

लेता, तो मुझे कोई कानून उसके लिए मजबूर नही कर सकता। यह बात दूसरी है कि मै खुद अपनेको मजबूर करूं या अपनेको ऐसा बुज-दिल मानू कि अरे, फला आदमी है, उसके हाथमे तलवार है, अगर मैंने ऐसा नही किया तो वह मेरा गला काट देगा। अगर मै बुजदिल नही हू, तो जो यह कहता है कि खबरदार, तू रामका नाम इस जगहपर लेता है, तुझे अल्लाका ही नाम लेना होगा, तब मुझको यह हक होना चाहिए और हक है कि उसको यह कह दू कि मैं अल्लाका नही, रामका ही नाम लूगा। तब वह इतना ही कर सकता है न, कि मेरा गला काटे, तो काट डाले। वह धर्मकी बात हो गई, जिसे हम निजी धर्म या व्यक्तिगत धर्म कहते है। इस धर्मको मिटानेवाली कोई ताकत दुनियामे है ही नही। हा, आदमी अपने आप मिटाना चाहे तो मिट सकता है या तब मिटता है जब दिलमें ज्योति न होकर अधेरा-ही-अधेरा होता है। उस हालतमे उसे अपने दिलसे तो कुछ सूझता नही, किसी दूसरेका सहारा ले लेता है, या कोई दूसरा उसको कहता है कि ऐसे चल, इस वक्त चल, तो वैसे ही वह चलता है, क्योकि वह अंधेरेमे पड़ा हुआ होता है। लेकिन जो आदमी धर्मको पकड़कर बैठा है, वह तो ईश्वरका ही आदेश मानेगा, किसी दूसरेका नहीं। ऐसे ही जब कोई संस्था चलती है और लोगोंकी भलाईके लिए चलती है तो वह चीज सबके लिए लागू हो सकती है जो धर्म-संगत होती है, कोई दूसरी चीज नही। इस तरहसे वह एक अधर्मकी संस्था नही, धर्मकी संस्था बन जाती है। यही राज्य-प्रकरणका मेरी निगाहमें सच्चा अर्थ है और जबसे कांग्रेसका जन्म हुआ है तबसे ही वह ऐसे चली है। इसलिए आपको खुश होना चाहिए, चाहे आप कांग्रेस-में है या नहीं। मै भी तो कांग्रेसमे नहीं हूं, उससे क्या हुआ? आखिर मै कांग्रेसका खिदमतगार रहा हूं, उसकी सेवा की है। तब चवन्नी नहीं देता हूं तो क्या? मुझको अगर प्रेसिडेंट बनना है तो चवन्नी देनी चाहिए, लेकिन वह भी नहीं। ऐसे अगर आप सब मेरी तरहमे हैं तो बड़ी भारी बात है। अगर आपने कांग्रेसके दफ्तरमें रजिस्टर करा लिया है तो भी ठीक है, अगर बाहर है, और फिर भी कांग्रेसके भक्त हैं

और उसकी सेवा करते है तो भी ठीक है। तीन दिनसे मैं कांग्रेस-कार्य-समितिमें बैठा हूं। उसमें इख्तलाफ[1] राय है और काफी है। आखिर वे इन्सान है, कोई पत्थर तो है नही, एक एक बात कहता है तो दूसरा दूसरी। विचारका विरोध तो हो सकता है, लेकिन आचारमें विरोध नहीं होना चाहिए। इसलिए इस विचार-विरोधमें ही उन्होंने तीन दिन काटे। लेकिन इतना तो सब चाहते हैं कि कांग्रेस जैसी आज-तक रही है, ऐसी ही रहनी चाहिए। ऐसा करनेमें अगर वह मिट भी जाती है, तो मिट जाय। मिट तो नहीं सकती, हा,-अल्पमतमें हो सकती है, और आज वह बहुमतमें है, इसमें मुझको तो शक है। क्योंकि अगर वह बहुमतमें होती तो हिंदुस्तानमें जो पाकिस्तान-जैसी चीज बनी, बननी नहीं चाहिए थी। यहा हिंदुस्तानमें मुसलमानोंपर कितनी ज्यादतिया हुई है, उनके मै तो आपको बहुतसे उदाहरण बता सकता हू, लेकिन मैं क्या बताऊ? मुझसे ज्यादा आप खुद जानते हैं। पाकिस्तानमें हिंदू और सिखोंपर क्या कम ज्यादतिया हुई है, इस बातको छोड दो। यह देखना हमारा काम नहीं है। दुनियाके दूसरे लोग धर्मका पालन नहीं करते, इसलिए क्या मैं भी अपने धर्मका पालन न करूं? इसलिए कांग्रेसको जो उसका मौलिक धर्म है, उसपर कायम रहना है, चाहे वह बहुमतमें रहे या अल्पमतमें। उसी निगाहसे वह अपना प्रस्ताव बना रही है। वह सीधी और सच्ची तरहसे बात करना चाहती है। तब सच्ची बात और क्या हो सकती है सिवा इसके, कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहासे बाहर नही भेजना चाहते। मुसलमान भले है या बुरे है, यह बात इसमें नहीं आती। क्या हम ऐसा कहते है कि हिंदुस्तानमें सब फरिश्ते[2] ही रह सकते है, या फरिश्ते भी न सही, तो क्या जो अच्छे और भले लोग है, केवल वही रह सकते है, तब क्या हिंदुओ और सिखोंमें कोई बुरे या बदमाश आदमी है ही नहीं और अगर है तो उनको आप क्या कहेंगे? क्या यह कहोगे कि यहांसे चले जाओ,

---

[1] भिन्नता; [2] देवदूत।

नही तो तलवारसे गला कट जायगा। किसी आदमीको बदमाश मानने या उसका गला काटनेका आपको कोई हक नही है। हमने मुसलमानो-पर ज्यादतिया की। रोज-ब-रोज मेरे पास ऐसी चीजे आती रहती है, उनमें अतिशयोक्ति हो सकती है, लेकिन आखिर निचोड में यही पाता हू कि वे सब सच्ची बाते है। काग्रेसकी तरफसे जब कोई चीज की जाती है तो फिर काग्रेस महासमितिको बुलाना पडता है। कांग्रेसका आम अधिवेशन तो वर्षमें एक बार हुआ करता है। वह तो एक तमाशा-सा होता है, क्योकि वह इतना हजूम[1] होता है कि कोई आदमी ठीक तरहसे सोच भी नही सकता। लेकिन वे लोग जानते है कि काग्रेसकी जो महासमिति बनी है, वह सब सोच-विचारकर ठीक काम ही करती है, इसलिए वे सब उसपर दस्तखत दे देते है। सो काग्रेस महासमिति हमेशा तैयार रहती है और वह परसो यहा मिलनेवाली है। उसके सामने जो कुछ सामान रखना है वह आपकी इस कार्यसमितिको ही रखना है। वह काग्रेस महासमितिकी नौकर है। अगर वह कोई चीज बनाकर उनके सामने नही रखती है तो पीछे वे कह सकते है कि तुमने अच्छा काम नही किया है और तब उसको इस्तीफा देना पडता है। काग्रेस महासमिति कार्य-समितिको बना सकती है और मिटा भी सकती है। अगर वह कार्य-समितिकी चीजको बहाल न करे या उसमे कोई बडी तब्दीली[2] कर दे तब भी उसको इस्तीफा देना चाहिए। इसलिए कार्य-समिति कहती है कि हम जो कुछ करना चाहते है वह आपके नामसे ही करना है। अगर अपने नामसे ही वह कुछ कहती है तो उसका उतना असर नही होता। क्योकि १५ आदमी जमा होकर यह कहते है कि किसी मुसलमानको कत्ल नही करना है तो १५ आद-मियोके माननेसे क्या हुआ? अगर महासमितिके नामसे कहते है तो उसका असर बहुत बढता है। इसलिए तीन दिनसे मै तो काग्रेस-कार्यसमिति-को यही सलाह दे रहा हू कि वह बिलकुल साफ-साफ कह दे कि हमको यही करना है। लोग इसमें राजी रहते है या नाराज, इसकी हम

---

[1] भीड़; [2] परिवर्तन।

कोई फिक्र न करे। अगर हम कांग्रेसके सच्चे सेवक है तो हमको यही करना चाहिए। अगर कांग्रेस महासमिति उसको फेंकना चाहे तो फेंक दे। आखिर हमको जगतके सामने खड़ा होना है और पाकिस्तानको भी। हम बहुत-सी बातें इसलिए करते है कि हमको जगत क्या कहेगा। मैं तो कहता हू कि जिस बातको आप सच मानते है वही करे और पीछे जगत भी उसको सच ही कहेगा। जो पच कहता है वह परमेश्वरकी आवाज होती है, ऐसा कहते है। जो जगत है, वह पचके समान है। इसलिए जो जगत कहता है, वही सही तरीकेसे ईश्वरका न्याय है।

आज कार्यसमिति बैठी हुई है और कल भी बैठनेवाली है। मेरी तो यही प्रार्थना है कि वह कांग्रेस महासमितिके सामने ऐसा प्रस्ताव रखे जिससे हिंदुस्तानकी जय हो और सब लोग यहा आरामसे रह सकें। इसके यह मानी नही है कि जो देशद्रोही हो उनको भी हम कुछ न कहें। लेकिन हम किसीको देशद्रोही मानकर ही न बैठ जाय। अगर कोई वास्तवमें देशद्रोही सिद्ध होता है तो उसको चाहे कत्ल कर दो, फासीपर चढा दो, गोली मार दो। पर मुसलमान वफादार हो नही सकता और केवल हिंदू व सिखोंने ही वफादारीका इजारा ले लिया है, तो मैं कहता हू कि यह बडी गुनाहकी बात होगी। कांग्रेस तो ऐसा काम नही करेगी, मुझको ऐसा पूरा विश्वास है। आप भी यही प्रार्थना करे कि कांग्रेस जो हिदायत करे उससे हम भी ऊचे जाय, सारा हिंदुस्तान ऊचा जाय और उसके साथ दूसरे हिस्सोंको भी ऊचा जाना है। कांग्रेस हिंदुस्तानको ऊचा उठानेके लिए ही बनी है, लेकिन कांग्रेस किसीसे कुछ छीनकर या किसीका धन लूटकर ऊचे नही जाना चाहती। सारे जगतके लिए कांग्रेस मरेगी, मगर वह किसीको मारेगी नही। मैं कांग्रेसमें आया तबसे ही नही, कई वर्षोंसे कांग्रेसका यह उद्देश्य रहा है। कांग्रेसने हमेशा इस बातकी कोशिश की है कि यूरोपसे जो लोग धन लूटनेके लिए इधर आते है, वह लूट बद हो, ताकि एशिया और अफ्रीकाके लोग चैनसे रह सकें। यह काम करनेके लिए ही हिंदुस्तानको जिंदा रहना है और

इसी कामके लिए हिंदुस्तानकी आजादी है, किसी दूसरे कामके लिए नहीं है।

: १४८ :

१४ नवबर १९४७

(आज शामके भजनको ही गाधीजीने अपनी चर्चाका विषय बनाते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

जब मै आगाखान महलमे, जिसे मुझे, देवी सरोजिनी नायडू, मीराबेन और महादेवभाईको बद रखनेके लिए कैदखानेका रूप दे दिया गया था, उपवास कर रहा था, तब इस भजनने मुझपर अपना अधिकार कर लिया था। यहा मै उपवासके कारणोमे नही जाना चाहता।

उसके बारेमे मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि उन २१ दिनोतक मै जो टिका रहा, उसकी वजह वह पानी नही था, जो मैं पीता था, न वह सतरेका रस ही था जो कुछ दिनोतक मैने लिया था, जो मेरी गैरमामूली डाक्टरी देखरेख हो रही थी, वह भी उसका कारण नही थी, मगर मैने अपने भगवानको, जिसे मै राम कहता हू, अपने दिलमे बसा रखा था, उसी वजहसे मै टिका रहा। मै इस भजन-की लकीरोपर इतना मोहित था कि मैने सबधित लोगोसे कहा कि वे तारके जरिए इसके ठीक-ठीक शब्द भेजे, जिन्हें मै उस वक्त भूल गया था। मुझे जवाबी तारसे जब वह पूरा भजन मिला तो बडी खुशी हुई। भजनका भाव यह है कि रामनाम ही सब कुछ है और उसके सामने दूसरे देवताओका कोई महत्व नही है। अपने जीवनकी यह उपदेश भरी कहानी मै आप लोगोको इसलिए सुनाना चाहता हू कि अगले दिन यानी शनिवारको नई दिल्लीमें ए० आई० सी० सी० का जो महत्वपूर्ण अधिवेशन होनेवाला है, उसमे उसके मेंबर अपने दिलोमें

भगवानको रखकर सारे विचार और सारी चर्चाए करे। यह उन्हे करना ही होगा, क्योकि वे काग्रेसियोके नुमाइदे है। और इसलिए अगर उनके मुखिया काग्रेसी अपने दिलोमे भगवानके बजाय शैतानको रखते है, तो वे अपने नमकके प्रति इन्साफ नही करते।

ए० आई० सी० सी० के सामने रखे जानेवाले प्रस्तावोपर वर्किंग कमेटीने पूरे तीन घटोतक चर्चा की। चर्चामे यह सवाल उठा कि किस तरह ऐसा वातावरण तैयार किया जाय जिससे सारे हिंदू और सिख निराश्रित इज्जत और हिफाजतके साथ पश्चिमी पजाबमे अपने-अपने घरोको लौटाये जा सके। वे इस नतीजेपर पहुचे कि बुराई पाकिस्तानसे ही शुरू हुई, मगर उन्होने यह भी महसूस किया कि जब बडे पैमानेपर उस बुराईकी नकल की गई और हिंदुओ और सिखोने पूरबी पजाब और उसके नजदीकके यूनियनके हिस्सोमें भयकर बदले लिये, तो बुराईकी शुरूआत करनेका वह सवाल फीका पड गया। अगर ए० आई० सी० सी० विश्वासके साथ यह कह सकती कि जहातक यूनियनका ताल्लुक है, पागलपनके दिन बीत गए और यूनियनके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सब लोग समझदार बन गए है, तो कमेटी पूरे विश्वास-के साथ यह भी कह सकती थी कि पाकिस्तान डोमिनियनको हिंदू और सिख निराश्रितोको इज्जत और पूरी हिफाजतके साथ अपने यहा वापस बुलानेके लिए लाचार होना पडेगा। यह हालत सिर्फ तभी पैदा की जा सकती है जब आप लोग और दूसरे हिंदू और सिख रावण या शैतानके बदले राम यानी भगवानको अपने दिलोमे स्थापित करे। क्योकि जब आप शैतानको अपने दिलोसे हटा देगे और मौजूदा पागलपनको छोड देगे, तब हर एक मुसलमान बच्चा भी यहा उतनी ही आजादीसे घूम-फिर सकेगा, जितनी आजादीसे एक हिंदू या सिखका बच्चा घूमता है। इसमे मुझे कोई शक नही है कि तब जो मुसलमान निराश्रित लाचार होकर अपने घर छोड गए है, वे खुशीसे लौटेंगे और तब हर एक हिंदू और सिख निराश्रितके हिफाजत और इज्जतके साथ पाकिस्तानमे अपने घर लौटनेका रास्ता साफ हो जायगा।

०

क्या मेरे शब्द आप लोगोके दिलोंमे गूज सकेंगे और ए० आई० सी० सी० समझदारी और इन्साफभरा फैसला कर सकेगी ?

: १४६ :

१५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मैं महसूस करता हू कि आप लोग स्वभावत यह उम्मीद करेंगे कि दोपहरको ए० आई० सी० सी० की बैठकमे मैंने जो कुछ कहा है वह आप लोगोको बतलाऊ। मगर मेरी उसे दोहरानेकी इच्छा नही होती। दर असल मैंने वहापर वही बात कही थी, जो मै आप लोगोको इतने दिनोसे कहता रहा हू। अगर मुझे पूरी ईमानदारीसे राष्ट्रका पिता कहा जाता है, तो सिर्फ इसी अर्थमे सच है कि सन् १९१५ मे मेरे दक्खिन अफ्रीकासे लौटनेके बाद काग्रेसका जो स्वरूप बना, उसके बनानेमे मेरा बडा हाथ था। इसका मतलब यह है कि देशपर मेरा बडा असर था। मगर आज मैं ऐसे असरका दावा नही कर सकता। इससे मुझे चिंता नही है, कम-से-कम वह होनी नही चाहिए। सबको सिर्फ अपना फर्ज अदा करना चाहिए और नतीजेको भगवानके हाथोमे छोड देना चाहिए। भगवानकी मर्जीके बगैर कुछ भी नही होता। हमारा फर्ज सिर्फ कोशिश करना है। इसलिए मैं तो ए० आई० सी० सी०की बैठकोमें इस फर्जको ध्यानमे रखकर गया था कि अगर बैठककी कार्रवाई शुरू होनेसे पहले मेम्बरोसे कुछ कहनेकी मुझे इजाजत मिल गई, तो मैं उनके सामने वह बात रख दू जिसे मै सच मानता हू।

आप लोगोसे मै कट्रोलके बारेमें कुछ कहना चाहता हू। ए० आई० सी० सी०की बैठकमे चूकि मै मौजूदा अहमियत[1] रखनेवाले दूसरे

---

[1] महत्त्व।

मामलोपर ज्यादा देरतक बोला, इसलिए कट्रोलके विषयका सिर्फ इशाराभर कर सका।

मै महसूस करता हू कि कट्रोल रखना गुनाह है। कट्रोलका तरीका लडाईके दिनोमे अच्छा रहा होगा। एक फौजी देशके लिए वह आज भी अच्छा हो सकता है। मगर हिंदुस्तानके लिए वह नुकसानदेह है। मुझे विश्वास है कि देशमे अनाज या कपडेकी कोई कमी नही है। इस साल बरसातने हमे धोखा नही दिया है। हमारे देशमें काफी कपास है और चरखे और करघेपर काम करनेवाले काफी लोग है। इसके अलावा, देशमें मिले है। इसलिए मुझे लगता है कि ये दोनो कट्रोल बुरे है। हमारे यहा दूसरे कट्रोल भी है, जैसे पेट्रोल, शक्कर वगैराका कट्रोल। इन चीजोपर कट्रोल रखनेमे मै कोई मौजू[1] कारण नही देखता। इससे लोग आलसी और पराधीन बनते है। आलस और पराधीनता देशके लिए किसी भी दिन बुरी चीजे है। इन कट्रोलोके बारेमे मेरे पास रोजाना शिकायतें आती है। मुझे उम्मीद है कि देशके नुमाइदे समझदारी-भरा फैसला करेंगे और सरकारको इन घूसखोरी, पाखड और काले बाजारको बढावा देनेवाले कट्रोलोको हटानेकी सलाह देगे।

: १५० :

१६ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज शामको गाये गए भजनमे कहा गया है कि इन्सानका बडे-से-बडा उद्योग भगवानको पानेकी कोशिश करनेमे है। वह मदिरो, मूर्तियो या इन्सानके हाथो बनाई हुई पूजाकी जगहोमे नही मिल सकता और न उसे व्रतो और उपवासोके जरिए ही पाया जा सकता है। ईश्वर सिर्फ प्यारके जरिए मिल सकता है, और वह प्यार लौकिक नही अलौकिक

---

[1] उचित।

होना चाहिए। मीराबाई, जो हर चीजमें भगवानको देखती थी, ऐसे प्यारकी जिंदगी बिताती थी। उनके लिए भगवान ही सब कुछ था।

रामपुर स्टेटके शासक मुसलमान हैं, मगर इसका यह मतलब नहीं है कि वह एक मुस्लिम स्टेट है। कई साल पहले मरहूम[1] अलीभाई मुझे वहा ले गए थे और मैं वहा उनके घरमें ठहरा था। मुझे उस वक्तके नवाब साहबसे भी मिलनेका मौका मिला था। क्योंकि वे उस जमानेके मशहूर राष्ट्रीय मुसलमान मरहूम हकीम साहब अजमलखान और मरहूम डॉक्टर असारीके दोस्त थे। तब वहा हिंदू और मुसलमान आजके बनिस्बत ज्यादा शाति और मेल-जोलसे रहते थे। मगर पिछले इतवारको जो हिंदू दोस्त वहासे मुझे मिलनेके लिए आए थे, उन्होंने दूसरी ही कहानी सुनाई। उन्होंने कहा कि अगरचे वह स्टेट हिंदुस्तानी सघमें शामिल हो गई है, फिर भी मुस्लिम लीगका छल-कपटभरा असर वहां है। अगर वही एक रुकावट होती, तो उसपर आसानीसे काबू पाया जा सकता था। मगर वहां हिंदू महासभा भी है, जिसे राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके आदमियोसे मदद मिलती है, जिनकी इच्छा यह है कि सारे मुसलमानोको हिंदुस्तानी सघसे निकाल दिया जाय।

सवाल यह है कि जो कांग्रेस-जन अपने काग्रेसके मकसदके प्रति वफादार है, वे अपनी हालत कैसे अच्छी बनावें? क्या वे कामयाबीकी आशासे सत्याग्रह कर सकते हैं? यह जानकर उन लोगोको खुशी हुई कि काग्रेस महासमिति काग्रेसके मकसदपर मजबूतीसे जमी हुई है और ऐसे हिंदुस्तानके बननेसे इन्कार करती है, जिसमें सिर्फ हिंदू ही मालिको-जैसे रह सकें। काग्रेसके उसूल और मकसद इतने उदार हैं कि उसमे देशकी सारी जातिया शामिल हो जाती हैं। उसमे ओछी साम्प्रदायिकताके लिए कोई जगह नही है। वह सियासी सस्थाओमें सबसे पुरानी है। लोगोकी सेवा ही उसका एकमात्र आदर्श है। ए० आई० सी० सी० मे जो कुछ हो रहा है, उससे उन्हे अपनी लड़ाईके लिए बल

[1] स्वर्गीय।

मिला है। फिर भी, इसके बारेमें वे मेरी राय चाहते थे। मैंने कहा कि मैं आपके वहाकी हालत नही जानता, इसलिए कोई नियम तो नही बना सकता। न मुझे उन सब बातोका अध्ययन करनेका समय है। लेकिन इतना तो मैं विश्वासके साथ कह सकता हू कि सत्याग्रह दुनियामे सबसे बडी ताकत है, जिसके सामने आपका बताया हुआ विरोधी सगठन लबे समयतक टिक नही सकता।

आजकल हथियारबद या दूसरी तरहके किसी भी विरोधको सत्याग्रहका नाम देना एक फैशन-सा हो गया है। इससे समाजको नुक-सान होता है। इसलिए अगर आप लोग सत्याग्रहके पूरे अर्थको समझ ले और यह जान लें कि सत्य और प्रेमके रूपमें जीता-जागता भग-वान सत्याग्रहीके साथ रहता है, तो आपको यह माननेमे कोई हिच-किचाहट नही होगी कि सत्याग्रहपर कोई विजय नही पा सकता। हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके बारेमें मुझे जो कहना पडा है उसका मुझे दु ख है। मुझे अपनी गलती जानकर खुशी होगी। मैं राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके मुखियासे मिला हू। मै इस सघकी एक बैठकमे भी शामिल हुआ था। तबसे मुझे उसकी बैठकमे जानेके लिए डाटा जाता रहा है और मेरे पास राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके बारेमें शिकायतोके कई खत आए हैं।

हालाकि हम सब अपने देशमे साम्प्रदायिक झगडेकी आगको बुझाने-मे लगे हैं, तो भी हमे हिंदुस्तानके बाहर रहनेवाले अपने भाइयोको नही भूलना चाहिए। आप जानते है कि सयुक्त-राष्ट्र-सघके सामने हमारा हिंदुस्तानी प्रतिनिधि-मडल दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोके अधि-कारोके लिए कितनी बहादुरी और एकतासे लड रहा है। आप सब श्रीमती विजयलक्ष्मी पडितको जानते हैं। वह हिंदुस्तानी नुमाइदा-मडलकी मुखिया इसलिए नही हैं कि पडित जवाहरलालकी बहन हैं, बल्कि इसलिए हैं कि वह इसके लायक है और अपना काम होशियारीसे करती है। उनके साथ बडे अच्छे-अच्छे लोग है और वे सब एक रायसे वहा बोलते है। मुझे सबसे बडी खुशी जफरुल्ला साहब और इस्पहानी साहबके भाषणोसे हुई, जो आजके अखबारोमे छपे

है। उन्होने सयुक्त राष्ट्र-सघके लोगोके सामने साफ-साफ शब्दोंमे यह कह दिया कि दक्षिण अफ्रीकामें हिंदुस्तानियोके साथ वही वरताव नही किया जाता जो गोरोके साथ किया जाता है। वहा उनकी वेइज्जती की जाती है और उनके साथ अछूतोकी तरह वरताव करके उनका वहिष्कार किया जाता है। यह सच है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानी कगाल और भूखे नही है। लेकिन आदमी सिर्फ रोटीसे ही नही जी सकता। मानव-अधिकारोके सामने पैसा कोई चीज नही है। और ये हक दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार हिंदुस्तानियोको नही देती। हिंदुस्तानके हिंदू और मुसलमान विदेशोमें रहनेवाले हिंदुस्तानियोके सवालोपर दो-राय नही है, जो यह सावित करता है कि दो राष्ट्रोका उसूल गलत है। इससे मैने जो सवक सीखा है, और आप लोगोको मेरे कहनेसे जो सवक सीखना चाहिए, वह यह है कि दुनियामे प्रेम सवसे ऊची चीज है। अगर हिंदुस्तानके वाहर हिंदू और मुसलमान एक आवाजसे बोल सकते है, तो यहा भी वे जरूर ऐसा कर सकते है, बशर्ते उनके दिलोमे प्रेम हो। गलती इन्सानसे होती ही है। लेकिन वह चाहे तो अपनी गलतियोको सुधार भी सकता है। यह भी इन्सानके स्वभावमें है। माफ करना और भूल जाना हमेशा संभव है। अगर आज हम ऐसा कर सके और वाहरकी तरह हिंदुस्तानमे भी एक आवाजसे वोल सके, तो हम आजकी मुसीवतोंसे पार हो जायंगे। जहा-तक दक्षिण अफ्रीकाका सवध है, मुझे आशा है कि वहाकी सरकार और वहाके गोरे उस वातसे फायदा उठाएगे जो इस मामलेमें मशहूर हिंदू और मुसलमान एक रायसे साफ-साफ़ कह रहे है।

: १५१ :

मंगलवार, १७ नवबर १९४७

(लिखित सदेश)

कल मैं रामपुर और अपने उन भाइयोके वारेमे वोला था जो

दक्षिणी अफ्रीकामे हूं । मुझे लगता है कि आज मुझे इस विषयपर ज्यादा खुलकर कहना चाहिए। मैं १८९३ से १९१३ तक, २० साल दक्षिण अफ्रीकामें रहा हू । उस लबे अर्सेमें, जब कि मेरा जीवन घुल रहा था, शायद एक ही साल छूटा होगा, मैं हिंदुस्तानियोके साथ ही गहरे सबधमें नही आया, बल्कि उन सफेद लोगोके साथ भी, जो कि इस बडे देशमे आकर बस गए हैं। तबसे अबतक अगर दक्षिण अफ्रीका आगे बढा है तो हिंदुस्तानने दिन दुगुनी और रात चौगुनी तरक्की की है। जो कल नामुमकिन मालूम होता था वह आज हो गया है। इसके कारणोमे जानेकी आवश्यकता नही। हकीकत यह है कि हिंदुस्तान बर्तानवी[1] कामनवेल्थ (राष्ट्रसमूह) में आ गया है, याने इसका दर्जा वही है जो दक्षिणी अफ्रीकाका। क्या एक उपनिवेशके लोगोको दूसरे उपनिवेशमें गुलाम माना जाना चाहिए? एक एशियाई कौम बर्तानवी राष्ट्रसमूहके इतिहासमें पहली दफा सब सदस्योकी मर्जीसे शामिल होती है। अब देखिए कि आरेजियाकी हकूमत या वहाके डाक्टर एस० पी० बर्नार्डने हिंदुस्तानके बर्तानवी राष्ट्रसमूहमें दाखलेके पाच दिन बाद डरबनकी नेटाल इडियन काग्रेसको क्या सदेश भेजा। उन्होने लिखा—"क्योकि आप नए उपनिवेशकी नई आजादी मना रहे हैं जो आपके नजदीक हिंदुस्तानके इतिहासमें एक बडा दिन है, इसलिए मैं आशा करता हू कि दक्षिणी अफ्रीकाके सब हिंदुस्तानी अपने आप नए उपनिवेशमें चले जायंगे और वहा जाकर उस सदेश का प्रचार करेंगे जो उन्हे दक्षिणी अफ्रीकामें दिया गया है, याने शाति और अनुशासनसे रहना और उन मजहबी झगडोसे बचना जिनकी वजहसे आज हिंदुस्तानमे हजारो मारे जा रहे हैं।" यह बात खास देखनेकी है। साफ जाहिर है कि डाक्टर बर्नार्डको इसमे शक है कि यह दाखिला एक बडा दिन था और फिर वह नेटाल कांग्रेसको बिन-मागी सलाह देते है कि दक्षिणी अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोको हिंदुस्तान चला जाना

---

[1] ब्रिटिश।

चाहिए और उस संदेशका प्रचार करना चाहिए जो उन्होंने दक्षिणी अफ्रीकामें सीखा है, याने शांति और जब्तसे रहना और मजहबी दंगोंमें न पडना। मुझे बहुत डर है कि दक्षिणी अफ्रीकाका आम सफेद आदमी इसी तरह सोचता है, इसलिए हमारे देशवालोंके रास्तेमें तरह-तरहके अडंगे लगाए जाते हैं। उनका दोष यही है कि वे एशियाके हैं और उनका रंग काला है।

दक्षिणी अफ्रीकाके सबसे आला पश्चिमी लोगोंसे मैं प्रार्थना करता हूं कि वे अपने इस तास्सुबपर[1] फिरसे सोचें जो उन्हें एशिया और काले रंगके बरखिलाफ बनाता है। उनके बीचमें हब्शियोंकी बहुत बड़ी आबादी पड़ी है। कुछ लिहाजसे उनके साथ बर्ताव एशियावालोंके साथके बर्तावसे भी बदतर है। मैं उन यूरोपियनोंसे, जो वहां जाकर बस गए हैं, जोरसे कहूंगा कि वे जमानेको पहचानें। या तो यह तास्सुब हर लिहाजसे गलत है या अंग्रेजोंने और बर्तानियाके बड़े राष्ट्रसमूहके दूसरे सदस्योंने एशियाई कौमोंको सदस्य बनाकर ऐसी गलती की है, जो माफ नहीं की जा सकती। बर्मा आजाद होनेको है और लंका भी राष्ट्रसमूहका जल्द सदस्य बन जायगा। इसका मतलब क्या है?

मुझे सिखाया जाता है कि राष्ट्रसमूहका सदस्य होना अगर आजादीसे ज्यादा अच्छा नहीं तो कम-से-कम उसके बराबर है। इन आजाद हकूमतोंके जिम्मेदार मर्द और औरतोंको इस बातपर खूब सोचना होगा कि आजादी लेनेके बाद वे क्या करेंगे। आज बहुत-सी आजाद हकूमतें बनानेका आंदोलन चल रहा है। यह ठीक और अच्छी चीज है, लेकिन क्या इसका अंत यह होगा कि एक और लड़ाई होगी जो पिछली दो लडाइयोंसे, अगर मुमकिन हुआ तो, ज्यादा खतरनाक होगी, या इसका नतीजा यह होगा, जैसा कि होना चाहिए, कि मनुष्य-जातिका भाई-चारा बढ़ेगा? एक उपनिषदका श्लोक है—"मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है।" सियाने

---

[1] पक्षपात पर।

आदमियोका तजर्बा इसकी सचाईकी गवाही देता है। इस तरह दुनिया वैसी ही बनेगी जैसी कि उसके सयाने आदमी सोचते है। एक फालतू विचार कोई विचार नही होता। अगर हम ऐसा कहे कि दुनिया मूढ जनताकी चाहके मुताबिक बनेगी तो बडी भूल होगी। वह कभी सोच नही सकती—वह तो भीडकी तरह पीछे ही चलती है। आजादीका मतलब होना चाहिए लोक-राज। लोक-राजका अर्थ है कि हर शख्सको वृद्धि पानेका मौका मिले। वृद्धिका अर्थ केवल जानकारीसे अलग है। दक्षिण अफ्रीकामें जैसे योग्य सिपाही है वैसे ही अच्छे किसान भी है। उसी तरह वहा बहुतसे बुद्धिमान स्त्री और पुरुष भी है। अगर वे लोग अपने खा जानेवाले वातावरणसे ऊचे न उठें और अगर उन्होने इस समस्यापर कि सफेद लोग सबसे ऊचे है अपने देशको ठीक रास्ता नही दिखाया तो दुनियाके लिए बडे दुखकी बात होगी। क्या यह खेल खेलते-खेलते लोग थक नही गए ?

मै आपको थोडी देर और रोकूगा, ताकि कट्रोलके बारेमें आपसे कहू जिसपर आज खूब बहस हो रही है। क्या उन पडितोके शोरमे, जो दावा करते है कि कट्रोलके फायदोके बारेमें वे सब कुछ जानते है, जनताकी आवाजकी कोई सुनवाई नही होनी चाहिए ? कितना अच्छा हो कि हमारे मत्री जो कि जनतामेसे चुने गए है और जनताके है, जनताकी आवाज सुने, बजाय उन दफ्तरी घिस-घिसके माहिरोंकी[1] जिनके बारेमे वे खूब जानते है कि उन्होने सिविल नाफरमानीके वक्त उन्हें खूब नुकसान पहुचाया था। तब इन पडितोने पूरी कटाईसे हुकूमत की। क्या आज भी उन्हे ऐसा ही करना चाहिए ? क्या लोगोंको कोई मौका नही दिया जायगा कि वे अपनी गलतियोसे सीखें ? क्य मत्री यह नही जानते कि उन नमूनोमेसे जो मै नीचे दे रहा (इतना ध्यान रहे कि उनमें सब कट्रोलमे आ जाते है) अग किसी एक उदाहरणमे कट्रोल हटानेसे जनताको नुकसान पहुचे वे इतनी ताकत रखते है कि उसपर फिरसे कट्रोल लगा दे ?

---

[1] तज्ञ।

कंट्रोलोंकी जो फेहरिस्त मेरे सामने है उससे मेरे-जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। मैं तो केवल इतना ही कहता हू कि अगर कंट्रोलोके साइन्स नामकी कोई चीज है तो उसको ठढे दिलसे जांचना होगा। इसके बाद लोगोको इस बातकी तालीम देनी होगी कि सब चीजोंपर कंट्रोलका क्या मतलब है और खास-खास चीजो-पर कंट्रोलका क्या अर्थ है। जो फेहरिस्त मुझे मिली है उसमेसे ऐसे ही कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूं—एक्सचेजपर, रुपया लगानेपर, केपिटल, इश्योरेंस, बैंकोकी शाखाए खोलनेपर, इश्योरेंसमे पैसा लगानेपर, मुल्कसे बाहर जाने और अंदर आनेवाली हर किस्मकी चीजोपर, अनाजपर, चीनीपर, गुड, गन्ने और शर्बतपर, वनस्पतिपर, पेट्रोल और मिट्टीके तेलपर, सीमेंटपर, फौलादपर, अभ्रकपर, कोयले-पर, चीजोके इधर-उधर ढोनेपर, मशीनरी लगाने और फैक्टरी खोलनेपर, कुछ सूबोमें मोटरे बेचनेपर, चायकी खेतीपर, कपड़ेपर, जिनमे गरम कपड़े भी शामिल है, पावरपर, अल्कोहलपर, कागजपर।

: १५२ :

१८ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोने तो वे सब प्रस्ताव पढे ही होगे जो अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटीमे पास हो गए है। उनमे काफी प्रस्ताव तो ऐसे है जो हमारे जीवनमे—और जीवनके बड़े हिस्सेमे, ऐसा कहो—हर एक आदमीके कामके है। वे ऐसे नही है जिनपर सिर्फ हकूमतको अमल करना है। उनपर जवाहरलाल, राजेंद्रप्रसाद—अब तो राजेंद्रबाबू निकल गए—और दूसरोको भी अमल करना है, जैसे कि कंट्रोल। खानेपर, पहननेपर, हर चीजपर जिनपर कंट्रोल है उन्हें अमल करना है। ऐसे ही हमको भी करना है। अगर हम दगाबाजी करे और कानूनकी पाबदी न करे तो इसका नतीजा खतरनाक होगा। जब हम एक

गज कपडेसे काम चला सकते है तो क्यों दस गज जमा कर रखे और सोचें कि ले तो ले, घरमें पडा ही रहेगा? जब हम ऐसे बन जायगे कि हम अपना ही देखे और हिंदुस्तानके न हो तो हम बद-माश हो जायगे।

अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीके अभीके प्रस्ताव ऐसे है कि मै चाहता था कि एक-एक प्रस्ताव सबको समझाऊ। अभी तो यही हू, मौका मिल गया तो सुना दूगा। लेकिन उनका क्या मतलब है यह तो आज कह दू। जो लोग डरके मारे घर छोडकर दूसरी जगह चले गए है उनको फिर उनके घरोमें बसानेका जो प्रस्ताव है वह हर एक आदमीपर लागू होता है। हम कन्याकुमारीसे लेकर काश्मीरतक जितने रहनेवाले है वे सब हिंदुस्तानके है। हिंदुस्तानके दो टुकडे हो गए तो क्या, हम सब भाई-भाई है, इसलिए हम सबपर जिम्मेदारी आ जाती है। अगर एक ही आदमी अपना पेट भरता जाता है और गरीबीकी परवाह नही करता है, चाहे वह स्वादके लिए ही खाता हो, तो वह चोरी करता है और हिंदुस्तानका गुनहगार बन जाता है। हिंदुस्तानको जितना अनाज चाहिए उतना उसके पास नही है तो क्या हुआ? गरीबोको भी तो अनाज मिलना ही चाहिए। धनी लोगोको अगर एक, दो, चार व छ: छटाक मिले और तो भी वे उसीसे ही गुजर करें तब तो मै समझूगा कि धनी और गरीब सब एक हो गए। दूसरोको छोडकर मै जिस धनीके घर पडा हू उसकी बात तो कहू। आप मुझसे पूछे कि घनश्यामदासको उनका जितना हिस्सा मिलता है, क्या उतनेसे ही उनका गुजर हो जाता है, तो मै कहूगा कि नही होता। आखिर मुझे सच्ची बात तो कहना ही है। वह धनवान है तो उन्हें हर तरहसे सब मिल जाता है। मुझको पता नही चलता कि जितने लोग यहा आते है उन्हे दूध मिलता है या नही। मुझको दूध मिल जाता है, वह कहासे आता है, कैसे आता है यह मै थोडे देखता हू। एक बकरी रखो, दो बकरी रखो; वह महात्मा है न, तो उसे दूध दो, जितना गेहू चाहिए उतना अच्छा-से-अच्छा गेहू दो, क्योकि वह महात्मा है न! मै यह थोड़े पूछता हू कि यह

कहासे आता है—महात्माको भाजी चाहिए तो भाजी दो, फल चाहिए तो फल दो। कार्य-समितिके जितने सदस्य आते है उनको कुछ तो देना ही है तो फलका रस दो। करोडोकी जायदाद लेकर बैठे है। ये तो धनी लोगोके हाल है। यह सब करोड़पतियोको मिल सकता है। लेकिन तब भी वे भूखे रहें तभी तो कुछ हो सकता है, नही तो गरीब कहासे लाए? धनी लोग तथा जो तिजारत करते है वे अनुचित मुनाफा न ले और सच्चे व्यापारी बनें। वे मुनाफा लें; लेकिन कितना? जितना पेट भरनेको चाहिए उतना ही ले। अगर सब एक ही तरह मुनाफा ले तो फिर क्या! अनाजपर कट्रोल क्या? कोई कट्रोल नही चाहिए। इसी तरहसे सब हो जाय तो अच्छा है।

आला दर्जेकी चीज यह है कि हम तबतक शातिसे नही बैठ सकते जबतक सब शरणार्थी अपने-अपने घर नही लौट जाते। मुसलमान आया तो उसको काट डाले; वह पाकिस्तानसे डरके मारे जायदाद छोड़कर भागकर आया है, इसलिए यहासे उसे हटा दे, ऐसा करना पागलपन है। अब तो अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीने हुक्म दिया है कि जो भाई जहा पडे है उनको वही रखना है और आरामसे रखना है और जो लोग खुशीसे घर लौटना चाहते है उन्हे लौटाना है। लोग खूबसूरत घर छोडकर आ गए, लखपति, करोडपति सैकड़ों और हजारो थे वे घरबार छोडकर आ गए, लेकिन जो बेचारे गरीब थे वे तो अब भी पड़े हुए है। मै आज तो सब सुनाना नही चाहता, लेकिन हमारा फर्ज क्या है, वह हमारा प्रस्ताव बताता है। वही आला दर्जेकी चीज है। वे जो मुसलमान रहते है वे निकम्मे है, ऐसा मानकर बैठे तो वह बडा गुनाह हो जाता है। यह सबका परमधर्म हो जाता है कि हम किसीको न निकाले। तीन-चार दिन पहले कार्य-समितिका प्रस्ताव भी लोगोने देखा और अखबारोमें जो इशारा आया था उसे भी देखा। तो भी मुसलमान जा रहे है। लोग कहते है कि तुमने जोर दिया तो काग्रेस महासमितिने उसे मान लिया। उन्हे—मुसलमानोको—तो यहांसे चला ही जाना चाहिए, नही तो वे मारे जाएगे। लोग पूछते है कि क्या तुम उन्हें मरने दोगे? मैं क्या करूगा, यह

तो मैंने बता दिया है; मै करूगा या मरूगा। जब मैं मरनेको तैयार हू तो अगर मुसलमानोको मरना पडे तो वे भी मरें। वे जाडेके दिनोमें ३०० मील चलकर जाए, हम ऐसे निष्ठुर बन गए है! लोग कहते है कि कैपोमे ज्यादा आदमी नही मरते हैं—रोज दस-बीस मरते हैं। अब अगर मानो कि पाच हजार, दस हजार, पचास हजारमें इतने मरे तो इस हिसाबसे हिंदुस्तानमें कितने मरते है, क्या इसकी परवाह नही कि वे कैसे मरते है? किसीको खाना नही मिलता, किसीको हैजा हो जाता है, किसीको पेचिश हो जाती है, किसीको कुछ हो जाता है, इस तरहसे वे मरते है। लेकिन क्यो मरते है, क्या इसकी किसीको परवाह है? हम परवाह करते है कि हमारे लिए खाना है कि नही और सब कुछ है कि नही। हम देखते रहते है कि जहासे मुसलमान भाग गया वहा हिंदू और सिखको बसाना है। हा, हर जगह तो ऐसा हुआ नही, तो भी हुआ तो है। इससे मुझको बहुत दुःख पहुचा और मैंने कई बार आप लोगोको बताया भी है। अब तो काग्रेस महासमितिने भी कह दिया कि ऐसा जो हुआ है वह बहुत बुरा हुआ। यह बात करोडोतक पहुचाना है तो यह एक दिनमें तो हो नही सकता। हुकूमतमें बडे-बडे पडे है—जवाहर, सरदार, राजेंद्रबाबू, लेकिन अब तो राजेंद्रबाबू नही रहे—उनको क्या नाखुश करना! इसलिए कह दिया कि हा, करेगे। मैंने सुना है कि अब तो काग्रेसमैन भी ऐसे ही बन गए है कि वे समझते है कि यहा अब मुसलमानोको रहना ही नही चाहिए। वे समझते है कि तभी हिंदू-धर्मका भला हो सकता है, हिंदू-धर्म ऊचा जा सकता है। लेकिन वे जानते नही है कि दिन-ब-दिन हिंदू-धर्म नीचे जा रहा है। अगर वे दिलको नही बदलते है तो यह बहुत खतरनाक बात है। काग्रेस-कमेटीमे जितने प्रतिनिधि आए है वे सारे हिंदुस्तानके प्रतिनिधि है। वे अगर सब एक ही दिलके हैं, और होना चाहिए, तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदल जायगी। उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दूसरा होने ही नही देंगे। हिंदुस्तानसे जितने चले गए हैं, उनको किस तरह लाय यही उनका बडा काम है। हम तबतक परेशान रहेंगे जबतक हिंदुस्तानसे जितने मुसलमान

गए हैं उन्हें यहां ले न आएं। ऐसा वातावरण पैदा करना है और यह मुश्किल काम नही है। यह तो खूबीकी बात है कि यहा अभी ३।। करोड मुसलमान हैं—कोई जानता नही है कि कितने गए और कितने आनेवाले है। मान लो कि जितने गए है वे सब आ गए तो वे अपने घरमे रहे, उनका घर पडा है, उसमे हमको कोई खर्च तो करना नही पड़ेगा। उनका जो घर है वह हम दे दे, इतना ही हमारा काम है। लेकिन सब घर खाली कहा है? उनमे तो शरणार्थी घुस गए हैं। तो भी उनको बसाना तो होगा ही। अगर हम ऊटपटाग बाते कर लेते है, लेकिन दिल साफ नही रखते तो बाहरवाले कहेगे कि जो हिंदुस्तानके नुमाइदे आये थे वे क्या ऐसे खोटे थे? मै समझता हू कि वे ऐसे नही है। वे दिन चले गए जब हम गुस्सा रखते थे कि वे चले जाए। आज हम सबको भाई-भाई समझते है।

मै समझ लू कि दिल्लीके लोग अच्छे हो गए हैं, गुडगावके लोग अच्छे हो गए है। मै हालहीमे जब पानीपत गया था तब वहा सब ठीक रहते थे, लेकिन अब सुनता हू कि वहा जो शरणार्थी आए है वे मुसलमानोके घरमे चले गए है और अब मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है। वे कह सकते है कि हम खुशीसे पाकिस्तान तो जाना नही चाहते, क्योकि वहा खीर या पकवान तो पडा नही है, पहननेको अच्छा कपड़ा भी नही है और यह हो भी कैसे सकता है, जैसे हम यहा है वैसे वे वहा है। और आखिर वहा बहुत इतजाम है और यहा नही, ऐसी बात तो है नही। वहा जो गए हैं वे लिखते है कि अगर हम हिंदुस्तानमे रहते तो अच्छा था। अब घरबार छोड दिया—कैंपोमे पडे है, बडे परेशान है। ऐसा तो होगा ही। तो फिर क्या वजह है कि पानीपतके मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है? अगर ऐसी बात है तो पानीपत मेरे लिए कसौटी बन जाती है और मुझे भी शायद वहा जाना पड जाय। वह यहासे ५० मील दूर-पर तो है। वह दूर नही कहा जा सकता, वह दिल्ली ही-जैसा है। अब अगर वहाके एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पड़ेगा तो मुझे चुभेगा और आपको भी चुभेगा। हां, जब वे . . . उन्हे

जो पैसा मिलता है उसका खाना भी मिलना चाहिए। वे मेहनती है—कमाते हैं और खाते है। अगर पैसे दे दे और खाना न मिले तब फिर कैसे रहेगे ? अगर ऐसे कारीगरको जो भाई-भाई बनकर रहते है, जाना पडे, क्योकि वहा पजाबसे दूसरे भाई आ गए है, तो इससे और खराब चीज कोई हो ही नही सकती। पानीपतमें जितने शरणार्थी पडे हैं उनसे मै कहूगा कि वे मुसलमानोका घर छोड दें और मुसलमान भी कहें कि हम रहेगे—हिफाजतके लिए हमे पुलिसकी जरूरत नही है, हम आपसमें रहेगे। पुलिसका यही काम रहे कि जितना अनाज आए उसे सबको दें, कपडा सबको दे, इससे ज्यादा काम करनेकी जरूरत नही। तब मै कहूगा कि काग्रेस महासमितिने जो किया है वह अच्छा किया है और हम भी उसके साथ है। हम सब चाहे चार आनेके सदस्य हों या नही, काग्रेसका अदब करते हैं। इतने दिनोतक जिस सस्थाने देशकी सेवा की है तो आज भी, जब कि खिलाफ वातावरणमें जान-बूझकर जो चीज वह कह रही है उसकी ताईद करे और अमलमें लाए ? बस, आज मै इतना ही कहूगा।

: १५३ :

१६ नवबर १६४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मैने हिंदू-मुस्लिम-सबधोके बारेमें पास किये गए ए० आई० सी० सी०के खास ठहरावका जिक्र किया था। लेकिन आज ही मुझे मिसाल देकर आपसे यह कहना पडता है कि दिल्लीमें उस ठहरावको कैसे बेकार बनाया जा रहा है। मुझे इस बातकी कल्पना भी नही थी कि जिस शामको मै जनताके बरतावके बारेमें अपना शक जाहिर कर रहा हू, उसी शामको पुरानी दिल्लीके केंद्रमें उसे सच साबित करके दिखाया जायगा। कल रात मुझसे कहा गया कि चादनी चौककी एक मुसलमानकी दुकानके सामने हिंदुओ

और सिखोंकी बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई थी। वह दुकान थी तो मुसलमानकी लेकिन उसका मालिक उसे छोडकर चला गया था। वह इस शर्तपर एक निराश्रितको दी गई थी कि मालिकके लौट आनेपर उसे दुकान छोड़ देनी होगी। खुशीकी बात है कि दुकानका मालिक लौट आया। वह हमेशाके लिए अपना व्यापार नही छोडना चाहता था। जिस अफसरके हाथमे यह काम था, वह दुकानमें रहनेवाले निराश्रितके पास गया और उसे असल मालिकके लिए दुकान खाली कर देनेको कहा। पहले तो वह निराश्रित कुछ हिचकिचाया, लेकिन वादमे उसने कहा कि आप जब शामको दुकानका कब्जा लेनेके लिए आएगे, तो मै जरूर खाली कर दूगा। अफसर जब शामको दुकान-पर लौटा, तो उसे पता चला कि वहा रहनेवाले निराश्रितने दुकानका कब्जा उसके मालिकको सौंपनेके वजाय अपने साथियो और दोस्तोको इस बातकी सूचना कर दी, जो, कहा जाता है कि वहा धमकी दिखाने-के लिए इकट्ठे हो गए थे। चांदनी चौकके थोडेसे पुलिसवाले उस भीड़को कावूमे न रख सके। इसलिए उन्होने ज्यादा मदद बुलाई। पुलिस या फौजके सिपाही आए और उन्होने हवामें गोली चलाई। डरी हुई भीड बिखर तो गई, लेकिन साथ ही एक राहगीरको छुरेसे घायल भी करती गई। तकदीरसे वह घाव जानलेवा साबित न हुआ। लेकिन फिसादी लोगोके प्रदर्शनका अजीव नतीजा हुआ! वह दुकान खाली नही की गई। मै नही जानता कि आखिरमें उस अफ-सरके आदेशको ठुकरा दिया गया या इस वक्ततक वह दुकान खाली कर दी गई है। फिर भी, मुझे आशा है कि हिंदुस्तानको जो वहुमूल्य आजादी मिली है, उसमे अगर सरकारी सत्ताको सच्ची सत्ता बने रहना है, तो वह अपराधीको अपराधकी सजा दिये बिना न रहेगी। वर्ना सरकारकी सत्ता सत्ता ही न रह जायगी। मुझसे कहा गया है कि हिंदुओ और सिखोकी वह भीड दो हजारसे कम न रही होगी।

यह खबर जिस तरह मुझे मिली, उसे कुछ कम करके ही मैंने सुनाया है। अगर फिर भी उसमें सुधारकी कोई गुजाइश हुई और वह मेरे ध्यानमे लाई गई, तो मै खुशीसे आपको बता दूगा।

यही सब कुछ नही है। दिल्लीके दूसरे हिस्सेमें मुसलमानोको अपने घरोसे जबरन निकालनेकी कोशिश की जा रही है, ताकि वहा हिंदू और सिख निराश्रितोको जगह दी जा सके। इसका तरीका यह है कि सिख लोग अपनी तलवारें म्यानसे निकालकर घुमाते है और मुसलमानोको अपने घर न छोडनेपर भयानक बदला लेनेकी धमकी देकर डराते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि सिख शराब पीते है, जिसके नतीजोका आसानीसे अदाजा लगाया जा सकता है। वे नगी तलवारें लेकर नाचते है, जिससे रास्ता चलनेवाले लोग डर जाते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि चादनी चौकमे और उसके आसपास यह रिवाज है कि मुसलमान कबाब या गोश्तकी बनी दूसरी खानेकी चीजे नही बेचते, लेकिन सिख और शायद दूसरे निराश्रित भी बद की हुई ये चीजे वहा आजादीमे बेचते है। इससे उस मोहल्लेके हिंदुओको बडा दु ख होता है। यह बुराई यहातक बढ गई है कि लोगोंको चादनी चौकमें खडी भीड़मेसे निकलना मुश्किल मालूम होता है। उन्हें डर लगता है कि कही उनके साथ बुरा या असभ्य बरताव न किया जाय। मै अपने निराश्रित दोस्तोसे अपील करता हू कि वे अपने खातिर और अपने देशके खातिर इस तरहकी बातें न करें।

कृपाणोंके बारेमे थोडे समयके लिए यह कानून बना दिया गया है कि सिख एक खास नापसे बडी कृपाण नही रख सकते। इस पाबदीके दरमियान बहुतसे सिख दोस्त मेरे पास आते है और मुझसे कहते है कि मै अपना असर डालकर एक खास नापसे बडी कृपाण रखनेपर लगाई पाबदीको हटानेकी कोशिश करू। उन्होने कुछ साल पहले दिया हुआ, प्रिवी कौंसिलका वह फैसला मुझे कह सुनाया जिसमे कहा गया है कि कोई सिख किसी भी नापकी कृपाण अपने साथ रख सकता है। मैंने वह फैसला नही पढा है। मै समझता हू कि जजोने कृपाणका अर्थ किसी भी नापकी 'तलवार' लगाया है। उस समयकी पजाब-सरकारने प्रिवी कौंसिलके फैसलेपर अमल करनेके लिए यह ऐलान किया कि हर आदमी तलवार रख सकता है। इसलिए पजाबमें कोई भी आदमी किसी भी नापकी तलवार रख सकता है।

मुझे पंजाब-सरकार या सिखोकी इस बातसे कोई हमदर्दी नही है। कुछ सिख दोस्तोने मेरे सामने ग्रंथ साहबके ऐसे हिस्से पेश किये है, जो मेरी इस रायका समर्थन करते है कि कृपाण बेगुनाहोपर हमला करने या किसी भी तरह इस्तेमाल करनेका हथियार नही है। सिर्फ ग्रथ साहबके आदेशोको माननेवाला सिख ही विरले मौकोपर बेगुनाह औरतो, मासूम बच्चो, बूढे और दूसरे असहाय लोगोकी रक्षाके लिए कृपाणका उपयोग कर सकता है। इसी कारणसे एक सिख सवा लाख विरोधियोके बराबर माना जाता है। इसलिए जो सिख नशा करता है, जुआ खेलता है और दूसरी बुराइयोका शिकार है, उसे पवित्रता और सयमके धार्मिक प्रतीक कृपाणको रखनेका कोई हक नही है, जो सिर्फ बताए हुए ढग और मौकोपर ही काममे लाई जा सकती है।

मेरी रायमे कृपाणके मनमाने उपयोगको सही साबित करनेके लिए प्रिवी कौंसिलके गए-गुजरे फैसलोकी मदद चाहना बेकार और नुकसानदेह भी है। हम हालमे ही गुलामीके बधनसे छूटे है। आजादीकी हालतमे सारी अच्छी पाबदियोको तोडना बिलकुल गैर मुनासिब है। क्योकि उनके बिना समाज आगे नही बढ सकता। इसलिए मै अपने सिख दोस्तोसे कहूगा कि वे किसी भी ऐसे काममे, जिसके सही और मुनासिब होनेमे शक हो, कृपाणका उपयोग करके महान् सिख-पथके नामपर धब्बा न लगावे। जिस पथको ऐसे कई शहीदोने, जिनकी बहादुरीपर सारी दुनियाको गर्व है, बनाया उसे वे मिटा न दे।

मै एक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खीचना चाहता हू। मुझे एक छावनीकी कहानी सुनाई गई, जिसमे फौजपर असभ्य बरतावका इलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता और सफाईका नमूना होना चाहिए। इसकी रक्षाके लिए दोनोको एक-दूसरेसे बढकर कोशिश करनी चाहिए। इसलिए मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गई है, वह कानून और व्यवस्थाके इन रक्षकोपर आम तौरपर लागू नही की जा सकती—वह एक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहले आजादीकी

चमक और उत्साह महसूस करना चाहिए। उनके बारेमे लोगोको यह कहनेका मौका न मिले कि ऊपरसे लादे हुए भयानक सयम और पाबदियोमे ही उनसे अच्छा बरताव कराया जा सकता है। उन्हें अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना है कि वे भी दूसरोकी तरह हिंदुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक हो सकते हैं। अगर ये कानूनके रक्षक ही कानूनको ठुकराएगे, तब तो राज चलाना भी नामुमकिन हो सकता है। और अखिल भारत-काग्रेस कमेटीके ठहरावोको ठीक तरहसे अमलमे लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

तस्वीरका धुधला पहलू बतानेके बाद अब मै आप लोगोको उसका चमकीला पहलू भी खुशीसे बताऊगा। मुझे आदर्श बहादुरीकी एक आखोदेखी कहानीका जो वर्णन मिला है, वह मै आपको सुनाता हू।

"मीर मकबूल शेरवानी बारामूलामें नेशनल कान्फरेंसका एक नौजवान बहादुर नेता था। उसने अभी तीसवें बरसमे प्रवेश ही किया था।

"यह जानकर कि वह नेशनल कान्फरेसका बडा नेता है, हमलावरोने उसे निशात टॉकीजके पास दो खभोसे बाध दिया। पहले उन्होने उसे पीटा और बादमे कहा कि वह नेशनल कान्फरेस और उसके नेता शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाको छोड दे। उन्होने शेरवानीसे कहा कि वह आजाद काश्मीरकी आरज़ी हकूमतकी, जिसका हेडक्वार्टर पालन्द्रीमें है, वफादारीकी सौगध ले।

"शेरवानीने मजबूतीसे नेशनल कान्फरेसको छोडनेसे इन्कार कर दिया। हमलावरोसे साफ कह दिया कि शेरे काश्मीर अब राजके प्रधान मत्री है। हिंदुस्तानी सबकी फौज काश्मीरमे आ पहुची है और वह थोडे ही दिनोमे हमलावरोको काश्मीरसे निकाल बाहर करेगी।"

"यह सुनकर हमलावर गुस्सा हुए और डर गए। और उन्होने १४ गोलियोसे उसका शरीर छलनी बना डाला। उन्होने उसकी नाक काट ली, उसके चेहरेको बिगाड़ दिया, और उसके शरीरपर एक इश्तहार लगा दिया, जिसपर लिखा था—'यह गद्दार है। इसका नाम शेरवानी है। सारे गद्दारोका यही हाल किया जायगा।'

"मगर इस बेरहमीभरे खून और आतकके बाद ४८ घटोके भीतर ही शेरवानीकी भविष्यवाणी सच साबित हुई। हमलावर घबड़ाकर बारा-मूलासे भागे और हिंदुस्तानी फौजने जोरोसे उनका पीछा किया।"

यह ऐसी शहादत है जिसपर कोई भी अभिमान कर सकता है, फिर वह हिंदू, सिख, मुसलमान या दूसरा कोई भी क्यो न हो।

एक दोस्तने मुझे फख्रकी एक ऐसी मिसाल सुनाई है, जिसका तेज दु खदायी परिस्थितियोमे भी कम नही होता, और दोस्तीका ऐसा उदाहरण बताया है, जो कडे-से-कडे वक्तमे भी खरी उतरती है। यह नारायणसिह नामके एक पुराने अफसरकी कहानी है। उन्होने पच्छिमी पजाबमे अपनी बहुत बड़ी मिल्कियत खो दी है। अब वह दिल्लीमे है। उनके पास कुछ भी नही बचा है। इसलिए या तो उन्हें अब भीख मागनेपर लाचार होना पडे या मौतका शिकार होना पडे। वह अपने एक पुराने दोस्तसे मिले, जिसे वह अपने साथ दु.खी नही होने देना चाहते थे, क्योकि अपनेपर आए हुए दुर्भाग्यकी उन्हे बिलकुल परवाह नही थी। वह सिख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अली-शाहसे मिलकर बेहद खुश हुए। अलीशाह भी अपना सब कुछ खो बैठे है। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नही, बल्कि किसी और कारणसे बदकिस्मतीके शिकार हुए है। वह भी नारायणसिहकी तरह ही बहादुर है, और दोनोको एक-दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनो अपनी पच्चीस सालकी जुदाईके बाद जब मिले, तो इतने खुश हुए कि अपने दुर्भाग्यको भूल गए।

: १५४ :

२० नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक ही शख्सकी तरफसे दो चिट्ठे मिली है, जिनमेसे एकमे लिखनेवाले भाईने कहा है कि उन्होने अपनी नौकरी छोड़ दी है और

वे मेरे मातहत काम करना चाहते है। दूसरी चिटमे उन्होने प्रार्थनामें एक भजन गानेकी अपनी इच्छा जाहिर की है। उनकी पहली इच्छाके बारेमें मुझे कहना पडता है कि उन्होने अपनी नौकरी छोडकर गलती की है। यह सच है कि अंग्रेजी हुकूमतके दिनोमे मैंने लोगोको सरकारसे असहयोग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब ऐसी बात नही है। अगर कोई आदमी चाहे, तो वह अपनी रोजी कमानेके लिए कहीपर नौकरी करते हुए भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमानेवाले शख्स, अगर वह ईमानदारीसे और किसी भी किस्मकी हिंसा किये बगैर ऐसा करता है, देशसेवा ही करता है। लेखकको यह भी महसूस करना चाहिए कि मेरे पास उनके लिए कुछ काम नही है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते है, तो उन्हे उस गोशालामें अपनी सेवाए देनी चाहिए जिसका मै अभी जिक्र करूगा।

प्रार्थनामे भजन गानेके बारेमे तो यह है कि हर किसीको उसमें गाने नही दिया जा सकता। सिर्फ वे ही लोग पहलेसे इजाजत लेकर गा सकते है, जो भगवानके सेवक कहे जाते है।

(इसके बाद गाधीजीने सुचेतादेवी और उनके साथी कार्यकर्ताओके साथ किये गए ओखला छावनीके अपने मुआइनेका जिक्र किया। उन्होने कहा—)

उस छावनीकी तारीफके लायक सफाईको देखकर मुझे खुशी हुई। वहापर जगह-जगह यात्रियोके लिए धर्मशालाए बनी है, जो मेलोके वक्त वहा आते है। ये मेले एक निश्चित समयके बाद वहा भरते रहते है। ये धर्मशालाए अब निराश्रितोके काममे लाई जाती है। वहा पानीकी कुछ दिक्कत है, जिसे अधिकारी लोग दूर करनेकी कोशिश कर रहे है। इसमें मुझे कोई शक नही कि आज वहा जितने निराश्रित है उनसे कही ज्यादा निराश्रितोको, अगर पानी पुरानेकी गारटी दी जा सके, उस जगहमें आसरा दिया जा सकता है।

जब मै निराश्रितोके बारेमे बोल रहा हू, तब कुछ ऐसे दोषोके बारेमें उनका ध्यान खीचना चाहूगा जो मुझे बताए गए है। मुझसे यह कहा गया है कि निराश्रितोमे आपसमे ही काला बाजार चल रहा है। जिन अफसरोके जिम्मे निराश्रितोकी देखभालका काम है, वे भी

दोषी वताए जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोंके हाथमें छावनियोंका इतजाम है, उन्हें घूस दिये विना वहां जगह पाना मुमकिन नही है। दूसरी तरहसे भी उनका वरताव दोषसे परे नही माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नही हो सकते, लेकिन एक पापी सारी नावको डुवो देता है।

इसके वाद मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग छोटी-मोटी चोरिया भी करते हैं। मैं उनसे पूरी ईमानदारी और खरे वरतावकी आशा रखता हूं। मुझे यह रिपोर्ट दी गई है कि निराश्रितोंको जाड़ेसे वचनेके लिए जो रजाइयां दी जाती हैं, उनमेंसे कुछ चीर दी जाती हैं, उनकी रूई फेंक दी जाती है और छीटके कमीज वगैरा वना लिये जाते हैं। मुझे इसी तरहकी दूसरी वहुत-सी वातें वताई गई हैं, लेकिन मैं निराश्रितोके सारे वुरे कामोका वर्णन करके आपका वक्त नही वरवाद करना चाहता। मैं आज शामके विपयपर जल्दी ही आना चाहता हूं।

दिल्लीकी किशनगज नामकी वस्तीमे एक गोशालाका सालाना जलसा हो रहा है। कल आचार्य कृपलानी उस जलसेके सभापति वनने-वाले हैं और मुझपर यह जोर डाला गया कि मैं कम-से-कम १० मिनटके लिए तो भी जलसेमें जाऊ। मुझे लगा कि मुझे किसी जलसे या उत्सवमें सिर्फ शोभाके लिए नही जाना चाहिए। १० मिनटमे न तो वहां मैं कुछ कर सकता हूं और न देख सकता हूं। और, मै सांप्रदायिक सवालोंमें ही इतना उलझा रहता हूं कि मुझे दूसरी वातोंकी तरफ ध्यान देनेका समय नही मिलता। इसलिए मैंने अपनी मजवूरी जाहिर की। जलसेका इतजाम करनेवाले लोगोने मेरी लाचारीको महसूस करके मुझे माफ कर दिया और कहा कि अगर आप गोसेवाके वारेमें—खास कर गोशालाओं-के वारेमें—अपनी वात प्रार्थना-सभामे कह देंगे, तो हमें संतोप हो जायगा। मैंने उनकी यह वात खुशीसे मान ली। मै साफ शब्दोमें यह कह चुका हूं कि हिंदुस्तानके पशु-धनको संभालने व वढानेका काम और गाय और उसकी सतानके साथ उचित वरताव करनेका काम सियासी[1]

---

[1] राजनीतिक।

: १५५ :

२१ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै आप लोगोके सामने अपना भाषण दे रहा हूं, तब शायद जिस गोशालाके बारेमें मैंने कल शामको आपसे कुछ कहा था, उसका सालाना जलसा अभी हो रहा है। मैं एक बात कहना चाहूंगा। कल शामके अपने भाषणोंमें मैंने फौजियोंके लिए हिंदुस्तानमे चलाई जानेवाली विभिन्न डेरियोका जिक्र नही किया था। डॉ० राजेंद्रप्रसाद-ने मुझे बतलाया है कि वे डेरियां अभी भी चल रही है। बरसों पहले मै बंगलोरकी सेंट्रल डेरी देखने गया था। तब कर्नल स्मिथकी देख-रेखमे वह चल रही थी। मैंने वहा कुछ सुदर ढोर देखे थे। उनमें एक इनाम पाई हुई गाय थी। वे लोग मानते थे कि एशियाभरमें वह सबसे अच्छी गाय है। वह हर रोज ७५ पौंड दूध देती थी या एक ही बारमे इतना दूध देती थी, यह मुझे बराबर याद नही है। वह गाय बिना किसी रोक-टोकके चाहे जहा घूम-फिर सकती थी। उसके लिए जहा-तहा चारा रखा रहता था, जिसे वह चाहे तब खा सकती थी। यह इस तसवीरका अच्छा पहलू है।

दूसरा पहलू मैंने नही देखा, मगर मुझे प्रामाणिक तौरपर कहा गया है कि बहुतसे नर बछड़ोंको मार डाला जाता है, क्योंकि उन सबको बोझ ढोने लायक बैल नही बनाया जा सकता। ये डेरिया, बहुत ज्यादा नही, तो सैकड़ो एकड जमीन घेरे हुए है। ये सब खास तौरपर यूरोपियन सिपाहियोके लिए है। इनमे कई करोड रुपया लगा है। अब चूंकि ब्रिटिश सिपाही हिंदुस्तानमे नही है, इसलिए मैं इनकी और ज्यादा जरूरत नही समझता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानी सिपाहीको यह मालूम हो कि ये खर्चीली डेरियां उसके लिए चलाई जा रही है, तो उसे शर्म मालूम होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि हिंदुस्तानी सिपाही ऐसे किसी खास बरताव का दावा नही करेगा जिसका मामूली नागरिक भी उतना ही हकदार न हो।

गाय और भैंसके बारेमें सबसे ज्यादा प्रामाणिक और शायद पूर्ण साहित्य, खादी-प्रतिष्ठानके श्री सतीशचंद्रदास गुप्तद्वारा लिखे हुए एक बड़े भारी ग्रथमें पाया जा सकता है। जहा-तहाके साहित्यके अवतरणोंसे इस ग्रंथको नही भरा गया है, बल्कि उसे निजी अनुभवके आधारपर, जब वे एक बार जेलमें थे, तब लिखा गया है। बगाली और हिंदुस्तानीमें उसका अनुवाद हो चुका है। पुस्तकको ध्यानसे पढने-वाले लोग इसे हिंदुस्तानके पशुधनको अच्छा बनाने और दूधकी पैदावारको बढानेके काममें बहुत उपयोगी पाएगे। इस किताबमे गाय और भैंसकी तुलना भी की गई है।

(इसके बाद गाधीजीने एक सवालका जिक्र किया, जो उनके पास श्रोताओमेंसे किसीने भेजा था। सवाल यह था—हिंदू क्या है? इस शब्दकी उत्पत्ति कैसे हुई? क्या हिंदुत्व नामकी कोई चीज है? इसका जवाब देते हुए गाधीजीने कहा—) ये सब इस वक्तके लिए योग्य सवाल है। मै इतिहासका कोई बडा जानकार नहीं हूं। मै विद्वान होनेका दावा भी नही करता। मगर हिंदुत्वपर लिखी हुई किसी प्रामाणिक किताबमें मैने पढा है कि हिंदू शब्द वेदोंमे नही है। जब सिकंदर महानने हिंदुस्तानपर चढाई की, तब सिंधु नदीके पूरबके देशमे रहनेवाले लोग, जिसे अग्रेजीदा हिंदुस्तानी 'इंडस' कहते हैं, हिंदूके नामसे पुकारे गए। सिंधुका 'स' ग्रीक भाषामें 'ह' हो गया। इस देशके रहनेवालोंका धर्म हिंदू-धर्म कहलाया, और जैसा कि आप लोग जानते है, यह सबसे ज्यादा सहिष्णु (रवादार) धर्म है। इसने उन ईसाइयोको आसरा दिया जो विधर्मियोंसे सताए जाकर भागे थे। इसके सिवा इसने उन यहूदियोंको, जो बेनिइज़राइल कहे जाते है, और पारसियोको भी आसरा दिया। मै इस हिंदू-धर्मका सदस्य होनेमें अभिमान महसूस करता हूं, जिसमें सभी धर्म शामिल हैं और जो बडा सहनशील है। आर्य विद्वान वैदिक धर्मको मानते थे और हिंदुस्तान पहले आर्यावर्त कहा जाता था। वह फिरसे आर्यावर्त कहलाए ऐसी मेरी कोई इच्छा नही है। मेरी कल्पनाका हिंदू-धर्म मेरे लिए अपने आपमे पूर्ण है। बेशक, उसमें वेद शामिल है, मगर उसमें

और भी बहुत कुछ शामिल है। यह कहनेमे मुझे कोई नामुनासिब बात नही मालूम होती कि हिंदू-धर्मकी महत्ताको किसी भी तरह कम किये बगैर मै मुसलमान, ईसाई, पारसी और यहूदी-धर्ममे जो महत्ता है उसके प्रति हिंदू-धर्मके बराबर ही श्रद्धा जाहिर कर सकता हू। ऐसा हिंदू-धर्म तबतक जिंदा रहेगा, जबतक आकाशमे सूरज चमकता है। इस बातको तुलसीदासने एक दोहेमे रख दिया है—

दया धरमको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोडिए, जब लगि घटमे प्रान॥

मेरे ओखला छावनीके मुआइनेके वक्त जो बहन मेरे साथ थी, वे इस खयालसे घबडा गई कि निराश्रितोकी कुछ छावनियोमे बुरा आचरण होनेकी मैने जो बात कही थी, उसका सबध कही ओखला छावनीसे तो नही है। ओखला छावनीको मैने बहुत जल्दीमे देखा है, इसलिए उसके बारेमे ऐसी कोई बात कहना मेरे लिए नामुमकिन है। अपने भाषणमें मैंने आम छावनियोंमे होनेवाले बुरे आचरणका ही जिक्र किया है।

मै इस बातका जिक्र किये बिना नही रह सकता कि मुझे जो सूचना मिली है उसके मुताबिक दिल्लीकी करीब १३७ मसजिदे हालके दगोमे बरबाद-सी कर दी गई है। उनमेसे कुछको मदिरोमें बदल डाला गया है। ऐसी एक मसजिद कनॉट प्लेसके पास है, जिसकी तरफ किसीका भी ध्यान गए बिना नही रह सकता। आज उसपर तिरगा झडा फहरा रहा है। उसे मदिरका रूप देकर उसमे एक मूर्ति रख दी गई है। मसजिदोंको इस तरह बिगाडना हिंदू और सिख-धर्मपर कालिख पोतना है। मेरी रायमें यह बिलकुल अधर्म है। जिस कलकका मैंने जिक्र किया है, उसे यह कहकर कम नही किया जा सकता कि पाकिस्तानमें मुसलमानोने भी हिंदू-मदिरोंको बिगाडा या उन्हे मस-जिदोका रूप दे दिया है। मेरी रायमे ऐसा कोई भी काम हिंदू-धर्म, सिख-धर्म या इस्लामको बरबाद करनेवाला काम है।

(गाधीजीने इस बारेमें अखिल भारत-काग्रेस-कमेटीका हालका ठहराव लोगोको सुनाया।)

आज हमेशासे ज्यादा समयके लिए प्रार्थना-सभामे ठहरनेका खतरा उठाकर भी मै अतमें एक बात कह देना अपना फर्ज समझता हू। मुझसे यह कहा गया है कि गुडगावके पास रोमन कैथोलिकोको सताया जाता है। जिस गावमें यह हुआ है, उसका नाम कन्हाई है। वह दिल्लीसे करीब २५ मीलपर है। एक हिंदुस्तानी रोमन कैथोलिक पादरी और एक गावके ईसाईप्रचारक मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझे वह खत दिखाया जिसमें कन्हाई गावके रोमन कैथोलिकोने हिंदुओद्वारा अपने सताए जानेकी कहानी बयान की थी। ताज्जुब यह है कि वह खत उर्दूमें लिखा था। मै समझता हू कि उस हिस्सेके रहनेवाले हिंदू, सिख या दूसरे लोग केवल हिंदुस्तानी ही बोल सकते और उर्दू-लिपिमें ही लिख सकते है। सूचना देनेवाले लोगोने मुझे बताया कि वहाके रोमन कैथोलिकोको यह धमकी दी गई है कि अगर वे गाव छोडकर चले नही जायगे, तो उन्हे नुकसान उठाना पडेगा। मुझे आशा है कि यह धमकी झूठी है और वहाके ईसाई भाई-बहनोको बिना किसी रुकावटके अपना धर्म पालने और काम करने दिया जायगा। अब हमे सियासी गुलामीसे आजादी मिल गई है। इसलिए आज भी उन्हें धर्म और कामकी वही आजादी भोगनेका हक है, जो वे ब्रिटिश हकूमतके दिनोमें भोगते थे। मिली हुई आजादीपर यूनियनमें सिर्फ हिंदुओका और पाकिस्तानमें सिर्फ मुसलमानोका ही हक नही है। मै अपने एक भाषणमें आप लोगोसे कह चुका हूं कि जब यूनियनमें हिंदुओ और सिखोका मुसलमानोके खिलाफ भड़का हुआ गुस्सा कम हो जायगा, तो सभव है वह दूसरोपर उतरे। लेकिन जब मैने यह बात कही थी तब मुझे यह आशा नही थी कि मेरी भविष्यवाणी इतनी जल्दी सच साबित होने लगेगी। अभीतक मुसलमानोके खिलाफ बढा हुआ गुस्सा पूरी तरह शात नही हुआ है। जहातक मै जानता हूं, ये ईसाई बिलकुल निर्दोष है। मुझे सुझाया गया कि उनका गुनाह यही है कि वे ईसाई है। इससे भी ज्यादा बडा गुनाह यह है कि वे गाय और सूअरका गोश्त खाते है। मैने उत्सुकतासे मिलने आए हुए पादरीसे पूछा कि इस बातमें कोई सचाई है? तब उन्होने कहा कि इन रोमन कैथोलिकोने अपनी मरजीसे बहुत पहले ही

गाय और सूअरका मांस खाना छोड दिया है। अगर इस तरहका नादानीभरा द्वेष चालू रहा तो आजाद हिंदुस्तानका भविष्य अधेरा ही समझिए। वह पादरी जब रेवाडीमे थे, तब उनकी खुदकी साइकिल उनसे छीन ली गई और वह मौतसे बालबाल बचे। क्या यह दु ख सारे गैर-हिंदुओ और गैर-सिखोको मिटाकर ही मिटेगा ?

: १५६ :

२२ नवबर १६४७

(गुडगावके नजदीक एक गावमे ईसाइयोके साथ होनेवाले बुरे बरताव-का फिरसे जिक्र करते हुए गाधीजीने अपने आजके शामके भाषणमे कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझे खबर मिली है कि कुछ-कुछ ऐसा ही बरताव सोनीपतके ईसाइयोके साथ हुआ है। मुझसे कहा गया है कि पहले तो वहा ईसाइयोंसे प्रार्थना की गई कि वे निराश्रितोको अपने मकानोका उपयोग करने दें। ईसाइयोने खुशीसे इसकी इजाजत दे दी और इसके लिए उन्हे धन्यवाद भी दिया गया। मगर यह धन्यवाद अभिशापमे बदल गया; क्योकि उनके दूसरे मकान भी जबरदस्ती निराश्रितोके काममें ले लिये गए और उनसे कह दिया गया कि अगर वे सोनीपतमें अपनी जिंदगीको बहुत दु खी नही देखना चाहते, तो वहासे चले जायं। अगर यह बात ऐसी ही हो, जैसी कि वह कही गई है, तो साफ जान पडता है कि यह बीमारी बढ रही है और कोई नही बता सकता कि यह बीमारी हिंदुस्तानको कहा ले जानेवाली है।

जब मैं कुछ दोस्तोसे चर्चा कर रहा था, तब मुझसे कहा गया कि जबतक पाकिस्तानमें होनेवाली इसी किस्मकी बुराइया कम नही होती, तबतक हिंदुस्तानी सघमे ज्यादा सुधारकी उम्मीद नही की जा सकती। इस बातके समर्थनमे मेरे सामने लाहौरके बारेमें जो कुछ अख-बारोमे छपा है, उसका उदाहरण रखा गया। मैं खुद अखबारोकी

खवरोको सोलह आने सच नही मानता और मैं अखवार पढनेवालोको भी चेतावनी दूगा कि वे उनमे छपी कहानियोका अपने ऊपर आसानीसे असर न पडने दें। अच्छे-से-अच्छे अखवार भी खवरोको वढा-चढाकर कहने और उन्हे रगनेमे वरी नही है। मगर मान लीजिए कि जो कुछ आपने अखवारोंमे पढ़ा वह सव सच है, तो भी एक वुरे नमूनेकी कभी नकल नही की जानी चाहिए।

एक ऐसे समकोण चौखटकी कल्पना कीजिए, जिसमें स्लेट नही लगी है। अगर उस चौखटको जरा भी वेढगे तरीकेसे पकडा जाय, तो उसके समकोण न्यूनकोण और अधिककोणमें वदल जायगे और अगर चौखटको एक कोनेपर फिरसे ठीक ढगसे पकडा जाय, तो दूसरे तीन कोने अपने आप समकोण वन जायगे। इसी तरह अगर हिंदुस्तानी संघकी सरकार और लोग, सही वरताव करें, तो मुझे इसमें जरा भी शक नही कि पाकिस्तान भी ऐसा ही करने लगेगा और सारा हिंदुस्तान फिरसे समझदार वन जायगा। ईसाइयोके साथ किये गए वुरे वरतावको, जिन्होने, जहातक मै जानता हू, कोई अपराध नही किया है, इस वातका सकेत समझा जाय कि इस पागलपनको और ज्यादा वढने देना ठीक नहीं है। और अगर हिंदुस्तानको दुनियाके सामने अपना अच्छा लेखा-जोखा रखना है, तो एकदम और तेजीके साथ इस पागलपनका मुकावला किया जाय।

(इसके वाद निराश्रितोकी समस्यापर वोलते हुए गाधीजीने कहा—)

उनमे डाक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्से वगैरा है। अगर उन्होने गरीव निराश्रितोसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने ऊपर पडे हुए एकसे दुर्भाग्यसे कोई सवक नही ले पायगे। मेरी राय है कि सव व्यवसायी और गैर-व्यवसायी, धनवान और गरीव निराश्रित एक साथ रहें और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोने लाहौरको आदर्श शहर वनाया—और जिसे हिंदुओं और सिखोको लाचार होकर खाली करना पडा—उस तरह वे भी आदर्श शहर वसाए। ये शहर, दिल्ली-जैसी घनी आवादीवाले शहरोका वोझ हलका करेंगे और इनमें रहने-वाले लोगोकी तदुरुस्ती वढेगी और उनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी

बड़ी छावनीमे रहनेवाले दो लाखसे ऊपर निराश्रित बाहरी और भीतरी सफाईके मामलेमे आदर्श बन गए, अगर व्यवसायी और धनवान गरीब निराश्रितोंके साथ बराबरीके आधारपर रहे, अगर उन्होंने तबुओकी इस बस्तीमें अच्छी सडके बनाकर सतोषकी जिंदगी बिताई, अगर वे सफाईसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिनभर किसी-न-किसी उपयोगी काममे लगे रहे, तो वे सरकारी बजटपर बोझ नही रह जायंगे। और उनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोमे रहनेवाले लोग सिर्फ उनकी तारीफ करके ही नही रह जायंगे, बल्कि उन्हें अपने जीवनपर शर्म मालूम होगी और वे निराश्रितोंकी सारी अच्छी बातोकी नकल करेंगे। तब मौजूदा कड़ुवाहट और आपसी जलन एक मिनटमे गायब हो जायगी। तब निराश्रित लोग, चाहे वे कितनी ही बड़ी तादादमे क्यों न हो, केंद्रीय और मुकामी सरकारोके लिए चिंताके विषय नही रह जायगें। लाखो निराश्रितोद्वारा बिताई गई ऐसी आदर्श जिंदगीकी दु खी दुनिया तारीफ करेगी।

अतमें मै कट्रोलोको हटानेके बारेमे, खासकर अनाज और कपड़ेका कट्रोल हटानेके बारेमे चर्चा करूंगा। सरकार कट्रोल हटानेमे हिचकिचाती है, क्योकि उसका खयाल है कि देशमे अनाज और कपड़ेकी सच्ची तगी है। इसलिए अगर कट्रोल हटा दिया गया तो इन चीजोके दाम बहुत बढ़ जायगें। इससे गरीबोको बड़ा नुकसान होगा। गरीब जनताके बारेमे सरकारका यह खयाल है कि वह कंट्रोलोंके जरिए ही भुखमरीसे बच सकती है और तन ढकनेको कपड़ा पा सकती है। सरकारको व्यापारियो, अनाज पैदा करनेवालो और दलालोपर शक है। उसे डर है कि ये लोग कट्रोलोंके हटनेका बाजकी तरह रास्ता देख रहे है, ताकि गरीबोको अपना शिकार बनाकर बेईमानीसे कमाये हुए पैसेसे अपनी जेबें भर सके। सरकारके सामने दो बुराइयोमेंसे किसी एकको चुननेका सवाल है। और उसका खयाल है कि मौजूदा कट्रोलोको हटानेके बदले बनाए रखना कम बुरा है।

इसलिए मै व्यापारियो, दलालो और अनाज पैदा करनेवालोसे अपील करता हू कि वे अपने प्रति किये जानेवाले इस

और सरकारको यह यकीन दिला दें कि अनाज और कपड़ेका कंट्रोल हटनेसे कीमतें ऊंची नहीं चढ़ेंगी। कंट्रोल हटानेसे काला बाजार और बेईमानी जडसे भले ही न उखाडी जा सके, लेकिन इससे गरीबोंको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा।

: १५७ :

२३ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई लिखते हैं कि अगर हक नहीं मिले तो क्या हिंसाका मार्ग नहीं लेना चाहिए? हिंसासे हम हक ले नहीं सकते। मैं तो कहूंगा कि हिंसासे कुछ मिल ही नहीं सकता। लगता तो है कि मिल सकता है, लेकिन कैसे? हां, एक बच्चा है, उसके हाथमें रुपया है, उसको दो-चार तमाचा मार दूं और रुपया ले लूं, तो मीठा तो लगेगा कि रुपया तो ले लिया लेकिन मैंने गुमाया कितना! बच्चा बेचारा करे क्या? लेकिन मेरा दिल चुभेगा कि बेचारे बच्चेका रुपया ले लिया, मारपीट करके। लेकिन ऐसे पाजी दुनियामें भरे पड़े हैं। मैं तो ऐसा कर नहीं सकता। ऐसा छीननेका मेरा हक नहीं है। छीन लिया तो नतीजा बुरा होगा। इसलिए मैं कहता हूं कि हिंसासे हक ले नहीं सकते। हक लेनेका एक ही तरीका है और वह मैंने प्रकट कर दिया है। वह सबको पसंद पड़ा। उसमें लिखा है कि लोगोंका हक क्या है और कैसे मिल सकता है। मैं तो कहूंगा कि हक है ही नहीं। जिसके पास फर्ज नहीं है तो उसका हक नहीं है, अर्थात् सब हक अपने फर्जमेंसे निकलता है—फर्ज नहीं तो हक नहीं। मैं फर्ज अदा करता हूं तो उसका नतीजा मिलता है, वही हक है। जैसे मैं खाता हूं, खानेका धर्म है तो खाता हूं, शौकसे लिया तो कुछ-न-कुछ रोग पैदा होगा। अगर खाता हूं धर्म समझकर, ईश्वरका नाम लेता हूं, दुनियाकी सेवा करता हूं तो मुझे हक मिल जाता है। क्या मिलता है? सेवा

करनेका हक मिलता है। आप कहेंगे कि इसको हक कैसे कहेंगे ? आप विचार करेंगे तो यह मालूम हो जायगा। मैं तो कहूंगा कि वही हक हो जाता है। मानो कि मैं दिनभर काम करता हूं तो आठ आना कमा लेता हू—वह आठ आना हकसे मिलता है। हक कैसे आया ? काम किया तब। काम न करू और आठ आना पैसा लू तो हकसे नही लिया, छीन लिया। हक तो तभी होता है जब मजदूरी करनेका इकरार कर दिया और वह दिलसे किया अर्थात् मनसे, वचनसे, कर्मसे किया। लेकिन अगर दिलसे काम नही करता हूं, सरदारका बिगाडता हूं, सरदार देखता नही है, इसलिए धोखा दू तो वह पाप है। और जब देखता हू कि दूसरेको तो एक रुपया मिल रहा है तो मैं भी एक रुपया ले सकता हू, लेकिन कब ? सरदारको कह-कर। उनको कहू सबको तो एक रुपया मिलता है तो मैं कैसे आठ आनेमें काम करू—एक रुपया नही तो पद्रह आने तो दे दो। वह कहे कि आठ आनेमे काम करो तो करो नही तो चले जाओ। तब मै क्या करू ? क्या माल जला दू, उसका काम रोक दू, धरना दू, फाका करू, क्या करू ? मै कहूंगा कि मैं इस्तीफा दे सकता हूं, लेकिन आठ आनेमें तो मजदूरी नही कर सकता हूं—यह तो शराफत हुई। मै तो कहूगा कि जो कुछ करना चाहो वह शराफतसे करो। शराफतमे यही आता है कि हम धर्मका पालन करे, फर्जको अदा करें और फर्ज-करके अहिंसासे हक पैदा करे। हिंसाके मारफत कुछ भी लेनेकी कोशिश न करें—इसीसे दुनिया चलती है, नही तो दुनिया बिगड़ती है।

तो क्रिस्तियोंके बारेमे तो कह दिया था। आज मैं आप लोगोंको हरिजनोंके बारेमें कहूगा। वह तो हमारे लिए शर्मकी बात है कि रोह-तकमें, रोहतक जिलेमें कहो, हर जगह हरिजन पड़े हैं—पहले भी थे, अब भी हैं। तो वहां भी हरिजन पड़े है। वहां तो जाट लोग पड़े है, शायद अहीर भी पड़े है। उनके दिलमे ऐसा हुआ कि हरिजन हैं, वे हमारे गुलाम है, जो कुछ काम लेना है लेगे—वहां फिर हककी बात आ गई—वे तो जन्मसे गुलाम पैदा हुए है। पानी चाहिए तो दे, खाना खाए तो ठीक है, नही तो हकसे ले नही सकते।

इसको मै तकबरी[1] मानता हू । जब अग्रेजी सल्तनत थी तब चलती थी और अब वह चीज ज्यादा बन गई। बेचारे हरिजन गरीब है तो मेरे पास आए और कहा कि हमपर ऐसी गुजर रही है तो क्या हम गुलामीमे रहें, कि मर जाय या रोहतक छोड दें या क्या करें? अभी वे छोड भी नही सकते, यह समझने लायक बात है। यदि वे रोहतक छोडते है तो दूसरे लोग मरेंगे, क्योकि उनका काम बिगडता है; लेकिन हरिजनको गुलामी ही करना है तो ऐसा हो जाता है। तो वे बेचारे आ गए—मदरसेमे पढते हैं, कोई आगे पढ़ता है, कोई पीछे है, उद्योग भी सीखते है; लेकिन वे लोग जो नाराज कर रहे है उनको क्या कहूँ। अब तो हम ऐसे हो गए है कि हम सोचते नही कि हम कहा जा रहे है । अग्रेजी सल्तनत चलती थी तब डरते थे कि हमको मारपीट डालेगे । अब वह सल्तनत चली गई तो कौन क्या कर सकता है! जजके सामने पेश किये जाएगे तो जजको भी डरा सकेंगे। जज क्या कर सकता है? अब ऐसी तकबरी पैदा हो गई है। इसका नतीजा यही आता है कि हरिजन तबाह हो जाता है। तो मैने उन लोगोसे कहा कि आप बापा साहब[2] के पास जाइए—उन्होने तो हरिजनों और आदिवासियोको सेवा करनेके लिए जन्म लिया है, वे हरिजनोके लिए सब कुछ करते है। तो वे गए और पीछे मेरे पास आए और मुझको सुनाया कि बापा साहब कुछ नही करते है। मै तो समझ गया कि वे क्या चाहते है। वे यही बैठे है। मैने कहा कि आप डाक्टर गोपीचदके पास जाइए। वे प्रधान मत्री बन गए है तो क्या, पहले तो हरिजन-सेवक-सघका सब काम करते थे। आज आनेवाले थे तो मैने कहा कि उनसे मिलू। मिला। लेकिन वहा जो लोग जालिम बन गए है, मजबूर करते है, हठीले बन गए है तो क्या करना? आज अग्रेजी सल्तनत तो है नही, वैसा कर भी नही सकते है, तो वे करे क्या? तो मैने सोचा कि आज मै हरिजनोकी करुण कथा सुनाऊ। हम इतना भी नही कर सकते है? आज हमारा धर्म क्या है?

---

[1] तकब्बुर—अभिमान। [2] श्री ठक्कर बापा।

आजतक हम उन्हें अछूत, गुलाम मानते आए है, वह अधर्म किया। गलती की और पाप किया, उसके प्रायश्चित्तके रूपमे हरिजन-सेवक सघ वना, सघने बहुत काम भी किया है। सब हिंदूने ऐसा नही किया—करोड़ोंकी सख्यामें हिंदू, सब हिंदूने तो उसे अपनाया भी नही है। अगर सब हिंदुओने अपना लिया होता तो मुझे यह करुण कथा क्यों सुनानी पड़ती।' अंग्रेजोंके राज्यमें तो करते थे—उनको गाली देते थे कि अगर ये नही होते तो हम अच्छे हो जाते, लेकिन अब तो वे चले गए—हम अब अच्छे है या बुरे? मै तो कहूगा कि पहलेसे ज्यादा बुराइया आ गईं। हम ज्यादतिया तब करते थे और अब भी करते है, पहले तो मुसलमानोपर ज्यादतिया की, यह भी पाप किया—पाकिस्तान है यह भूल जाओ, उसका खयाल मत करो। समझो कि अगर एक आदमी पाप करता है तो क्या हम भी करें। सोचोगे तो मालूम होगा कि वह बुरा है—एक बुराईसे दूसरी बुराई पैदा होती है। हमने काफी लोगोको मार डाला है, हमारे दिलमें झूठी हिम्मत आ गई है कि मारो क्रिस्तियोको, पीछे हम जाटिस्तान, अहीरिस्तान, हर एक अपना-अपना स्थान बनाएगे; लेकिन हिंदुस्तान कोई नही वनाएगा। हरिजनोको तो अपनाना ही चाहिए—वे तो हम जैसे हिंदू है, वह पचम जाति तो है नही। पचम वर्ण तो हिंदूमे है नही, चार वर्ण है—उनमे एक नीचा और दूसरा ऊचा तो है ही नही। इन चारोमें ऐसा है कि एक धर्म सिखाता है, दूसरा रक्षा करता है, तीसरा तिजारत करता है—घर भरनेके लिए नही, अपने लिए करोड़ो रुपया पैदा करनेके लिए नही, प्रजाके लिए भले ही पैदा करे—और चौथा प्रजाकी सेवा करता है। लेकिन चारों साथ-साथ खड़े रह सकते है, बैठ सकते है। अगर शूद्र है, वह बैरिस्टर वन जाय तो वह बैरिस्टरी नही कर सकता, ऐसी वात नही है। वह वैरिस्टर होकर भी सेवा कर सकता है। जो धर्म सिखाता है वह भी सेवा करता है, तिजारत करता है, नौकरी करता है वह सेवा करता है और झाड़ू लगाता है वह भी सेवा करता है—ये चारों सेवा है, सेवाक्षेत्र वन गया है। पीछे जो धर्म सिखाता है उसको ज्यादा सीखना पड़ता है—इसका मतलब

यह नही है कि वह अगर उस कामको छोडकर दूसरा काम करता है तो पाप करता है। वह उस कामको नही कर सकता ऐसी बात नही है। इसी तरह हमने अनेक जातिया पैदा की और अब पचम वर्ण पैदा करते है तो हमारी गलती है, दुष्टता है। अगर हम अपने-अपने धर्मके मुताबिक चले तब तो हो सकता है। आज हमारे हाथमे बागडोर आ गई है तो हिंदू-सिख सब अपने-अपने धर्मके अनुसार चलें तो मै समझता हू कि सबका काम चल सकता है। मैने भी समाप्त कर लिया और वह भी समाप्त हो गई।

: १५८ :

२४ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैं प्रार्थनामे आता हू आप लोग मेहरबानी करके मेरे और मेरी लडकियोके लिए काफी जगह गुजरनेके लिए छोड देते हैं, मगर जानेके समय लोग चरण छूनेके लिए मेरें इर्द-गिर्द भीड़ कर देते है। वह अच्छा नही लगता। मेरी प्रार्थना है कि जानेके समय भी आप लोग मुझे शातिसे रास्ता दे। आपकी मुहब्बत मैं समझता हू, और उसकी मुझे कदर है। मगर मै चाहता हू कि यह मुहब्बत बाह्य उभारकी जगह किसी रचनात्मक कार्यका रूप ले। इस बारेमे मैं बहुत बार कह चुका हू और लिख चुका हूं। रचनात्मक कार्यक्रममेंसे मुख्य तो आज कौमी मेल-जोल है। पहले भी झगडा होता था मगर उसमें किसीको बर्बाद करनेकी बात नही होती थी। अब तो मारनेकी ही बात है। जहर फैल गया है। एक तरफसे हिंदू और सिख, दूसरी तरफसे मुसलमान एक दूसरेके दुश्मन बन गए है। इसका शर्मनाक नतीजा आप देख ही चुके है।

प्रार्थनामे आनेवालोका अपना हृदय वैरभावसे खाली हो, यह बस नही। उन्हे साप्रदायिक मेलजोल फिरसे कायम करनेमें सक्रिय

भाग लेना है। खिलाफतके जमानेमे हिंदू-मुस्लिम-ऐक्यका हमे गर्व था। उन दिनोमे मिली-जुली बड़ी-बड़ी सभाओमें जाना मैं भूला नही। उस ऐक्यको देखकर मेरा हृदय आनंदसे उछलता था। क्या वे दिन फिर कभी वापिस नही आवेंगे?

हिंदुस्तानकी राजधानीमें कल ही जो दुःखद घटना हुई उसका विचार कीजिए। कहा जाता है कुछ हिंदू और सिखोंने एक खाली मुस्लिम घरका कानूनके विरुद्ध कब्जा लेनेकी कोशिश की। उसपरसे झगडा हुआ और कुछ लोगोको चोट पहुची। मगर किसीकी मृत्यु नही हुई। यह घटना बुरी थी। मगर उसे और भी बढ़ाया-चढाया गया। पहली खबर यह थी कि चार सिख मारे गए है। नतीजा वही हुआ जो ऐसी चीजोमें होता है। बदलेकी भावना भड़की और कई लोग छुरेसे घायल हुए।

सुनता हूं कि अब एक नया तरीका इस्तेमाल होने लगा है। छोटी कृपाणकी जगह सिख लोग बड़ी तलवार रखने लगे है। तलवार खीचकर हिंदुओके साथ या अकेले मुसलमानके घरोमे जाते है, और उन्हें मकान खाली करनेको धमकाते है। अगर यह खबर सच्ची है तो राजधानीमे ऐसी चीज असह्य पशुपन है। अगर यह सही नही है तो इसकी तरफ और ध्यान देनेकी जरूरत नही। सही है तो न सिर्फ सत्ताधारियोको, बल्कि जनताको भी फौरन इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। जनताके पीठ-बलके बिना सत्ताधीश कुछ नही कर सकते।

मै नही जानता कि ऐसी हालतमें मेरा धर्म क्या है? इतनी बात स्पष्ट है कि हालत ज्यादा बिगड़ रही है। जल्दी ही कार्तिककी पूर्णिमा आनेवाली है। मेरे पास तरह-तरहकी अफवाहें आती है। मै उम्मीद रखता हू कि जैसे दशहरा और बकरीदके समय हुआ, उसी तरह अब भी ये अफवाहे झूठी सिद्ध होंगी।

इन अफवाहोसे एक पाठ तो हम सीख ही सकते है। आज हमारे पास शातिकी कोई मिल्कियत जमा नही। हमे रोजकी कमाई रोज करना है। यह स्थिति किसी राष्ट्र या राज्यके लिए अच्छी नही। देशके हरेक सेवकको ध्यानपूर्वक सोचना है कि वह इस खा जानेवाले

जहरको मिटानेके लिए क्या कर सकता है और उसे क्या करना चाहिए।

यहापर लायलपुरके सरदार संतसिंहजीके एक लवे पत्रकी चर्चा करना अच्छा होगा। वे पहले सेंट्रल असेम्बलीके सदस्य थे। उन्होंने सिखोंका जबर्दस्त बचाव किया है। उन्होने मेरे पिछले बुधवारके भाषणका जो अर्थ किया है, वह उस भाषणके शब्दोमेसे नही निकलता। मेरे मनमे तो वह था ही नही। शायद सरदार साहब जानते होंगे कि १९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके बाद मेरा सिख मित्रोके साथ घनिष्ट सबध रहा है। एक समय था कि जब सिख, हिंदुओ और मुसलमानोंकी तरह मेरे वचनोको वेद-वाक्य मानते थे। अब समय बदल गया है, उसके साथ लोगोंके ढंग बदल गए हैं। मगर मैं जानता हू कि मै नही बदला। शायद सरदार साहब नही जानते, सिख आज किस तरफ बहे जा रहे है। मै उनका पक्का मित्र हू। मुझे अपना कोई स्वार्थ नही साधना। सो मैं सब चीज देख सकता हू। मै उनसे साफ-साफ दिल खोलकर बात कर सकता हू, क्योकि मैं उनका सच्चा मित्र हू। मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि कई बार सिख भाई मेरी सलाहको मानकर कठिनाइयोमेंसे बच निकले है। इसलिए मुझे कभी यह खयाल भी नही आया कि मुझे सिखोंके बारेमें, या तो किसीके भी बारेमें, सोच-समझकर बोलना चाहिए। सरदार साहब और हरेक सिख जो सिख-जातिका भला चाहता है और आजके प्रवाहमे वह नही गया, इस बहादुर और महान् जातिको पागलपन, शराबखोरी और उसमेंसे निकलनेवाली बदियोसे बचानेमें मदद करें। जिस तलवारका वे काफी प्रदर्शन कर चुके है, और बुरी तरह इस्तेमाल कर चुके हैं, उसे अब वापस म्यानमें रख दें। अगर प्रिवी कौसिलके फैसलेका यह अर्थ है कि कृपाणका मतलब है किसी भी मापकी तलवार, तो भी, वह उससे मूर्ख न बनें। किसी भी बेउसूल शराबी आदमीके हाथमें जानेसे, या उसका मनमाना इस्तेमाल करनेसे कृपाणकी पवित्रता जाती रहती है। पवित्र चीजका पवित्र और बाकानून मौकेपर ही इस्तेमाल हो सकता है। इसमें शक नही कि कृपाण शक्तिका

प्रतीक है। कृपाण रखनेवालेको वह तभी शोभा देती है जब वह अपने आपपर आश्चर्यजनक काबू रखे और बहुत ही भारी विरोधी ताकतके सामने उसका इस्तेमाल करे।

सरदार साहब मुझे यह कहनेके लिए माफ करेंगे कि मैंने सिख-इतिहासका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और ग्रथ साहबके तत्त्वोका अमृतपान किया है। उन वचनोके हिसाबसे देखा जाय तो जो सिखोंने किया बताया जाता है, उसका कोई बचाव नही हो सकता। वह अपने आपको बर्बाद करनेका रास्ता है। किसी भी हालतमे सिखोंकी बहादुरी और ईमानदारीका इस तरह नाश नही होना चाहिए। वे सारे हिंदुस्तानके लिए भारी सपत्ति हो सकते है, आज तो वे भयरूप बन गए है। सो नही होना चाहिए।

यह कहना कि सिख इस्लामके पहले नंबरके दुश्मन है, बिल्कुल वाहियात बात है। मुझे भी तो यही अल्काब[१] दिया जा चुका है न ! क्या यह अल्काब मुझे सिखोके साथ बाटना पड़ेगा? मेरा सारा जीवन इस इल्जामको गलत सिद्ध करनेवाला है। सिखोपर यह इल्जाम लगाया जा सकता है क्या? शेरे-काश्मीरको जो सिख आज मदद दे रहे है, उनसे तो वे पाठ सीखे। उनके नामसे जो मूर्खताके कारनामे किये जा रहे है, उसका वे पश्चात्ताप करें।

मै जानता हू कि एक बुरी और भयानक बात यह चलती है कि हिंदू सिखोको छोड दे तो उन्हें पाकिस्तानमें कोई ख़तरा नही। सिखोंको पाकिस्तानमें कभी बर्दाश्त नही किया जाएगा। ऐसे भाई-भाईको मारनेवाले सौदेमें मै तो कभी हिस्सेदार नही बन सकता। जबतक हरेक हिंदू और सिख बाइज्जत और सुरक्षित रूपसे पश्चिमी पजाबमे अपने घर वापस नही जाता, और हरेक मुसलमान यूनियनमे अपने घर उसी तरह नही लौट आता, तबतक इस बदकिस्मत देशमे शाति होनेवाली नही। जो लोग अपनी खुशीसे खास कारणोसे अपने घरोको न लौटना चाहें उनकी बात अलग है। अगर हमें शातिसे, एक-दूसरेको

---

[१] उपाधि।

मदद देनेवाले पडोसी बनकर रहना है तो जनताके तबादलेके पापको धोना होगा।

पाकिस्तानकी बुराइयोको यहा दुहरानेकी जरूरत नही, उससे हिंदू और सिख दुखियोको कोई फायदा पहुचनेवाला नहीं। पाकिस्तानको अपने पापोका बोझ उठाना है। और मै जानता हू वह भयानक है। मेरी क्या राय है, यह जानना सबके लिए काफी होना चाहिए। अगर उस रायकी कोई कीमत है तो वह यह है कि १५ अगस्तमें बहुत पहले मुस्लिम लीगने शरारत शुरू की थी। मै यह भी नही कह सकता कि १५ अगस्तको उन्होंने नई जिंदगी शुरू कर दी और शरारतको भूल गए। मगर मेरी यह राय आपकी कोई मदद नही कर सकती। महत्त्वकी बात यह है कि यूनियनमें हमने उनके पापोकी नकल की, और उनके साथ हम भी पापी बन गए। तराजूके पलडे करीब-करीब बराबर हो गए। क्या अब भी हमारी मूर्च्छा छूटेगी और हम अपने पापोका प्रायश्चित्त करेंगे? या फिर हमे गिरना ही है?

: १५६ :

२५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मैं आपसे पाकिस्तानसे आए हुए शरणार्थियोके बारेमें कुछ कहना चाहता हू, लेकिन अभी मुश्किलकी बात यह है कि उनको शरणार्थी कहना चाहिए कि नही। कल चद भाई मुझको कहते थे कि आप हमको शरणार्थी क्यो कहते है? एक तरहसे तो उनकी बात सच्ची है, क्योकि शरणार्थी तो उनको कहते है जो शरण चाहते है। वे वहासे कष्टके मारे आ तो गए, लेकिन यहां किसीकी शरण क्यो चाहे? और शरण भी किसकी, जब सारा हिंदुस्तान है और वह सबका है! यहा तो मै पाकिस्तानको भी उसमे मानता हूं। लेकिन आज अगर वह नही है और

ऐसा कहो कि हमारे दो टुकडे हो गए हैं, तो भी यूनियन तो सबका है और होना भी चाहिए। तब वे यहा आते हैं तो अपने हकसे आते हैं। इसलिए उनकी बात मुझको सच्ची लगी। जब आदमीको किसी जगह कष्ट होता हैं और वह वहांसे भागता है और आकर अपनी मांकी गोदमें छिप जाता है, तब उसको हम शरणार्थी कहेगे या हकसे आया है, ऐसा कहेगे? मैंने उनको कहा कि आप यह तो मानेंगे कि मुझे कोई द्वेष-भाव तो हो नही सकता कि जो मैं इस कटु भाषाका इस्तेमाल करू। हकीकतमें यह पहले अंग्रेजीका शब्द 'रिफ्यूजी' था, और हम तो अंग्रेजी भाषाके अबतक ऐसे गुलाम रहे हैं कि गुलामीमेंसे छूट नही सकते है। इसलिए 'रिफ्यूजी' शब्द तो पहले बना और उसका एक ही मानी हो सकता था जो कि पीछे अखबारवालोंने शरणार्थी या निराश्रित किया। तब उन्होंने कहा कि अंग्रेजीमें और भी तो शब्द बहुत है, जैसे 'सफरर्स'[1] है कि नही, तो फिर उनको 'सफरर्स' क्यो नही कहते? मैं तो अंग्रेजी इतनी जानता हू, इसलिए 'सफरर्स' कैसे कहू! तो फिर क्या कहू उनको? पीछे मेरे दिलमें ऐसा हुआ कि दु खी तो वे है ही, इसलिए दु खी कहो। वैसे तो हम सभी यहां दु खी पडे है, लेकिन जो लोग लाखोकी तादादमें अपने घरवार छोड़कर यहां आए है, वे दरअसल दु खी है। इसलिए उनके बारेमें मैं आज कुछ कहना चाहता हू।

मेरे पास आज तीन किस्मके लोग मिलने आए। एक किस्मको तो मैं छोड़ देना चाहता हू। लाहौरमें उसका एक बड़ा सारा कबीला था। कुछ होटल वगैरह उसका चलता था, तो वहा उसका सब घरबार और मालमता छूट गया और अपनी बीबी-बच्चोको लेकर यहा आ गए। सबको तो यहां नही लाए। लेकिन मुझको सब हाल सुनाया और पीछे कहने लगे कि मुझको यहा कही घर दिलवा दो। मैंने कहा कि मेरे हाथमें कोई हकूमत तो है नही, और अगर हकूमत भी होती तब भी मैं घर दिलवानेवाला नही था। एक तो दिल्ली शहरमें वैसे ही घर कम है और यहाके लोग ही काफी परेशानीमें पड़े है, इसपर भी उनसे हकूमत घर छुडवा लेती है।

---

[1] पीड़ित।

उन्होंने कहा कि यहां जो मुसलमान रहते हैं वे खाली करके क्यो नही जाते ? वे अबतक क्यो यहां बैठे है ? यह सुनकर मुझे काफी चोट लगी। मुसलमान एक तो पहलेसे ही डरके मारे हट रहे है और जो बाकी रहे है उनमेंसे भी रोज कुछ-न-कुछ हलाक[१] हो जाते है। हर कोई जाकर उनको कहता है—यहांसे हटो, हमको तुम्हारे घरमे रहना है। इस तरह हरेक आदमी अगर हाकिम बन जाए तो फिर रैयत कौन रहेगा और देश किसका होगा ? हर आदमी तो हकूमत चलानेवाला हो नही सकता। दुनियामे किसी जगहपर भी ऐसा नही होता। हां, जहां बिल्कुल जगली लोग रहते है वहां कहते हैं कि कोई हाकिम नही होता। लेकिन लुटेरोका भी कोई हाकिम रहता ही है। जैसे अलीबाबा और चालीस चोरकी वार्ता चलती है तो वहा भी उनका एक सरदार तो था ही। इस तरहसे दुनियामें कोई जगह नही जहां सब आदमी हाकिम हो या कोई भी हाकिम न हो। हम हाकिम बनना और अपने ऊपर हकूमत चलाना तो जानते ही नही। तभी तो आज इस झझटमें पडे है। आप उन लोगोंके घरोंपर, जो कि डरके मारे उन्हें छोड गए हैं या मारे गए हैं या पुलिसने पकड लिए है, ऐसी नजर करे, यह बहुत बुरी बात है। यह बात आपके लायक नही। आप अगर कह सकते है तो मुझसे कह सकते हैं, क्योंकि मैं जहां रहता हू वह एक महल-जैसा घर है। मुझे कह सकते हो कि तू यहासे हट जा और किसी कैंपमें चला जा। तुझको क्या है ? न तेरे पास पत्नी है, न लडके हैं और न लड़की है, ये कोई दूसरी-तीसरी लडकियां लेकर बैठ गया है और कहता है कि मेरी लड़कियां है। वहा कैंपमे जा। वे भी तेरी ही लडकियां है। मै तुम्हारी यह बात सुनूगा। हा, हँसूगा तो सही, क्योकि अगर मै भाग भी गया तब क्या आप यहां रह जायगे ? यह घर तो दूसरेका है, मेरा नही है। हां, इस घरका मालिक ऐसा है कि उसने मुझको ही मालिक बना रखा है और यह कह रखा है कि जिसको तुझे रखना है रख और न रखना हो मत रख। मुसलमान तो अपने घरोंसे हटने लायक है कहां, उनसे बहुत लायक तो गाधी है। उसको यहांसे उठाकर कही भी पटक देंगे

---

[१] माराजाना।

तो उसको तो इस तरहसे कोई पडने देगा नही। उसे तो कोई दूध देगा, कोई फल देगा और कोई खजूर दे देगा, इस तरह उसका निर्वाह तो हो ही जाएगा। नगा वह रहनेवाला नही है, कपडे भी उसको मिल जायगे। जब इस तरहसे मैने उनको कहा तो वे शर्मिंदा बन गए।

इसके पीछे मेरे पास जो लोग आए वे सिक्ख भाई थे। उन्होने कहा कि हम ऐसे सिख नही है जैसे यहा है। खूबीकी बात यह थी कि उनके पास कृपाण नही थी। मैंने पूछा तो नही कि उनके पास कृपाण क्यो नही है, लेकिन हाथोमें कडा पहना हुआ था और मेरा खयाल है कि दाढी भी थी। उन्होंने कहा कि हम बहुत परेशानीमें पडे है। हम हजारा जिलेके है। मैंने पूछा कि वहा आप क्या करते थे? उन्होने कहा कि वहा हमारे खेत थे और उनमे खेती किया करते थे। यहा भी हम खेती चला सकते है, अगर हमें जमीन और खेती करनेका सामान दे दिया जाय। मुझको दर्द हुआ कि वे बात तो ठीक ही कहते हैं। मैंने कहा कि आप पूर्वी पजाबमें क्यो नही जाते? उन्होने बताया कि पूर्वी पजाबकी हकूमत हमें कहती है कि जो लोग पश्चिमी पजाबसे आए है उन्हीको हम ले सकते है। सब जगहसे अगर लोग आए तो उतनी जगह हम कहासे दे सकते है? चूकि तुम लोग सरहदी सूबेके हो इसलिए केंद्रीय सरकारके पास जाओ। यह जवाब हमको वहासे मिलता है।

केंद्रीय सरकारके पास तो जमीन रहती नही है, लेकिन वह अगर इन लोगोको जमीन दे दे और खेतीका काम ये करने लगें तो बहुत ही अच्छा हो। उनके लिए बैल, हल और बीज वगैरहका भी प्रबध सरकारको करना चाहिए। दिल्ली प्रातमें इतनी जमीन है या नही, इसका मुझको पता नही है। लेकिन जो लोग हल जोतना चाहते हैं उनको कही भी बसा देना चाहिए। अगर हकूमत मेरे हाथमें होती तो मैंने उनके लिए एक अलग कैंप खोल दिया होता। वहापर वे सब अपने लिए खानापीना पैदा करे। अगर वैसे नही तो हकूमत उनके खातेमें लिखकर इस कामके लायक पैसा दे दे। वे कहते है कि आज तो पैसे हमारे पास नही है, लेकिन हम मेहनती आदमी है और अगर हमें खेतीका काम मिल गया तो हम सब कुछ पैदा कर लेंगे, हम कोई शौकसे तो बैठेंगे नही। मुझको ऐसा लगता है कि ऐसे खेतिहर-

लोग जो इधर-उधर पड़े हैं उससे हमारे मुल्कका नुकसान होता है। वे हमारे ही भाई है, इसलिए उनके लिए कुछ-न-कुछ करना चाहिए। हकूमत-में मैं किससे मिलू, मुझको पता नही। मगर मैं आपकी मार्फत हकूमतको सुनाना चाहता हू कि ऐसे लोगोकी मदद करना हमारा काम हो जाता है। वे कहते हैं कि हम कहां रहे और क्या खाए ? मै तो कहूगा कि उनके लिए कोई अलग कैंप होना चाहिए और जबतक वह न हो तबतक वे इन्ही कैंपोंमे रहकर अपना गुजारा करें। अगर यहां उनको जगह नही मिलती है तो सारे हिंदुस्तानमे कही कोई खाली जगह मिलती हो वह हमारी ही जगह है। वे यह नही कहते कि हमें इसी जगहपर रखो, वे यह भी नही कहते कि हमें किसी मुसलमानका घर दिलवा दो। वे कहते है कि हमने जो मुसीबत भुगती वह हम दूसरोको देना नही चाहते। हम तो गरीब लोग हैं। वैसे तो तगड़े है, लेकिन हमारा तगड़ापन किसीको डरानेको नही है। हमें तो यहां ईश्वरसे डरकर बैठना है और जिस तरहसे जीवन बसर हो सकता है वैसे करना है। लेकिन मैंने कहा कि ये सब चीजें केवल चंद दिनोके लिए हैं। उन्होने पूछा कि यह कैसे ? जैसा कि यहां भी एक भाईने पूछा है कि आप कहते हैं कि पाकिस्तानसे आनेवालोको वही जाना होगा और यहासे गए हुए मुसलमानोको यहा आना होगा,यह कैसे होगा ? मैंने कहा कि यह आज नही तो कल होकर रहेगा। लेकिन उसकी शर्त यह है कि पहले हम लोग यहा अच्छे बनें। हम ऐसा मान लें कि हमारा कोई दुश्मन ही नही है, मुसलमान भी हमारे दुश्मन नही हैं। कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान यहां भी फिफ्थकालम[1] है। बेचारे क्या 'फिफ्थकालम' हो सकते हैं ! हम यहां ऐसे पड़े हैं कि हमको कोई सता नही सकता और अगर सताएगा भी तो भगवान उसको देखेगा या हमारी हकूमत ही उसको मार डालेगी। आज अगर हम यहा ठीक हो जाते हैं तो कल सब काम ठीक हो सकता है। तब तो मैं भी आजाद हो जाऊंगा। आज तो मैं परेशान पड़ा हू, मेरे लिए अब जीना भाररूप बन गया है। मैं सोचता हू कि क्यों मै यहा पड़ा हू। अगर दिल्ली मान जाए तो मै तगड़ा

---

[1] पंचम स्तंभ।

वन जाता हू और तव मैं भागता हुआ चला जाऊगा पश्चिमी पजाबमे, और जो मुसलमान यहासे गए है उनको कहूगा कि मैं तुम्हारे लिए सव सामान तैयार करके यहा आया हू, आप अव जहा चाहे और जब चाहे तब वापिस जा सकते है । अगर ऐसा मौका आ गया, और कभी-न-कभी तो यह मौका आना ही है, क्योकि करोडो आदमी कैसे एक दूसरेके दुश्मन वनकर रह सकते है ? हमारे यहां जो ३॥ या ४ करोड मुसलमान है, उनको मारो या यहासे भेज दो, यह कोई वननेवाली वात नही है । यह तो ख्वावमे भी नही आ सकता और न मैं ऐसा ख्वाव चाहता हू । लेकिन आज तो मै भारस्वरूप पडा हू । एक दिन वह था जब मेरी चलती थी, मगर आज नही चलती । तो क्या मै भाग जाऊ ? मै जिंदा रहू या मर जाऊ, लेकिन जितने ये दु खी लोग है उनको कभी-न-कभी अवश्य अपने-अपने घरोको वापिस लौटना है और पूरी शान तथा मर्दानगीके साथ, किसीसे लडनेके लिए नही, वल्कि अपने भाइयोसे भेंट करनेके लिए। उसी तरहसे, मुसलमानोको यहा आना है । केवल वही चीज हमको जिंदा रख सकती है और दूसरी तरहसे हम जिंदा रह नही सकते ।

: १६० :

२६ नववर १९४७

भाइयो और वहनो,

एक भाईने मुझे खत लिखा है। उसमे ववईके एक अखवारकी कतरन भेजी है। उस कतरनमे लिखा है, गाँधी तो काग्रेसका ही वाजा वजाता है। लोग वह सुनना भी नही चाहते। इस तरहसे काग्रेस रेडियो वगैराका अपने ही प्रचारके लिए इस्तेमाल करेगी तो आखिरमे यहा हिटलरशाही कायम हो जायगी। मै काग्रेसका वाजा वजाता हू, यह वात सर्वथा गलत है। मै तो किसीका वाजा वजाता ही नही या फिर सारे जगतका वजाता हू। उस कतरनमें यह भी कहा है कि अहिंसाकी वात तो यो ही ले आते है, हेतु तो यही है कि हकूमतको अपना ही गान

करता हूँ। मैं यह कहता हू कि जो हकूमत अपना गान करती है वह चल नही सकती। और, मै तो धर्मकी ही सेवा करना चाहता हू। धर्मसे सबध रखनेवाली बातें ही आप लोगोको सुनाता हू। हो सकता है कि कुछ लोग मेरी बाते सुनना पसद न करते हो, मगर, दूसरे लोग मुझे लिखते है कि मेरी बातोसे उनका कितना हौसला बढ़ता है। जिन्हे मेरी बाते नापसद हो उन्हे कोई सुननेके लिए मजबूर नही करता। और, अगर आपका मन कही और है तो यहा बैठकर भी आप मेरी बात बिना सुने जा सकते है। आप लोग मुझे छोड देंगे, तो मैं यहा प्रार्थना भी नही कराऊगा और भाषण भी नही होगा। मैं खास तौरसे रेडियोपर बोलने जानेवाला नही, मुझे वह पसद नही है। यहापर भी मुझे क्या कहना है, यह मै सोचकर नही आता।

हमारी काफी औरते पाकिस्तानमें पडी है, लोग उन्हे बिगाड़ते है। वे बेचारी ऐसी बनी है कि उसके लिए शर्मिंदा होती है, मेरी समझमे उन्हें शर्मिंदा होनेका कोई कारण नही। किसी औरतको मुसलमान जबर्दस्ती पकड़ ले और समाज उसको निकम्मी मानने लगे और भाई, मां, बाप, पति सब छोड़ दे तो यह घोर निर्दयता है। मैं मानता हू कि जिस औरतमे सीताका तेज रहे उसे कोई छू नही सकता। मगर आज सीता कहासे लावे? और सब औरते तो सीता बन नही सकती। जिसे जबर्दस्ती पकडा गया, जिसपर अत्याचार हुआ, उससे हम घृणा करें क्या? वह थोडे ही व्यभिचारिणी है। मेरी लडकी या बीबीको भी पकड़ा जा सकता है, उसपर बलात्कार हो सकता है, लेकिन मै कभी उससे घृणा नही करूगा। ऐसी कई औरते मेरे पास नोआखालीमे आ गई थी। मुसलमान औरते भी आई है। हम सब बदमाश बन गए है। मैंने उन्हे दिलासा दिया। शर्मिंदा तो बलात्कार करनेवालेको होना है, उन बेचारी बहनोको नही।

एक भाई कहते है कि मान लीजिए कि कट्रोल मिट जाय, देहातोमे लोग अपने लिए अनाज पैदा करने लगे, गावके लोग फसल वगैरा काटनेके लिए एक दूसरेकी अपने आप मदद करे तो अनाज सस्ता होगा; लेकिन अगर किसानको दाम देकर मजदूर लगाने पडेंगे तो दाम बढेगा। पहले तो यह रिवाज था ही, एक किसान दूसरे किसानोको निमत्रण देता था

फसल काटनेका और साफ करके घरमें ले जानेका काम हाथोंहाथ खतम हो जाता था। आज हम वह रिवाज भूल गए हैं, मगर उसे वापस लाना चाहिए। एक हाथसे कुछ काम नहीं हो सकता।

फिर वह भाई यह भी कहते हैं कि मंत्रियोंमेंसे कम-से-कम एक तो किसान होना ही चाहिए। हमारे दुर्भाग्यसे आज हमारा एक भी मंत्री किसान नहीं है। सरदार जन्मसे तो किसान हैं खेतीके बारेमें कुछ समझ रखते हैं, मगर उनका पेशा बैरिस्टरीका था। जवाहरलालजी विद्वान् हैं, बड़े लेखक हैं, मगर वह खेतीके बारेमें क्या समझें! हमारे देशमें ८० फीसदीसे ज्यादा जनता किसान है। सच्चे प्रजातंत्रमें हमारे यहां राज्य किसानोंका होना चाहिए। उन्हें बैरिस्टर बननेकी जरूरत नहीं। अच्छे किसान बनना, उपज बढ़ाना जमीनको कैसे ताजी रखना, यह सब जानना उनका काम है। ऐसे योग्य किसान होंगे तो मैं जवाहरलालजीसे कहूंगा कि आप उनके मंत्री बन जाइए। हमारा किसान-मंत्री महलोंमें नहीं रहेगा, वह तो मिट्टीके घरमें रहेगा दिनभर खेतोंमें काम करेगा, तभी योग्य किसानोंका राज्य हो सकता है।

: १६१ :

२७ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आपने देखा होगा, शायद देखोगे, क्योंकि देखा तो अभी कैसे होगा कि मैं आज गवर्नर जनरलके पास चला गया था, अभी अखबारोंमें आ जायगा। और बादमें लियाकतअली साहबसे भी मिलने गया। ऐसा मौका आ गया दोनोंके पास जानेका। काफी बातें हुईं और कुछ काम भी वे कर रहे हैं। लियाकत साहब बीमार तो हैं और मैंने देखा कि बिस्तरमें ही उनको पड़ा रहना पड़ता है। छातीका दर्द उनको हो गया था और धड़कन भी होती है। वह तो अब ठीक हो गई है, लेकिन बहुत दुबले हो गए हैं। वे गवर्नर जनरलके मकानमें ही ठहरे हुए हैं, इसलिए

मै वहा उनके पास भी चला गया था। जैसे जवाहरलालजी यहाके प्रधान मत्री है वैसे वे पाकिस्तानके प्रधान मत्री हैं। तो वे, और वहाका जो अर्थमत्री है उनका नाम मै भूल गया हू, सरदार पटेल और पीछे दो और, ये सब एक साथ मिले और उन्होंने कुछ-न-कुछ कर भी लिया है। पूरा-पूरा तो उसका बयान मै नही दे सकता हू। अगर वह सब हो जाय तो मुमकिन है कि आज इतनी भीड़में जो हम लोग पडे है और जिस परेशानीमेंसे हम गुजर रहे है उसमेंसे कुछ तो निकल पाए। लेकिन सब तो ईश्वरके हाथमे है कि क्या होनेवाला है और क्या नही। आखिर इन्सान तो सिर्फ कोशिश ही कर सकता है।

आपने यह भी देख लिया होगा कि शेख अब्दुल्ला साहब भी यहां आ गए है। जितने काश्मीरके लोग है वे तो सब उनको 'शेरे काश्मीर' कहते है। और वह है भी ऐसा ही। बहुत काम उन्होने कर लिया है और सबसे आला दर्जेका काम तो उन्होने यह किया कि काश्मीरमें जितने हिंदू, मुसलमान और सिख रहते है उन सबको अपने साथ ले लिया है। तादादमे तो मुसलमान बहुत अधिक है और हिंदू और सिख तो मुट्ठीभर है, ऐसा हम कह सकते है, लेकिन तो भी उनको अपने साथ लेकर वे चलते है। वे खुश न रहें ऐसा कोई काम वे नही करते। पीछे हमने देखा कि वे यहा आते हुए जम्मू भी चले गए थे। जम्मूमे हिंदुओकी तरफसे ज्यादतिया हुई है और काफी ज्यादतियां हुई है। उनका पूरा-पूरा बयान तो हमारे अखबारोमें नही आया। महाराजा साहब भी वहा चले गए थे और उनके नए प्रधान मत्री भी। तब वहा दो प्रधान मत्री है क्या, या कुछ और है, मजाकमे मै उनसे पूछ रहा था। उन्होने कहा कि मुझको भी यह पता नही, मगर इतना तो है कि मै वहाका इतजाम कर रहा हू। दो हों या एक हो। तो वे भी जम्मूमे चले गए थे। जम्मूमें जो कुछ हुआ वह महाराजाने करवाया या उनके जो नए प्रधान मत्री है उन्होने करवाया, इसका तो मुझको पता नही। लेकिन वहां हुआ और हमारे लिए यह बड़ी शर्मनाक बात है कि हम ऐसा करे। शेख अब्दुल्लाने यह सब देखकर भी अपना दिमाग बिगड़ने नही दिया और जम्मूमे जो हिंदू पडे है उन्होने भी उनका साथ दिया। पीछे उसमे उनको कहना भी क्या था? यह होते हुए भी

उनको तो बताना है, काश्मीरको, और सारे हिंदुस्तानको भी, कि यही तरीका है जिससे हिंदू, मुसलमान और सिख सब मिलकर रह सकते हैं और एक दूसरेपर एतबार कर सकते हैं। तभी काश्मीर और हिंद दोनों एक साथ रह सकते हैं। उनकी तरफसे कोशिश तो ऐसी ही हो रही है; लेकिन उसमें एक रुकावट है। वह पहाडी मुल्क तो है ही, चौदह हजार फुट तो शायद नहीं, लेकिन दस हजार फुट ऊंचा तो है। बहुत बर्फ वहां पडती है। इसीलिए एक जगहसे दूसरी जगह आना-जाना आरामसे नहीं हो सकता। आरामसे तो पाकिस्तानमेंसे ही होकर जा सकते हैं। लेकिन कौन कह सकता है कि वे जाने दें या न जाने दें। इसके अलावा जो अफरीदी हमलावर हैं, या उनको पाकिस्तानके कहो, उनके साथ कुछ लडाई तो चल ही रही है। तब इस हालतमें काश्मीरके लोग वहांसे होकर कैसे आवें? यों तो हिंद सरकारने उनको मदद भी भेज दी है। तब उनको सीधा रास्ता तो यूनियनमेंसे ही मिल सकता है। काश्मीरमें वैसे कोई बडी तिजारत[1] तो नहीं है, लेकिन वहांके लोग उद्यमशील हैं और हाथके कारीगर हैं। फलोंका तो काश्मीर एक बड़ा बगीचा है। लेकिन ये सब चीजें कौन वहांसे यहां लाए और कैसे लाए? हवाई जहाजसे तो सब चीजें आ नहीं सकतीं, और जो बेचनेवाले हैं वे भी कैसे हवाई जहाजसे आएं? ऐसे तो काम नहीं बन सकता। इसलिए वहां एक ही रास्ता है जो पूर्वी पंजाबमें पठानकोटकी तरफसे है। है तो वह छोटा-सा ही रास्ता, लेकिन है। तब पूर्वी पंजाबमें जो हिंदू रहते हैं, वे इतने बदमाश हो गए हैं कि उस रास्तेसे कोई मुसलमान आ नहीं सकता। शेख साहब कहते हैं कि यही सबसे बडा खतरा है। शेख अब्दुल्ला तो एक बडा आदमी है, लेकिन वह कहते हैं कि हम भी अगर उधरसे जाते हैं, तो हमको भी बहुत दुश्वारी होती है। यह जरूरी नहीं कि कोई सिपाही ही हो, बल्कि आम लोग भी वहांके, यह पूछ लेते हैं कि तुम कौन हो, लाओ, तुम्हारी पगडी उतारकर देखें तो कि चोटी भी है कि नहीं, और इसके बाद दूसरी-तीसरी चीजें भी पूछ लेते हैं। अगर वह हिंदू या सिख है तो खैर है और अगर

---

[1] व्यवसाय।

मुसलमान निकला तो बस फिर खत्म हुआ। ऐसी हालत है वहा !

तब गवर्नर जनरल और ये जो चार लोग इकट्ठे बैठ गए है वे अगर कुछ कर ले तो अच्छा ही है, और कुछ कर भी लिया है। मगर उनके करनेसे क्या ? जब जनता बिगडी हुई है तो फिर कोई काम बनता नही है। मै तो पूर्वी पजाबकी जनताको यह कहूगा कि अब बहुत हो चुका, हमने कितनी खराबिया की, मगर अब तो भूल जाओ। या हमेशाके लिए यही होनेवाला है ? मै कहता हूं कि यह रास्ता बिल्कुल साफ हो जाना चाहिए। उसमें हकूमतको भी पूरा काम करना है। अगर यह काम न कर सकी और हवाई जहाजोसे थोडा-बहुत लश्कर वहा भेज दिया तो उससे क्या हुआ ? उससे क्या काश्मीरका व्यापार चलनेवाला है ? अगर नही तो क्या हिंद यूनियन काश्मीरियोका पेट भरता रहेगा ? यह तो हो नही सकता है। आज अगर हमारी हकूमतके पास करोड रुपये आ गए है तो क्या वह उनको इधर-उधर उडाती रहेगी ? सुनता हू कि अब हकूमतमें हरएक आदमीको एक-एक सेक्रेटरी मिलनेवाला है। क्या होगा उसका, और क्या दरमाहा[1] उस सेक्रेटरीको मिलनेवाला है, मुझको तो कुछ पता नही चलता। अगर इस तरहसे हम पैसे उडाते रहे तो हमारा जल्दी ही खात्मा होनेवाला है। हमारा मुल्क करोडपतियोका नही है, एक गरीब मुल्क है, जहा लोग ताबेके पैसे भी बडी मुश्किलसे पैदा करते है। यहां जो करोडपति या ताजिर[2] लोग है, वे तो केवल मुट्ठीभर है। उनके पास भी जितना पैसा पड़ा है वही क्या है ? इस तरह अगर पैसा उड़ाया जाय तो वह भी एक मिनट-में खत्म हो सकता है। पीछे तो सारा हिंदुस्तान पड़ा है, उसका खर्च भी हमें चलाना है। हम पैसेका दुरुपयोग तो कर ही नही सकते। तब हकूमतको यह देखना होगा कि किस तरहसे यह रास्ता सुरक्षित हो सकता है जिससे कि कोई भी आदमी उस रास्तेसे आ-जा सके। काश्मीरमें बहुत खूबसूरत कपडे बनते है, वे आ सकते है, शाल आ सकते है, और भी जो चीजे कारीगर लोग बनाते है वे सब उस रास्तेसे आ सकती है। काश्मीरकी मेवा यहां आ सकती है। आज तो अगर काश्मीरका सेब खाना हो तो बहुत मुश्किल-

---

[1] मासिक; [2] व्यापारी।

से ही मिलेगा। काश्मीर भारतीय यूनियनमे आ तो गया, लेकिन इस तरह-से वह कहातक हमारे साथ रह सकता है ? अगर काश्मीरको सुरक्षित रास्ता न मिले तो फिर क्या होगा यह मुझको भी पता नही है। अब एक तीसरी बात और कहकर आजका मामला तो मै खत्म करता हू।

अभी मेरे पास पाकिस्तानके 'डान' और 'पाकिस्तान टाइम्स' दोनो अखबार आ गए है। ये दोनो पाकिस्तानके अच्छे बडे अखबार है। जब 'डान' मे या 'पाकिस्तान टाइम्स' मे कुछ निकलता है तो हम यह नही कह सकते कि अरे, यह तो कुछ अखबार नही है। तब तो वहाके लोग भी कह सकते है कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' में जो लिखा है, वह क्या है, 'बबई क्रानिकल' मे जो लिखा है वही क्या है ? यह तो एक निकम्मी बात हो जाती है। मै तो यह मानता हू कि वे भी अच्छे अखबार है, उनको मुसलमान लोग पढते-है और अच्छे-अच्छे मुसलमान उनको चलाते है। तो उनमें वे काठियावाडके मुसलमानोके बारेमे लिखते है। जब सरदार जूनागढमे चले गए थे तब तो मुझको बहुत अच्छा लगता था यह देखकर कि वहाके मुसलमानोने भी उनका इस्तकबाल[1] किया। वे कहने लगे, आप तो भले आए, हम सब परेशान हो रहे थे, अब शायद आराम-से रह सकेगे। जब काठियावाडके सब राजा और प्रजा एक तरफ मिल गए है तब जूनागढ कहातक अलग जा सकता था ! इसलिए मुझको अच्छा लगा कि कुछ मारपीट भी न हुई और सारा मामला निपट गया। वे बिल्कुल अहिंसापर तो कायम नही रहे, मगर जो हिंसा उन्होने अख्तियार की थी उसमें उन्होने बहुत सोच-विचारकर काम लिया। मै तो यह सब देखकर खुश हुआ था। लेकिन अभी सुनता हू और 'डान' अखबारमें भी है कि काठियावाडमे मुसलमान आज आरामसे नही बैठ सकते है। ठीक मौकेपर एक मुसलमानका भेजा हुआ मुझको तार भी मिल गया है। काठियावाड ऐसा मुल्क है जहा मुसलमान बहुत आरामसे रहते थे और उनको कोई छूता भी नही था। वहा अच्छे और तगडे मुसलमान भी थे और बलवाखोर भी थे। बलवा वे कोई आपस-आपसमे नही करते थे, बल्कि

---

[1] स्वागत।

जीविकाके लिए कुछ कर लेते थे। आज उसी क़ाठियावाड़मे उनको ऐसा लग रहा है कि वे वहा रह सकेंगे कि नही। तब क्या काठियावाड़से सारे-के-सारे मुसलमान चले जाए या उनको हिंदू लोग काट डाले ? हैरान हैं वे सब-के-सब और मेरे लिए तो यह एक बहुत बड़ी दुखदारी है, क्योकि मैं काठियावाड़में पैदा हुआ हू, वहांके सब राजाओंको जानता हूं और हजारो लोगोंको भी मैं वहां जानता हू। वहापर तो जो मेरा लडका-सा ही सांवलदास गांधी हैं वही जूनागढ़का सब कुछ होकर बैठ गया है। उसने एक आरज़ी[1] हकूमत भी बना रखी हैं। इन लोगोकी हकूमतके होते हुए काठियावाड़में ऐसा हो कि जिस मुसलमानने कुछ भी नही किया है उसको भी लोग मार डालें तो फिर यह आरजी हकूमत क्या हुई ? जब लोग इस तरहसे कानूनको अपने हाथमे ले लेते हैं तो फिर मुसलमान कैसे वहां सही-सलामत रह सकते हैं ? अगर यह पीछे सब जगह फैल जाए तब क्या हो, मैं जानता नही। यह सब वहां हुआ है या नही यह भी नही जानता, लेकिन 'डान' में जो लिखा है वह मैंने पढ़ा है और तार भी मेरे पास आ गए हैं। बादमें मैंने चंद हिंदुओसे भी पूछा और उन्होंने भी कहा कि हां, कुछ आग लगानेके मामले तो हुए हैं, कुछ लूट भी हो गई है, मगर किसीका खून भी हुआ कि नही यह हम नही जानते और मुसलमानोंकी औरतें भी छीनी गई है कि नही यह भी हम नही कह सकते। लेकिन 'डान' तो लिखता है कि ये चारों बाते हुई है और अच्छे बड़े पैमानेपर हुई है। बहुत-से तार मेरे पास आ गए थे, लेकिन मुझको एक ही तार बताया गया और दूसरे तार गफलतसे नही बताए गए। शायद ऐसे पचास तो आ गए होंगे, मुसलमानोंने इधर-उधरसे भेजे होंगे। और उनको हक है मुझसे यह कहनेका, कि तुम्हारा लड़का वहांका सब कुछ बना हुआ है। लड़का जो कुछ करे उसकी जिम्मेदारी मैं कैसे लूं ? लेकिन इससे तो मैं दुनियाको या उन मुसलमानोको क्या समझा सकता हूं ? वे तो ठीक ही मुझको लिखते हैं। लेकिन मैं लड़केको सुनाता भी कब ? आज ही तो मैंने यह सब पढ़ा है। इसलिए मैं आपकी मार्फत,

---

[1] तात्कालिक।

अपने लडकेको ही नही, सारे काठियावाडको सुनाना चाहता हू कि अगर हिंदू वहाके ऐसे पाजी हो गए हैं— हिंदू ही हो सकते हैं, क्योकि सिख तो वहा है ही नही, क्या हुआ अगर एक-दो वैसे काम करनेके लिए चले गए हो—तब काठियावाड सही-सलामत नही रह सकता। हमने जूनागढ लिया तो सही, मगर इस तरहसे हम उसको खोनेवाले हैं, ऐसे ही, जैसे कि हमने अपने मुल्ककी आजादी ली तो सही, लेकिन खोनेके लिए ली। पीछे वे सुनाते है कि याद है सरदारने जूनागढमें क्या कहा था? उसने कहा था कि अगर मुसलमानका एक बच्चा भी होगा तो उसके एक बालको भी कोई छू नही सकेगा, वशर्ते कि वह काठियावाड, यानी हिंद यूनियनके प्रति वफादार बनकर रहा। अगर मुसलमानकी एक भी छोटी लडकी है और उसको कोई छूता है तो मै देख लूगा। वह तो ऐसा कह सकते थे, क्योकि एक तो सरदार, और दूसरे हिंदुस्तानके गृहमत्री थे। उनको तो कहनेका हक था। उन्होने कहा तो, लेकिन वह अब कहा गया, मै पूछता हूं। मेरे दिलमें चुभता है कि काठियावाड़में ऐसा हो सकता है और वहाके लोग इस तरह दीवाने बन सकते हैं। हमारा धर्म गया, कर्म गया और इस तरहसे हमारा मुल्क भी चला जायगा। मेरा तो यही धर्म था कि मैं आप लोगोको यह सब बता दूं। हमारे अखबारोमें तो ऐसी चीजें आती नही है। मेरे पास ये सब आ जाती हैं। मेरा धर्म तो था कि मैं इतनी तहकीकात करता, लेकिन मेरे पास कहां इतना वक्त है! इसलिए जैसे मैंने सुना वैसे ही मैंने आपको कह दिया। मैं तो जब लियाकतअली साहबसे मिला तब भी मैंने कहा कि अगर आपकी इजाजत हो तो एक बात पूछना चाहता हू। उन्होने कहा कि पूछो। तब मैंने कहा कि क्या आप काठियावाड-के बारेमें कुछ जानते है? उन्होने कहा कि मै सब कुछ जानता हूं। ऐसा वहां हुआ है और यही चारो बाते हुई हैं, लेकिन कितने पैमानेपर हुई, यह मै नही कह सकता। वे तो पाकिस्तानके प्रधान मत्री हैं। इसलिए उन्होंने तो सब साफ-साफ कहा, हालांकि मै तो दबी जबानसे ही बात कर रहा था। तब मैंने सोचा कि आज शामको मै इसको जरूर कह दूगा। मेरे दिलको इस बातसे कितनी चोट पहुची है।

काठियावाड़ मेरा घर है। जब घर ही इस तरहसे जल जाता है

तो फिर किसीको कहनेका क्या मौका रह जाता है ! तब दिल्लीवालोको मैं क्या सुना सकता हू ? मेरे पास तो कुछ ऐसा बन गया है कि इर्द-गिर्द चारो ओर यही चलता है । तब फिर उसमे मैं कैसे साबूत[1] रह सकता हू । जो इन्सान है और समझदार है वह इस तरहके वातावरणमें साबूत रह नही सकता। यह मेरी दुःखकी कथा है या कहो सारे हिंदुस्तानके दुःखकी कथा है, जो मैंने आपके सामने रखी है ।

: १६२ :

२८ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप जानते है कि आज गुरु नानक साहबका दिन है । मुझको भी किसीने निमत्रण तो भेज दिया था, मगर उस वक्त तो मैंने कह दिया था कि आनेके लिए तो मुझे आप माफ करेंगे । लेकिन आज बाबा बिचित्र-सिंह मेरे पास आ गए और उन्होने कहा कि आपको तो आना ही चाहिए। वे १० बजे मिले थे और एक घटेमे ही जाना था । तो फिर मैंने समझा कि अब मुझको जाना ही चाहिए । अपनी ओरसे मैंने तो कुछ किया नही है, लेकिन आज सिख भाई मुझसे नाराज तो है । हां, मैंने उनको एक कड़वी घूट पिलानेकी चेष्टा की है । यह तो है, लेकिन ऐसे ही बनता है दुनियामे । तब उन्होने कहा कि कुछ भी हो, आपको तो वहा आना ही चाहिए । वहां हजारों सिख भाई-बहने होगी और उनमे काफी दुःखी सिख भी पड़े होगे, जो आपकी बात सुनना चाहते है । तब मैंने कहा कि अच्छा, मुझको ११ बजे ले जाइए । ११ बजे शेख अब्दुल्लाको भी अपने साथमें लेकर आए । उनको भी वे वही ले जानेवाले थे । मैंने कहा कि शेख अब्दुल्ला कैसे वहा जा सकता है; क्योकि आज तो ऐसा बन गया है न कि सिख और मुसलमान तो एक दूसरेको बर्दाश्त ही नही कर सकते ; लेकिन

---

[1] साबित ।

कुछ भी हो, शेख अब्दुल्लाने एक बहुत बडा काम कर लिया है। काश्मीर-मे उन्होने हिंदू, सिख और मुसलमानको एक साथ रखा है और एक साथ मरना और एक साथ जीना, ऐसा कर लिया है। तब मैंने सोचा कि शेख अब्दुल्लाको भी ले जाना चाहिए। इसलिए मै उनको अपने साथ ले गया। मुझको यह बडा अच्छा लगा। हजारो सिख भाई-बहने वहा थी। मैंने कुछ थोडा-सा ही कहा, लेकिन शेख अब्दुल्ला तो काफी बोला और सब लोगोने बहुत ध्यानसे सुना। आखसे भी कोई कुछ बताता नही था, आवाज तो कौन करनेवाला था। क्योकि हम लोगोको तो निमन्त्रण देकर वे ले गए थे। आखिर सिख बहादुर तो है ही, इसलिए यह सब अच्छी तरहसे हो गया। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो देनी ही चाहिए।

मेरे पास बगालसे एक खत आ गया है। वहा जो मुस्लिम चेंबर आव कामर्स है उसका वह खत है। जवाब तो मै नही दे सकता हू, लेकिन सोच लिया है और पीछे घनश्यामदासको भी मैंने पूछा कि आप कुछ इस बारेमे जानते है। उसने बताया कि यह जो मुस्लिम चेंबर आव कामर्स है उसको गवर्नमेंटके साथ ताल्लुक करना है, गवर्नमेंटके साथ खतोकिताबत करना है। लेकिन हुकूमत तो सबकी है, हिंदू, मुसलमान, पारसी सबकी। तब मुसलमान एक चेंबर बनाए, हिंदू दूसरा, पारसी तीसरा और अग्रेज चौथा, तो ऐसा कैसे बन सकता है। इसलिए सरकारने इन्कार कर दिया। तब वे लिखते है कि कैसा गोलमाल करते है कि मारवाडी चेंबर रह सकता है, यूरोपियन चेंबर रह सकता है, लेकिन मुस्लिम चेंबर है, वह नही रह सकता। मुझको उनकी यह बात अच्छी लगी और मेरे दिलको चोट लगी। अगर सरकार मुस्लिम चेंबरके साथ कोई ताल्लुक नही रखती तो पीछे मारवाडी चेंबरके साथ भी नही रख सकती और यूरोपियनके साथ भी नही होना चाहिए। अबतक यह सब था और यूरोपियन चेंबरका तो इसलिए भी बन गया था कि वे लोग हुकूमतमे थे। यहा यूरोपियनोकी हुकूमत चलती थी, तभी तो वाइसराय उनके प्रेसिडेंट बनते थे। पीछे तो ऐसा बन गया था कि बडे दिनोके अवसरपर उनको कलकत्ता तो जाना ही होता था, तो वहा यूरोपियन चेंबरमे एक बडा व्याख्यान भी दे देते थे।

लेकिन अब वह सिलसिला रह नही सकता। जो यूरोपियन है वह अलग करे, मुसलमान अलग और मारवाड़ी अलग, इस तरहसे कैसे हो सकता है! केवल एक इडियन चेवर ही वन सकता है। अगर हिंदू, मुसलमान और पारसी सव अलग-अलग अपने व्यापारिक चेंबर बनाने लगे तो फिर हिंदुस्तानकी आजादी किसके लिए होगी ? और यूरोपियनोको तो खसूसन[1] आज झुक जाना चाहिए। उनको अलग रहकर कोई चीज करनी ही नही चाहिए। वे कहे कि हमको कोई अलग हक नही चाहिए। जो दूसरोके हक है वही हमारे हक है। तव आजाद हिंदुस्तानकी यह एक बडी भारी निशानी वन जाती है। यूरोपियन चेवरवाले हर साल वाइसराय साहवको वुला लेते थे, लेकिन आज मेरी निगाहमे तो वे यहाके प्रधान मन्त्रीको, या उप-प्रधानमत्रीको या ऐसा कहो कि लार्ड माउटवेटन साहवको भी अपने यहा वुला नही सकते है। हा, एक यूरोपियनकी हैसियतसे वे वहा यूरोपियनोसे मिलने जा सकते है। मगर चेबरकी हैसियतसे वे माउटवेटन साहवको नही वुला सकते। मै तो वहुत अदना आदमी हू, लेकिन मेरी राय यह है कि इसमें मुझको कोई शक नही। इसी तरहसे जो मारवाडी चेवरके लोग है वे हुकूमतमेंसे किसी आदमीको वुला नही सकते है, वैसे मारवाडी मारवाडियोकी हैसियतसे किसीको भी वुला सकते है, मगर चेवरकी तरफसे नही। उन सवकी हस्ती सारे हिंदुस्तानकी हस्तीके साथ है। मुसलमान भी यहा कोई अलग कौमकी हैसियतसे नही रह सकते। हिंदी होकर रहे। इसी तरहसे जो सिख है वे, जो हिंदू है वे, और यूरोपियन है वे भी यहा हिंदी होकर ही रह सकते है। वे सव हिंदुस्तानके वफादार होकर रह सकते है। दूसरा कोई स्थान मै उनके लिए नही पाता हू। इसलिए मैने सोचा कि जो अहम[2] वात है उसको तो मै उनको कह दू। मै यहासे लिखू और पीछे वह उनके पास पहुचे, इससे पहले अच्छा है मेरी आवाज उन तक पहुच जाय। मुसलमान अगर ऐसा कहे कि वे राजनैतिक दृष्टिसे भी अलग रहेगे और दूसरी तरहसे भी, तो यह कोई चलनेवाली वात नही है। जो यूरोपियन है, वे क्रिस्टी वनकर रह सकते है

---

[1] विशेषतः; [2] जरूरी।

और क्रिस्टी धर्ममे जो खूबिया है उनका वे पालन कर सकते है। यह तो उनका सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र हुआ। लेकिन जहातक राज्य-व्यवहार या राज्य-प्रकरणका सबध है उसमे वे सब एक ही-जैसे माने जा सकते है। उसी तरह व्यापार तो सबके लिए है ही। तब उसमे मारवाडी कहे कि हम सब खा जाए, गुजराती कहे हम खा जाए और पजाबी कहे हम खा जाए, तो पीछे बाकी सारा हिंदुस्तान क्या खाएगा? ऐसे हमारा काम निपटता नही है।

एक चीज तो कहनी मै भूल गया, जो भूलनी नही चाहिए। वहा सिख-सभामे तो मैने कह दिया था, लेकिन यहा भी जो सिख है या हिंदू भी है, क्योकि जो बात एकके लिए सत्य है, वह दूसरोके लिए भी है, तो मै कहूगा कि आज सिखोका नया दिन है, ऐसा मानना चाहिए। इसलिए आजसे ही सिखोका यह धर्म हो जाता है कि वे सब लोगोको अपना भाई-भाई समझे। गुरु नानक साहबने कोई दूसरी बात सिखाई ही नही। वे तो मक्का शरीफ भी चले गए थे और गुरु ग्रथ साहबमे भी काफी लिखा है। गुरु गोविंदने क्या किया था? बहुतसे मुसलमान उनके शागिर्द थे और उनको रखनेके लिए या उनकी हिफाजतके लिए उन्होने कई अन्य लोगोको मारा भी। ऐसा वह नही करते थे कि एक सिखको बचानेके लिए दूसरोको मारा हो। तलवार उन्होने ली तो थी, लेकिन उसमे एक मर्यादा रख दी थी। तब मुसलमानोने चाहे कुछ भी किया हो, लेकिन हमे उनकी नकल नही करनी। हम लोग सब शरीफ रहे और अपने धर्मका पालन करे। आज जब मै वहा सिख-सभामे बोलने गया तो मुझको तो इस बातका बहुत ही दर्द हुआ कि रास्तेमे मुझको एक भी मुसलमान नही दिखाई दिया। चादनी चौकमे एक भी मुसलमान न दिखाई देता हो, इससे बडी शर्मकी बात हमारे लिए और क्या होगी? मैने देखा कि वहा आदमियोकी बहुत भीड थी और मोटरोकी तो लबी-लबी कतार चलती थी। लेकिन उनमे कोई मुसलमान नही था। सिर्फ एक मुसलमान शेख अब्दुल्ला मेरे पास बैठे थे। जब ऐसी हालत है तब हमारा काम कैसे निपट सकता है?

एक भाई मुझको लिखते है कि जो सोमनाथ मदिर था उसका

जीर्णोद्धार होगा। उसके लिए पैसा चाहिए और वहा जूनागढमे जो आरजी हकूमत सांवलदास गाधीने बनाई है, उसमेसे वे ५० हजार रुपया उसके लिए दे रहे है। जामनगरने एक लाख रुपया देनेको कहा है। सरदारजी आज जब मेरे पास यहा आए तो मैने उनसे पूछा कि सरदार होकर क्या तुम वहा ऐसी हकूमत बनाओगे कि जो हिंदू धर्मके लिए अपने खजानेमेसे जितने पैसे चाहे निकाल कर दे दे। हकूमत तो सब लोगोके लिए बनाई गई है। अग्रेजी शब्द तो उसके लिए 'सेकुलर' है, अर्थात् वह कोई धार्मिक सरकार नही है, या ऐसी कहो कि वह किसी एक धर्मकी नही है। तब वह यह तो कर नही सकती है कि चलो, हिंदुओके लिए इतना पैसा निकालकर दे दे, सिखोंके लिए इतना और मुसलमानोके लिए इतना। हमारे पास तो एक ही चीज है और वह यह कि सब लोग हिंदी है। धर्म तो अलग-अलग व्यक्तिका अलग-अलग रह सकता है। मेरे पास मेरा धर्म है और आपके पास आपका।

एक भाईने और लिखा है, एक पर्चेमे, और अच्छा लिखा है। वह कहते है कि अगर जूनागढकी हकूमत सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए पैसा देती है या यहा की मध्यवर्ती हकूमत कुछ देती है तो वह एक बडा अधर्म होगा। मै मानता हू कि वह बिलकुल ठीक लिखा है। तब मैने सरदारजी-से पूछा कि क्या ऐसी ही बात है ? उन्होने कहा कि मेरे जिंदा रहते हुए यह बननेवाली बात नही है। सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए जूनागढकी तिजोरीसे एक कौडी नही जा सकती। जब मेरे हाथसे यह नही होगा तो सावलदास बेचारा क्या करनेवाला है ! सोमनाथके लिए हिंदू काफी पडे है जो पैसा दे सकते है। अगर वे कजूस बन जाते है और पैसा नही देते तो वह ऐसे ही पड़ा रहेगा। डेढ लाख तो हो गया है और जामसाहबने उसके लिए एक लाख रुपया दे दिया है। रुपयेका इंतजाम तो हो जायगा।

एक बात और मेरे पास आ गई है। आपने देखा होगा कि पाकिस्तान-मे हमारी लडकियोको मुसलमान छीन ले गए है। उनको छुडानेके लिए कोशिश तो हो रही है, और वह होनी ही चाहिए। हरएक लडकीको जो कि वहा अबतक जिदा पड़ी है, वापिस लानेकी कोशिश की जाय। अगर

जुल्म और जबर्दस्ती करके उसे उन्होने बिगाड दिया है, तो क्या उसका धर्म और कर्म सब खत्म हुआ ? मै तो ऐसा मानता नही हू और कल मैने आपको इस बारेमे बताया भी था। जबर्दस्तीसे किसीका धर्म नही बदला करता। लेकिन उस लडकीको लानेके लिए कुछ पैसे दो, ऐसी भी बात आज चलती है। कुछ गुडे आ जाते है और कहते है कि लाओ, एक-एक हजार रुपया फी लडकी दे दो, हम उनको ला सकते है। तब क्या यह कोई व्यापार बन गया है ? अगर मेरी इन तीन लडकियोमेसे एकको कोई उठा ले जाता है और वह पीछे मेरे पास आकर कहे कि एक हजार या एक-सौ ही दे दो, मैं वापस ला दूगा, तो मै जवाब दूगा कि तू उसको मार डाल। अगर ईश्वर उसको बचाना चाहते है तो मेरी लडकी मेरे पास आ जायगी। लेकिन क्या तू उसके लिए सौदा करना चाहता है ? एक तो लुटेरा बनता है और फिर दगाबाजी करता है। अपने धर्मको तो तूने छोड दिया और चूकि मेरी लडकी है, इसलिए अब मुझको दबानेके लिए आया है। मै एक कौडी नही देनेवाला हू। इसी तरहसे कोई भी मा-बाप अपनी लडकियोके लिए ऐसा सौदा न करे। उनकी लडकी खुदाके पास पडी है। ईश्वर सब जगह है। अगर एक लडकीका पति मर जाता है तो वह लडकी कहा जायगी ? हा, यह बात दूसरी है कि अगर लडकीको वहासे आना है और किराया नही है, तो किराया दे देते है। लेकिन अगर यह गुडा आता है और कहता है कि इतने पैसे दे दो तो वह कोई बननेवाली बात नही है। इसी तरहका एक दृष्टात मै दे देता हू वहाका, और यहाका भी, क्योकि यहा हमने भी तो ऐसा ही किया और मुसलमान लडकिया छीनी है। तब पूर्वी पजाबकी सरकार या यह मध्यवर्ती सरकार जिन्ना साहबसे कहे कि एक लाख रुपया दे दो, जितनी मुसलमान लडकिया हमारे कब्जेमें है सब दे देंगे, तो क्या हमारी हकूमत ऐसा पाजीपनका काम करेगी ? मै तो हकूमतको एक कौडी भी नही दू। एक तो उसके यहा ऐसा नीच काम हुआ है और पीछे उस नीचताके बदलेमें वह पैसा भी मागे! हकूमतको तो मेरे पास आकर तोबा करनी चाहिए और मुझको लडकी भी वापिस करे और उसके साथ ही कुछ इनाम भी दे। ऐसे अगर हम शुद्ध न रहे और हम बहादुर न बने तो फिर हमारा काम अच्छी तरहसे होनेवाला नही है।

कल काठियावाडकी बात मैंने कही थी। मैंने तो जो पाकिस्तानके अखबारोमें पढा और पीछे कुछ हिंदुओने भी सुनाया वही आपको कह दिया था, लेकिन आज जब सरदारजी मेरे पास थे तब मैंने उनसे पूछा। मैंने कहा कि जब आप वहा गए थे तब तो आपने बडे-बड़े व्याख्यान दिए थे कि वहा एक भी मुसलमान लडके या लडकीको कोई छू भी नही सकेगा। मगर अब मै सुनता हू कि उनको लूटा गया, मारपीट भी हुई, उनकी जायदाद वगैरा जला दी गई और उनकी लड़कियोको भी उठा ले गए। उन्होंने कहा कि जहातक मै जानता हू और ठीक जानता हू कि वहा एक भी मुसलमानको मारा नही गया और एक भी मुसलमान-का मकान जलाया नही गया और लूटा भी नही गया। हा, इतना तो कुछ हो गया, लेकिन वह तो उनके पहुचनेसे पहलेकी बात हुई, जब कि वहा यह सब गोलमाल चल रहा था। तब कुछ लूटमार भी हुई और शायद एकाध मकान जलाया भी गया है, लेकिन ये दो बातें तो तब भी नही हुई, न तो किसी-को मारा गया और न किसी लडकीको उठाया गया। वहा तो मध्यवर्ती सरकारका एजेंट या कोई कमिश्नर वगैरा भी रहता है। तो उसको हुक्म चला गया है कि इस तरहकी चीज नही हो सकती, तुमको पूरा बदोवस्त करना है। कोई भी, मुसलमानको वहा छू नही सकता, लूटना और मारना तो दूर रहा। बादमें वहा ऐसा कुछ नही हुआ। मैंने कहा कि क्या मै इस बातको शामकी सभामें कह सकता हू। उसने कहा कि बडी खुशीसे तू कह सकता है, अगर कुछ हुआ है तो मै उसके पीछे पडूगा। उसने यह भी कहा कि वहा जो काग्रेसी हिंदू है उन्होंने अपनी जान खतरेमे डालकर भी मुसलमानोको और उनकी मिल्कियत वगैराको बचाया। वहा कोई गुडाबाजी चल नही सकती। जबतक मै वहा पडा हू और गृह-विभाग मेरे हाथमे है तबतक मैं ऐसा कभी भी नही होने दूगा। मै तो यह सब सुनकर राजी हुआ और मैंने पूछा कि क्या मैं यह सब लोगोको बता दू। उसने कहा कि बडी खुशीसे, और मेरा नाम लेकर तू कह सकता है। मुझे कितनी खुशी हुई इस बातकी कि कल ही हमने ऐसा कहा था और आज मुझको यह खबर मिल गई।

: १६३ :

२६ नवबर १६४७

भाइयो और बहनो,

मैंने आपसे कल कहा था कि सिखोंके लिए तो कलका दिन एक बहुत बड़ा अवसर था, लेकिन हमको भी वह ऐसा ही मानना चाहिए। अगर सचमुच कलसे उन्होंने एक नया जीवन शुरू किया है और जो गुरु नानक सचमुच हमारे सबके लिए रख गए हैं, उसके मुताबिक वे चलना चाहते हैं तो जो चीजें आज दिल्लीमें बन रही हैं, वे होनी नही चाहिए।

मैंने आज तो अखबारोंमें भी पढ़ लिया है और यो भी मैंने सुन लिया था कि दिल्लीमें काफी लोग शराब पीते हैं। शराब पीनेवाले क्या-क्या कर सकते है, यह तो हम जानते ही हैं। तो वे कहते हैं कि अब तो शराबका मामला बड़ा कठिन हो गया है और दिल्लीमे वह बहुत फैल गया है, यहा-तक कि उसको काबूमे लाना बहुत मुश्किलकी बात हो गई है। अगर कल-से एक नया पन्ना खुल गया है तो यह होना चाहिए कि जो शराबका दौर चलता था वह अब कम हो जाना चाहिए। शराब पीकर तो हम दीवाने ही बन सकते हैं। तब शराब क्या पीना था! सब चीजें तो मैं आपको बताऊ भी क्या, मेरे पास तो न जाने क्या-क्या आ जाता है।

एक तो यह चीज हुई और दूसरी, उसमें कुछ तो हुआ है, ऐसा कहते हैं—वह यह कि जिन मस्जिदोंमे हमने नुकसान किया था, वह तो है, लेकिन जहा मस्जिदको मदिर बना लिया था, वहा अगर पुलिस या मिलटरी-की चौकी पडी है तब तो वह जैसी थी वैसी ही बद रहती है। लेकिन मुझको तो वह भी चुभेगा, क्योंकि अगर नया पन्ना हमने कल खोल लिया है तब यह कैसे बन सकता है? जिन मस्जिदोंको मदिर बना रखा है, उसमे सिखोंका काम तो नही हो सकता। लेकिन सिख एक बडी कौम है, और वे अगर यह निश्चय कर लेते हैं कि हमको तो आजसे पाक ही बनना है और पाक काम ही करना है तो पीछे उसका हिंदुओंपर भी असर पडता है, इसमें मुझे थोडा-सा भी शक नहीं है। तब सिख लोग तो सचाई और हकके फैलानेवाले बन जाते है और उनका पेशा ही यह बन जाता है कि हम

तो हर जगह अमन[1] चाहते है, दूसरा तो कुछ है ही नही। अगर ऐसा हो जाता है तो फिर शक्ल दूसरी ही बदलनेवाली है। अतः जिन लोगोंने मस्जिदोको मदिर बनाया है उन्हे वहासे मूर्तियां उठा लेनी चाहिए और जो मस्जिद है, उसको मस्जिद-जैसी ही रखना चाहिए। अगर ऐसा बन जाए तो फिर जो पुलिस या मिलटरी हम वहा रखते है उसकी दरकार भी क्यों रहेगी। जब सब लोग भले हो जाते है तो पुलिसकी दरकार ही नही रहती।

एक तीसरी चीज और है और वह यह कि हमारी काफी लडकियोको पाकिस्तानमें लोग उड़ा ले गए है। कहा ले गए है वे, इसका तो हमे कुछ पता ही नही है। तो कल मैंने कहा था कि एक कौडी भी हम किसी लड़कीको खरीदनेके लिए न दें। जिन्होंने हमारी लडकियोको उडानेका गुनाह किया है वे उनको वापिस दे दे और उनके साथ-साथ पश्चात्ताप भी करें। हम उसके लिए पैसा दे यह बन नही सकता है। लेकिन एक बयान हमारे लिए भी मेरे सामने आता है और वह तो बहुत खतरनाक बयान है। वे कहते है कि पूर्वी पजाबमे हम जिन मुस्लिम लडकियोंको अपने पास रखकर बैठ गए है, उनका हम बेहाल करते है। मै नही समझ सकता कि हम इन्सानियतसे यहातक गिर गए है। मुझसे तो यह बर्दाश्त होता नही है, यह मैं कबूल करता हू। उन लडकियोको तो हमे अपनी मां या अपनी लडकियो-जैसी ही समझना चाहिए। जो मुसलमानकी लडकी है तो वह मेरी ही लडकी है। तब मेरी जो ये लडकी है, इनका कोई बेहाल करे, और मै मौज उडाऊं, जिंदा बना रहू और खूब खाऊ-पीऊ तो यह कैसे कर सकता हू। जिन भाईने यह खबर दी है उसमें मुझको लगता है कि कुछ-न-कुछ अतिशयोक्ति है। लेकिन अतिशयोक्ति मानकर उसे भूलना तो नही चाहिए और पीछे अगर उसमे अतिशयोक्ति है भी तो अच्छा ही है, क्योंकि उससे हमको सोचना तो पडेगा कि क्या इन्सान यहातक भी गिर सकता है। वह चीज तो ऐसी है कि जो हमारे अदर कपन पैदा कर दे। तो कलसे हमने एक नया पन्ना खोल दिया है, क्योंकि जब सिखोंने खोल दिया

[1] शांति।

तो हिंदुओंने भी खोला और कहो कि मुसलमानोंने भी । लेकिन मुसलमानों-को तो भूल जाओ, क्योंकि यूनियनमें तो हमने उनको लाचार बना दिया है। लेकिन हिंदू और सिख तो लाचार नही हैं । तब उनको बराबर यह सोचना है कि क्या करना चाहिए । हा, यहा तो हम ऐसा करते नही है । लेकिन कही भी अगर कोई गुनाह करता है तो मै गुनहगार बन जाता हू, ऐसा मुझको लगता है और आपको भी ऐसा ही लगना चाहिए । मैंने अगर कुछ गुनाह किया है तो आप भी यही सोचे कि गाधीने गुनाह किया तो हम लोग भी गुनहगार हैं । हम ऐसे ओतप्रोत बनें कि जैसे एक समुद्रके बिन्दु होते है । अगर समुद्रके बिन्दु अलग-अलग होकर रहे तो वे सूख जाते हैं, मगर जब वे समुद्रमें ही रहते हैं तो वे सब मिल जाते हैं और बडे-बडे जहाजो-को भी अपनी छातीपर उठा लेते है । जैसे समुद्रका हाल है वैसे हमारा है । आखिर हम भी तो मनुष्योका समुद्र हैं। अगर एकने बुरा किया है तो सबने किया । पीछे, ऐसा होनेसे वह बुराई मिट जाती है। हम सबको जाग्रत हो जाना चाहिए । इसलिए मैंने आपको इतनी चीजें तो कही, लेकिन मै अब इसके बाद कट्रोलपर आना चाहता हू ।

चीनीपरसे तो कट्रोल हट गया और मेरी उम्मीद तो ऐसी रहती है कि कपडोंपर और खुराकपर जो दूसरे-तीसरे कट्रोल है, वे भी सब छूटने ही चाहिए । लेकिन वे कैसे छूटे और उनके छूटनेके बाद हमारा धर्म क्या हो जाता है ? चीनीका तो कट्रोल छूट ही गया, इसलिए पहले तो मै उसकी बात कर लू । अभी तो चीनीके बडे-बडे कारखाने हैं, उनके लोग ऐसा न करें कि चलो, अब तो हमें छुट्टी मिल गई है, इसलिए हम जितने पैसे लोगोंके पाससे छीन सकते हैं उतने छीन लें । अगर वे चीनीका दाम बढा दें तो पीछे सब लोग कगाल हो जायगे । यह तो अच्छी बात है कि चीनी खानेवाला सारा हिंदुस्तान तो नही है । उनको कुछ खाना है तो गुड खाना चाहिए और गुडपर तो कोई अकुश वगैरा है ही नहीं । गुडको तो देहाती लोग आरामसे अपने-अपने घरोमें बना सकते है, लेकिन चीनी तो वे नहीं बना सकते । उसके लिए तो हिंदुस्तानमें बडे-बडे यत्रालय बने हैं और जो लखपति-करोडपति लोग है, वे कुछ मजदूर रखकर उनमें

चीनी बनाते हैं। लेकिन गुड तो जहा भी गन्ना पैदा होता है वहा आम[1] बन सकता है। और फिर गुड तो बडा खाने लायक होता है, अगर वह शुद्ध बना है तो। बचपनमे मेरे पिता मुझको ले जाते थे या पिताके पास जो दूसरे नौकर रहते थे, उनके साथ मैं चला जाता था उन देहातोमे, जहा गन्ना पैदा होता है। तो वहाके लोग हमे बिल्कुल ताजा और स्वच्छ गुड खानेके लिए देते थे। तब तो वह एक खुराक जैसा बन गया, मगर चीनी खुराक नही बन सकती। तब गरीब लोग तो गुड खाए, लेकिन आज उनमेंसे कुछ चाय पीनेवाले भी तो बन गए है और पीछे चायमे वे गुड नही, बल्कि चीनी डालते है। मैं तो लोगोको यह सिखा दू कि उसमे गुड डालो, लेकिन मेरी वे माननेवाले थोडे ही है! तब अगर चीनीका दाम बढता है तो वे सोचेंगे कि चीनीपर भी अकुश रहता तो ही अच्छा था, हमें इतने दाम तो नही देने पडते। ऐसी हालतमे जितने चीनीके व्यापारी या कारखानेदार है उनका यह परम धर्म हो जाता है कि वे आपसमें मिलकर कुछ ऐसी व्यवस्था करें कि जिससे सारा हिंदुस्तान यह देखे कि आज हमको आजादी मिल गई है तो इस आजादीमें हम केवल शुद्ध कौडी ही कमाएगे। इस आजादीमे हम लोगोको दगा नही देंगे और धोखाबाजी भी नही करेंगे, जो भी सडाद या गदगी है उसको निकाल बाहर करेंगे। अगर वह नही होता है तो मुझको सुनना ही पडेगा, क्योकि आखिर काफी काम मैने इसपर-से कट्रोल हट जानेके लिए किया है और अभी भी कर रहा हू। चीनीके व्यापारी और कारखानेदार अगर अपने मुनाफेके टके बढा देते है तो फिर चीनीका दाम बढना ही है। अगर वे सौमेंसे पांच लेते हैं, तब तो वह शुद्ध कमाई ही मानी जायगी और अगर दस या बीस फी सदी अपनी जेबमे डालते हैं, तो वह शुद्ध कौडी नही कही जा सकती। सौमेंसे पाच बहुत काफी है, उससे अधिक तो लेना नही चाहिए। तब जो दूसरे कट्रोल है वे तो अपने आप ही उड जाते हैं। हकूमतको यह न कहना पडे कि तब तो सब कहते थे कि अकुश उडा दो और अब वह उड़ा तो दिया, लेकिन जो गरीब लोग है वे क्या खायगे? गरीबोको तो वह मिलती ही नही है। ऐसा

---

[1] साधारणत:।

नही होना चाहिए । जो कारखानेवाले पडे है उनको स्वच्छ वनना है और आपसमे मिलकर एक मडल वना ले और एक ही भाव वाध दे । उससे ज्यादा कोई भी कारखानेदार न ले। लेकिन ऐसा भी नही होना चाहिए कि जो गन्ना वोनेवाले किसान लोग है उनको गन्नेका दाम कम दे। अगर किसानोको ज्यादा दाम दे और उसकी वजहसे कुछ भाव वढता है, तव तो वह शुद्ध कौडीकी ही वात हो गई । वे सच्चा हिसाव करें और वह हिसाव सवको वता दें कि कल किसानोके पास इतना जाता था और आज उनको इतना मिलता है जो सीधा किसानोकी जेवमें जाता है और वीचमें उसे कोई खा नही सकता। हम लोग तो कल जो दो रुपये फी सदी या पाच रुपये फी सदी लेते थे, आज सवा पाच भी नही लेते हैं। मान लीजिए, मिलवालोने तो पाचसे ज्यादा नही लिए, लेकिन जो वीचमें छोटे-छोटे ताजिर लोग आ जाते हैं, वे अगर ज्यादा दाम लेते हैं तो फिर चीनीके खानेवाले तो मर जाते हैं। तव कारखानेदारोको चाहिए कि वे चीनी सीधी खानेवालोको ही वेच डालें। अगर यह हो जाता है तव तो काम सीधा-सीधा चलता है, इसमें मुझको शक नही है ।

एक भाईने लिखा है कि देखो तो सही, जो लोग तीसरे दर्जेमें सफर करते हैं उनके रेल-किराये भी वढा दिए हैं, हालाकि दूसरे और पहले दर्जेके किरायोंसे तो वे कुछ कम वढे हैं। लेकिन वह लिखते हैं और ठीक लिखते हैं कि तीसरे दर्जेके किरायेमें इतनी-सी वृद्धि भी हमको क्यों करनी पडी ? माना कि हमको अव ज्यादा काम करना है और उसके लिए हमको पैसे चाहिए, लेकिन ऐसी वहुत-सी चीजे हैं, जैसे तवाकू है, वाहरसे कई चीजें ऐसी आती हैं और यहा भी वनती हैं कि जो हरएक आदमीके जीवन-निर्वाहके लिए आवश्यक नही हैं। इन चीजोंपर चाहो तो कुछ कर वढा दो। उसमेंसे कुछ वन सकता है। तव जो हकूमतमें हमारे वडे-वडे लोग पटे हैं उनको देखना और हिसाव करना है कि इस तरहकी वृद्धिमे क्या कुछ निकल सकता है। लेकिन यह समझने लायक वात तो है ही, और हकूमतको भी यह देखना है कि ऐसे लिखनेवाले भी मेरे पास पडे हैं। वे कोई निकम्मे नही, वहुत समझदार आदमी हैं। आज अगर करोडों

रुपये हमारे हाथमे आ गए है तो करोडो ही हम खर्च कर डाले, ऐसा नही है। करोड़मेसे एक-एक कौडी लेकर भी हम आहिस्ता-आहिस्ता और फूक-फूककर चले। एक कौडी हम खर्च तो करे, लेकिन वह हिंदुस्तानकी झोपड़ियोमे जाती है कि नही, मेरे लिए तो यही हिसाब काफी रहता है। जो करोडो रुपये हिंदुस्तानकी झोपडियोमेसे खिचकर आते है, उनमेसे कितना हम उनको वापिस भेज सकते है? जो सच्चा पचायती राज्य या लोकराज्य होता है उसे लोगोके पाससे पैसा तो लेना पडता है, लेकिन उसका दाम दस गुना उनके घरोमे चला जाना चाहिए। जैसा कि मै तालीमके लिए लोगोसे पैसा लेता हू तो मै ऐसी तालीम उनके लडकोको दू और इस तरहसे खर्चका अदाजा करू कि जिससे दस गुना पैसा उनको वापिस मिल जाय। मान लीजिए, मै देहातोमे सफाईका काम करू, लोगोके लिए सडके और रास्ते बनवाता हू तो देहातके लोग यही सोचेंगे कि जो पैसा हम देते है वह हमारे ऊपर ही खर्च होता है। नतीजा यह होगा कि आज मिलिटरीके पीछे हम जो इतने दीवाने बन गए है, तब उतने नही रहेगे। हमारे दिलमें पीछे यही विचार पैदा होगा कि मिलिटरीपर तो कम-से-कम खर्च करें और आम लोगोपर ज्यादा-से-ज्यादा। तब तो लोग मिलिटरी भी खुद ही बन जाते है और उसका काम सीख लेते है। इस तरहसे जब वह अपनी और अपने पडोसीकी भी रक्षा कर लेते है तो फिर हिंदुस्तानकी रक्षा तो अपने आप हो जाती है। ऐसे तो हिंदुस्तानपर कोई गदी नजर डाल भी नही सकते है।

आज तो ऐसा है कि अग्रेजी राज तो यहासे गया, लेकिन अग्रेजी हवा अभी नही गई है। हम उस हवाको बदल दे। वे तो यहा एक बडे पैमानेपर खर्च करते थे और ऐसा खर्च कि जो लोगोके पास वापिस नही आता था, लेकिन आज तो सब-का-सब खर्च हमको वापिस आना चाहिए, तब तो हमारे लिए खैर हो जाती है। बस, आज तो इतना ही मै आपसे कहूगा।

: १६४ :

३० नवबर १६४७

भाइयो और बहनो,

कल ही मैं तो आपसे कहना चाहता था, लेकिन चूकि और बहुत कुछ कहना था, इसलिए रह गया। आपने देखा होगा कि ये लडकिया जो बैठती है तो फर्शपर ही बैठ जाती है और उससे ठड लगती है। मैंने तो कह दिया था कि हमारे पास इतने कागज पडे है या अखबार है जिनका हमने इस्तेमाल कर लिया है, उनपर बैठो। लेकिन आज तो किसी भाईने चद्दर बिछा दी है तो अच्छा किया। हम बेदरकार रहते है यह एक तरहसे तो अच्छा भी है। हम क्यो ऐसे नाजुक बने कि हम अगर कही बैठ गए तो हमको ठड लगे। फिर भी घासपर अगर हम बैठते है तो एक कागजका टुकडा अच्छा-सा मिल जाय और वह गीला नही हो जाता है तो वह ठडसे बचा लेता है। ऐसा नही हो तो पीछे हमारा तो एक पुराना तरीका भी है कि जहा भी कही जाना है, सबको आसन अपने साथ ही लेकर चलना है और पीछे जहा भी बैठना होता है वही आसन बिछाकर बैठना है। आज तो हम यह सब भूल गए है और ऐश-आराममे पड गए है। लेकिन मैं तो कहता हू कि कागजका टुकडा भी छोडो, ले लो अगर लेना ही है तो, और वह भी एक खासा अखबार है तो, मगर जो आसन होता है, या तो ऊनका या फिर जूटका या दोनोमेसे किसीका, नही तो फिर कपडेका या सूखी घासका ही हो, वह एक बडी चीज है। जहा बैठना है, उसे बिछाया और बैठ गए और पीछे उसको बगलमे रखकर चले गए। क्योकि मुझको ठड लगती है, इसलिए सबको ठड तो लगती ही होगी। पीछे डाक्टरोका भी बताया हुआ है कि भीगी जमीनपर या कि वहा जहा ठड लगती है, नही बैठना चाहिए। जो भाई धोती पहनते है या जो बहने सिलवार या घाघरी पहनती है, वे अगर भीतर मोटा कपडा पहना हुआ है तो आसनका काम दे देता है। लेकिन वे भी तो नाजुक बन गई है तो फिर उनके पहननेको भी मुलायम चीज ही होनी चाहिए। वे मोटा कैसे पहने और भीतर जो कपडा पहनते है वह मुलायम होना चाहिए। तब वह

यहाकी जो सर्दी है, उससे बचा नही सकते ।

अभी मेरे पास तो बहुतसे तार आ गए हैं काठियावाडसे । उनके बारेमें मैंने सुना तो दिया है जो कुछ भी मैंने सुना था और पीछे जो पाकिस्तानके अखबारोमें लिखा था। उनको भी वहाके हजारो लोग पढ़ते हैं, शायद दस हजार पढते हों । कितने पढते होगें, इसका तो मुझे कुछ पता नही; लेकिन उनमें जो चीजे आती है, उनके बारेमें मै ऐसा सोचू कि क्या पता ऐसा हुआ है कि नही, तो ऐसे काम नही निपटता । इसलिए मैंने बडा अच्छा किया कि जो कुछ उनमे पढा था वह आपके सामने रख दिया। मै नही जानता कि वह सब सही है या नही । अगर वह सही है तो सारे काठियावाडके लिए बडी शर्मकी बात है और अगर सही नही है तो पीछे जो अखबारोमे लिखनेवाले है उनके लिए शर्मकी बात है । तब एक या दूसरोके लिए वह शर्मकी बात तो हो ही गई । उस बारेमें सरदारजी क्या कहते हैं, यह भी मैने आपको बता दिया था । आज भी वे आ गए थे और मुझको सुनाते थे कि वहांसे जो बाते आती है वे तुम्हारे कहने लायक नही होती । वे तो बहुत बनी-बनाई आती है ।

लेकिन राजकोटसे जो तार आ गया है वह तो आपके समझने लायक है । काफी लबा तार है, उसका थोडा-सा बयान मै आपको दे देता हू । आखिर मैं तो काठियावाडके मुसलमानोको पहचानता हू । उनमेंसे एक-एकको तो नही पहचानता, लेकिन वहा जो खोजा लोग रहते हैं, मीना है, वाघेर है और किसानोमे भी कुम्विय है, महेर है इन सबको मैं जानता हू । आखिर मै तो वहा पैदा हुआ हू और करीब-करीब १७ साल वहा रहा हू । करीब-करीब क्या, पूरे १७ साल रहा हू; क्योकि कही बाहर तो पढने मैं गया ही नही । मेरे बापने मुझको कही भेजा ही नही । मेरा पढ़ना तो वही पूरा हुआ और कालेजमें तो क्या हुआ, कोई दो-चार महीने पढा था और वह भी भावनगरमे । इम्तहान भी मेरा अहमदाबादसे आगे नही जा सका । यह मेरे हाल थे । पीछे वहा कुछ था तो मै सब चीजे देख लेता था, और बादमे भी आंता-जाता सबसे मिलता रहा । तो वे लिखते है कि तुमको तो हमारी तरफसे बडी चिंता हो गई है और तुम्हारी चिंता पीछे हमारी चिंता बन गई है । यह ठीक है कि काठियावाडमे हिंदू कुछ बिगड़ गए

और आज तो कहा ऐसा नही हुआ, और उन्होने कुछ मारपीट भी की, मुसलमानोको कुछ रज भी पहुचाया, उनके कुछ घर ढाए और जलाए भी, लेकिन हमने उसको आगे वढने ही नही दिया। जितने काग्रेसके लोग थे और उनके मुखिया तो ढेवर भाई थे। उनको तो मै अच्छी तरह पहचानता हू। वे उनको बचाने गए और उनको काफी कामयाबी भी मिली। सब लोगोका तो इस लूटमारमे हाथ नही था, क्योकि अगर सबका हाथ होता तो फिर राजकोटमे जितने मुसलमान थे, उन सबके मकान जल जाते, मारपीट भी वहुत होती और कोई खून भी हो गया होता। लेकिन यहातक तो नौबत नही पहुची। काग्रेसवालो और दूसरे लोगोने वहा वहुत एहतियात-से[1] काम लिया। ढेवर भाईके साथ तो यहातक भी हुआ, हालाकि वह तो खासा बडा आदमी है और वकील भी है, लेकिन भीडको जब इस तरहसे गुस्सा आ जाता है तो फिर छोटे-वडेकी वात ही छूट जाती है, उन्होने कहा कि अच्छा, इनको बचाने आता है, गालिया दी और वहुत परेशान भी किया। ढेवर भाईके साथ जो दूसरे लोग है, वे लिखते है कि कुछ नुक्सान तो किया, लेकिन ढेवर भाईको तो दूसरे लोगोने बचा लिया। तब तारमे तो यह भी लिखा है कि वहाके जो ठाकुर साहब है उन्होने भी हमारे साथ हाथ वटाया और वहाकी जो पुलिस है, उसने भी। तब वहा दगा करनेवाले रहे कौन? हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ, ऐसा वे कहते है। इन लोगोने कुछ-न-कुछ तो किया भी, लेकिन इनकी कोशिश तो यह थी कि मुसलमानोको, कम-से-कम राजकोटसे, तो निकाल ही दें। मगर वह कर नही सके। लेकिन अब हम निश्चित हो गए और मुसलमानोंके लिए कोई खतरा अब नही रहा है। और आप भी अब निश्चित रहिए। दूसरी जगह भी हम देखनेकी कोशिश कर रहे है और इसके वाद एक दूसरा तार हम भेजेगे।

वहीसे एक मुसलमान भाईका भी तार आ गया है। वे लिखते है कि हम तो काग्रेसवालो और दूसरे लोगोके वहुत अहसानमद है। हमारी जान-मालकी रक्षाके लिए उन्होने पूरी कोशिश की। लेकिन बबईसे

---

[1] खबरदारीसे।

एक दूसरा तार आया है, वह भी मुसलमानका ही है। वे लिखते है कि पहले जो आपने कहा था वह तो ठीक कहा था, लेकिन अब जो तुमको काठियावाडके बारेमे सुनाया गया है, वह ठीक नही है। वहा काफी हुआ है और अभी भी हो रहा है।

मुझको नही मालूम कि मै बंबईसे जो तार आता है उसको सच मानू या इस दूसरे मुसलमानके तारको। लेकिन जो बबईसे तार आता है उसमें मुझको शक हो जाता है, क्योकि वे तो बंबईमें बैठे हुए लिखते है और दूसरा तार तो उनका है जो खुद काठियावाड़मे पड़े है। और पीछे जो काठियावाड़मे है वे मुझको धोखा भी नही दे सकते, धोखा देकर वे जायंगे कहां! इसलिए मुझको ऐसा लगता है कि जो बबईसे तार आया है उसमे कुछ अतिशयोक्ति या मुबालगा[1] है। क्या है और क्या नही, यह तो मुझको पीछे पता चल जायगा, लेकिन अभी तो मै उसे सबके सामने रख दू।

एक तार भावनगरसे भी आया है। वह वहाके महाराजाका है। उनको भी मै पहचानता हू, क्योकि मै तो वहा तीन-चार महीने रहा हू। इसलिए महाराजाको मेरे लिए यह लगा कि वह परेशान क्यों होता है। उन्होने लिखा है कि तुम फिक्र क्यों करते हो। हम यहा सब जाग्रत है और यहाके हिंदू भी जाग्रत है। मुसलमानोको कोई नुक्सान नही होने देंगे। तुमको इस बारेमे कुछ शक मनमे नही लाना चाहिए।

लेकिन जूनागढ़से अभी एक तार आ गया है। वह मुसलमानोकी तरफसे है और वे लिखते है कि ये लोग तो तुमको धोखा दे रहे है। तुम एक कमीशन बिठाकर इसकी तहकीकात कराओ कि हम लोगोको परेशान किया जाता है कि नही। यह तार जवाहरलालजी, सरदारजी और दूसरे लोगोंको भी भेजा है और उनमे एक मै भी आ गया हू। मै कहता हू कि हरएक चीजके लिए इस तरहसे कोई कमीशन नही बैठ सकता है। कमीशन बनाना कोई छोटी बात नही होती। हा, अगर कोई चीज ऐसी है कि सचमुच इतना नुक्सान हुआ है तो फिर इसमें कमीशन बिठानेकी क्या दरकार है? काठियावाड़के लिए तो मै ही कमीशन-जैसा पडा हू। अगर मेरे ध्यानमे

---

[1] अतिशयोक्ति।

कुछ आता है तो मैं दबा सकता हू, वहाके राजा लोगोको और रैयतको भी। मैं यह दावा तो नही करता हू कि मैं हर चीजमें कामयाब रहता हू और वह मेरी हर बातको मान ही लेते हैं; लेकिन काठियावाडके लिए तो ऐसा है न, कि जैसा बिहारके लिए कहो,। बिहारमें अगर कोई कहे कि तू कमीशन बिठा दे तो मैं क्या कमीशन बिठाऊगा ? मैं तो खुद ही वहां पडा हू । वहाके सब लोग मुझको चाहते हैं और मेरी मान भी लेते हैं। तब वहाके लिए कोई कमीशन बिठाना तो ठीक नही हुआ ।

मेरे पास तो राजकोटसे काफी खत भी आए हैं मुसलमानोंके। वे लोग काफी हिंदुओंके दोस्त है और काग्रेससे भी खुश है। तब हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघमे कौन है ? उनसे मुझको कोई अदावत[1] तो हो नही सकती। वे सोचते है कि हिंदू-धर्मको बचानेका वही तरीका है, लेकिन मै मानता हू कि इस तरहसे हिंदू-धर्मकी रक्षा नही होगी। वे मानते हैं कि अगर एक आदमीने कुछ कर लिया है तो उसके साथ मारपीट करना। मगर मै यह कहता हू कि बुराईका बदला बुराईसे क्या देना! हमारी जो हकूमत पडी है उसको सताओ और उससे कहो कि ऐसा क्यो होता है। और फिर हमारी हकूमत तो जाग्रत पडी है और जितना भी हो सकता है कोशिश कर रही है। तब हिंदूमहासभाको मै कहूगा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघको भी—ये दोनो हिंदुओकी सस्था हैं और अच्छे बड़े और पढे-लिखे आदमी इनमें है, जैसे कि और सस्थाओमें भी हैं—आप हिंदू-धर्मको ऐसे नही बचा सकते, अगर यह बात सही है कि इन्होंने ही मुसलमानोको सताया है और अगर यह सही नही है तो फिर किसने उनको सताया है ? काग्रेसने नही सताया, वहाकी हकूमतने नही सताया और यहाकी हकूमतने नही, तो पीछे और कौन हिंदू है जिसने किया ? आज तो यह इल्जाम सारे हिंदुओ और सिखोपर पडता है जैसा कि पाकिस्तानमे सारा इल्जाम मुसलमानोपर पडता है, और वह ठीक तो पडता है। इसलिए मै कहूगा कि जो बेगुनाह है और जिनके खिलाफ इल्जाम लगाए गए हैं उनको अपना नाम साफ करना चाहिए। जूनागढमें जो मुसलमान

---

[1] दुश्मनी।

भाई पड़े हैं वे अगर इन्साफ चाहे तो वह मिल सकता है, फिर कमीशन हम किसलिए विठाए ?

वहांकी बात मैंने आपको कह दी, लेकिन अब यहांके वारेमें भी तो आपको कुछ सुनाऊ। सरदारजीने कुछ इतजाम तो कर लिया है और जितनी मस्जिदे हमने यहां रखी है उनकी वे रक्षा करने जा रहे है। आपने अखवारों-मे उनका यह नोटिस तो देख लिया होगा कि सात दिनके अदर जितनी मस्जिदोपर कब्जा किया हुआ है वे खाली कर दे, नही तो पुलिसको भेजकर खाली कराई जायगी। मै तो कहता हू कि वे पुलिस भेजकर क्या करेंगे ? वहां अगर मस्जिदमे किसी हिंदूने मूर्ति रख दी है, पीछे वह मूर्ति तो सोने-की हो सकती है, चादीकी भी, पीतल, मिट्टी या पत्थरकी भी हो सकती है, लेकिन ऐसा कहते है और मै भी मानता हू कि जबतक उसमे प्राण-प्रतिष्ठा नही की गई है और जबतक लोग पाक हाथोसे उसकी पूजा नही करते है तबतक वह मेरी दृष्टिमे तो मूर्ति नही, बल्कि पत्थर या सोनेका टुकड़ा है। ऐसी कुछ मूर्तियाँ कनाट प्लेसके कोनेवाली मस्जिदमे भी विठा दी गई है और उनमे अभी तो हनुमानजी नही है। मेरे नजदीक तो वह नही है। मेरे नजदीक तो वह एक पत्थरका टुकडा है जिसे हनुमानजीकी शक्ल दे दी है और कुछ सिंदूर भी लगा दिया है। मेरी दृष्टिमे तो वह कोई पूजाके लायक नही है। पूजाके योग्य तो वह तभी बन सकता है जबकि उसको कही हकसे विठाया जाय, और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की जाय। वह सब तो नही हुआ। इसलिए जिन लोगोने उनको वहा विठाया है उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दिनके आरभके साथ उसको वहासे उठा ले जाय और पीछे जहा भी उसको रखना है वहां रखे। इस तरहसे वे एक तो मस्जिदको विगाड़ते है और दूसरे उस मूर्तिका अपमान करते है। हिंदू-धर्ममें हम मूर्तिपूजक होकर भी इस तरहसे किसी मूर्तिकी पूजा करे तो वह धर्म नही, बल्कि अधर्म है। तब सरदारजीको क्या पड़ी कि वह वहा पुलिस भेजें ! आप जितने हिंदू है वे सब पहरेदार बन जाए और जिन मस्जिदोमें मूर्तिया रखी है वहासे उनको हटा दे। जो मस्जिदे विगड़ी हुई है हमको कहना चाहिए कि हम उनकी मरम्मत कर देंगे। लेकिन आज तो सरदारजी कहते है कि हकूमत अपने खर्चपर उनकी मरम्मत कर

लेगी। हकूमत क्यो करेगी, इसीलिए न कि हम नही कर रहे हैं। उसको तो सबकी रक्षा करनी है। लेकिन यह हमारे लिए शर्मकी बात हो जायगी। आज जितने हिंदू या सिख हैं, लेकिन सिखको तो मैंने कही मूर्ति बिठाते हुए सुना नही, उनकी तो एक ही मूर्ति या पुस्तक कहो, वह गुरु ग्रथ साहब ही है। मैंने तो देखा नही कि किसी सिखने गुरु ग्रथ साहबको मस्जिदमें लाकर रखा हो। अगर किसीने ऐसा किया भी है तो उसने गुरु ग्रथ साहबका अपमान किया है। गुरु ग्रथ साहबको तो गुरुद्वारेमें ही रखा जा सकता है। जो पवित्र सिख है वही उसको ऊची जगहपर सजाकर रखते है। मेरे-जैसा अगर कोई हो तो वह तो बहुत सुदर खादी बिछाकर उसको रखे। लेकिन आज यदि देसी-परदेसीका तो खयाल नहीं है, फिर भी बडे खूबसूरत ऊनी और रेशमी वस्त्र हम हाथोसे तैयार करते है। उस रेशमको हम वहा बिछाए और गुरु ग्रथ साहबको रखें तब तो वह पूजाके लायक है और अगर कोई सिख उसे मस्जिदमे ले जाकर रखता है तो वह गुरु ग्रथ साहबकी तौहीन[1] करता है और वह पूजाके लायक नही हो सकता।

आज एक मुसलमान मेरे पास आया। मैं समझा नही कि वह क्या कहना चाहता था। लेकिन उसके हाथमे एक कुरानशरीफ थी, जो आधी जली हुई थी। लेकिन उसके लिए तो वह भी पाक थी। इसलिए उसने उसको बहुत साफ कपडेमें लपेटा हुआ था। उसने आरभसे वह कपडा खोला और मुझको दिखाया। वह कुछ बोला तो नही, लेकिन रोने-जैसी उसकी शक्ल बन गई और पीछे चला गया। बृजकिशनजीसे तो कुछ बातें भी की, लेकिन मैं तो काममें पडा हुआ था। इसी तरह अगर एक मुसलमान यहा आकर कुरानशरीफ बिठा जाता है और मुझको और आपको मारता है तो मैं कहूगा कि वह कुरानशरीफकी तौहीन करता है। कुरानशरीफ यह नही कहती कि किसीको मजबूर करके उसे रखो।

इसलिए मैं तो बडे अदबसे कहना चाहता हू हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघसे तथा और भी लोगोसे, जो मेरी सुनना चाहते हैं और साथ-साथ सिखोको भी, क्योकि सिख तो बडे है और अगर वे सीधे

---

[1] अपमान।

हो जाते है और गुरु नानकके सच्चे अनुयायी बन जाते है तो हिंदू भी आप-ही-आप सीधे हो जाते है। मेरे दिलमे सिखोकी कद्र है। लेकिन आज क्या हिंदू और क्या सिख, सब विगडते जा रहे है और हिंदुस्तानको धूलमे मिला रहे है। जिस हिंदुस्तानको हमने ऊचे चढाया है, क्या उसको नीचे खीचकर हम मटियामेट करेगे? क्या हम अपने धर्म, कर्म और देशको इस तरहसे धूलमे मिला देगे? ईश्वर हमको इस चीजसे बचा ले।

: १६५ :

मौनवार १ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और बहनो,

कई मित्र नाराज होते है कि मै 'अगर यह सही है तो' कहकर क्यो कोई निवेदन करता हू। मुझे पहले तय कर लेना चाहिए कि बात सही है या नही। मै मानता हू कि जब-जब मैने 'अगर' इस्तेमाल किया है मैने कुछ गमाया नही है। जो काम उस समय मेरे हाथमे था उसे फायदा ही हुआ है।

इस वक्तकी चर्चा काठियावाडके बारेमे है। मित्र लोग कहते है कि मैने काठियावाडके बारेमे मुसलमानोपर ज्यादतियोके झूठे बयानको मशहूरी[1] दी है। अधिकतर इल्जाम सरासर झूठे थे। जो थोडी-बहुत गडबडी हुई थी उसे फौरन काबूमें लाया गया। मेरे 'अगर' के साथ उन इल्जामो-का जिक्र करनेसे सचाईको कोई नुकसान नही पहुचा। काठियावाडके सत्ताधीश और काग्रेस, जिस हदतक सचाईपर खडे रहे है, उतना ही उन्हे फायदा होगा। मगर मित्र लोग कहते है कि सचाई आखिरमे जाहिर होकर रहती है। इसमे भले शक न हो, मगर उससे पहले नुक्सान तो हो ही जाता

---

[1] प्रसिद्धि।

है। जिन्हे सच-झूठकी कुछ पडी नही, ऐसे बेईमान लोग मेरे कथनको अपनी बात सिद्ध करनेके लिए काममें लाते हैं। इस तरहसे झूठको फैलाया जाता है। मै इस तरहकी चालबाजीसे आगाह[1] रहू। जब-जब इस तरहकी चालाकी खेलनेकी कोशिश की गई है वह निष्फल हुई है और ऐसा करनेवाले बेईमान लोग जनतामे झूठे बने है। मै 'अगर' कहकर इल्जामोका जिक्र करता हू तो उससे किसीको घबरानेकी जरूरत नही, शर्त सिर्फ यह है कि जिनपर इल्जाम लगाया जाता है वे सचमुच इल्जामसे सर्वथा मुक्त हो।

इससे उल्टी स्थितिका विचार कीजिए। काठियावाडकी ही मिसाल लीजिए। अगर पाकिस्तानके बडे-बडे अखबारोमे लिखे इल्जामोकी तरफ मै ध्यान न देता, खास करके जब पाकिस्तानके प्रधान मत्रीने भी कहा कि इल्जाम मूलमे सही है, तो मुसलमान उन इल्जामोको वेद-वाक्य माननेवाले थे। मगर अब भले मुसलमानोके मनमे उनकी सचाईके बारेमें शक है।

मै चाहता हू कि इसपरसे काठियावाड़के और दूसरे मित्र यह पाठ सीखे कि हम अपने घरमें तो किसी तरहकी गड़बड होने नही देगे, टीकाका स्वागत करेगे, चाहे वह कडवी टीका ही क्यो न हो; अधिक सच्चे बनेगे और जब कभी भूल देखनेमे आवे उसे सुधारेगे। हम यह सोचनेकी गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नही सकते, कडवी-से-कडवी टीका करनेवाले-के पास हमारे विरुद्ध कोई-न-कोई सच्ची, काल्पनिक शिकायत रहती है। अगर हम उसके साथ धीरज रखें, जब कभी मौका आवे उसकी भूल उसे बतावें, हमारी गलती हो तो उसे सुधारें, तो हम टीका करनेवालेको भी सुधार सकते है। ऐसा करनेसे हम कभी रास्ता नही भूलेगे। इसमें कोई शक नही कि क्षमता तो रखनी ही होगी। समझदारी और शनास्तकी[2] हमेशा जरूरत रहती है। जान-बूझकर शरारतकी ही खातिर जो बयान दिए जाते है उनकी तरफ ध्यान नही देना चाहिए। मै मानता हू कि लबे अभ्याससे मै शनाख्त करना थोडा बहुत सीख गया हू।

---

[1] परिचित; [2] पहचान।

आज हवा विगडी हुई है, एक दूसरेपर इल्जाम-ही-इल्जाम लगाए जाते है। ऐसी हालतमे यह सोचना कि हम गलती कर ही नही सकते, मूर्खता होगी। हम ऐसा दावा कर सकें वह खुशकिस्मती आज कहा! अगर मेहनत करके हम झगड़ेको फैलनेसे रोक सकें और फिर उसे जड़मूलसे उखाड फेंके तो बहुत हुआ। यह हम तभी कर सकेंगे अगर हम अपने दोष देखने और सुननेके लिए अपनी आंखें और कान खुले रखे। कुदरतने हमे ऐसा बनाया है कि हम अपनी भूल नही देख सकते, वह तो दूसरे ही देख सकते है। इसलिए बुद्धिमानी यही है कि जो दूसरे देख सकते है उससे हम फायदा उठावे।

कल प्रार्थनामें जाते समय मुझे जो जूनागढ़से लंबा तार मिला उसकी बात कल पूरी नही हो सकी। कल मैंने उसपर सरसरी नजर ही डाली थी। आज उसे ध्यानपूर्वक पढ गया हू। तार भेजनेवाले कहते है कि जिन इल्जामोका मैंने पहले दिन जिक्र किया था वे सब सच्चे है। अगर यह सही है तो काठियावाडके लिए बहुत बुरी बात है। अगर जो इल्जाम साथियोंने स्वीकार किए है और मैंने छापे है उनको बढानेकी कोशिश की गई है तो तार भेजनेवालोंने पाकिस्तानको नुक्सान पहुचाया है। वे मुझे निमत्रण देते है कि मै खुद काठियावाडमे जाऊ और अपने आप सब चीजोंकी तहकीकात करू। मै समझता हू कि वे जानते है कि मै आज ऐसा कर नही सकता। वे एक तहकीकाती कमीशन मागते है। मगर उससे पहले उन्हे केस तैयार करना चाहिए। मै मान लेता हूं कि उनका हेतु जूनागढ़को या काठियावाडको बदनाम करना नहीं है। वे सच निकालना चाहते है और अल्पमतकी जान-माल और इज्जतकी रक्षाका पूरा प्रबध करना चाहते है। वे जानते है कि हरएक आदमी जानता है कि अखबारी प्रचार, खास करके जब वह पूरी-पूरी सचाईपर न हो, न जानकी रक्षा कर सकता है, न मालकी, न इज्जतकी। तीनो चीजोकी रक्षा आज हो सकती है, उसके लिए तार भेजनेवालोको सचाईपर कायम रहना चाहिए और हिदू मित्रोके पास जाना चाहिए। वे जानते है कि हिंदुओंमें उनके मित्र है। वे यह भी जानते है कि अगरचे मै काठियावाडसे बहुत दूर बैठा हू, मगर यहासे भी उनका काम

कर रहा हू। मैंने जान-बूझकर यह बात कह दी और मै सब सच्ची खबरें इकट्ठी कर रहा हूं। मैं सरदार पटेलसे मिला हू और वे कहते है कि जहातक उनके हाथकी बात है, वे कौमी झगडा नही होने देंगे और वहां कोई मुस्लिम भाई-बहनोंसे बदतमीजी करेगा उसे कड़ी सजा दी जायगी। काठियावाडके कार्यकर्ता, जिनके मनमें कोई पक्षपात नही, सच ढूढनेकी और काठियावाडके मुसलमानोको जो तकलीफ पहुची हो, उनको दूर करनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं। उन्हें मुसलमान उतने ही प्यारे है जितनी अपनी जान। क्या मुसलमान उनकी मदद करेंगे?

: १६६ :

२ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मैंने तो आपको कहा था कि आज मुझको पानीपत जाना है। इरादा ऐसा था कि ४ बजे वापस आ जाऊगा। लेकिन काम इतना निकल गया था कि बडी मुश्किलसे ५॥ बजकर ५ मिनट हो गई थी—३ मिनट तो हो ही गई थी—आया। तब प्रार्थनाकी आवाज सुनी। प्रार्थना तो शुरू हो ही जानी चाहिए थी, मैं रहूं चाहे न रहू। मैंने तो कह दिया है कि प्रार्थना शुरू हो ही जानी चाहिए, नियमके मुताबिक चलना ही चाहिए। पीछे मुह धोने चला गया, इसलिए देर लग गई। मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूं।

मैं क्यों पानीपत गया, इसका थोड़ा-सा तो इशारा कर दिया था। मेरी उम्मीद तो थी और अब भी उम्मीद नहीं छोड़ आया हूं कि किसी-न-किसी तरह पानीपतके मुसलमानोंको रख सकें तो अच्छा है। हमारे लिए तो अच्छा है ही, सारे हिंदुस्तानके लिए भी अच्छा है और जो हिंदुस्तानके लिए अच्छा है वह पाकिस्तानके लिए भी अच्छा है।

वहा आज लोग मुसीबतमें पड़े हैं। वहासे जो दुखी लोग आए है—

दु खीको शरणार्थी कहते हैं—वे भी दु खमे है और रहनेवाले है, जबतक अपने घर नही चले जाते है। वैसे ही मुसलमान मजबूर होकर जो पाकिस्तान गए है वे भी दु खमे ही रहनेवाले है। इसमे आप कोई शक न रखे।

मै धर्मका पालन करता हू तो वहा चला गया, यह अच्छा हुआ।' डाक्टर गोपीचद भार्गव भी आ गए थे, गृह-मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह भी आ गए थे। मुझको पता नही था कि डाक्टर गोपीचद आनेवाले थे। सरदार कर्णसिंहने तो कहला भेजा था कि मेरी दरकार हो तो मै आ सकता हू। मैंने कहा कि दरकार तो नही है; क्योकि जो कुछ करना है, वह मै करूगा; लेकिन वे आ गए। पूर्वी पजाब उनका इलाका है तो उनका तो वह हक है, इसलिए वह भी आ गए। देशवन्धु गुप्ताने कहला भेजा था कि मै बीमार हू सो नही आऊगा। मैंने कहा कि ठीक है, लेकिन वहा तो उनका घर पडा है, इसलिए वह भी आ गए। तो अच्छा हुआ सब आ गए। मौलाना हैं वह जो यहा हमेशा आते है, वह भी आए। पीछे उन लोगोसे बातचीत की। मुसलमानोसे अकेलेमे बातचीत की; लेकिन दोनो मन्त्री तो साथ थे। उन लोगोने कहा कि मन्त्री तो रहे। जो बात मन्त्रीसे अलहदा है, जिसे मै इस्तेमाल न कर सकू तो वह किस कामकी है। उन लोगोने कहा कि वहा उस वक्त जो बात हो गई थी तब तय किया था कि रहेगे और आपको कहा भी था। बादमे हालत बिगड गई। जैसा तुम कहते थे, कुछ भी हो ही नही पाया, इसलिए हम परेशान हो गए। हमारी इज्जतकी कोई परवाह नही की गई। जब इज्जत, माल और जान, तीनोकी रक्षा नही हो सकी तो कैसे रहेगे ? जो कुछ भी हो, घर गिरा तो क्या, आग लगी तो क्या, जानको जाने देगे, मालको जाने देंगे, लेकिन मानकी हिफाजत[1] करना अपना काम है। उसकी हिफाजत कर सकेगे तो रहेगे। तो मैंने कहा कि मरनेकी बात कहते है वह तो ठीक है, लेकिन मनमे जगत-प्रेम है वही ईश्वरकी भक्ति है।

पीछे वहा जो दु:खी शरणार्थी है उनसे बहुत बाते हुई। यह करते-ही-करते ३।। बज गए। यहासे १०।। बजे निकल गया था और

---

[1] रक्षा।

थोडे होने देगे। मुस्लिम लडकीको जो भगा लिया है उसको हम हर हालतमे वापस करेगे। हां, कोई भी आदमी बता दे, कह दे कि वह लडकी वहा है, क्योकि हमको पता तो है नही; तो वह जहां होगी वहासे हम लाएगे। और दूसरी बात यह कि जिन मुसलमानोकी मजबूरीसे हिंदू और सिख बनाया गया है वे मुसलमान ही है, धर्म-परिवर्तन हुआ है उसे हम बाकानून नही समझेंगे, क्योकि यह नीतिके विरुद्ध है। ऐसे जो लोग पडे है उनकी हम हिफाजत करेंगे। अभी जैसे है वैसे ही उनकी हिफाजत करेंगे, पाकिस्तान चाहे करे या न करे। स्वर्णसिंहने तीसरी बात भी कह दी कि मस्जिदोंकी भी हिफाजत करेंगे। ये तीन चीज तो हर हालतमे हम करनेवाले है।

हां, जान-मालके बारेमे कौन क्या कह सकता है! हुकूमत है, पुलिस है, वह पूरी कोशिश तो करेगी, लेकिन अगर सब-के-सब लोग लूट-मार करने लगें तो क्या गोलीसे उड़ा दें? क्या करें? हम लाचार है, हमारी आजादी लूली है, हम लाचारी कबूल करते हैं। हां, लोगोको डांटेंगे; लेकिन लाचारी तो कबूल करनी ही चाहिए। उन्होनें लोगोको खूब समझाया, मिन्नत की कि हमारी लाज, आबरू, शर्म सब आपके हाथमें है, उसकी आप रक्षा करे। हुकूमत हमारी थोड़ी है, हुकूमत आपकी ही है, आपने ही हमें भेजा है तो हम पडे है। जब हम पडे है तो हम काम तो करें और आप इसमें मदद दे। यह सब समझाया। इसमे काफी समय लग गया। गोलमाल हो गया, उसे शात करनेमे काफी देर लगी। हमेशा ऐसा रहा है कि ऐसे मौकेपर जब लोग बेचैन हो जाते है, गुस्सा कर लेते है, तब मैंने देखा है कि थोडी देर बाद जब वे लोग ठडे दिलसे सोचते है तो समझने लग जाते हैं। मै जब आजादीकी लडाई करता था तब भी देखा था। ऐसी भी नौबत आ जाती थी कि सभाको खत्म कर देगे; लेकिन देखता था कि बादमें समझ जाते थे। तो पीछे नुमायदे आए। मैंने कहा था तो वे मेरे पीछे आए। मैंने उनको गाडीमें ले लिया। अगर न लूं और वहा बैठ जाऊं तो यहा समयमे पहुच नही सकता था, इसमें भी समय लगता, मिनट-मिनटका हिसाब करना पडता था, जब यहां आना था।

मैंने आराम करना छोड दिया, जब सब दुःखी है तब मै क्या आराम

चाहिए। ऐसा समझकर मैं सुनाता हू कि यह बुरी बात है। एक तो हम दु खी हैं, लाखो लोग घर-बार छोडकर आए हैं, फिर ऐसा करने लगें यह बहुत दु खकी बात है। आज मुझको एक छोटा-सा लडका मिला, वह स्वेटर पहने था, उसे निकालकर खडा हो गया। मेरे सामने आखे तो बहुत करता था मानो कि खा जायगा। लेकिन बच्चा था, क्या करनेवाला था! कहने लगा कि आप बात करते है कि आप हिफाजत करने आए है, लेकिन मेरा बाप मर गया है तो मुझे मेरा बाप तो दे दो। वह तो मर गया, मैं कहा-से लाऊ? आखिर उस लडकेको गुस्सा आ गया। मैं समझ सकता हू कि अगर इतनी ही उम्रका मैं रहता तो शायद मैं भी ऐसा ही करता। यह सुनना पड़ता है, मुझको गुस्सा नही आया, दया आई।

आजका नजारा देखा। ऐसा था तो पीछे वे कहते है कि इतना तो करो कि हम जो शरणार्थी है वे सब खराब थोडे है, उनके हाथमे इतजाम दे दो, ऊपरमे मजिस्ट्रेट वगैरा तो है ही, वहाके लोगोके ऊपर भी तो देखना पडता है, मजिस्ट्रेट वगैरा हमारे ऊपर भी देख-रेख करें, लेकिन कवल बाटने है तो हमको दे दो। बच्चोको दूध तो मिलना चाहिए, फिर भी मिलता नही, वह तो ऊपरके अमलदारोके लिए है। वे या सेवा-भावके लिए जो कमेटी बनी है उसके सदस्य पी जाय, इससे बेहतर तो यह है कि हमको दे दो। चोरी होती है तो क्या, जैसा करते है वैसा भोगेगें। पीछे वे कहते हैं कि उनके पास और दु खी भाई लोगोने चिट्ठी भेजना शुरू किया। चिट्ठियोमें वे लिखते हैं कि महात्माको तो कहो कि वह हमारी भी सुने। वे सुनाते थे कि उनमे ऐसी-ऐसी बातें लिखी है। तो मैं समझता हू कि मैं चला गया तो अच्छा हो गया। मैंने उनसे कहा कि अगर आप शातिसे रहे और आप मुसलमानोको कहे कि आप भाई है, यही रहो, पानीपतमे तो बहुत-सी लडाई हो गई है, तो यह सबसे आला दर्जेकी चीज हो जायगी।

आप २८००० आदमी डेरेमें रहते है, दूसरे आते है तो इससे क्या। आपको खाना मिल जाय, पहनने और ओढनेको कपडा मिल जाय, छत हो या तबू ही मिल जाय तो ठीक है। कही भी रहोगे तो अभी चौथी चीज तो मिल नही सकती। इन तीनो चीजोसे आप बहुत-सी चीजे पैदा

कर सकते है। तो मैंने सोचा कि यह आप लोगोको सुना दू। आप भी समझें कि हमारे हिंदुस्तानमे कैसे-कैसे खेल चल रहे है और उसपर हम कैसे काबू पा सकते है। आज तो हकूमत है। हकूमत आपपर जबरदस्ती तो कर नही सकती। आजादी हमने पाई है तो क्या ऐसा होना चाहिए ? कल जवाहरलालने सुदर कहा है। आज देख लिया, मैं हमेशा कहा पढनेवाला था, पढनेका मौका कहा आता था। जवाहर कहता है कि मुझको प्रधान मत्री कहते है तो मुझको चुभता है, मैं प्रधान मत्री कब बना था ? हा, यह कहो तो अच्छा लगेगा कि मै अव्वल दर्जेका खादिम हू, सेवक हू। अगर सब ऐसे बन जाय कि प्रधान सेवक है तो उनको २४ घटे लोगोंका खयाल करना है। पीछे उनके नीचेके नौकर ऐसा करेंगे तो हमारा देश सचमुच स्वर्णभूमि बन सकता है, रामराज्य हो सकता है, खुदाई राज्य बन सकता है। तब हमारी आजादी मुकम्मिल[1] बन सकती है। अगर हम आजादीके बाद ऐसा करेंगे जैसा आज हो रहा है तो ऐसी आजादी मुझको चुभती है। क्या हमारी आजादी ऐसी होगी ? ऐसी कभी नही होगी।

: १६७ :

३ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास काफी लोग आते है, सबका हिसाब तो मैं आपको देता नही हू, कोई ऐसी चीज होती है तो कह देता हू। तो आज भी कुछ भाई लोग मेरे पास आए। उनका कोई ताल्लुक हमारी हकूमतके प्रधान जो है उनसे हुआ होगा। तो वे कहते है कि प्रधानने एक समय तो एक चीज कही थी, लेकिन अभी अपनी प्रतिज्ञा, वचनको भग कर रहे है। वह कैसे, मैं तो कह नही सकता हू। उनके पास लिखित खत था कि उन्होने एक बार कल या तीसरे दिन—ऐसा कहा था और अब ऐसा कहते है।

---

[1] पूर्ण।

तो मैंने कहा कि लिखित चीज हो तो बताइए । आखिर मैं भी वैसा ही हू जैसे आप हैं। मैं हकूमत तो हू नही, मेरे पास कोई अधिकार तो है नही; लेकिन मै सेवक हू, उनका दोस्त हू, उनके साथ काम किया है, इसलिए उनके साथ वात कर सकता हू, लेकिन ऐसी वात कैसे कहू ? इसपर मुझको लगा कि ऐसा क्यो होता है, हमसे कहें एक वात और करे दूसरी वात। ऐसा होता है तो मुझपर वीतती है न ? मैं समझता हू कि मैंने कभी इरादा करके, समझके किसीको धोखा नही दिया है। हा, हो सकता है कि आदमीको जानकारी नही है, सद्भावसे कहता है, वुरा हेतु नही है, उसे धोखा माने और दु ख मानें तो ऐसी वहुत-सी चीज दु खकी होती है। वहुत-सी चीज वगैर समझे होती हैं और उससे भी वचन भग हो जाता हैं; लेकिन अगर कोई जान-बूझकर अपना वचन भग करता है तो बुरा करता है। ऐसा नही होना चाहिए। इसके लिए जहातक हो सके वहातक मौन ही रखना चाहिए। कभी वेकार एक शब्द भी नही कहना चाहिए, और अगर एक वार दिलकी वात निकाल दी तो उसके मुताविक काम करना चाहिए। हम ऐसा करेंगे तभी हम एक-वचनी वन सकते हैं। और अभी जब सारे देशकी हकूमत चलाते हैं तो हमको सावधानीसे काम करना चाहिए, उसमें मर्यादा होनी चाहिए, विवेक होना चाहिए और नम्रता होनी चाहिए, उद्दडता नही होनी चाहिए। ये सब हो तब हमारा काम आखिरतक पहुच सकता है और लोगोको कुछ कहनेकी गुजाइश नही रहेगी। हा, एक वार कह दिया कि अमुक चीज मुफ्तमे वाटेंगे, ऐसा तो होता नही है, लेकिन मानो कि हुआ, वादमे कहा कि दो पैसे लेंगे तो वह वचन-भग हुआ। इस तरहसे वचनका भग करना ही नही चाहिए। आज हम ऐसे वन गए हैं कि हमारे पास वचनकी कोई कीमत ही नही रही। आज वोल दिया और कल अलग हो जाते है। आज मैं कह देता हूं कि कल कोई ४ वजे आपके पास आता हूं, लेकिन उस वक्त नाचमें चला गया या और कही चल देता हू तो वह वचन-भग होता है। मैं तो कहूंगा कि हमें वड़ी सावधानीसे काम करना चाहिए। तो मैंने सोचा कि मैं कह तो दू कि वह हकूमतपर लागू नही होता, व्यक्तिपर लागू होता है। सब वचनपर कायम रहें, वोलें तो तौलकर वोलें, आवेशमें तो कुछ कहना ही नही चाहिए।

जैसे हम एक चीजका बयान देते हैं कि मारपीट हो गई, पीछे उसमें रग डालनेके लिए कह देते हैं कि खून हुआ। ऐसी बात तो छिप नहीं सकती, अभी नहीं तो बादमें, कभी-न-कभी तो मालूम हो ही जायगी। मैं तो यही कहूंगा कि ऐसा करना ही नहीं चाहिए।

अभी मुझे एक डाक्टर मित्रसे लिखते हैं कि वहा जितने हरिजन रहे हैं वे बेहाल हैं। हरिजन अगर अकेले वहा रह गए और कोई दूसरे नहीं रहते तो वे कहते हैं कि उनको वहा मरना है। अगर मरना नहीं है तो गुलामीमें रहना होगा और आखिरमें मुसलमान बनना होगा। यह बहुत बुरी बात है। आज तो ऐसा हो गया है कि पाकिस्तानकी हकूमत जो कहती है उसको उनके मातहत जो आदमी हैं, वे करते नहीं हैं। आज हिंदुस्तानमें भी ऐसा हो गया है। जवाहरलाल कह देंगे, सरदार कह देंगे कि हम तो मुसलमानोंकी हिफाजत करेंगे, हम नहीं चाहते कि जबरदस्ती एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पड़े, लेकिन चलती नहीं है, उनके पास ऐसे करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि उनके मातहत करते नहीं हैं, पीछे प्रजा तो करती ही नहीं है।

मैंने कल सुनाया ही था कि मैं पानीपत चला गया था। वहा २८००० हिंदू सिख दु खी पड़े हैं। उनके साथ पाकिस्तानमें अच्छा सलूक नहीं हुआ। तभी तो उनको भागना पड़ा, दु ख पड़ा तभी तो भागे, नहीं तो भागनेकी क्या गरज पड़ी थी ! जब वे ऐसा दु ख उठाकर आए हैं तो क्या वे दूसरेको भगाए ? लेकिन ऐसा होता है। मैं पाकिस्तानको किस मुहसे कहू ? तो भी कहना पड़ता है। वे लिखते हैं—लबा-चौड़ा खत लिखा है, मेरे पास पड़ा है—वहा कोई हरिजन रहना नहीं चाहता। वे अगर एक जगह बैठना चाहते हैं तो बैठकर रह नहीं सकते, उनसे जबरदस्ती काम लिया जाता है। कहा जाता है कि पैखाना साफ करो, झाड़ू निकालो। यह सब हमको करना चाहिए। लेकिन उनको ऐसा करनेको कहते हैं तो आज भगी पैखाना ही साफ करे, ऐसी बात थोड़ी है। एक भगी हमेशा पैखाना साफ करनेका काम करे, ऐसी बात तो होनी ही नहीं चाहिए। अगर वह बैरिस्टर बन सकता है तो वह क्यों न बने ? हम ऐसा क्यों कहें कि तुम यही काम करो—उनके दिलकी बात होनी चाहिए। अगर उनसे ऐसा

कहा जाय कि मुसलमान बनके रहो, नही तो ठीक नही है तो बेचारे हरिजन जायं कहा? क्या करें? आपने देखा ही होगा कि जगजीवनरामने एक लबा बयान दिया है। उसमें उन्होंने कहा है कि हरिजनोको वहासे आ जाना चाहिए। अगर वे आना चाहते है तो उनके लिए सब सहूलियत पैदा करनी चाहिए। जबतक वे पाकिस्तानमें भी रहते है तबतक उनको उनकी खुशीके मुताबिक करने देना चाहिए, नही तो छोड देना चाहिए। ऐसा नही करते है तो हमेशाके लिए हिंदू और सिखको चुभनेवाली बात है हिंदुस्तान या पाकिस्तान कुछ भी बने, तो भी हम एक दूसरेको भूल नही सकते। हमको तो एक शराफतसे काम करना है, किसीको रज पहुचाना नही है, किसीको मजबूर करके मुसलमान भी नही बनाना है, किसीकी लड़कीको या औरतको मजबूर करके, छीनकर भाग नही जाना है। कल डाक्टर गोपीचद भार्गव और सरदार स्वर्णसिहने भी कहा था कि इसको हम बर्दाश्त करनेवाले नही है। आजकल अगर कोई मुसलमान कहे कि मै हिंदू बन गया हू तो उसे मानना नही चाहिए, हरिजन कहे कि हम मुसलमान बन गए है तो वह मानने लायक चीज नही है। डरके मारे ऐसा कह देते है; लेकिन उसे मानने लायक चीज नही समझना चाहिए; क्योकि वह बेकानून चीज है।

अभी एक बात और रह गई है—काठियावाडसे दो किस्मकी चीजे आती है। एक किस्मकी तो ऐसी आती है कि जो तुमने लिखा था वैसी ही चीज बन गई है। आज भी ऐसा तार आया है। दूसरी किस्मकी काग्रेसकी चीज है कि नही ऐसा नही बना है। काग्रेसवाले ऐसा करते ही नही है, हिंदूमहासभावाले और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघवाले करते है। वे कहते है कि मुसलमानोको कोई नुकसान ही नही पहुचा है। हिंदू-महासभा-वाले और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघवाले कहते है कि हमने तो किसीका मकान जलाया ही नही है। मै किसकी बात मानू? काग्रेसकी या मुसलमानो-की या हिंदूमहासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघकी? हमारे मुल्कमे ऐसा हो गया है कि ठीक-ठीक पता लगाना मुश्किल हो गया है। गलती हो गई तो मान लेना चाहिए। हिंदुओसे गफलत हो गई, हिंदुओने ज्यादतियां

की तो कह देना चाहिए। इसमें क्या है ? अगर नही हुआ है और मुसलमान अतिशयोक्ति करते हैं कि उनका मकान जला दिया गया है, उनको जबरदस्ती हिंदू बनाया गया है, उनकी लडकी भगा ली गई है तो डका पीटकर ससारको बता देना चाहिए कि बात क्या है, इसमे मुझे कोई शक नही है। इसी तरहसे अगर हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघसे कुछ नहीं हुआ है तो मै धन्यवाद देनेवाला हूं। बडी अच्छी बात है। सही क्या है वह मै नहीं जानता हू। इसे जाननेकी मेरी कोशिश तो चल रही है। मै वहा जिनको जानता हू उनको मैने लिखा है। मुसलमानोको लिखा है कि क्या हुआ है, उसका हवाला दो, तब तो मै समझू कि किस तरहसे काम चल रहा है। इसका आखिर अजाम क्या आएगा, वह नही जानता हू।

अभी दक्षिण अफ्रीकाकी बात है। आपने देखा होगा कि पडित विजयालक्ष्मीने क्या कह दिया है। वह कहती है, हम यहा हार तो गए, क्यो ? क्योकि दो-तिहाई मत नही मिले। दो-तिहाई मत मिले तब अमरीका-में काम हो सकता है, लेकिन काफी लोगोने मदद दी और कहा कि आप जो कहती है वह सही है। दूसरी बात यह कि सच तो हमारे साथ है, पीछे हमारी एक प्रकारकी विजय तो हो ही गई है। इसलिए दक्षिण अफ्रीकावालोको मायूस[1] नही होना चाहिए। लेकिन मै तो दूसरी बात कहूगा। वह विजया-लक्ष्मी बहन तो कह नही सकती, क्योकि वह तो यहासे सरकारकी ओरसे गई थी---आपके पास उपाय नही है तो मेरे पास तो है, मैने तो जनूबी[2] अफ्रीकार्में शुरू किया था, तो मै कहूगा कि हारना-जीतना क्या है, चाहे दक्षिण अफ्रीकाके अग्रेज कहें, स्मट्स कहे कि वह बट्टा हमको नही चाहते, जाओ, नही तो मारेंगे, खाना-पीना नही देंगे जैसे पाकिस्तानमें होता है और यहा भी ऐसा होता है कि हम मुसलमानोको खाना नहीं देंगे। पाकिस्तानसे हिंदू और सिखको भगा दिया गया, उनसे कहा गया कि नही जाओगे तो मारेंगे। जैसे अभी बन्नूमें काफी हिंदू, सिख पडे है, उनका क्या हाल होगा, मुझे पता नही है। आज ही मेहरचद खन्ना आए थे तो उन्होने कहा कि दूसरी जगह भी पड़े तो है, लेकिन कहा नही जा सकता

---

[1] निराश; [2] दक्षिण।

कि जिंदा रहेंगे; और अगर जिंदा रहना है तो इस्लाम कबूल करना ही है, लेकिन बन्नूमें तो बहुतसे हिंदू सिख पडे हैं, वे क्या करें ? जैसे जेलमें रहते हैं वैसे पड़े हैं, बाहर निकल नही सकते; भीतर रहते हैं तो खाए क्या, ऐसी बड़ी आपत्तिमे पडे है। हकूमत क्या करे? वह भी पेंचीदगीमें पड़ी है । मैं जो यहा कहता हू, वैसे ही वहा दक्षिण अफ्रीकामें हिंदू, मुस्लिम, सिख सब पडे है। उनको मैं एक ही बात कहूगा कि हार-जीत तो चलती है। लेकिन सच्ची हार-जीत तो आप ही खानेवाले है, नही तो आप कहे कि हम इज्जतसे रहेंगे, हटेंगे नही। यहासे सब गए, ऐसी बात नही है। हमको बुलाया गया था। जो गिरमिटमे गए थे, फिर वहा हमारे बाल-बच्चे पैदा हो गए। तो यदि वहा किसीको रहनेका हक है—हब्शीको छोड़कर, क्योकि वह तो उनका देश है—तो सबसे पहले इनका है। बोर लोगोंको भी हमारे-जितना हक नही है।

अमरीकामें सब देशके नुमायदे[1] गए थे। जमा हो गए थे, तो हमारे देशके नुमायदेको भी जाना था। वह बुरा नही, अच्छा किया। वहां तो इन्साफ करने जमा होते है, इन्साफ नही कर पाते या कर नही सकते यह बात दूसरी है। लेकिन मैं तो कहूगा कि दक्षिण अफ्रीकामे हम लड़ें, तलवारसे नही, बाहुबलसे नही, आत्मबलसे। आत्मबल तो छोटी लड़की जो मेरे पास बैठी है उसके पास है, और बैठे है उनके पास है, सिपाहियोंके पास है। तलवारको तो कोई छीन सकता है, हथियारको छीन लेगा, हाथको काट डालेगा; लेकिन आत्माको तो कोई छीन नही सकता—वह तो सनातन सत्य है, आज रहेगा, कल रहेगा, परसों रहेगा। बिना आत्माके शरीर निकम्मा है। शरीर तो दफन होनेवाला है। मेरी पत्नी मर गई तो उसे मैं रख नही सका, जला दिया उसी रोज। दो दिन भी नही रख सका। महादेव मर गया, वह तो मेरा सब काम करनेवाला था। तो मैं उसको रख थोडे सका! जो काम करता था वह चला गया तो उसके शरीरको जला दिया। तो मैं तो यही कहनेवाला हू कि अगर दक्षिण

---

[1] प्रतिनिधि।

अफ्रीकावालोमे अपनापन है और मै मानता हू कि वह है, अगर हिम्मत-वान है तो उन्हे नम्रतासे कहना है कि अमरीकामे दो-तिहाई मत तो नही मिले, लेकिन काफी तो मिले। दक्षिण अफ्रीकाके लोगोसे कहे कि हम नम्रतासे कहते है कि आप इतना तो करे कि हमे इज्जतसे रहने दें। हम इज्जतसे रहेंगे। वहा मुहकमोमे हमे कोई हिस्सा नही चाहिए। आप हमे मदद न करें, लेकिन हमे हवा तो खाने दे, पानी पीने दे, जमीनमे रहने दे, जिस जगह हम रहना चाहते है, पैसे देकर रहना चाहते है, मुफ्तमे नही, हमे आपका मत नही चाहिए, मिले तो जैसे अग्रेजोको मिलते है वैसे मिले, नही तो नही मिले। उसके लिए हम सत्याग्रह नही चलाएगे, लेकिन हमे अपनी इज्जत रखनी है और हमे पानी चाहिए, रोटी चाहिए और जमीन चाहिए, और हमारे लडकोको तालीम चाहिए, इसके लिए पैसे न दे उसे तो समझ सकेंगे। हम इधर घूमते है तो लडकोको तालीम तो दे। यह हमारा हक है और इन चीजोके लिए इस तरहसे लडनेका हमारा हक है। हारनेकी वात तो है नही, मरनेकी वात है। करना या मरना इसके सिवा कोई दूसरा चारा नही है। अगर दुनियामे हमे इज्जत रखनी है तो करना या मरना है। इसमे कोई वेहालकी वात नही है। यह सीधा धर्म है। यह मै दक्षिण अफ्रीकावालोको वताता हू और आपको भी वताता हू। दूसरा मेरे पास है ही नही।

: १६८ :

४ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

काठियावाडकी वात मैने कल भी की थी। आज मेरे पास सामलदास गाधीका तार आया है। कल श्री ढेवरभाईका तार आया था। दोनो कहते है कि मेरे पास वहुत अतिशयोक्तिभरी खबरे आई है। वहा औरतें उडाई ही नही गई और जहातक वे जानते है, एक भी खून वहा नही हुआ। सरदार पटेलके जानेके वाद तो कुछ भी नही हुआ। इसके

पहले थोडी लूटपाट और दगा हुआ था। सामलदासको मेरे कहनेकी चोट लगी, लगनी ही चाहिए थी। वह खुद बबईसे काठियावाड़ चले गए है। वहा और तहकीकात करके मुझे ज्यादा खबर देंगे।

इधर अमेरिका, ईरान और लदनसे मेरे पास तार आते रहे है, जिनमे लिखा था कि काठियावाड़मे मुसलमानोंपर बडा अत्याचार किया गया है। इस तरहका प्रचार करना सच्चे लोगोका काम नही। इस बारेमे ईरानका हिंदुस्तानके साथ क्या ताल्लुक?

सामलदास गाधी कहते है कि 'मेरे पास हिंदू-मुसलमानका भेद नही।' तो जो मुसलमान भाई मुझे लिखते है उनका मै पूरा-पूरा साथ देना चाहता हू। मगर शर्त यह है कि वे सचाईकी राहपर हो। वे अति-शयोक्तिभरी खबरे विदेशोमे भेजे, सारी दुनियामे शोर मचावे, यह मुझे बुरा लगता है। हिंदुस्तानमेंसे भी मेरे पास तार आते है, उन्हे तो मै बरदाश्त कर लेता हू, लेकिन जब विदेशोसे तार आते है तो मुझे लगता है कि यह तो बहुत हुआ। उससे मुझे चोट लगती है।

होशगाबादसे एक मुसलमान भाईका खत आया है। उन्होने लिखा है कि वहा गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिखोने मुसलमानोको बुलाया और उनसे कहा कि आप हमारे भाई है, आपसे हमारा कोई झगडा नही है। मुझे यह जानकर खुशी हुई। होशगाबाद वही जगह है, जहा स्टेशनपर एक घटना हो गई थी। होशगाबादमे गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिखोने जैसा किया, वैसा सब जगह लोग करे, तो आज हमपर जो काला धब्बा लग गया है उसे हम धो सकेंगे।

व्यापारी-मडलवाली बात आगे चल रही है। मैने इशारा तो किया था कि मारवाडी और यूरोपियन व्यापारी-मडल रहें, तो मुसलमान-चेंबर क्यो न रहे? एक मारवाडी भाईने मुझे लिखा है कि हम है तो मार-वाडी, मगर हमारे चेंबरमें दूसरे भी आ सकते है। मैने उनसे पूछा है कि आपके चेंबरमे गैर-मारवाडी कितने है और हिंदू कितने है। उनका खत अग्रेजीमे है, मुझे यह बुरा लगता है। उनकी रिपोर्ट भी अग्रेजीमे है। क्या मै अग्रेजी ज्यादा जानता हू? मेरा दावा है कि जितनी मै अपनी जबान जानता हू, उतनी अग्रेजी कभी नही जान सकता। मांका दूध पीनेके समयसे

जो जबान सीखी, उससे ज्यादा अंग्रेजी—जिसे १२ बरसकी उमरसे सीखना शुरू किया—मुझे कैसे आ सकती है ? एक हिंदुस्तानीके नाते जब कोई मेरे बारेमें यह सोचता है कि मै अपनी जबानसे अंग्रेजी ज्यादा जानता हू, तो मुझे शर्म मालूम होती है।

हम अपने आपको धोखा न दें। यूरोपियन चेंबरवाले भी ऐसा दावा कर सकते है कि हमारे चेंबरमें सब लोग आ सकते है। मगर इससे काम नही चलता। अगर सब कोई आ सकते है तो अलग-अलग चेंबर रखनेकी जरूरत क्या ? यूरोपियनोसे मेरा कहना है कि वे हिंदुस्तानी बनकर रहे, अगर वे हिंदुस्तानी बनकर रहें और हिंदुस्तानके भलेके लिए काम करे तो हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते है। वे बड़े होशियार व्यापारी है। उन्होने अपना सारा व्यापार बदूकके जोरसे नही, बल्कि बुद्धिकी शक्तिसे बढाया है।

बर्माके प्रधान मन्त्री मुझसे मिलने आ गए थे। वह बडे नम्र और सज्जन है। उनसे मैने कहा, आप हमारे यहां आए, यह अच्छी बात है। हमारा मुल्क बडा है, हमारी सभ्यता प्राचीन है। मगर आज हम जो कर रहे है, उसमें आपके सीखने-जैसा कुछ नही है। हमारे देशमें गुरु नानक हुए, उन्होने सिखाया कि सब दोस्त बनकर रहे, सिख मुसलमानोको भी अपना दोस्त बनावे और हिंदुओको भी। हिंदुओ और सिखोमे तो फर्क ही क्या है ? आज ही मास्टर तारासिंहका बयान निकला है। उन्होने कहा है, जैसे नाखूनसे मास अलग नही किया जा सकता, वैसे ही हिंदू और सिख अलग नही किए जा सकते। गुरु नानक खुद कौन थे ? हिंदू ही थे न ? गुरु ग्रथ साहब वेद, पुराणो वगैराके उपदेशोसे भरा पड़ा है। बाते तो कुरानमे भी वही है। हिंदू-धर्ममे 'वेदके पेट' मे सब धर्मोका सार भरा हुआ है। वर्ना कहना पडेगा कि हिंदू-धर्म एक है, सिख-धर्म दूसरा, जैन-धर्म तीसरा और बौद्ध-धर्म चौथा। नामसे सब धर्म अलग-अलग है, मगर सबकी जड एक है। हिंदू-धर्म एक महासागर है, जैसे सागरमे सब नदिया मिल जाती है वैसे हिंदू-धर्ममे सब धर्म समा जाते है। लेकिन आज हिंदुस्तान और हिंदू अपनी विरासतको भूल गए मालूम होते है। मै नही चाहता कि

वर्मावाले हिंदुस्तानसे भाई-भाईका गला काटना सीखे। आज हम अपनी सभ्यताको नीचे गिरा रहे है। लेकिन वर्मावालोको हमारे इस काले वर्तमानको भूल जाना चाहिए। उन्हे यही याद रखना चाहिए कि हिंदुस्तानकी ४० करोड प्रजाने विना खून वहाए आजादी हासिल की है। हो सकता है कि अग्रेज थके हुए थे। मगर उन्होंने कहा है कि 'हिंदुस्तानियोकी लड़ाई अनोखी थी। उन्होने हमसे दुश्मनी नही की, बदूकका सामना बदूकसे नही किया। उन्होने हमें नाराज नही किया। ऐसे लोगोपर क्या हम हमेशा मार्शल ला चलाते रहे ? यह नही हो सकता। सो वे हिंदुस्तान छोडकर चले गए। हो सकता है कि हमने कमजोरीके कारण हथियार नही उठाया। अहिंसा कमजोरोंका हथियार नही, वह बहादुरोका हथियार है। बहादुरोंके हाथमें ही वह सुशोभित रह सकता है। तो आप हमारे जगलीपनकी नकल न करें, हमारी खूबियोंका ही अनुकरण करें। आपका धर्म भी आपने हमसे लिया है। हिंदुस्तान आजाद हुआ तो वर्मा और लका भी आजाद हुए। जो हिंदुस्तान विना तलवार उठाए आजाद हुआ उसमें इतनी ताकत होनी चाहिए कि विना तलवारके वह उसको कायम भी रख सके। यह मै इसके बावजूद कह रहा हू कि हिंदुस्तानके पास सामान्य फौज है, हवाई फौज है, जल-सेना वन रही है, और यह सब वढाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानने अपनी अहिंसक शक्ति नही वढाई तो न तो उसने अपने लिए कुछ पाया और न दुनियाके लिए। हिंदुस्तानका फौजीकरण होगा तो वह वरवाद होगा और दुनिया भी बरवाद होगी।

: १६६ :

५ दिसबर १६४७

भाइयो और वहनो,

मुझको यहा जो खत दिए जाते है वे लवे-लवे मिलें तो उनको मै पढू और उत्तर दूं, ऐसा तो नही बन सकता है। तो मै इतना ही कहूगा कि ऐसे जो पत्र आते है वे अगर जवाब देने लायक है तो

दू; लेकिन उनको पढ़नेमें समय लगता है। उनको यहा पढ तो नही सकता हू, क्योकि उनमे मेरा समय जाता है और आपका भी। एक खतमें लिखा है कि आप लियाकत अली खा साहबसे मिले और वातचीत की। क्या अब भी पता नही चला है कि काठियावाडमे कुछ भी नही हुआ ? वह भाई अगर यहा है तो सुन ले, नही है तो भी इसके (रेडियोके) मारफत सुन ही लेंगे कि काठियावाडमें कुछ भी नही हुआ है। सामलदास गाधीने कहा है कि जैसा बयान आपको मिला है वैसा नही हुआ। हा, हुआ है, लेकिन उतना नही हुआ है। वह पाकिस्तानके अखवारोमे आ गया और तार भी छूटा। वह भयानक चीज है, लेकिन भयानक चीज नही हुई। आज सामल-दासका दूसरा तार आया है। वह लिखते है कि मैंने तहकीकात की तब पता चला कि ऐसा हुआ नही है और सरदारके आनेके बाद तो कुछ हुआ ही नही। पहले जो मुझे खबर दी गई थी उसका कहनेका मतलब यह है कि सरदारने लोगोको भडकाया तब हुआ, लेकिन उनके जानेके बाद तो कुछ हुआ ही नही तो शक्ल बदल जाती है। तो सामलदास गाधीने कहा कि मैं मुसलमान भाइयोसे कहूगा कि आप ऐसे तार क्यो भेजते हैं। तो मेरे पास उन्ही लोगोंने, जिन मुसलमान भाइयोंने शिकायत की थी, तार भेजे हैं कि उसमे गलती थी, उसमे अतिशयोक्ति थी। वे लिखते है कि पाकिस्तानके अखबारोने जो लिखा है वह गलत है। जितना नुकसान हुआ बताया जाता है वह भी गलत है। उसमें यह भी है कि मुसल-मान लोग भडक उठे है, सब दहशतमे हैं—यह भी गलत है। तो मुझको अच्छा लगा। क्यो ? मैंने तो कह दिया है कि मुसलमान भाइयोके लिए जितना मुझसे हो सकता है करूगा। जो गिरे हैं उन्हे हमें लात नही मारनी चाहिए, उनको उठाना चाहिए। यह हमारी इन्सानियत बताता है, हमारी मोहब्बत बताता है, हम सभ्य है, शरीफ है, यह बताता है। किसीको नीचे गिराना तो मेरेसे कभी हो ही नही सकता। मेरा दुश्मन भी हो—मेरा दुश्मन तो कोई है नही—तो उसको भी मैं कभी नुकसान नही पहुचाऊगा। हा, लोगोका जो बड़ा ख्वाब था कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहा सब कुछ हो जायगा। ऐसा क्या होगा ? ऐसा थोडा है कि, जो पाकिस्तानमें रहेंगे वे जिदा रहेंगे और जो बाहर रहेगे वे जिंदा नही रहेंगे। पाकिस्तान क्या

बचा सकता था? पाकिस्तानमें तो समुदर भरा है हिंदू और मुसलमानोका। क्या वहां जो हिंदू सिख भरे है उनको भगाए? वे हटना तो चाहते नही थे, लेकिन नही होने लायक चीज हो गई। वे हटना थोडे चाहते थे। सिखोके पाससे मेरे पास खत आया है कि वे वहा जाना चाहते है और उनको उनके बिना चैन नही। मानो कि लायलपुरके नजदीक किसीकी हजार एकड जमीन पड़ी है, वहा उसने खेत बना लिया है, बगीचा बना लिया है, केले पकाता है, गेहू पकाता है, कपास पकाता है, फल पकाता है तो वह उसको कैसे छोड सकता है। जबतक वह वहा लौट नही जाता है तबतक उसको चैन मिल ही नही सकता। तो वहा तो ऐसा हुआ और यहा क्या हुआ? सिखोंको गुस्सा आया कि हम तो वहासे भागकर आए और वे लोग यहा आरामसे रहते है तो बदला लें। तो मैंने कहा कि यह इन्सा-नियत नही है, हैवानियत है। ऐसा करना नही चाहिए। बुरेका बदला अच्छा ही देना चाहिए। बुरेकी नकल नही करनी चाहिए। अच्छेकी नकल हो सकती है। यह इन्सानका काम है। तो मुझको अच्छा लगा कि काठिया-वाडसे तार आया। मैं तो मुसलमान भाइयोसे कहूगा कि एक चीज बन गई है तो उसका आधा बताओ, पाव बताओ, उसका दुगुना, दस गुना क्या करना था, और बाहर क्या भेजना था! दुनियामे फैलाए, ऐसा क्या करना था! पीछे हिंदू, सिख—सिख तो है नहीं, हां अभी थोड़े चले गए है—बिगड जाए तो दुनिया क्या बचा सकती थी? हां, वे कहते कि क्या तुमने इसलिए आजादी पाई? हम उसे छीन लेते है। वह सब बन सकता है, लेकिन जो मर जाय वह थोडे आ सकता है। इसलिए मैं कहूगा कि हम कोई चीज बढ़ाकर न कहे। जो दुख है वह दुख तो है ही, उसको कोई बाहरवाला हटानेवाला नही है। उसको छोटा करके कहे। दूसरोका जो भला काम है उसको बढाकर बताए और बुरेको छोटा करके बताए तब तो हम दुनियामें काम कर सकते है। तो आपको यह खबर देनी थी, दे दी। एक भाईने लिखा था, वह भी आ गया। उसमे और क्या लिखा है, देखूगा। कहना होगा तो वह खबर कल दे दूगा।

अभी एक बात और आपको कहनी है। उसका आपसे कोई ताल्लुक नही है; लेकिन आपके मारफत कह तो दू। मैंने बृजकिशनजीको कह दिया

है कि मेरेसे जो मिलने आते है उनको ६ तारीखसे १३ तारीखतक वक्त न दे। नही मिलना चाहता हूं, इसका मतलब यह नही है कि मै बीमार हू या शोक करता हू। वह तो कई महीनेसे बात चल रही है। मै सेवाग्राम जा नही सकता हू। इसलिए वे लोग सेवाग्रामसे यहा आ रहे है। कलसे कस्तूरबा ट्रस्टकी बैठक शुरू होती है, उसके बाद चर्खा-सघ, फिर नई तालीम, पीछे ग्राम-उद्योगसघकी बैठक होगी। इन दिनोमे चार बैठक हो जायगी। अच्छी तरहसे हो सके तो इसमे वक्त तो जायगा। तो इनको वक्त दू या मिलनेवालोको वक्त दू ? तो मैने कह दिया कि मेहरबानी करके इन दिनोमें वक्त न मागे। हा, बादमे मिल सकते है। मै यहा अपना काम नही करूगा ऐसी बात नही है। बाहरसे आते है तो कितना चाहते है; क्योकि मै तो सूखा जानवर-सा बन गया हू। जब घर रहता है तब कहते है कि देखनेके लिए तो चले जाए। बाहरसे आते है तो कहते है कि सूखा जानवरको तो देख ले, लेकिन समझ ले कि थोडे दिन घर के भीतर बैठा हुआ है। तो इतना मैने कह दिया।

अभी एक बात आपको और कह देनी चाहिए। कह तो चुका हूं। बात भी चल रही है कि कपडोपर जो अकुश है, कट्रोल है, वह छूट जायगा। खुराकपर है वह भी छूट जायगा—कल छूट जायगा, ऐसी बात थोडी है। लेकिन प्रवाह चल गया है तो कहते है कि तुमने अच्छा किया। सब जगहसे खत आते है कि अकुश छूट जाय तो अच्छा है। तब मुझे कहना चाहिए कि अकुश छूट जाता है तब हमारा कुछ फर्ज नही है, ऐसी बात नही है। जब छूट जाता है तो जो इस बारेमें व्यापार करते है उनका पहला फर्ज हो जाता है। मै घनश्यामदासको भी कहूगा कि आप ज्यादा कपडे क्यो नही पैदा करते ? वह कह सकते है कि मै तो एक मजदूरी कर लेता हू। जो हुकम होता है वे कपडे हम बनाते है, जो दाम होता है वह दाम ले लेते है, लेकिन जब अकुश उठ जाता है तब घनश्यामदास क्या करे, दूसरे मित्र लोग क्या करे ? छूट मिल गई तो लोगोको लूटना है ? तब तो मेरी हजामत होनेवाली है। ऐसा हो गया है कि लोग कहते है कि यह मैने हटाया। हकूमतमे मेरे भाई-बद है, मेरे दोस्त है, उनको कहा तो छूट गया, ऐसी बात थोडी है। मैने तो हिंदुस्तानकी खिदमत की है। मै कितना भी बडा होऊ, कितना

भी कहूं; लेकिन अगर हकूमतको नही जचती है, लोगोंको, जिनकी हकूमत है, नही जचती है तो मैं कितना भी कहूं, उससे क्या? मैं भगवान थोडे हू कि जो कहू वह अच्छा है। मैं तर्क करता हूं, अनुमान करता हू, तब कहता हू कि कपड़े और दूसरी चीजोपर जो अकुश है वह हट जाय। इसका मतलब यह है कि अगर आज हमारे पास ५ मन अनाज पड़ा है तो कल १० मन होना चाहिए, क्योकि मैं समझता हू कि दबाकर बैठ गए है। अगर आज किसानके पास नही है और तब भी मै कहू कि अकुश हटा लो, लोग भूखे मरेगे तो क्या? मैं इतना बेवकूफ थोडे हू कि कहू कि लोगोको भूखे मरने दो! मेरे लिए तो घनश्यामदास बकरीका दूध तैयार करा देते है, फल दे देते है, भाजी-तरकारी दे देते है, मै थोडे भूखा मरता हू। मै क्या ऐसा कर सकता हू कि लोग भूखे मरे? मै तो मान बैठा हू कि किसानोके पास अनाज पडा है, लेकिन उतना दाम नही मिलता है जिससे वे खाना भी खा सके। मजबूर करके सरकार उनसे जितना लेती है उतना दे देते है और कहते है कि जब छूट हो जायगी तब बता देगे कि हमारे पास कितना अनाज है। दूसरे व्यापारी है, जब हमारे पास हकूमत नही थी तब वे नखरा करते थे और हरएक किस्मका पैसा लोगोसे ले लेते थे, लेकिन अब वैसे एक कौडी भी लेना हराम है। मै तो समझता हू कि किसान अनाज निकाल देगे, उसको अच्छे दामपर बेच देगे तो भूखे नही मरेगे। माना कि हमारे पास उतना अनाज नही है जितना चाहिए, तो क्या जिसके हाथमे जितना अनाज आए उतना सब खा जाय और पड़ोसी भूखा मरे? अगर हम इतने नालायक बन गए तो उसका इलाज नही है। तब भी मैं कहूंगा कि उसका इलाज अकुश नही है। अगर ऐसा हुआ तो हमारी हकूमतको जिसमें आला दर्जेके हमारे लोग है, हट जाना है। लोग चालाकी करते है, सचपर नही रहते है, जिन व्यापारियोको लोगोंके लिए व्यापार करना है वे अपना ही घर भरते है, अपने लडके-लडकीके लिए व्यापार करते है तो हमारी जो सल्तनत है उसे हट जाना चाहिए। हकूमत क्या करे? गोली मारे, मजबूर करे? हमारी ऐसी ताकत है नही और ऐसी ताकत हमें चाहिए भी नही। पुलिस रखना है तो रखे, लेकिन गोली मारनेके लिए थोडे रखना है! व्यापार करते है उनको मारना है तो किसके लिए मारें? किसानो-

को मारें तो कौन रहेगा ? मै तो कहूगा कि ३० वर्षसे तालीम ली वह कहा गई ? इन्सानियत कहा चली गई ? ऐसा चल नही सकता। यह तरीका तो जो आजादी मिल गई है उसको खोनेके लिए है। इसलिए मै तो कहूगा कि अकुश हट जाय। अगर हकूमत कहे कि अकुश हटा लेंगे तो लोग मर जाएगे तो मै कहूगा कि पचायत राज नही बना, लोगोका राज नही हुआ, रामराज्य तो हुआ ही नही। मै तो उसीके खातिर जिंदा रहना चाहता हू। मै कहूगा कि जो अकुशसे बरी हो जाते है वे अपनेपर अकुश रखकर दूसरोको खुश करे। पीछे हकूमत चलानेमे जो सिविल सर्विसके लोग है वे कहें कि यह गाधी कहासे निकला, यहा क्यो कूद पडा, उसको हकूमत चलाने का अनुभव कहा है। बादमे अकुश लाना और खाना खिलाना मुश्किल हो जायगा। तो मै कहूगा कि हा, ठीक है, मै सिविल सर्विसमे नही गया हू, हकूमत नही चलाई है, लेकिन हजारो करोडो लोगोमे मै घूमा हू, उनके दिलको जानता हू, इसलिए मै समझता हू। मै सिविल सर्विसवालोंसे, जो हकूमत चलाते है उनके पाससे प्रमाणपत्र मागूगा कि वे ऐसा ही कहें, गाधीकी बात सुन ली और नतीजा यह आया कि अबतक हमारेमे जो काला-बाजार चलता था वह मिट गया। जो ताजिर करते है वे अपना ही काम नही करते है—वे लोगोको साथ रखकर चले।

पीछे कपडेका भी आ जाता है। अनाज निकालना तो एक अलग बात भी है। आप कह सकते हैं कि हमारे यहा अनाज पूरा नही है, लेकिन अभीतक किसीने ऐसा नही कहा है कि कपास काफी नही है। कपास तो यहातक ज्यादा है कि बाहर जाता है। तो कहोगे कि हमारे पास इतनी मिले कहा है ? मै कहूगा कि मिल मेरे घरमे है, आपके घरमे है, यहा जितनी माताए बैठी है उनके घरमें है। दो हाथ तो सबके पास है। कपडा पहनना है तो चर्खा चलावें, नही तो नगे रहे। हा, तो ताजिरको कहोगे कि खबरदार, जितना पैसा चाहो लोगोसे ले नही सकते, और कहोगे कि मिल हम चलाएगे तो मै कहूगा कि वह तो हकूमतके पास है, वह ले सकती है। हमारे पास इतनी मिलें है फिर भी उम्मीद है कि कम पडेगा तो हमे हाथसे कातना और बुनना तो पडेगा। बुनना आसान है। हमारे यहा इतने जुलाहे, बुनकर पड़े है कि जितना चाहिए उतना बुन सकते है। लेकिन

हमारे यहा शौकीन वडे है, मिलका सूत मिले तो बुन सकते है, हाथका सूत नही चाहिए। हाथ जब दवावमें आता है कि नही बुनेंगे तो नगा रहना पड़ेगा तव लाचारीसे हाथके सूतको ही बुनेंगे। अगर हाथके सूतको बुनने लगे तो नगा रहनेकी कोई दरकार नही। तो हमारा खूबसूरत मुल्क, जिसमे इतने करोड लोग रहते है, जो धधा जानते है, जिनको इतना इल्म है कि कपडा किस तरह तैयार किया जाता है, नगा नही रह सकता। इस कारण कपडेपर अकुश रखना कि २ गज कपडा मिलेगा, ४ गज मिलेगा, ज्यादा नही, अच्छा नही लगता। कपडेपर अकुश रखना मेरी निगाहमें अज्ञानताकी सीमा है। आज छूट सके तो आज छूट जाय। हां, अनाजकी बात है तो मै कहूगा कि किसान और व्यापारी कहे कि हमे तो लोगोके लिए पैदा करना है, कोई दगावाजी नही करना है। किसान समझे कि अनाज वोना है तो अपने ही पेटके लिए नही, सव लोगोके लिए। मै यह भी कहूगा कि हमारे मुल्कमे आधा सेर पैदा होता है तो हम अपनी जमीनसे एक सेर क्यो न पैदा करें, लेकिन इसके लिए लोगोको वताना तो चाहिए, उत्तेजन तो दें, हमारे पास जो यत्र[1] पड़ा है उसे रोक ले और इसमे लगा दे कि क्यों ज्यादा नही होता है।

हमारा मुल्क ऐसा है कि भूखे मरने, नगे रहनेकी कोई दरकार नही। हम अपनी अज्ञानतासे नगे रहते है, जितना अनाज चाहिए उतना पैदा नही करते, जितना दूध चाहिए उतना दूध पैदा नही करते, हमारे यहा इतनी भैस पडी है तो भी हमारा यह हाल है! इससे ज्यादा मूर्खता मै समझ नही सकता हू।

: १७० :

६ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

आप लोगोने लक्ष्मी वहनका भजन सुना, रामधुन भी सुनी।

---

[1] कंट्रोलमें लगी हुई मशीनरी।

वे तो यहा नई हैं, जलसामें चली जाती हैं। रामधुन तो ऐसी है, भजन भी ऐसी चीज है जिसमे लीन होना पडता है। आज आपने समझ लिया कि उनका गाना सुननेके लिए क्यो आतुर रहते हैं— सुर अच्छी रहती है। उन्होने उसके लिए जब पैगाम भेजा तब मुझको अच्छा लगा।

हा, तो आज १५ मिनटसे ज्यादा नही बोलना चाहता हू। कल २५ मिनट लग गए, वह ज्यादा हो गया। यह मेरे लिए शर्मकी बात है। मैं नही चाहता हू कि मैं २५ मिनट लू। १५ मिनट करना है तो मैं १५ मिनट बोलनेका अभ्यास कर लू। बाकी छूट जाय तो छूट जाय। आज १५ मिनटमें पूरा कर दूगा।

कल एक भाईने पत्र भेजा था उसको पूरा पढ नही पाया हू, थोडा पढा है। आज दूसरा पत्र आया है। उसको पढ नही सका हू। इसके लिए माफी माग लूगा। एक ढेर पड़ा है, उसमे कही पडा होगा। वह खत जिसे पढकर आया हू उसमे लिखा है कि मैं तो भोला-भाला हू, पीछे दुनिया कैसी चलती है उसको मै नही जानता हू। उसका उत्तर कैसे दूं, यह भी नही जानता हू। इसलिए धोखा दे सकते हैं। जो धोखा है उसका तात्पर्य भी बताता है। तो वह खबरदार करता है कि मैं सावधानीसे रहू। वह लिखता है कि देखो, पाकिस्तानमें क्या हो रहा है, हम भी ऐसा ही करें और बदला ले। अगर सावधान रहते हैं तो कुछ होनेवाला नही है—हम बदला लें, हमारे मकान वगैरा तो सब गए। मैं ऐसा नही मानता हू। ऐसा समझकर मुसलमानोके मकानोको, थोडा या ज्यादा, जलाए तो जिसका मकान जलता है उसके लिए तो उस मकानकी उतनी ही कीमत है जैसे करोड़पतिका मकान जल जाय, क्योंकि उसीमें उसका गुजारा होता है। यह बडा मकानवाला है तो ज्यादा खाता है, ऐसा थोडा है। जितना आप खाते हैं, मैं खाता हू उतना करोडपति खाता है। तो मैं आपको यह बताना चाहता हू कि जब मुसलमानको मजबूरन पाकिस्तान जाना पडता है तो उसको भी नुकसान पहुचता है।

वह पूछते हैं कि हिंदू, सिख पाकिस्तानमें सब छोडकर यहा चले आए तो वह कब मिलनेवाला है? मुझे कहना है कि हा, यह ठीक शिकायत

है, लेकिन मैं तो कहूंगा कि मै सतुष्ट होकर बैठनेवाला नही हू जबतक सब हिंदू, सिख—मर गए वह बात दूसरी है—अपने मकानपर जाकर बैठ नही जाते हैं । जबतक एक भी हिंदू, सिख ऐसा रह जायगा जिसे उसका मकान वापस नही मिला हो तबतक मैं शातिसे नही रह सकता हू । हा, जो मकान जल गया है उसको कहे कि ऐसा-का-ऐसा बना दो, तो ऐसा तो कोई हकूमत नही कर सकती, न आपकी हकूमत ऐसा कर सकती है । हकूमतसे ऐसी आशा करनी ही नही चाहिए । मैं तो कहता हूं कि मॉडल टाउनमें हिंदू सिख सब जाकर रहे तो यह काफी है । लाहौरके हिंदू, सिख है वे अपने घरपर, जमीनपर जाकर बैठें और कहे कि जो मकान जैसा है दे दो, जो जमीन है वैसे दे दो । इसी तरह सब अपने घर चले जाय और अपने घरमे जाकर रह सकते हैं तो मेरे लिए काफी है । हा, इतना होना चाहिए कि जिन मकानोपर मुसलमानोने कब्जा कर लिया है वहासे उनको हटा दे और जिस हालतमे वह मकान है, दे दे । उनको हवेली बनाकर, दें, ऐसा थोडा है । जमीन है, उसे ही लौटा दें, बस इतना काफी है । लेकिन हा, इस यूनियनमे जितने है वे सच्चे बने, अच्छे बने, शरीफ बने तो दूसरा नतीजा बन नही सकता । इसमें मुझे कोई शक नही है । मैं तो यह भी कहूंगा कि वे जैसा करे, हम भी वैसा ही करे, ऐसा थोडा है । वे नाक कटाकर बैठ गए है तो क्या हम भी नाक कटाकर बैठ जाय ?

यह भाईका जो खत है उसके जवाबमें मैं कहता हू जो हमारी गलती हो गई–गलती सब करते है, उसमें क्या, लेकिन जब गलतीपर कायम रहते है तब हम जो करते है उसको शैतानियत मानता हू, उसीपर हम कायम रहे तो वह इन्सानियत नही है । आदमी तो गलतीका पुतला है, वैसे धर्मका भी पुतला है । जिस जगह गलतिया कर लेता है उसको दुरुस्त कर लेता है तो वह धर्मका ही पुतला रह जाता है । तो हम अपने धर्मपर कायम रहे तो पीछे सारी दुनियाको सुनानेकी जरूरत नही है ।

काठियावाडके मुसलमानोंको जितना नुकसान हुआ है उसके बारेमें मुझको लिखना पडा, और यह ठीक भी है, वहांके हिंदुओको उनके बारेमे कहना अच्छा है, वहाकी हकूमतको कहना अच्छा है, यहा हमारी जो हकूमत पड़ी है उसको कहना चाहिए । यह हमारा हक है । हमने ऐसे थोड़े माना

है कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहा सब हिंदू-सिखका मकान जला दें, सब वहासे चले जाय, ऐसी बात थोडी है। लेकिन गलती हो गई तो गलतीको दुरुस्त करो। उसमें वक्त लगता है। हमको भी कह सकते हैं कि तुम भी गलतीको दुरुस्त करो। वे कह सकते हैं कि जितने मुसलमान पडे है, जिनको मजबूरन वहा जाना पडा है, उनको ले लो। ऐसे ही पाकिस्तानसे यहा जितने हिंदू सिखोको आना पटा है वे वहा चले जाय तो हम दोनो शरीफ बन जाते हैं, पाक बन सकते हैं। नही तो पीछे दुनियामें भारी मुह काला होनेवाला है। हमारा मुह सब दिन सफेद रहा है। हा, हम गुडे रहते है और गुंडेपनसे आजादी ले तो बात दूसरी है। दुनिया कहती है कि हमने शराफतसे आजादी ली। मैं कहू तो बात दूसरी है, हिंदू मुसलमान कहे तो बात दूसरी है, बाहरकी दुनिया कहती है हमने जो आजादी ली है, मिल गई है, वह शराफतसे ली है, शराफतसे मिली है। तो शराफतसे उसे हमें रखना भी चाहिए, गुडेबाजीसे नही, गुडेबाजीसे हम उसे गवानेवाले है। उसी तरहसे हम अपना आचार रखे, वर्ताव रखे तो दुनिया देख ले कि हमने गलती दुरुस्त कर ली। पीछे आप कहे कि दुनिया पाकिस्तानका क्या करती है, देखना है। मैं तो कहूगा कि दुनिया क्या करेगी, दुनियाको कहनेकी दरकार नही। उसे साफ होना ही पडेगा। मुझको कहते हैं कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटीने जो प्रस्ताव पास किया है उसमें मेरा हाथ था, तो सुनाते हैं कि तुमने करा तो लिया, लेकिन लोगोके दिलमें है नही—पाकिस्तानसे जो हिंदू, सिख आए हैं वे जाना नही चाहते। तो मैं थोडे कहता हू कि वे मिस्कीन होकर जाय। यह ठीक है कि पाकिस्तानसे जितने हिंदू, सिख आए है वे लाचारीसे आए हैं, लेकिन मैं कहता हू कि लाचारीसे जानेकी जरूरत नही, शानसे जाय। पाकिस्तानके मुसलमान कहे कि हम सब मुसलमान ठीक हो गए है, आप आइए। ऐसा हम मुसलमानोसे कहे कि आप मेहरबानी करके आइए, आपका मकान, आपकी जमीन जैसी-की-तैसी पडी है, उसपर कब्जा लीजिए। हमारा दीवानापन मिट गया है। हम शराफतसे चलनेवाले है तो आज अच्छा हो जाता है। इसमें धोखा देनेकी बात क्या है? मैं तो जानता नही हू कि धोखा कैसा है, किस तरह धोखा दिया जाता है। इसमें दुनियाको धोखा माननेकी बात नही है। अखिल

भारतीय कांग्रेस कमेटीने प्रस्ताव पास किया है कि जितने हिंदू, सिख यहा आए है उन सबको आदरसे, मोहब्बतसे अपने घरोंपर, जमीनपर जाना है, लायलपुरमें जाना है। जैसे हमारे सिख भाई वहा खेती वगैरह चलाते थे तो उनको तो वहा जाना ही है। ऐसा मेरा ख्वाब है। यही देखनेके लिए मै जिंदा रहना चाहता हू। ईश्वर मेरे ख्वावको पूरा नही करना चाहता है तो मुझे उठा ले। दिल्लीमे मै रह इसीलिए रहा हू, दिल्लीमे न कर सकू तो दूसरी जगह क्या करनेवाला हू ! हम शरीफ हो जाय तो यह चीज बननेवाली है, इसमे मुझे कोई शक नही है। पाकिस्तानवाले भले बन जाते है और भलेपनसे कहते है कि हमारी गलती हो गई, अब हम शराफतसे पेश आएगे, आप आइए। इस तरहसे हो जाय तो ठीक बन सकता है। तभी हम अच्छे पड़ोसी बनकर रह सकते है।

: १७१ :

७ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपको बहुत गूढ बात कहना चाहता हू। बात तो हमेशा रहती है ; लेकिन यह बहुत नाजुक चीज है। अखबारोमें तो आ गई है। आप लोगोने देखा है कि कल लाहौरमें यहासे चद हिंदू बहनें चली गई थी और लाहौरमें चद मुसलमान बहनें थी। वे आपसमें मिली—इस कारण कि जिन बहनोको मुसलमान उठा ले गए है और जिन बहनोको हिंदू और सिख उठा ले गए है, पूर्वी पजावमें, उनका क्या किया जाय ? यहासे काफी मुसलमान चले गए और हो सकता है कि अभी और जाय। अगर हम हिंदू और सिख समझ जाय कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहासे भेजना नही चाहते है, अपने आप चले जाय, यह बात दूसरी है। लेकिन ऐसा है कि अपने आप कोई जाना नही चाहता। क्यो जाय अपना घरबार छोडकर ? वहा पाकिस्तानमे उनके लिए घरबार तैयार है, ऐसी बात तो है नही। इच्छासे वहा जानेका तय कर लिया है

या नौकरीवाले वहा जा रहे है तो यह वात दूसरी है। लेकिन ऐसे कम है। और, लोगोको वहा क्या जाना था ! वहा पाकिस्तानमे उनके लिए काम खाली है, ऐसी वात भी नही है। पहलेके व्यापारमें यहा उनका कोई हर्ज नही होता है तो वे क्यो जायगे ?

यह तो हुआ, लेकिन औरतोका क्या ? यह मामला गूढ है, पेचीदा है। कोई कहते है कि वारह हजार औरतोको हिंदू और सिख उठा ले गए और उससे दुगुनी पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए। कोई कहते है कि यह वहुत कम तादाद है, इससे भी ज्यादा है। मै तो कहूगा कि वारह हजारकी तादाद कम नही है, एक हजार भी कम नही है, एक भी कम नही है मेरी निगाहमे। ऐसा क्यो हो कि किसी औरतको कोई उठाए ? कोई हिंदू औरत है या सिख औरत है उसको मुसलमान उठाए और मुसलमान औरत है उसको हिंदू और सिख उठाए, यह तो वडा अत्याचार है। कुछ लोग जो कहते है कि वारह हजारको उठा ले गए, यह कम-से-कम तादाद वताई जाती है। मै तो कम-से-कम लेना चाहता हू। मेरे लिए यह वहुत ज्यादा है। वारह हजार औरतोको पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए और वारह हजार औरतोको पूर्वी पजावके हिंदू, सिख ले गए। इनको कैसे लाना एक पेचीदा प्रश्न है। इसको हल करनेके लिए वे वहने चली गई थी। मुसलमान वहने है, उन लोगोने भी सोचा। जितनी हिंदू और सिख वहनोको उडा ले गए है उनको वापस लाना चाहिए, इसके लिए ये गई थी। उसी तरह जितनी मुसलमान वहने है उनको भी उनके घर पहुचाना चाहिए। ऐसा नही कि वे आकर ले जाय। हमे ही पहुचा देना चाहिए। उसमे वहाके प्रधान गजनफर अली और वहाके पुलिस अफसर भी थे—नाम तो भूल गया—और दूसरे भी थे जो इसमे काम कर सकते थे। मृदुला वहन, रामेश्वरी वहन चली गई थी। दोनोने मुझे अलग-अलग सुनाया कि सवने मिलकर तय किया कि वहनोको घर वापस पहुचाना चाहिए। लेकिन वात यह हुई कि यह कैसे हो सकता है ? अगर आज उनको निकालनेके लिए ऐसा करना पडे कि पुलिस भेजनी पडे, फौज भेजनी पडे, उसके साथ वहनें भेजनी पडे तो यह काम करनेका कोई तरीका नही है। जैसे कि पाकिस्तान है, तो वहा हिंदू, सिख वहने चली जाय, पुलिस

अफसर चले जाय, शायद पूर्वी पजावके अफसर भी चले जाय, उन बहनो-को लानेके लिए, और उन बहनोको ले आए। लेकिन दोनोमेंसे एक भी जगह ऐसा हुआ नही है। कह सकते है कि वे बहने आना नही चाहती तो भी लाना है। उसी तरहसे यहासे भी वहा पहुचाना है। कोई कह सकता कि हिंदू और सिख बहन मुसलमान बन गई है, उनके साथ निकाह कर लिए है। हा, हुआ है, लेकिन वे आनेको तैयार नही है, यह मै माननेके लिए तैयार नही हू। मै इसे गलत बात समझता हू। उसी तरहसे यहा है। वे बहन खुशीसे रहती है, यह माननेके लिए मै तैयार नही।

दूसरी बात भी मै सुना चुका हू। हमारा व्यवहार वहशियाना तौरसे चलता है, पूर्वी पजावमे, और ऐसे ही पश्चिमी पजावमे। उसमें एक ज्यादा हैवान है और दूसरा कम, ऐसा कहोगे? हैवानमे ज्यादा और कम क्या हो सकता है? राजा गजनफर अलीने कहा है कि दोनोने काला काम किया है। किसने ज्यादा किया और किसने कम, इसे जाननेकी जरूरत नही। काफी तादादमे हुआ, किसने पहले की यह तहकीकात करनेकी जरूरत नही, इसके निर्णयकी जरूरत नही। जरूरत यह है कि जिन बहनोको जबरदस्ती उठा ले गए है, जिनके साथ बुरा व्यवहार हुआ है, उनको उनके घर पहुचाना है। तो उनको कैसे लाना? यह काम कैसे हो सकता है? मुझको कहना चाहिए कि यह काम पुलिससे नही बन सकता है, फौजसे नही बन सकता है। चद बहनोको पूर्वी पजाब भेज दो और चद बहनोको पश्चिमी पजाव—तो यह काम हो सकता है, नही तो हो नही सकता, ऐसी बात नही है, लेकिन यह तरीका नही है। मै नही कहता कि जान-बूझकर करना नही चाहते; लेकिन मै तजुर्बेकार होनेके नाते कहता हू कि इस तरहसे काम होता नही है। यह काम हुकूमतका है। मै यह नही कहता कि औरतोको उडानेका काम हुकूमतने कराया—पूर्वी पजावका काम हुकूमतने थोड़े कराया—पूर्वी पजावमे हिंदू और सिखोंने किया और पश्चिमी पजावमें मुसलमानोने किया। इसमे तहकीकात क्या करनी है? वह तो हुआ है। सख्या कितनी ही हो, मै कम-से-कम बारह हजार मानता हू। तो पूर्वी पजाव और पश्चिमी पजाव इतनेको तो दे दें।

कुछ ऐसा सवाल उठा है कि उनके घरवाले उनको लेना नही चाहते। जगली मा-बाप या पति होगें जो कहते है कि हम अपनी लडकीको या बीवीको नही लेंगे। उनको तो लेना ही है। उन बहनोने बुरा काम किया, यह मैं माननेको तैयार नही। उनके साथ जबरदस्ती की गई तब हुआ। उनपर काला तिलक लगा देना और कहना कि यह समाजमें रहने लायक नही है, अधर्म है। मुसलमानोमें ऐसा नही होता है। उसमें, इस्लाममें, तो उदारता है कि वह निकम्मा नही बनाता है। यहा निकम्मे बन जाते है ऐसा थोडा है। निकम्मे बनानेवाले ही निकम्मे बन जाते है। तो मैं तो यही कहूगा कि यह काम हकूमतका है। हकूमतको पता लगाना है कि वे कहा-कहा है— दो-चार थोडे है, बारह हजार है। उनको निकालना है और घर पहुचाना है। अगर हम समझें कि पुलिसको भेजे, औरतोको भेजे उन बहनोको लानेके लिए, तो यह तरीका नही है। इस तरीकेसे वे आनेवाली नही है। यह पेचीदा सवाल है। इसका मतलब यह है कि लोकमत तैयार नही है। बारह हजार औरतें उडा ले गए है तो कहोगे कि बारह हजार आदमी ले गए होगें, और वे गुडे लोग है, तो मैं कहूगा कि ऐसी बात नही है। शरीफ ही गुडे बन गए है। गुडे तो कोई दुनियामें पैदा होते नही। मौका मिलनेपर वे बन जाते है और इस तरहसे ले जाते है। ऐसा क्यो होता है ? तो मैं कहूगा कि दोनो हकूमत इस काममें पगु है। दोनो हकूमतोने अपना अधिकार यहातक नही जमाया है कि अधिकारके जरिये उन औरतोको लावें। अगर इतना अधिकार होता तो पूर्वी पजाबमें जो हो गया है वह होनेवाला नही था, इसी तरहसे पश्चिमी पजाबमें होनेवाला नही था। हमें तो तीन महीने पहले आजादी मिली है। हमारी आजादी तो अभी बच्चा है।

मेरी निगाहमें पाकिस्तानने यह जहर फैला दिया। लेकिन उसको क्या कहूं ? कहनेसे क्या बन सकता है ? बहनोको तो बचानेका एक ही तरीका है—वह यह कि हकूमत अब भी समझ जाय, जाग्रत हो जाय, इसको पहले दर्जेका काम बनाकर इसमें सारा वक्त लगा दे और इसके लिए मरनेतकको तैयार हो जाय। तब इन औरतोको बचाया जा सकता है, नही तो कितनी ही बहनोको पूर्वी पजाब भेजो व पश्चिमी पजाब भेजो

इससे वे बचनेवाली नही है। बचानेका एक ही तरीका है जो मै कहता हू। हा, मदद मागे तो मदद दें, यह बात दूसरी है। इतनी बड़ी बात मैंने सुना दी।

मैंने कल कह दिया था कि मुझे पद्रह मिनटसे ज्यादा नही लेना है। इसलिए इतना ही कहकर खतम कर दूगा। दो-तीन मिनट रह गई है, उन्हे मै छोडे देता हू।

: १७२ :

मौनवार, ८ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

एक मुस्लिम सोसायटी मुझे चेतावनी देती है कि मुझे हिंदू या मुसलमानोकी बाते मानकर दलीलमें नही उतरना चाहिए। बेहतर यह होगा कि मै पहले तहकीकात करू और बादमे जो करना हो सो करू। सोसायटी आगे चलकर मुझे सलाह देती है कि मुझे काठियावाड़ जाकर खुद सब कुछ देखना चाहिए। मै कह चुका हू कि आज मै वह नही कर सकता। मुझे दिल्लीमे और दिल्लीके आस-पास अपना धर्म-पालन करना चाहिए। यह सलाहकार भूल जाते है कि मेरे मिठासके तरीकेसे, जहातक आवश्यक था वहातक, उनकी शिकायत वापिस खिंचवा सका हू। इसमेंसे सीखनेको तो यह है कि जहा सचाईकी खातिर सचाई निकालनेका प्रयत्न रहता है वहा परिणाम अच्छा ही आता है। इस बातको बहुत बार आजमाया जा चुका है। ऐसी बातोंमे धीरजकी और लगकर काम करनेकी बहुत जरूरत रहती है।

सिवसे दुखी पत्र आया ही करते है। सबसे आखिरका खत कराचीसे है। उसमें लिखा है, "खून तो नही हो रहे, पर हिंदू इज्जत व आबरूसे यहा रह नही सकते। यूनियनसे आए हुए मुसलमान जब चाहे हिंदुओंके घरोंमे आ घुसते है और आरामसे कहते है—'हम यहा रहने आए है।' उनके हाथमे सत्ता नही, पर हम उन्हे 'ना' कहनेकी हिम्मत

नही कर सकते। ऐसे किस्से काफी सख्यामे देखनेमे आते है। चद महीने पहिलेका कराची आज स्वप्न-सा हो गया है।" यह एक लबे खतका साराश है। मै जानता हू कि यह खत विश्वास करनेके लायक है। यह बताता है कि वहा अधाधुधी मची हुई है। यह तो आदमीका लहू सुखाकर मारनेकी बात हुई। साथ ही इसमें आत्माका भी हनन होता है। पाकिस्तानवालोसे मेरा अनुरोध है कि वे इस अधाधुधीको रोकें। यह एक बीमारी है। उससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाय उतना ही अच्छा है।

चीनीपरसे अकुश उठ गया है। अन्नपरसे, दालो और कपडेपरसे जल्दी ही उठ जाएगा। अकुश उठानेका मूल हेतु यह नही है कि कीमते एकदम कम हो। आज तो असल हेतु यह है कि हमारा जीवन स्वाभाविक बने। ऊपरसे लदा हुआ अकुश हमेशा बुरा होता है। हमारे देशमें वह और भी बुरा है, क्योकि हमारी करोडोकी आबादी है और वह एक विशाल देशमे फैली हुई है, जो १६०० मील लबा और १५०० मील चौडा है। यहा देशके बटवारेको सामने रखनेकी जरूरत नही। हम फौजी कौम नही है। हम अपनी खुराक खुद पैदा करते है, या यो कहिए कि कर सकते है, और हमारी जरूरतके लिए काफी कपास पैदा करते है। जब अकुश उठ जायगा, लोग आजादी महसूस करेंगे, उन्हे गलतिया करनेका अधिकार रहेगा। यह प्रगतिका पुराना तरीका है, आगे बढना, गलतिया करना और उन्हे सुधारते जाना। किसी बच्चेको रुईमे लपेटकर ही रखा जाय तो या तो वह मर जायगा, या बढेगा नही। अगर आप चाहते है कि वह तगडा आदमी बने तो आपको उसे सिखाना होगा कि वह सब किस्मके मौसमको बर्दाश्त कर सके। इसी तरहसे हकूमत अगर हकूमत कहलानेके लायक है तो उसे लोगोको सिखाना है कि कमीका सामना कैसे करना। उसे लोगोको बुरे मौसमका और जीवनकी दूसरी मुसीबतोंका अपनी सयुक्त कोशिशसे सामना करना सिखाना है। बिना अपनी मेहनतके जैसे-तैसे उन्हे जिदा रखनेमे मदद नही करना है।

इस तरहसे देखा जाय तो अकुश निकालनेका अर्थ यह है कि हकूमतके चद लोगोकी जगह करोडोको दूरदेशी सीखनी है। हकूमतको जनताके प्रति नई जिम्मेदारिया उठानी होगी, ताकि वह जनताके प्रति

अपना फर्ज पूरा कर सके। गाडियो इत्यादिकी व्यवस्था सुधारनी होगी, उपज बढानेके तरीके लोगोंको बताने होगे। इसके लिए खुराक-विभागको बडे जमीदारोंके बजाय छोटे-छोटे किसानोकी तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा। हकूमतको एक तरफसे तो सारी जनताका भरोसा करना है, उनके काम-काजपर नजर रखना है और हमेशा-छोटे-छोटे किसानोकी भलाईका ध्यान रखना है। आजतक उनकी तरफ ध्यान नही दिया गया, मगर करोडोकी जनतामें बहुमत इन्ही लोगोका है। अपनी फसलका उपयोग करनेवाला भी किसान खुद है। फसलका थोडा-सा हिस्सा वह बेचता है और उसके जो दाम मिलते है उनसे जीवनकी दूसरी जरूरी चीजें खरीदता है। अकुशका परिणाम यह आया है कि किसानोको खुले बाजारसे कम दाम मिलते है। इसलिए अकुश उठानेसे किसानोको जिस हदतक अधिक दाम मिलेगे उस हदतक खुराककी कीमत बढेगी। खरीदारको इसमे शिकायत नही होनी चाहिए। हकूमतको देखना है कि नई व्यवस्थामें कीमत बढनेसे जो नफा होगा वह सब-का-सब किसानकी जेबमे जाय। जनताके पास रोज-रोज या हफ्ते-के-हफ्ते यह चीज स्पष्ट करनी होगी। बडे-बडे मिल-मालिको और बीचके सौदागरोको हकूमतके साथ सहयोग करना होगा और हकूमतके नीचे काम करना होगा।

मै समझता हू कि यह आज हो रहा है। इन चद लोगोमे और मडलोंमे पूरा मेल-जोल और सहकार होना चाहिए। आजतक उन्होने गरीबोको चूसा है। उनमें आपसमे जो स्पर्धा चलती आई है यह सब दूर करना होगा। खास करके खुराक और कपडेके बारेमे इन चीजोमें नफा कमाना किसीका हेतु नही होना चाहिए। अकुश उठानेसे अगर लोग नफा कमानेमे सफल हो सके तो अकुश उठानेका हेतु निष्फल हो जायगा। हम आशा रखें कि पूजीपति इस मौकेपर पूरा सहकार देंगे।

: १७३ :

६ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै चर्खा-सघके ट्रस्टियोकी सभामें गया था। बहनोके साथ तो आध घटे बात करना ही था। अगर समय रहा, क्योकि मै १५ मिनटमें तो खतम करता हू, तो उसके बारेमें कहूगा, नही तो कल कहूगा।

आज एक चीज तो अखबारोमे यह आ गई है कि सरदार पटेल और मै पिलानी जा रहे है और वह किस कामके लिए ? हवा खानेके लिए। यह बात बिल्कुल निकम्मी है। सरदारके दिलमे क्या है यह तो मै नही जानता हू, लेकिन मै इतना तो जानता हू कि यह हवा खानेका समय नही है। सरदार सारा दिन काम करते है और रातको आराम करते है, वही हवा खाना है। वही हाल मेरा भी है। हा, मेरा काम इतना नही है, क्योकि मेरे हाथमे हकूमत नही है। लेकिन मेरे पास लोग आते-जाते है इसलिए थकान हो जाती है, तो भी आराम तो करता ही हू। आजकल हवा तो यहा भी अच्छी है। इस वक्त हवा क्या खाना था ! आजकल तो यहाकी हवा ठडी है। पिलानीमे है क्या ? मेरा तो ऐसा है कि करना या मरना। यह भी नही कर पाया हू। अखबारवाले इस तरहकी हवाई बातें क्यो छापते है, यह मै नही समझ सकता हू। मै यही समझूगा कि अखबारोमें जो कई बातें आती है, वे गलत है। पीछे मैने सुना कि— वह अखबारमे नही है—क्योकि हम वहा जा रहे है, इसलिए जयपुरसे हुकम निकला है कि इतनी चीनी चाहिए, इतना गेहू चाहिए, क्या-क्या चाहिए। पीछे आदमी तो दो रहे, इसलिए इतना चाहिए नही, लेकिन ऐसा हो गया कि वहाके बाजारमें सन्नाटा हो गया। यह सुनी हुई बात है, देखी हुई नही। यह कितनी बुरी चीज है कि जो चीज होनेवाली नही, वह भी हो गई। हम ऐसे है कि बाजारपर भी असर हो गया। बाजारमे ऐसा हो गया कि इतना दूध चाहिए, इतना सेर चीनी चाहिए, जैसे हम खानेके लिए ही जिंदा रहते है या हमारे साथ इतना बडा रिसाला जाता है। ऐसा तो होना नही चाहिए। सरदार

मिस्कीन है, मै भी मिस्कीन हू। यह है कि वह आलीशान मकानमे रहते है, आलीशान मकानमे तो मै भी पडा हू। नही तो कहा ढूढू। तो इस तरहसे है। आलीशान मकानमें रहते हुए भी मिस्कीनकी तरह अच्छा है। वडा अच्छा तो यही है—मै कबूल करूगा—कि वह मिट्टीके झोपडेमे रहें और मै भी मिट्टीके झोपड़ेमें रहू। कुछ भी हो, मै तो यही बात वताना चाहता हू कि इस तरहसे गप्प उडती है। मै तो यही पड़ा हू तो पूछ लेना चाहिए था कि क्यो भाई, तुम पिलानी जाओगे ? हमारे पास तार आ गया है और वह भी एसोशियेटेड प्रेसका—उसकी तो ऐजेंसी यहां है, सो मुझको और चुभा। सरदार तो ज्यादा काममे रहता है। उसको नही मुझको तो पूछ सकते थे कि क्या कही जानेवाले हो ?

दूसरी वात यह है कि एक सिंधी भाईका पत्र आ गया है। उसने तो अपना नाम दिया है, लेकिन मै उसका नाम देना नही चाहता हू। उनकी तरफसे कोई मनाही नही है। सिंधके एक डाक्टरकी बात तो मैंने वताई ही थी। नाम नही दिया था। उन्होंने वताया था कि वहा हरिजनोको कितनी तकलीफ है। वह पकड लिए गए। इसी कारण पकड़ लिए गए या दूसरे कारण, यह मै नही जानता हू। कई आदमी जो हरिजनोकी सेवा करते हैं वे पकड़ लिए गए हैं। ऐसा सिलसिला आज सिंधमें चलता है। हा, इतना है कि खून नही होता है, लेकिन जैसा मैंने कल वताया, वह खूनसे वदतर है, क्योकि खून तो एकका हुआ, वह खतम हुआ, पीछे सब समझ जाएगे कि इतना हुआ। लोगोको परेशान कर मारना, यह तो वदतर वात है। एक आदमीको पकड लिया और छोड दिया, मुमकिन है दूसरोको भी छोड दे। लेकिन तो भी इस तरह लोगोको पकडना बुरी वात है। मै पाकिस्तानकी हकूमतपर इल्जाम नही लगाता हू; लेकिन मै पाकिस्तानको सावधान करता हू कि अगर वे इस तरह करते हैं कि कोई हरिजनोकी सहायता करता है, इसलिए गिरफ्तार कर ले तो सिंधमे कार्यकर्ता कैसे रहेगे ? हरिजन लोग कैसे रह सकते है ? हा, यह चीज पहले अंग्रेजोके जमानेमे तो चलती थी। क्या हम भी ऐसा करेंगे ?

अभी चद मिनट वाकी है तो चद मिनटमें वहाकी एक वात सुना

दू—वह औरतोकी बात है। कस्तूरबा स्मारकका सिलसिला है, वह तो इस कारण है न कि हमारे यहा सात लाख देहात है, वहा बच्चे और बहनें पडी है, उनकी जाग्रति करना, उनकी सेवा करना कस्तूरबा स्मारक-का काम है। लेकिन यहा तो एक बडा मामला हो रहा है कि एक तरफमे हिंदू और सिख औरतोको, लडकियोको मुसलमान भगा ले गए है और दूसरी तरफसे हिंदू और सिख मुसलमान लडकियोको भगा ले गए है। यह बात छोड दो कि कौन ज्यादा भगा ले गए और कौन कम। कुछ भी हो, एक-एक हकूमतमे बारह-बारह हजारसे ज्यादा लडकियोको भगा ले गए है। इसमें कस्तूरबा स्मारक क्या करे? मेरे हाथमे है तो जो होना चाहिए वह तो करूगा ही। लेकिन यह एक बात साफ है कि कोई नामके लिए तो कर नही सकते है। जो सेवक है तो उन्हे काम करना है—काम किया, खतम हुआ, भूल गए— अखबारमें आए चाहे न आए, इसकी ओर ध्यान नही देना चाहिए। इसी तरहसे दूसरा काम भी है—यह काम भी औरतोंका ही है। दूसरे भी मदद करेगे। एक बात यह भी है कि औरतोके लिए क्या-क्या किया जाय वह तो बताओ। वह थोडा-सा मै यहा बता देना चाहता हू। इसमे जितनी सेविकाए है, वे शहरोसे है—बहुत-सी सेविकाए देहातोसे नही मिली, दैवयोगसे मिली तो बहुत कम मिली और जो देहातोसे मिली है वे भी शहरोसे ताल्लुक रखती है। शहरोसे ताल्लुक रखना बुरा है, गदा है, ऐसा नही है, लेकिन ऐसा सिलसिला बन गया है—१५० वर्षोंसे भी अधिक समयसे—कि शहर है वह देहातियोसे पैसे लेनेके लिए है, देहातोसे कच्चा माल ले, देश-विदेशोमे व्यापार करे और करोडो रुपये कमाये। लेकिन करोडो रुपया देहातियोको नही मिलेगा, थोडा मिलेगा, ज्यादा रुपया करोडपतियो, धनिको तथा मालिकोको मिलेगा। शहर देहातियोको चूसनेके लिए है। इसलिए शहरकी जो सभ्यता है वह देहातोके ढाचेमे नही है। एक बहन शहरकी है तो उसे किस दृष्टिसे देहातको जाना है, तो मैने तो बता दिया है कि उसे शहरोकी आबहवा व सभ्यता लेकर नही जाना चाहिए। माना कि उसके पास पैसे पडे है, शौककी चीजे पडी है, मोटर पडी है, रग-रागकी चीजे है, मखमल है, ऐसी कीमती चीजे पडी है। दांत साफ करनेका—बाहरसे या यहाका हो—मजन पडा है तो ले ले,

टूथ ब्रुश ले ले, और अच्छे, खूबसूरत लगते हैं वैसे बूट ले ले, जूतियां ले ले, चप्पल ले ले—ये सब चीजे पडी है, इनको लेकर देहात जाय तब देहातकी सेवा कैसे कर सकती है? यह देहातके लिए आदर्श है, ऐसा हुआ तो ये चीजें देहातको खा जायगी। होना तो ऐसा चाहिए कि शहर है वह देहातके मारफत समृद्ध बननेके लिए है, पैसे भेजनेके लिए है, देहातकी सभ्यताको जितना बढा सके उतना बढानेके लिए है, लेकिन वैसे हुआ तो उल्टा हो जायगा। अभी मैंने सब बाते तो बताई नही है, लेकिन इतना तो कह दू कि जिन बहनोको सच्ची सेवा करना है, चूसना नही है, तो उनको विवेकशक्ति रखनी होगी और विवेककी दृष्टि रखकर जो चीजे देहातोमे जा सकती है वहां ले जाय। जो सुधार करना है वह भी देहातो-के ढाचेमे करे। तब तो हमारे सात लाख देहात, जो गिरी हुई हालतमे है, ऊपर आ सकते है। ऐसा नही है कि देहातोमे जगली पडे है, वहा कला नही है, वहाके जीवनमे कुछ भी अच्छापन नही है। देहाती जीवनमे तो बहुत कुछ खूबसूरती भरी है, ऐसा मेरा मत है। यहा बहुत कला भरी है, यहा अनेक प्रकारके उद्योग पडे है, जो सारी दुनिया जानती है। यहांके ही उद्योग पश्चिममे नमूना बनकर गए। तो मै आज इतना ही बता देना चाहता हू कि जिन बहनोको वहा सेवा करनी है उनको समझना चाहिए कि शहरो-की चीज शहरोमे ही छोड़ दे। शहरकी जो उत्तम चीज है, नीति-वर्धक है, उसे ही ले जाय, बाकी शहरमे ही रख जाय। तभी करोडो बहन और बच्चोको ऊपर ले जानेमे मदद दे सकते है। इतना तो हम कर ही सकते है।

: १७४ :

१० दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल तो मैंने आपको कह दिया था कि मै चर्खा-सघकी सभा-मे गया था और औरतोसे थोडी बात कर ली थी, पर आज भी वहां तालीमी सघकी बैठकमे जाना पडा, लेकिन शायद आज यह बात

छोड दूगा। आज मुझे चर्खा-सघकी बात करनी चाहिए। चर्खासघ क्या चीज है, आप जानते ही है। वह तो खद्दरका काम करता है और चर्खेसे (चर्खीसे) शुरू होता है, माने यह कि पहले कपासका बिनौला निकालना पडता है, पीछे धुनाई करनी होती है, पीछे पूनियां बनानी पडती है, फिर कातना, फिर बुनाईकी बात आती है। मै उस सबमे जाना नही चाहता हू। मै तो इतना बता देना चाहता हूं कि हिंदुस्तानमें करोडो लोग पडे है। अगर वे यह काम करें—यह आसान काम है, बुढिया औरत भी कर सकती है, ६, ७ वर्षका बच्चा भी कर सकता है, हम चर्खा-सघमे ऐसे बच्चोको भी सिखाते है—तो कपडेका खर्च करीब-करीब बच जाता है। अगर देहातोमे कपडे बन जाते है तो मुफ्त-सा हो जाता है—मेहनत की और हो गया। अगर देहातमे कपास बो ली तो करीब-करीब सब खर्च बच गया, दुगुना पैसा बच गया—एक तो पैसा खर्च नही करना पडा और दूसरा कुछ उद्योग करते है, कला भी भूलते नही, और आगे बढते है। इस कारण, मै तो कहूगा कि अगर हम पागल नही बनते है तो कपडेका घाटा तो हमारे यहा होना ही नही चाहिए। कोई भी मिल न रहे तब भी घाटा नहीं होना चाहिए। आज तो हम मिलका मुह ताकते है, मिलका ही कपडा अपनाते है। आज हम चर्खेको, खद्दर-गाढेको अपनाना भूल गए है। आज कोई खद्दरकी टोपी पहन लेता है, क्योकि कुछ अभ्यास हो गया है, उसको साथ लेकर आजादीकी लडाई लडी थी, लेकिन आज वह चीज हमारे जीवनमें जिंदा नही है। यह हमारे लिए दु खकी बात है। इतने वर्षोंसे चर्खा-सघने काम किया और लोगोको करोड़ो रुपये दिए, लेकिन फिर भी हम ऐसे-के-ऐसे रह गए हैं, तो इसके लिए सोचना चाहिए। कल सोचते थे तो बताया गया कि चर्खेके मारफत क्या काम होता है, वह क्या बताता है। चर्खा अहिसा बतानेवाली चीज है। अगर सब लोग चर्खामय बन जाते है और सब देहात सचमुच समृद्ध बन जाय तो आज जो हालत देखते है, करुणा-मय है, वह बननेवाली नही थी। वहा बहस चलती थी। वहा बताया गया कि किस तरह चर्खेके मार्फत—खादीके मार्फत—कपडेका घाटा आरामसे पूरा कर सकते है, करोडो रुपए देहातोमे दाखिल कर सकते है। नगद नहीं, लेकिन करोडो रुपये जो मिलके कपडे खरीदनेमे खर्च करते है, वह

बच जाते हैं। लोग कह सकते हैं कि खादी तैयार करनेमें भी तो कपासका दाम पड़ेगा, लेकिन मैं कहता हू कि कपासका दाम तो कम पड़ेगा। आज यहा जिस तरहसे कपास निकलता है उसे लगा दो तो उसमें करीब-करीब ऐसा बन जाता है। लेकिन यह हिसाब सच्चा नही है। इसलिए नही है कि कपड़ोका दाम मिलमें जो होना चाहिए उससे कममें दिया जाता है। सल्तनतकी मदद नही हो तो दाम तो बहुत बढ जाय, लेकिन उसको सब मदद सरकारसे मिलती है। मिलके लिए सब सुविधा पैदा की जाती है। हम राज चलाते हैं, उसमें धनपति हैं, उनकी तो चलती है और जो हलपति हैं उनकी नही चलती है। यह एक बड़े दु:खकी बात है। धनपतिसे मेरा द्वेष तो है नही, क्योकि मैं एक धनपतिके घर पड़ा हू। धनपतिका जो रवैया रहा है उसे जानता हू। धनपति मिल चलाते हैं, तो मैं थोड़े हिस्से लेता हू, या काम करता हू! कर भी नही सकता और हिस्सा भी नही लेना है। हा, उनके मार्फत चर्खाका काम निकाल लू तो अच्छा है, लेकिन कर नही पाया हू। ये सब सुविधाए धनपतियोने सरकारके मार्फत पैदा कर ली हैं। अगर वे कहते है कि गरीबोके लिए है तो वैसा तो अगरेज भी कहते थे। लेकिन सच बात यह है कि गरीबोका काम नही होता है। इस हकीकतको दीनतासे कबूल कर लेना चाहिए। अब अगर ऐसा नही होता है तो बुरी बात है। कह तो सभी देंगे कि हां, गरीबोंका काम होना चाहिए, लेकिन हमारे जितने मत्री हैं वे कहे कि हम तो देहातोमें जाकर कहने वाले हैं। अगर समाजवादी हैं, और मेरी चले तो यही आवाज निकलवा लूगा कि सब समाजवादी बन जाय। अगर समाजवादी सच्चे हैं, लोगोकी सच्ची सेवा करते हैं—मजदूरोकी ही नही, हलपतियोकी भी, क्योकि इनकी सख्या ज्यादा है, और, हमलोगोको ऊपर उठाना चाहते हैं तो उनसे यही कहलाऊगा कि हमको तो यही सिखाना है कि तुम कपड़ा खादीका ही पहनो। तुम घरमें खद्दर बना लो, उसमें कोई रुकावट नही है। मतलब यह है कि वे क्या कर रहे हैं, यह मैं लोगोको बता दूगा। जबसे मैं आया हूं तबसे मैं यही कह रहा हू, तो भी मुझसे कुछ हुआ नही है। मुझसे यही हुआ कि कई करोड रुपये देहातोको दे दिए, लेकिन मैं तो चाहता हू कि हरएक देहातके घरोमें चर्खा गुजन करे और गाढ़ेके सिवा दूसरा दीखे ही नही।

ऐसा बना सकू तो जो दीनता है वह रहनेवाली कहा है ! ऐसा अभीतक हो नही सका, यह बहुत दु खकी बात है।

आजकल यहा सब ठीक चल रहा है, गोलमाल नही है, ऐसा नही है। हिंदू मुसलमानोंके बारेमे एक तरहसे सुनता हू कि ऐसे व्याख्यान भी चलते है—अभी नाम नही बताऊगा, क्योकि पूरा-पूरा नाम अभी नही आया है—कि यहा चद मुसलमान पडे है उनको रहने नही देगे। जो मस्जिदे रह गई है उनपर कब्जा करेगे और उनमे हिंदू रहेगे। फिर क्या करेगे, दैव जानता है, मै नही जानता हू। मै समझता हू कि अगर उनमे हिंदू रहेगे तो उससे हिंदू-धर्म मिट जाता है। यह दिल्लीकी बात है।

अभी अजमेरकी बात भी आ गई। अजमेरमे भी ऐसा हो रहा है। वहा तो मै कई बार गया हू। वहा मुसलमान पडे है, हिंदू पडे है। वहा तो बडी भारी दरगाह है। उस दरगाहमे हिंदू भी जाते है और हिंदू जाकर मानता भी करते है। इसी तरहसे मुसलमान भी जाते है। तो सब एक ही बन गए है, ऐसा चलता है। धर्मसे नही, कर्मसे। हिंदू और मुसलमानके बीच वहा कभी झगडा नही हुआ है, ऐसी बात नही है। होता था, लेकिन आज ज्यादा हो गया है। ऐसा थोडा-सा अखबारमे आया है, उससे जानता हू वहा काफी मुसलमान मारे गए। पहले तो वे डरे, डरके मारे भागे। पीछे थोडे रह गए। फिर झगडा हो गया। सुनता हू कि इर्द-गिर्दके देहातोमे यही हो रहा है। पूरी खबर मिल जायगी तो सही-सही बता दूगा। इतना तो कहूगा कि यह शर्मनाक बात है। हम अभी इतना तो करे कि ईश्वरसे प्रार्थना करे कि हमे ऐसी सुबुद्धि दे कि हम ऐसे न बिगड जाय कि हम हिंदू-धर्मका भी नाश करे। मुसलमानोका नाश करनेके बहाने हिंदू-धर्मका भी नाश करे, यह तो कुछ अच्छी बात नही हो सकती। अगर हम जिदा रहना चाहते है तो हमे सबको जिदा रखना है, तभी हम भी रह सकते है। ईश्वरने ऐसा नही बताया है कि एकको मारकर दूसरेको जिदा रखे। पाकिस्तानमे सब हिंदू और सिखोको मार डाले और हिंदुस्तानमे मुसलमानोको मार डाले और जो बाकी रहे उनको गुलाम बनाकर रखे, यह हो नही सकता। तो मै कहूगा कि हम विनाशका काम कर रहे है। जैसे सस्कृतमे है, 'विनाश-काले विपरीतबुद्धि,' ऐसी हमारी बुद्धि विपरीत हो गई है। मारो, काटो,

निकाल दो मुसलमानोको, यह पागलपनकी बात है। बहुत-सी बाते ऐसी हो गई है, लेकिन सब नही सुना सकता हू, क्योंकि मैंने तो ऐसा कर लिया है कि घडी निकालकर रखता हू, जिससे १५ मिनटसे ज्यादा न बोलू।

: १७५ :

११ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो जिस भाईने बडी नम्रतासे पूछा था तो कहा कि कुरानशरीफमेंसे यहा जो आयतें पढी जाती है, उसके माने अगर समझा दिए जाय तो अच्छा हो, माने पुराने हो या नए। नया तो कोई हो नही सकता। कुरानशरीफ तो मुहम्मदसाहबने उतारा। उनकी जबान है, ऐसा कहते है। इसे १३०० वर्ष हो गए, इतना पुरातन है। उसमेंका जो हिस्सा हम पढते है वह बडा बुलद माना जाता है। जैसे हमारे मत्रमे है, वह विभूति मानी जाती है, उसे पढनेमें ही पुण्य मिल जाता है, वैसे ही यह भी जानो। अर्थ जाने चाहे न जाने, शुद्ध उच्चारणसे ही उसका पुण्य मिल जाता है। मै उसका अर्थ, निचोड दे सकता हू, क्योकि मै अरबी या फारसी तो जानता नही हू। मेरे पास शब्दार्थ है। अभी तो नही है, कल दे दूगा। उसका अर्थ यह है कि हम ईश्वरकी प्रार्थना करते है। ईश्वर तो एक ही है, उसे चाहे किसी नामसे पुकारो। उसका नाम अल्ला भी है। वह कैसा है, उसके विशेषण दिए है। वह रहीम है, रहमान है, दयावान है, दयाका भडार है। उसमें यही आता है कि ईश्वर एक है, ईश्वर अनेक नही है। उसमे यह भी है कि तू ही हमें शैतानसे बचा सकता है, शैतान तो हमको नीचे गिराता है, शैतान पाप-कर्म कराता है तो तू ही उस बलासे बचा सकता है। उसमें एक आदमीने इकरार किया है कि वह पुरुषार्थका काम नही करता है, दैव कराता है, ईश्वर कराता है। पीछे कहता है कि हे ईश्वर, तू ही शैतानसे बचा सकता है। हम छोटे इन्सान तो समुदरमें एक बिंदुके समान है। तू नही बचाएगा तो शैतान हमको खा जायगा।

तू महान् है, तू सब कुछ है, तेरी मेहरबानी रहे तो हम बच सकते है। तो मै कहूगा कि हम उसका जितना उच्चारण करे, उसका मनन करे और उसके मुताबिक चले, कम है। इसीसे दुनिया चलती है। तब आप कहेगे कि फिर मुसलमान ऐसा मिथ्या आचरण क्यो करते है ? उसका जवाब यही हो सकता है कि क्रिस्टी आला बन गए है, शास्त्रज्ञ बन गए है, लेकिन बाइबिल-के मुताबिक चलते कहा है ? उसके मुताबिक चलनेवाले क्रिस्टी कहा है ? हिंदू गायत्री मंत्रके मुताबिक कहा चलते है ? वह कितना बडा मंत्र है। हम सदा पढते है—"ईशावास्यमिद सर्वम्" उसके माने यह है कि सारा जगत ईश्वरमे भरा है। सब चीज वही देता है। तो आदमी कहता है कि हमारे पास सारा जो कुछ है वह तेरा है। वह हम सब त्याग देते है और जो हमे भोगना चाहिए भोगते है। हमारी कोई चीज नही है, घरबार सब ईश्वरके अर्पण कर दिया। यह तो बडी चीज है। पीछे ऐसा है कि दूसरेका धन है, दूसरेकी दौलत है, उससे द्वेष न करें। उसकी इच्छा तक न करें। उसमे यह सब चीज है। एक ही मंत्रके मुताबिक सब हिंदू चलें, सारा ससार चले, हिंदूके लिए ही थोडे है, हिंदूका नाम भी नही है—सिख चलें, सिख नही मानते है, ऐसा थोडा है। तो हम आज दुनियामें जो करुणामय दृश्य देखते है वह थोडे होनेवाला था। तो कहोगे कि उसके मुताबिक नही चले तो कैसे यह दुनिया चलती है ? तो मै कहू कि सब-के-सब बदमाश है, ऐसे थोडा है। सब हिंदू फरिश्ता थोडे है। सब सिख बदमाश है, ऐसा थोडे है। सब हिंदू देवरूप है और सब मुसलमान फरिश्ता है, ऐसा भी नही है।

दूसरा मंत्र पारसियोका है। पहला मंत्र जो होता है वह गुरुदेवको नमस्कार है। पीछे सस्कृतमे है वह है। पीछे भजन गाते है वह है। इतना होते हुए भी मनको साफ नही करते है, यह दु खकी बात है।

अब हरिजन-बस्तीमें जो चल रहा है, उसकी एक चीज समझा दू, लेकिन आज मै उसको छोड देता हू, क्योकि दूसरा काम करना है। सात मिनट हो गए और १५ मिनटमें खतम करना है।

आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आए। पहले भी आए थे, आज दुबारा आए। उन लोगोने मुझसे कहा कि अभी हम पाकिस्तान,

पंजाबमें गए थे। यही काम करनेके लिए युक्तप्रांतके मुसलमान वहां गए थे। पीछे वहां दूसरे मिले। उनके दिलमें हुआ कि वहां सुलह करा सकेंगे तो यहां सुभीता हो जाएगा और पीछे कोई बात नहीं रहेगी। मुझको पूछकर गए थे। तो मैंने कह दिया था कि जाओ। सच्चे दिलसे जाते हो तो अच्छा है। तो आज वहांसे आए। मेरे पास आए और कहा कि हम तुम्हारे पाससे एक चीज चाहते हैं, इतना चाहते हैं कि हिंदुओंको कहो, सिखोंको कहो—पहले हिंदूको कहो कि वे लाहौर जायं और हम उनके साथ जाएंगे। पहले हम मरेंगे, फिर कोई दूसरा मर सकता है। पर ऐसा तो होगा नहीं। हमने वहांकी हकूमतके साथ बात कर ली है। वह गैर-मुसलमानोंको बसानेके लिए राजी है। तो मैंने कहा कि यह सब लिखकर तो दो। आज-के-आज तो ऐसा होता नहीं है। यह बड़ी बात है। अगर ऐसा हो गया तो मेरा बहुत सारा काम हो जाता है। पीछे उन लोगोंने कहा कि करो तो सही, हम जो कहते हैं उसकी जितनी परीक्षा करते हो करो। तो उन लोगोंने लिखकर दिया। उसमें लिखा है—

"युक्तप्रांतके शांति-दलने दो मर्तबा पश्चिमी पंजाबका दौरा किया। पहली मर्तबा एक महीना और दूसरी मर्तबा एक हफ्ता घूमा। अब वहांकी हालत पहलेसे अच्छी है। पहलेके मुकाबले अवाम[1] और हकूमत दोनों अमनके लिए कोशिश कर रहे हैं। चुनांचे पश्चिम पंजाबकी सरकार खाहिशमंद[2] है कि जो गैर-मुस्लिम वहां इस वक्त रहते हैं तो रहें और जो वहांसे चले गए हैं वे वापस आएं, सरकारने यह हिदायत जारी की है कि जो गैर-मुस्लिम पश्चिम पंजाब वापस जाएंगे उनको उनकी मिल्कियत और जायदादपर कब्जा दिया जायगा और जो गैर-मुस्लिम भाई आएंगे और रहेंगे उनकी पूरी हिफाजत की जायगी और उनको कारोबारकी हर तरहसे सहूलियत दी जायगी। अगर बावजूद[3] मिन्नत[4]-के कोई गैर-मुस्लिम वहां रहने या वापस जानेका खाहिशमंद न हो तो उसको अपनी जायदादको बदलने या फरोख्त[5] करनेका पूरा हक है। बलवा-फसाद करनेवालोंको हकूमत सख्त सजा दे रही है और आनेवालोंकी

[1] जनता; [2] इच्छुक; [3] तिसपर भी; [4] प्रार्थना; [5] बेचना।

हिफाजतके लिए हर तरहकी तदवीर एहतियात[1] बरत रही है। शांतिदलने वहाके अवाम और सरकारको इस बातके लिए आमादा और तैयार कर लिया है कि पाकिस्तानकी हकूमतका यह फर्ज है कि गैर-मुस्लिमकी इज्जत-आवरूकी पूरी जिम्मेवरी ले। चुनाचे सरकार और अवाम दोनो इसके लिए तैयार है। युक्तप्रातीय शाति-मिशनके सदस्य गैर-मुस्लिम भाइयोंसे गुजारिश करते हैं कि जो भाई पश्चिमी पजावमें बसना चाहते हैं हम उनके साथ चलकर उनको वहा बसानेके लिए तैयार है। हम अपनी जानसे ज्यादा उनकी जिम्मेवरी लेते है और उनको पूरा इतमीनान कराके हम वापस आएगे।"

चार मुस्लिम भाइयोने इसमे दस्तखत किए है। इसे मै अच्छी खवर मानता हू अगर यह सही है। ये शरीफ आदमी है, तो मैंने कहा कि लिखकर दे दो तो काम करू, मै सारी दुनियाको वताऊगा। और अगर ऐसी बात नही होगी तो बुरी बात है। पीछे मैंने कहा कि माडल टाउनसे काफी हिंदू, सिख आए है, लाहौरमें भी हिंदुओकी वडी-बड़ी इमारतें है, सिखोकी भी इमारतें है, उनका वहा गुरुद्वारा भी है, क्या वहा जा सकते है ? उन लोगों-ने कहा कि जरूर जा सकते है। वहा सब अवाम ठीक हो गए है, ऐसी बात नही है। कुछ जहर तो भरा ही है, वह जल्दी नही निकाला जा सकता है। लेकिन हकूमतने तय कर लिया है कि वहा किसीको हलाक नहीं किया जाय।

अगर सचमुच ऐसा होगा तो यह बहुत बडी चीज है। मेरी उम्मीद नही थी कि इतनी जल्दी काम हो जायगा। कितना सही है, वह मैं नही जानता हू, लेकिन हम कम-से-कम दिलमें समझें तो सही कि ऐसा करने-वाले मुसलमान भी पडे है। ऐसा समझें कि सब मुसलमान बदमाश है तो वह इन्सानियत नही है। उनमें भी शरीफ पडे हैं। पीछे उनके साथ एक हिंदू आया। वह भी खत लाया। अब ज्यादा वक्त नही है, इसलिए उसे पढूगा नही, लेकिन उसमें भी यही चीज है। वह वहा होटल, विश्रामगृह चलाता है। वहा करीब एक हजार आदमी हमेशा आते है। मुसलमान ज्यादा आते होगें, लेकिन कुछ हिंदू भी आते होगे। उनके आनेमे कोई रुकावट

---

[1] सावधानी।

नही होती है। उस खतमे उन्होने लिखा है और कहते है कि हिंदू भाइयोंको वहा जानेमें कोई रुकावट नही है। इतना मै आजके तजुर्बेसे कहता हू। लेकिन मै यह नही कहता हूं कि कल चले जाओ। मै ऐसा भी नही कहनेवाला हू कि न जाओ, जाओ तो अच्छा है।

: १७६ :

१२ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईने खत लिखा है। उसमें लिखा है कि मैंने कल कहा था कि पाकिस्तान जाना शुरू करे। मैंने तो कहा था कि मै उस बातकी जाच करूगा, निश्चय हो जायगा तो कहूगा। मै देख लू कि जिन भाइयोंने कहा है वह ठीक है या नही। तब कहूगा कि जाओ या नही जाओ। तो वह भाई कहता है कि मै अभी जाना चाहता हू, क्योकि यहा लूटमार चल रही है, आते है तो कोई पूछता नही है, तन ढाकनेको कपडा और खानेको अनाज नही मिलता, हमारे लिए कुछ भी नही होता है। हा, मै जानता हू कि ऐसा है। ऐसा हो गया है कि सबको पूछ नही सकते, सब चीज पहुचनेवाली भी नही है। मेरा खयाल है कि जितनी तजवीज हो सकती है, कर रहे है। लेकिन अगर तजवीज नही है तो भी मै कह नही सकता कि आज जाओ। नही आए थे तो बात दूसरी थी, लेकिन जब आ गए है तब ठीक-ठीक हो जाय तब जाय। मै अभी खुद यह कहनेको तैयार नही हू कि आप अभी जाय। हा, तैयारीमें रहे तो अच्छा है। जितनी जल्दी जाने लायक हो सके उतना अच्छा है।

मैने कल कहा था कि कुरानशरीफकी जो आयत पढी जाती है उसका तर्जुमा सुना दूगा। उसका सार तो बता दिया था। मेरे पास आज तर्जुमा पडा है। उसमे यह है कि मै अल्लाहकी शरण लेता हू, वह भी शैतान पापात्मासे बचनेके लिए। पीछे कहा है कि मै शुरू करता हूं ईश्वरके नामसे ही। मै जो कुछ भी करता हूं उसीके लिए, क्योकि सब कुछ

बख्शनेवाला[1] वही है। जो रहीम है, रहमान है, दयालु है वह सब वही है। पीछे कहा है कि अल्लाह एक है, वह जन्म नही लेता और जन्म नही देता है। जन्म नही देता है, यह गलत है, गलत तर्जुमा हुआ है। सबको जन्म देनेवाला तो वह ही है। उसकी बराबरीका कोई नही है—वह तो अकेला है। इसीलिए हम कहते है कि वह निरजन है, निराकार है। गुणका भी आगार है—गुणकी थाहको बता नही सकते। ऐसी चीज उसमे है।

आज मेरे पास चार-पांच खत आ चुके है। एक तो काठियावाडसे है। मैंने कहा था कि काठियावाडसे मुसलमान भाइयोने लिखा, लेकिन चद मुसलमानोको वह भी चुभा है। क्यो, मै जानता नही हू, क्योकि जिन लोगोने शिकायत की थी वे खुद लिखते है कि कुछ हुआ नही है और जो हुआ भी तो उसे मिटानेके लिए काग्रेसियोने पूरा जोर लगाया, इसलिए हम आरामसे घरमें है।

एक खत ब्रह्म देशसे आया है और दूसरा शायद बबईसे। उनमे किसीके दस्तखत तो है नही, तो जवाब किसको दू ? बबईसे लिखते है कि तुम्हें कुछ करना तो है नही। वह कहते है कि आप गोलमाल करते है। मै यहा गोलमाल करता हू या क्या करता हू, वह तो जो सुनते है वे जानते है, और मै जानता हू। जो भाई खतमें नाम नही देते है तो किसको कहू ? वह कहते है कि काठियावाड़मे हुआ है, तो पीछे उस खतमे अपना नाम-धाम तो देना चाहिए, तब मै तहकीकात करू। तहकीकात करना मेरे हाथमें तो है नही। हकूमतको कहूगा कि तहकीकात करो। यह कैसी बात है कि आप बैठे है और लोग शिकायत करते है।

एक खत अजमेरके बारेमे भी है। वह हिंदुओका खत है। उसमें लिखा है कि जो तुमने कहा वैसा नही हुआ है। हुआ है सही; लेकिन हिंदुओकी तरफसे शुरू नही हुआ, मुसलमानोकी तरफसे शुरू हुआ। ऐसे तो चलता ही आया है। तो मुझको ऐसा लगा कि ऐसे कहनेवाला पक्ष भी है। ईश्वर ही जानता है कि क्या सही है। मेरे पास तो वहासे कोई चीज आई नही है। अखबारमे जो चीज आई उसको पढकर मैने बताया। कुछ दूसरोने भी

---

[1] देनेवाला।

कहा कि वहां क्या हो रहा है। तो मैंने कहा कि अगर हम ऐसा करते रहें तो यहाकी हकूमतको कायम नही रख सकेंगे।

पीछे एक भाई लिखते है कि सोमनाथके मदिरके जीर्णोद्धारके लिए पैसे निकालने है। सरदारने कहा कि इस मंदिरका जीर्णोद्धार किया जाय, लेकिन उन्होने कह दिया कि जूनागढकी तिजोरी या यहाकी हकूमतकी तिजोरीसे पैसा नही निकलेगा। मैं कहता हू कि यह ठीक है; लेकिन वह कहते है कि क्यों न निकले, मै इसके बारेमे ज्यादा कहना नही चाहता, लेकिन इतना तो कहूगा कि अगर इसके वास्ते पैसे निकले तो सबके लिए निकलें। तो यह बड़ी बात हो जायगी।

कलकत्तेमें जो हुल्लड़ हो गया उसकी काफी चीजे अखबारोमें आ गई है। उस परसे लगा कि आज हमारे यहा एक वायुमडल पैदा हो गया है कि किसी-न-किसी तरहसे हम हुल्लडसे ले सकते है। यह खतरनाक बात है। मैंने तो ऐसा कभी सिखाया नही। ३० वर्षतक अग्रेजोंसे लड़ाई चली, लेकिन यह ठडी ताकतकी लड़ाई थी। किसीसे मारपीट करनेकी लड़ाई नही थी—किसीके पाससे जबरन[1] छीननेकी नही थी। बगालमें जो हकूमत है वह हमारी है, उसमें कांग्रेसके आदमी है। उनके साथ ऐसा क्या करना था! मानो कि गलती की, मै तो जानता नही हू कि क्या गलती की, लेकिन मानो कि की है, तो जबरदस्ती क्या करनी थी! हम वहशियाना तौरसे क्यो पेश आए? अखबारोमें जब ऐसी चीज आती है और मै उसे पढता हू कि इस तरहसे हुआ तो मै आपके सामने निचोड रखता हूं। वहांके हुल्लड़में विद्यार्थीगण भी है। वे अच्छे लिखे-पढे है, तो उनका यह मार्ग तो हो नही सकता है कि असेंबलीमें उसके जो सदस्य जाना चाहते है उनको रोके और हर एक जगहसे सब दरवाजे रोक दें, इतना ही नही, भीतर भी चले जाय। लेकिन उन लोगोनें ऐसा किया। तो मुझको ऐसा लगता है कि इस तरहसे हम हकूमत चलानेवाले नही हैं। इस तरहसे मजबूर करना है कि जो हम नही चाहते है, उसको कानून न बनाओ। बगालकी हकूमतने जो कानून बनाया है उसमे यही है कि जो तूफान वगैरा करते

---

[1] जबरदस्ती।

मैंने कह दिया। लोगोको समझना चाहिए कि हुकूमत हमारी है। अगर हुकूमतसे इमदाद नही मिलती है तो कानूनके मुताबिक लडना चाहिए।

: १७७ :

१३ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै हरिजन-निवास जाता था तब वहाकी बातोके बारेमे रोज थोड़ा-थोडा आपको बताना चाहता था। पर मै ऐसा कर न सका। आज आपको फिरसे चरखेकी बात सुनाना चाहता हू। वहापर यह सवाद चला था—चरखेका क्या महत्त्व है ? मै क्यो उसपर इतना जोर देता हू ?

जब मैंने पहले-पहल चरखेकी बात शुरू की थी तब मुझे यह पता नही था कि पजाबमे चरखेका काफी प्रचार था। लेकिन जब मैं गया, तो वहाकी बहनोंने मेरे सामने सूतके ढेर लगा दिए थे। बादमे पता चला कि गुजरात-काठियावाडमे भी एकाध जगह चरखा चलता था। गायकवाडकी रियासतोंमें बीजापुर नामक एक गाव है। वहा गगा बहन भटकती हुई जा पहुची थी। इन्हे पता था कि मै चरखेके पीछे दीवाना हूं। वहा परदेवाली चद राजपूत औरतें चरखा चलाती थी। गगा बहनने उन्हे पूनी देकर उनसे सूत खरीदना शुरू किया। उस समय बहुत कम दाम दिए जाते थे। बादमें तो हमने काफी प्रगति कर ली। उस समय हमे इतनी ही कल्पना थी कि खादीके जरिये हम बहनोका पेट भर सकेंगे। उनका पेट कहां बडा होता है ? दो पैसेकी जगह तीन पैसे मिल गए कि वे खुश हो जाती थी।

बादमें मैंने समझ लिया कि चरखेमें तो बड़ी ताकत भरी है। वह ताकत अहिंसाकी ताकत है। एक तरफ तो हिंसाकी, मिलिटरीकी ताकत और दूसरी तरफ बहनोंके पवित्र हाथोसे चरखा चलानेसे पैदा

होनेवाली अहिंसाकी जबरदस्त ताकत! इसीलिए मैंने चरखेको अहिंसा-का प्रतीक कहा है। अगर सब लोग इस चीजको समझते तो चरखेको जला न देते।

एक समय सारी दुनियामें चरखा चलता था। कपासका जितना कपडा बनता था सब हाथका बनता था। हिंदुस्तानमे ढाकाकी मलमल और शबनम सब जगह प्रसिद्ध हो गई थी। सबकी आंखें उनपर लग गई थी। कपासमेंसे इतना खूबसूरत कपडा पैदा हो सकता है, इसपर सबको ताज्जुब होता था। उस रोचक इतिहासको मै छोड देता हूं। मगर उस वक्त चरखा गुलामीका प्रतीक था। बहनोको मजबूर किया जाता था कि इतना सूत तो देना ही होगा और अपने मालिकोसे वे यह नही कह सकती थी कि इतने कम दामपर हम सूत नही कातेंगी। तगीसे पेट भर जाय, इतना दाम भी तो उन्हे नही मिलता था। औरतोंको लूटा जाता था। उस करुण इतिहासको भी मैं छोड देता हू। मगर जो चरखा गुलामीका प्रतीक था, वही आजादीका प्रतीक बना, हिंसाके जोरसे नही, बल्कि अहिंसाके जोरसे। अली भाई चरखेकी कुकडीको अहिंसक बम कहा करते थे। अपने हाथोसे सूत कातना, कपडा रुपया बचाना और चरखेमेंसे ताकत पैदा करना—यही चरखेका बनाना, रहस्य है।

१९१७ मे चरखा शुरू हुआ। १९१७ मे मेरा पजाबका दौरा हुआ। आजादी तो हमने ले ली, पर जो आधी और तूफान आज देशमें चल रहा है, उसका क्या? हमने चरखा चलाया, पर उसे अपनाया नही। बहनोंने मुझपर मेहरबानी करके चरखा चलाया। मुझे वह मेहरबानी नही चाहिए। अगर वे समझ लेती कि उसमे क्या ताकत भरी है तो आज जो हालत है वह होनेवाली नही थी। अगर हमे अहिंसक शक्ति बढानी है, तो फिरसे चरखेको अपनाना होगा और उसका पूरा अर्थ समझना होगा। तब तो हम तिरगे झडेका गीत गा सकेंगे। आज हमारे तिरगे झडेमे चरखेका चक्र ही रह गया है। उसमें दूसरा अर्थ भी भर दिया गया है। वह अच्छा है। मगर पहले जब तिरगा झडा बना था, तब उसका अर्थ यही था कि हिंदुस्तानकी सब जातियां मिल-जुलकर काम करें और चरखेके द्वारा

अहिंसक शक्तिका संगठन करें। आज भी उस चरखेमें अपार शक्ति भरी है। अंग्रेज चले गए हैं, मगर हमारा लश्करका खर्च बढ गया है, यह शर्मकी बात है। इतने साल अहिंसासे काम लिया, अब हमारी आंखें लश्करपर लगी हैं। क्योंकि हम चरखेको भूल गए हैं, इसीलिए हम आपसमें लडते हैं। अगर सब भाई-बहन दुबारा चरखेकी सच्ची ताकतको समझकर उसे अपनावें तो बहुत काम बन जाय। जब मैं पंजाब गया था, तब वहांके सिख और मुसलमान भाइयोंने मुझसे कहा था— 'चरखा चलाना तो औरतोंका काम है। मर्दोंके हाथमें तो तलवार रहती है।' बादमें कुछ पुरुषोंने चरखा चलाया था, मगर उसे अपनाया नहीं। आज अगर सब भाई-बहन चरखेको जला दें, खादीको फेंक दें, तो मुझे उसकी परवा नहीं। लेकिन अगर उसे रखना है तो समझ-बूझकर रखें। अहिंसा बहादुरीकी पराकाष्ठा, आखिरी सीमा है। अगर हमें यह बहादुरी बताना हो, तो समझ-बूझसे, बुद्धिसे चरखेको अपनाना होगा। ४० करोड़की आबादीमेंसे छोटे बच्चोंको छोड दीजिए, फिर भी, अगर ५–७ बरससे ऊपरके बच्चे और बडी उमरके सब तंदुरुस्त लोग कातें, तो हिंदुस्तानमें कपडेकी कमी कभी नहीं हो सकती और करोडों रुपये बच जाते हैं। मगर वह सब भूल जाइए। सबसे बड़ी चीज यह है कि करोडोंके एक साथ काम करनेसे जो शक्ति पैदा होती है उसका सामना कोई शस्त्र-बल नहीं कर सकता। मैं यह सिद्ध न कर सकूं तो दोष मेरा है, अहिंसाका नहीं। मेरी तपश्चर्या अधूरी है, अहिंसाकी शक्तिमें कभी कमी नहीं आ सकती। उस शक्तिका प्रदर्शन चरखे द्वारा हो सकता है, क्योंकि चरखा करोडोंके हाथोंमें रखा जा सकता है और उससे किसीको नुकसान नहीं हो सकता। करोड़ों आदमी मिल नहीं चला सकते, दूसरा कोई धंधा नहीं कर सकते। चरखेमें नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है और अहिंसा भरी है।

: १७८ :

१४ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक खत मिला है। उसमें एक भाई लिखते है कि 'एक मुसलमान भाईको मजबूर होकर पाकिस्तान जाना पडा है। वह अपनी मेहनतकी कमाईका कुछ सोना-चादी मेरे पास छोड गए है। क्या आप बता सकते है कि यह सोना-चादी असली मालिकके पास कैसे भेजा जाय ?' अगर वह लिख भेजे तो मै हकूमतसे कहूगा कि वह मालिकके पास उसकी मिल्कियत भेजनेका इतजाम कर दे। मैंने इसका ज़िक्र इसलिए किया है कि हम जान ले कि हममें अब भी ऐसे शरीफ आदमी पड़े है। इस भाईके दिलमे ख्याल भी नही आया कि चलो, दोस्त तो गया, उसका माल हडप कर जाय। उसे अमानतको लौटानेकी फिक्र है। अगर हम सब भले बन जाय तो सब अच्छा ही होनेवाला है।

मैंने आपसे वायदा किया था कि हरिजन-निवासमे जब मैं जाता था तब वहा जो चर्चा होती थी, उसके बारेमे आपको थोडा-सा बता दूगा। आज मै आपको नई तालीमके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। नई तालीमको शुरू हुए आठ साल हुए है। इस सस्थाका उद्देश्य राष्ट्रको नए आधारपर शिक्षा देना है। उसके लिए यह कोई लबा समय नही है। बुनियादी तालीमका आमतौरपर यह अर्थ किया जाता है कि दस्तकारीके जरिये शिक्षा देना। मगर यह कुछ अशतक ही ठीक है। नई तालीमकी जड़ इससे गहरी जाती है। उसका आधार है सत्य और अहिंसा। व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन, दोनोमे ये ही उसके आधार है। विद्या वह जो मुक्ति दिलानेवाली हो—'सा विद्या या विमुक्तये'। झूठ और हिंसा तो बधनकारक है। उनका शिक्षामे कोई स्थान नही हो सकता। कोई धर्म यह नही सिखाता कि बच्चोको असत्य और हिंसाकी शिक्षा दो। सच्ची शिक्षा हर एकको सुलभ होनी चाहिए। वह चद लाख शहरियोके लिए ही नही, मगर करोडो देहातियोके लिए उपयोगी होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा कोरी पोथियोसे थोडे मिल सकती है! उसका

फिरकेवाराना मजहबसे भी कोई ताल्लुक नही हो सकता। वह तो धर्मके उन विश्वव्यापी सिद्धातोकी शिक्षा देती है, जिनमेंसे सब सप्रदायोके धर्म निकले है। यह शिक्षा तो जीवनकी किताबमेंसे मिलती है। उसके लिए कुछ खर्च नही करना पडता और उसे ताकतके जोरसे कोई छीन नही सकता। आप पूछ सकते है कि बुनियादी तालीमका काम करनेवाले भाई क्या ऐसे सत्य और अहिंसामय बन चुके है? मै निवेदन करूगा कि मैं ऐसा नही कह सकता। मै यह थोड़े ही बता सकता हू कि किसके दिलमे क्या है। हिंदुस्तानी तालीमी सघके अध्यक्ष डॉ० जाकिरहुसैन है। श्री-आर्यनायकम् और आशादेवी उसके मत्री है। उन्होंने यह कभी नही कहा कि वे सत्य और अहिंसामे विश्वास नही रखते। अगर उनका सत्य और अहिंसामे विश्वास न हो तो उनका तालीमी सघसे हट जाना ही मुनासिब होगा। नई तालीमके शिक्षक सत्य और अहिंसाको पूरी तरह माननेवाले हो, तभी वे सफलता पा सकेगे। तब वे कठोर-से-कठोर व्यक्तियोको चुबकके मानिंद खीच सकेगे। उनमे वे सब गुण होने चाहिए, जो स्थित-प्रज्ञके बताए गए है, और जो आप रोज प्रार्थनाके सस्कृत श्लोकोमे सुनते है। तालीमी सघको काग्रेसने जन्म दिया, मगर अभी वह काग्रेस-जैसा कहा बना है? काग्रेसमेंसे मैं निकल गया, सरदार भी निकल जाय, जवाहरलाल भी चले जाय, जितने वहा आज काम करते है, वे सब मर जाय, तो भी काग्रेस थोड़े ही मरनेवाली है? वह तो जिंदा ही रहनेवाली है। मगर तालीमी सघके बारेमें आज ऐसा नही कह सकते। उसे ऐसा बनना है। हर सस्थाको ऐसा बनना चाहिए कि व्यक्ति निकल जाय, तो भी उसका काम बद न हो, बल्कि बराबर बढता और फैलता जाय।

: १७६ :

सोमवार, १५ दिसबर १९४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और बहनो,

अखबारोमें पढकर मुझे दु ख हुआ कि शरणार्थियोने ६ म्यूनिस्पल स्कूलोंके मकानोपर कब्जा कर लिया है और दिल्ली म्यूनिस्पल कमेटीकी पूरी कोशिशोके बावजूद उन्हे खाली नही किया। कमेटी इन मकानोंको खाली करवानेके लिए पुलिसकी मदद लेने जा रही है ।

यह रिपोर्ट विश्वासके लायक लगती है । यह किस्सा शर्मनाक अधाधुधीका एक नमूना है । यूनियनकी राजधानीमें ऐसी चीजें हरएकके लिए शर्मका कारण है । मै आशा करता हू कि कब्जा करनेवाले अपनी बेवकूफीके लिए पछताएगे और अपने आप स्कूलोके मकान खाली कर देंगे । अगर ऐसा न हुआ तो आशा है, उनके दोस्त उनको समझा सकेंगे और सरकारको अपनी धमकीपर अमल नही करना पडेगा। शरणार्थियोंके सामने यह आम शिकायत है कि इतना दु ख सहन करनेके बाद भी वे समझदार, गभीर और मेहनती कार्यकर्ता नही बने । हम सब आशा करते है कि आम तौरपर सब शरणार्थी और खास तौरपर यह स्कूलोका कब्जा लेनेवाले भाई प्रायश्चित्त करके इस शिकायतको गलत साबित कर देंगे ।

शनिवारको मैने कलकत्तेकी दगा-खोरीका जिक्र किया था। वहा शरारत करनेवाले शरणार्थी नही थे । उसकी भूमिका भी अलग थी । सब नेताओका, चाहे वे किसी भी खयालो या पार्टीके क्यो न हो, यह फर्ज है कि वे हिंदुस्तानकी इज्जतकी दिलोजानसे रक्षा करें । अगर हिंदुस्तानमें अधाधुधी और रिश्वतखोरीका राज चले तो हिंदुस्तानकी इज्जत बच नही सकती । मैने रिश्वतखोरीका यहा जिक्र इसलिए किया है, क्योकि अराजकता और रिश्वतखोरी दोनो एक ही कुटुबके है । कई विश्वासपात्र जरियोसे मुझे पता लगा है कि रिश्वतखोरी बढ रही है । तो क्या हरएक अपना ही खयाल करेगा और हिंदुस्तानकी भलाई कोई नही सोचेगा ?

एक भाई लिखते है. "मैने अभी आपकी कलकी प्रार्थनाका भाषण

रेडियोपर सुना। उसमें आपने कहा है कि यू० पी० के कुछ मुसलमान भाइयोंने जो लाहौर जाकर आए हैं, पाकिस्तानकी हकूमतकी तरफसे आपको विश्वास दिलाया है कि गैर-मुस्लिम, खास करके हिंदू, वहा जाकर अपना कारोबार शुरू कर सकते हैं। पहली बात तो यह है कि हिंदुओंको ही बुलाना और सिखोंको नही, यह चालाकी है, और सिखो और हिंदुओंमें फूट डलवानेकी चाल है। इस तरहके आश्वासन धोखाबाजी है, मजाक है। शायद आप-जैसे ही ऐसे मुसलमानोंकी बातोंमे आ सकते हैं। मैं आपको ११ दिसबरके 'हिंदुस्तान टाइम्स'की एक कतरन भेजता हू। उससे आपको पाकिस्तान सरकारकी सचाई और साफदिलीका पता चल जायगा। यह पढकर भी क्या आप यह मानते हैं कि जो मुसलमान आपके पास आते हैं वे ईमानदार हैं? वे सिर्फ इतना ही बताना चाहते हैं कि पाकिस्तान सरकार अल्पमतवालोंके प्रति न्याय करती है और पाकिस्तानमें सब ठीक-ठाक चल रहा है, अगरचे वाकयात[1] इससे उल्टे हैं। अगर-वे मुसलमान दुबारा आपके पास आवें तो कृपा करके उन्हे यह कतरन दिखाइएगा। मैं विश्वास रखता हू कि आप भूले नही होगे कि २० नवबरको जो हिंदू और सिख अपनी कीमती चीजें बैंकसे निकलवाने लाहौर गए थे, उनका क्या हाल हुआ था। हिंदुस्तानी मिलिटरीपर, जिसकी रक्षामें ये लोग गए थे, मुसलमानोंने हमला किया। पाकिस्तानी अफसरोंके सामने यह वाकया बना। मगर उन्होंने दगाखोरोंको रोकनेकी कोई कोशिश नही की।" कतरनमें लिखा है .

"लाहौर 'सिविल और मिलिट्री गजट' अखबारमे हालहीमें एक रिपोर्ट छपी थी कि गैर-मुस्लिम व्यापारी और दुकानदार 'जो दगेके दिनोंमें भाग गए थे, धीरे-धीरे महीनोंका बद पडा अपना कारोबार फिरसे चलानेकी आशासे वापिस आ रहे हैं। मगर उनकी दुकानें वगैरा वापिस करनेसे पहले उनसे ऐसी नामुमकिन शर्तोंपर दस्तखत कराए जाते हैं कि कई निराश होकर वापिस चले गए हैं। फिर बसानेवाला कमिश्नर इन शर्तोंपर दुकाने खोल देता है :

---

[1] घटनाएं।

१—बिक्रीका पूरा हिसाब रखा जाय ।

२—बिना इजाजत मालिक कुछ भी माल या रुपया दूसरी जगह न ले जाय ।

३—अपनी दुकानका चालू धधा रखनेका वचन दे ।

४—बिक्रीसे जितनी कमाई हो रोज-की-रोज बैंकमे जमा की जाय, बिना इजाजत उसमेंसे कुछ भी निकाला न जाय ।

५—दुकानदार कायमी तौरपर लाहौरमे ही रहेगे ।

मुसलमानोपर ऐसी कोई शर्त नही है तो हिंदुओपर क्यो ? हिंदू कहते है कि इन शर्तोका वे पालन न कर सकेंगे । सो निराश होकर वापिस जाते है ।"

तो निराशाकी बात तो मै पहले ही कर चुका हू । यह खबर सही हो तो भी जरूरी नही कि उन मुसलमान भाइयोने मुझे जो कहा वह सर्वथा रद्द हो जाता है । उन्हे न सिर्फ अपना नाम रखना है, मगर यूनियनमे, जिनके वे नुमायदे है, उनका और पाकिस्तानका, जिन्होने उन्हे वह सब आश्वासन दिया उनका नाम भी उन्हे रखना है । मै यह भी कह दू कि वे भाई मुझे मिलते रहते है । आज भी आए थे । मगर मेरा मौन था और मै अपनी प्रार्थनाका भाषण लिख रहा था, इसलिए उनसे मिल न सका । उन्होने मुझे सदेशा भेजा है कि वे निकम्मे नही बैठे है । इस मिशन-का काम कर रहे है । पत्र लिखनेवाले भाईको मेरी सलाह है कि जरूरतसे ज्यादा शक न करें और बहुत ज्यादा नाजुक बदन न बनें । विश्वास रखनेसे वे कुछ खोनेवाले नही है । अविश्वास आदमीको खा जाता है । वे सभलकर चले । मेरी तरफसे तो इतना ही है कि मैंने जो किया है उसका मुझे अफसोस नही । मैंने तो सारी जिदगी खुली आखोसे विश्वास किया है । मै इन मुसलमान भाइयोका भी विश्वास करूगा जबतक कि यह साबित नही हो जाता कि वे झूठे है । विश्वासमेंसे विश्वास निकलता है । उससे दगाबाजी-का सामना करनेकी ताकत मिलती है । अगर दोनो तरफ लोगोको अपने घरोको वापिस जाना है तो उसका रास्ता यही है जो मैंने अख्तयार किया है और जिसपर मै चल रहा हू । पत्र लिखनेवाले भाईकी शका कि यह निमत्रण हिंदुओ और सिखोमे फूट डलवानेकी चाल है, ठीक नही ।

मैने मुसलमान भाइयोसे कहा भी था कि उनकी बातका ऐसा खतरनाक अर्थ भी निकल सकता है। उन्होने जोरोसे इन्कार किया कि ऐसा कुछ मतलब उसमें है ही नही। वापिस जानेवालोके लिए रास्ता साफ करनेमे मै कोई बुराई नही देखता। इस बातसे इन्कार नही हो सकता कि पाकिस्तानमे सिखोके सामने जहर ज्यादा है, मगर इसमें भी शक नही कि हिंदुओ और सिखोको साथ तैरना है या डूबना है। उनके मनमें कोई बुरे इरादे नही होने चाहिए। साजिशबाजोके[1] बीच ईमानदारीका भाई-चारा नही हो सकता।

पूर्वी पाकिस्तानसे एक भाई लिखते है. "हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो जानेके बाद भी आप अपने आपको एक हिंदुस्तानका बाशिंदा कैसे कहते है ? आज तो जो एक हिस्सेका है, वह दूसरेका हो नही सकता।" कानूनके पडित कुछ भी कहे, वे मनुष्योके मनपर राज नही कर सकते। इस मित्रको भी यह कहनेसे कौन रोक सकता था कि वह सारी दुनियाका बाशिंदा है। कानूनकी दृष्टिसे ऐसा नही है और हरएक मुल्कके कानूनके मुताबिक कई मुल्कोमे उसे कोई घुसने भी नही देगा। जो आदमी मशीन नही बन गया, जैसे कि हममेंसे कई लोग नही बने, उन्हे कानूनन हमारी क्या हस्ती है उसकी फिक्र क्या ? जबतक नैतिक दृष्टिसे हम सही रास्तेपर है हमें फिक्र करनेकी जरूरत नही। हम सबको जिस चीजसे बचना है वह तो यह है कि हम किसी मुल्कके प्रति या किसी मुल्कके लोगोके प्रति वैर-भाव न रखे। मिसालके तौरपर मुसलमानोके प्रति या पाकिस्तानके प्रति वैर-भाव रखकर कोई भी पाकिस्तानका और यूनियनका बाशिंदा होनेका दावा नही कर सकता। अगर ऐसा वैर-भाव आम तौरपर फैल जाय तो दोनोमे लडाई ही होनेवाली है। हरएक मुल्क ऐसे बाशिंदोको, जो मुल्ककी तरफ दुश्मनी रखता है और दुश्मन-मुल्ककी मदद करता है, दगाबाज और बेवफा करार देगा। वफादारीके हिस्से या टुकड़े नही किए जा सकते।

---

[1] षड्यंत्रकारियों।

: १८० :

१६ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

ऐसा कहा जाता है और कुछ अशमे ठीक भी है कि जो खाने और पहननेकी वस्तुओपर अकुश रखा है वह कुछ तो चला गया है और कुछ और चला जायगा। लेकिन जा रहा है इसमे तो कुछ शक नही है और उसका परिणाम भी मेरे सामने है, जो बृजकिशनजीने रख दिया है। मैने सोचा कि अच्छा है वह भी मै आपको बता दूगा। अभी गुडका भाव एक रुपये सेर था और अब अकुश हटनेके बाद वही गुड आधे रुपयेमें मिलता है। यह तो एक बडी बात हुई। इससे भी कम दाम होना चाहिए। मुझको तो पता नही कि वह क्यो कम नही होना चाहिए। मै जब जवान था तब तो गुडका इतना दाम क्या होनेवाला था! एक सेर गुड ले लिया तो बस उसका एक आना दे दिया और शायद उससे भी कम। इसलिए आशा तो ऐसी ही है कि वह कम होता जायगा। हा, मुफ्त तो वह मिलेगा नही, लेकिन हमें जो पुराने ढग थे, उनपर पहुचना चाहिए, अगर पहुच सकते है तो। शक्करका भाव भी जो ३२ रुपए मन था वह २० रुपए हो गया। बडा अच्छा लगता है कि इतना भाव उतर गया। मूग, उडद और अरहरकी दाल है वह एक रुपयेकी डेढ सेर हो गई है। कितना बडा फर्क हो गया? इसी तरहसे चनेका हाल है। मेरी नजरमें तो चना भी एक प्रकारकी दाल ही है। लेकिन उसका इस प्रदेशमे बहुत उपयोग होता है, इसलिए उसे अलग रखा है। वह २४ रुपए मन था उसके अब १८ रुपए हो गए है। और गेहू चोर-बाजारमें ३४ रुपए मन था वह अब २४ रुपए हो गया है। इस तरहसे यह सब है। मुझको तो पहले सब डरा रहे थे कि तुम कहते तो हो, लेकिन तुमको पता नही कि बाजार कैसे चलता है और किस तरहसे भाव चढते-गिरते है। तुमको अर्थ-शास्त्रका पता ही नही। बस महात्मा हो, इसलिए कह रहे हो। उसका नतीजा तुम्हे तो उठाना नही पडेगा, लेकिन गरीब लोग मर जायगे। मगर जो परिणाम मै देख रहा हू उससे गरीबोको मरना नही, बल्कि तरना है। इसलिए

मैं तो यह कहूगा कि मक्का और बाजरा वगैरापर जो अकुश है उनपरसे भी वह हट जाना चाहिए, क्योकि बाजरा खानेवाले बाजरा ही खाते थे, गेहू उनको हज्म भी नही होता। इसी तरहसे मक्का खानेवाले भी बहुत है। उनको पसद भी वही आएगा। इसलिए अकुश जारी रखनेकी कोई वजह मुझको तो लगती नही है। डा० राजेद्रप्रसादने भी तो यही कहा था कि सब अकुश आहिस्ता-आहिस्ता हटा देंगे। कुछ तो हट गए है और दूसरे भी जो है वे भी हट ही जायगे। उसका शुभ परिणाम भी हमारे सामने आ गया है। यही दियासलाईका हाल है। अभी तो उसपर बहुत दाम देना पडता है। चोरबाजारमे तो क्या, खुले बाजारमे, उसको चोरबाजार कहे भी कैसे, लेकिन होता है, और इसलिए लोगोंको बहुत दाम देने पड़ते है। उसपरसे भी अगर अकुश निकल गया तो बड़ा अच्छा परिणाम हो सकता है, मुझको तो इसमे कुछ शक नही है। दियासलाईपरसे कट्रोलको जाना ही है और उसका दाम भी गिरना ही है। दियासलाईका इतना दाम तो पहले कभी भी नही था। मेरे जमानेमें तो उसकी कुछ गिनती ही नही थी। आज तो एक दियासलाईकी पेटी कोई एक आनेमे देगा, लेकिन तब एक आनेमे १२ पेटी मिलती थी। ऐसा भी एक जमाना था और आज ऐसा जमाना हो गया है! आज तो सब चीजोके दाम बढ़ गए है। अगर लोगोका दरमाहा बढे तब तो वह अच्छा लगता है, लेकिन चीजके दाम बढते हुए देखकर मुझको कभी अच्छा नही लगनेवाला है। अगर दाम कुछ बढना है तो वह मेहनत करनेवालेके घरमें चला जाए, लेकिन उनके घरमे जाए तब भी इतना दाम नही बढ सकता है। इतना दाम तो तब बढता है जब तिजारत करनेवाले लोग पाजी बन जाए, उनकी नीयत बिगड जाए और वह सब पैसा उनकी जेबोमे जायगा। हम आजादी पाकर तो बैठ गए और हमारे ऊपर इतनी बडी आपत्ति भी आई, लेकिन हम शुद्ध काम करना नही सीखे। हमारे जो ताजिर लोग है वे अगर शुद्ध कौडी कमाए तो मुझको तो जरा भी शक नही है और जिनको शक है उनको भी यह नही है कि अकुश हटा दे तो चीजोंके दाम बढ़ जायगे। वे कहते है कि दाम बढ़ जायगे, क्योकि हम लोग पाजी और दगाबाज है। ताजिर शुद्ध कौडीका व्यापार नही करते और जो किसान वगैरा है, या जो पैदा करनेवाले है, वे भी अपना

पेट भरना जानते हैं और प्रजाकी कोई खबर ही नहीं लेते। तब मैं कैसे यह मानूं कि हमारे यहां लोकराज्य है? मुझको तो यह मानते हुए शर्म आती है। लोकराज्य या पंचायत राज्यमें यह कैसे हो सकता है? उसमें तो हकूमतका यह पूरा-पूरा धर्म हो जाता है कि वह लोगोंपर एतबार करे। वह साफ-साफ कह दे कि आप जैसा चाहते हैं वैसा हम करते हैं, लेकिन उसमें अगर कोई तकलीफ होती है तो हम जिम्मेदार नहीं होनेवाले हैं। यह ठीक है कि हमारे यहां सिविल सर्विस पटी है, लेकिन हम लोग जितने यहां पड़े हैं, सब-के-सब अपनेको सिपाही समझें और लोगोंकी सेवा करें। अगर हम जिंदा रहते हैं तो भी लोगोंके लिए ऐसा हम लोग सोच लें तो मुझको कोई शक नहीं है कि दाम नहीं बढ़ सकते और आज लोगोंमें जो एक किस्मका पाजीपन या दगाबाजी आ गई है वह भी मिट जायगी और हम सरल होकर सीधा-सादा काम करने लगेंगे। लेकिन आज तो सब इसी तरहसे होता है और मेरे पास तो जगह-जगहसे तार वगैरा आते हैं। मैंने सुना है कि बंबईमें तो इस बारेमें कुछ गोलमाल भी चल रहा है। क्या है, इसका मुझको कुछ पता नहीं। लेकिन यह सब होना ही नहीं चाहिए। मगर अबतक जो शुभ काम हो गया है इसके लिए तो लोगोंको हर प्रकारसे बधाई ही देनी चाहिए। इससे हकूमतको भी उत्साह मिल जाता है। यह तो एक बात हुई।

दूसरी बात यह है कि मेरे पास काफी शिकायतें आ रही हैं कि अभी यह कहांकी बात है कि सिविल सर्विसपर उतना खर्च कर रहे हो। एकाएक तो हटा भी कैसे सकते हैं और हटाए तो काम कैसे चल सकता है। उनमेंसे काफी तो चले भी गए और जो जा रहे हैं उनसे काफी ज्यादा काम ले रहे हैं। हमारे जो सरदार हैं उनके मातहत ये लोग हैं। वे तो उनको धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने अच्छा काम किया है। थोड़े हैं तो भी वे कामको पहुंच जाते हैं। इस धन्यवादके लायक हैं तो वह उनको मिले। उनको दरमाहा भी तो काफी मिल जाता है। लेकिन सच्ची सिविल सर्विस तो हम हैं। हकूमतको चाहिए कि सच्ची सिविल सर्विस हमको बना दे और जितना एतबार वह सिविल सर्विसपर रखें उतना हमपर रखे। यह हो सकता है कि अगर सिविल सर्विसवाले दगा दें तो वे सजाके योग्य होते हैं और उनको सजा हो जाती है। इसी तरहसे वह हमको भी सजा दे। किसीको

बुला ले और कहे कि तुम्हे इतना काम करना है। क्या पाजीपन और धोखाबाजी करनेवालेको सजा देनेका कोई कानून नही है? अगर नही भी है तो मै कहूगा कि वे बना ले। जिस तरहसे वे सिविल सर्विसको जिम्मेदार समझते है उसी तरह सारी प्रजाको जिम्मेदार समझे। सारी प्रजाका ही यह राज्य चलता है।

मुझको यह क्यो कहना पडता है? इसलिए कि अभी जो एक नई बात और हो गई है न, कि काग्रेसने यह कह दिया कि मत्रियोके नीचे पार्लामेंटरी सेक्रेटरी भी होने चाहिए और वे सिविल सर्विसके लोग नही, बल्कि बाहर काग्रेससे या जो लोग काग्रेससे अच्छा सबध रखते है, उनमेसे पार्लामेंटरी सेक्रेटरी बनाए जाय। मुफ्त तो कोई बनता नही है, सबको दरमाहा देनेको चाहिए। आज अगर करोडो रुपयेकी हुकूमत हमारे हाथमे नही आती तो हम कहासे दरमाहा दे सकते थे और कहासे देते? आज वह अगर हमारे हाथमे आ गई है तो हम डेढ-दो हजार रुपया दे, मकान दे, यह दे, वह दे और पीछे पार्लमेंटरी सेक्रेटरी बना दे, मुझको तो यह सब चुभता है। चाहे वह पार्लमेंटरी सेक्रेटरी प्रधान मत्रीका हो, गृह-मत्रीका हो या किसीका भी हो। और इसके लिए पार्लमेंट उनको मजबूर करे, पार्लमेंट तो क्या काग्रेस-पार्टी कहो। काग्रेस-पार्टीका तो शब्द भी मुझको अच्छा नही लगता है। काग्रेस तो सब लोगोकी है। हिंदू, मुसलमान और पारसी वगैरा आपस-आपसमे दगा न करे, ऐसा कुछ करना है तो उसके लिए बडा दरमाहा दे तभी क्या हम लोगोको काम करना है? ऐसा अगर हम करते रहे तो हिंदुस्तान तो एक बिलकुल निकम्मा देश बन जायगा। हमारी ताकत क्या कल नही थी और आज हो गई है? इससे ज्यादा अज्ञान मै कोई और नही समझता। हा, पहले कुछ पैदा तो हम कर ले। जितना १४ अगस्तको पैदा होता था, उससे कितना आगे हमने बढाया, यह हिसाब तो कर ले। पहले हम जो कुछ पैदा करते थे उससे ज्यादा क्या बनाया? क्या हमारे अनाजकी पैदावार बढी, क्या कपड़ा बढा और क्या हमारा उद्योग कुछ बढा? जब लोग सच्चा उद्योग करनेमे लग जाए, उनकी धन-दौलत बढे और वे कहे कि आप क्या पैसा-पैसा करते हो, ले जाओ हमारे पाससे, तब मै समझूगा कि हमारा काम बढ़ा है, हिंदुस्तानका नाम आगे बढा है और हमारा दाम भी बढ गया

है। लेकिन आज तो हमारी पैदावार ७० रुपये फी आदमी प्रति वर्ष है। यह तो कुछ भी चीज नहीं है। जब उसकी आय दुगुनी हो जाय या उससे भी ज्यादा, और देहाती लोग भी यह महसूस करने लगें कि उनकी आमदनी बढ़ती जा रही है, तब आप उनसे ज्यादा पैसे भी मांग सकते हैं। अगर पैदावार तो बढ़े नहीं और हम खर्च बढाते ही चले जायं तो हमारा हाल क्या होगा? मान लीजिए, एक दुकान है, क्योंकि हिंदुस्तान भी तो एक बड़ी दुकान है, उसका मालिक हमेशा आकर देखता है और अपने मंत्री या कारकुनसे[1] पूछता है कि आज बिक्री कितनी हुई, साहब? अगर वह कहता है कि आज एक हजारकी बिक्री हुई और कल पांच-सौकी हुई थी तब तो वह राजी हो जाता है। जब वह पूछता है कि आज खर्च कितना किया और वह बताए कि एक हजारकी आमदनी और डेढ हजारका खर्च, तब तो सेठका मिजाज खराब हो जायगा। उसकी आंखें लाल हो जायगी और अपने कारकुनको गालियां भी देगा। खैर, गाली देना तो ठीक नहीं, लाल आंखें करना भी ठीक नहीं, लेकिन वास्तवमें चीज तो उसकी सच ही है, जब वह कहता है कि हजार रुपयेकी आमद और डेढ हजारका खर्च तो ५०० रुपए मैं कहांसे लाऊं और कौन मुझको देगा? आज हमारे हाथमें रुपया पड़ा है, इसलिए हम नाचते हैं। लेकिन वह नहीं रहनेवाला है। इसलिए मुझको वह चुभता है कि हम क्यों इतना पैसा फेंक रहे हैं। बस आज मैं इससे आगे और नहीं जाना चाहता।

: १८१ :

१७ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई जो होशियारपुरमें रहते हैं, शायद वहींके हैं, नाम वगैरा दिया है, वह सब तो मैं नहीं देना चाहता हूं। काफी प्रश्न भी

---

[1] कर्मचारी।

उन्होंने पूछे है, उनको भी मै छोडना चाहता हू। लेकिन उसमे जो तात्पर्य है वह तो यह है कि पहले पजाब तो एक ही था, उसके कोई टुकडे थोडे ही हुए थे ! इसलिए एक आदमी व्यापार किसी जगह करता था और उसकी जमीन और मकान किसी दूसरी जगह होते थे। यह भाई पश्चिमी पजावमे तिजारत करता था और मकान उसका पूर्वी पजावमे था। वहासे उसको भागना पड़ा। जैसे हजारो-लाखो लोग भागे, इसी तरह उसको भी भागना पडा। उसने सोचा कि पूर्वी पजावमे चला जाता हू, वहा मेरा मकान है जिसमे जाकर मै बैठ जाऊगा। लेकिन वहा सब जाते है तो क्या देखते है कि उसमें तो कोई अमलदार[1] रहता है। तब उनको अपने ही घरमे रहनेके लिए सिर्फ दो कमरे मिलते है और बाकीके बडे हिस्सेमे वह अमलदार रहते है। मकान कुछ वडा है, ऐसा मुझको लगता है; क्योंकि आजही उनका खत मेरे हाथमें आया है। वे पूछते है कि मुझको मकान मिलना चाहिए कि नही। अगर नही मिलता है तो हकूमतको मुझे मदद देनी चाहिए कि नही, या मुझको कोर्ट-दरवारमे ही जाना चाहिए ? मेरा खयाल है कि वह मकान उसको मिलना ही चाहिए। कोर्ट-दरबार-मे जानेकी उनको क्यो तकलीफ दी जाय ? अगर वह हकूमतका ही कोई अमलदार है तब तो उसपर और भी हक उनका हो जाता है। यह तो मैंने इसका उत्तर दे दिया।

मैंने पहले भी कहा था कि जो दु खी लोग है वे जहा चाहें कब्जा कर लेते है और वहा चले जाते है। किसी जगहपर अगर ताला-कुजी लगी हो तो उसको भी तोड डालते है और वहा जमकर बैठ जाते है। जैसे अमलदार रहता है वह किराएसे रहता है, वहातक तो ठीक है, लेकिन जब उस मकानका मालिक आ जाता है तब वह कैसे उसमें रह सकता है ? अगर रहना भी है तो मालिकसे मशविरा[2] करके केवल एक हिस्सा अपने पास रखे। लेकिन यह तो हो नही सकता कि बडा हिस्सा तो अपने पास रखे और मालिक-मकान अभ्यागत बन जाए। यह तो ठीक नही है। लेकिन जो दु खी लोग है उनका तो घरमें हिस्सा नही है। उनका तो इतना ही है

[1]अफसर; [2]सलाह।

न कि उनको मजबूरन अपने घरोमेंसे निकलना पडा। इसलिए क्या वे कही भी जमकर कब्जा कर ले ? अगर दुर्भाग्यसे वह मुसलमानका घर हुआ तब तो बस खत्म हुआ। उसपर तो वे अपना एक तरहका हक-सा मानते है, लेकिन इससे हम अपना या हिंदुस्तानका कोई भला नही कर सकते। मेरा तो यह दृढ विश्वास है कि कभी भी वे इस तरहसे अपना भला नही कर सकते। इन्सान क्या चोरी या लूट करनेसे या किसीके मकान जलानेसे कभी अपना भला कर सका है, तब इनका कैसे हो सकता है, इस तरहसे अगर मामला चले और पाकिस्तानमे भी ऐसा बन जाए कि वहा सिवाय मुसलमानोके कोई दूसरा रहता ही नही है। मेरे पास तो रोज ऐसा कुछ-न-कुछ आ जाता है कि वे अगर मीठी जबानसे कुछ कहे तो आपको धोखेमे नही पडना चाहिए। बाकी वहा कोई आरामसे रह नही सकता, अगर वह मुसलमान नही है। लेकिन आखिरमे वहा अगर सब मुसलमान ही रह गए तो फिर वे आपस-आपसमे लडेंगे। यह अगर वहा चलता है तो भी अच्छा नही है और यहा चलता है तो भी अच्छा नही है। यहा अगर चलता है तब तो मेरी निगाहमे वह और भी अच्छा नही है, क्योकि हमने कभी कहा ही नही कि हिंदुस्तान हिंदुओका ही है या उसमे एक ही कौम रह सकती है और दूसरी नही। जो लोग यहा पैदा हुए और जो अपनेको हिंदुस्तानके रहनेवाले मानते है, उन सबको इस देशमे रहनेका हक है। ऐसा अगर था और आज भी है, तो फिर हमारे पास तो कोई कारण नही रहता। लेकिन पाकिस्तानके लिए तो बहुत वर्षोसे वे ऐसा कहते आए है कि मुसलमानोके लिए तो कोई जगह होनी चाहिए। उसका मतलब यही हुआ कि उसमे दूसरे चाहे रहे या न रहे, लेकिन बादमे जब यह हो गया और १५ अगस्तका दिन आया, जो पहले ख्वाबमे भी नही था, लेकिन वह हुआ और कहा कि अभी तो हमे सबको रखना है। यह आवाज निकली तो मुझको बहुत प्रिय लगी। लेकिन जो बात चुभने लायक है वह यह कि जो कुछ कहा जाता है उसपर अमल नही होता। यहा भी हिंदू और सिख अगर वैसा ही करते है तो उसमें मै तो दोनोका ही सहार और नाश देखता हू। उसमे मै कोई और दूसरी चीज नही पाता हू, ऐसा मैने कह दिया है।

अभी एक भाई है, वह कहते है कि मै तो लाहौरमे था। अब तो

वे लाहौरमे नही है, लेकिन यह बात लाहौरकी है। वह कहते है कि मुझको वहासे निकलना पडा, निकलना चाहता था, ऐसी बात नही है। लेकिन निकला और पश्चिमी पजाब छोडकर यहा आ गया। लेकिन जब तुमने कहा कि इस तरहसे वापिस वही जाना है तो वहा फिर वापिस चला गया। लेकिन देखता हू कि मेरी जमीन और मेरे मकानपर तो मेरा कुछ होता ही नही है। मुझको लबी-चौडी बाते सुनाई गई और जो कुछ मेरा था वह मुझको नही मिल सका। ऐसी हालतमें आप कैसे कह सकते है कि वापिस वही जाओ ?

मैंने कई बार इसका जवाब दिया है और अब भी जब कोई लिखते है तो कुछ कहना ही चाहिए। मैंने तो साफ-साफ यह कहा है कि जब वह मौका आएगा तब जाया जायगा। वहा तो मैंने तैयारीकी बात कही थी कि जिसके दिलमें वापिस जानेकी इच्छा हो वह तैयार रहे। पहले तो जिन मुसलमान भाइयोंकी तरफसे यह बात आई है उनको वहा जाना है । अभी तो वह सिर्फ बात ही है, लेकिन वह बात-की-बात रहनेवाली चीज नही है। हकूमत-के नामसे वे कहते थे। आखिरमें उनको या तो यह कह देना होगा कि हम हार गए और यह हमने गलत कह दिया था कि पाकिस्तान सरकारने कहा है कि हिंदू वहा वापिस आ सकते है। यह भाई लिखते है कि कहना तो एक बात है; लेकिन काम असलमें उल्टा ही होता है, इसलिए वह पूछते है कि उनको वापिस जाना है ? और यह पूछनेका उनको पूरा हक है। लेकिन जब वे इतना लबा-लबा लिखते है तो जो कुछ कह चुका हू वह भी दुहरा देता हूं, क्योकि आखिर तो यह एक भलाईकी बात है। साफ-साफ जो बात है वह यह कि इस तरहसे किसीको वापिस जानेकी बात ही नही है। इस तरह तो दूसरे भी बहुतसे लिखते है कि हम भी जानेको तैयार है। मै सबको यही जवाब दे देता हू कि जब जाना होगा तो मै कह दूगा कि फला तारीख-को आप जानेको तैयार रहे। अभीसे मै किसीको कोई बात नही कह सकूगा। ऐसी शीघ्रतासे तो यह खयाल भी किसीके दिलमे नही आ सकता था, लेकिन जब मुसलमान भाई ही ऐसा कहते है तो मुझको वह अच्छा लगता है। अगर वे इसमें कामयाब हो जाते है तो मै कहूगा कि हमारी फ़िजा[1] जो आज

[1] वातावरण।

बिगड गई है उसको दुरुस्त होनेमे उससे एक बडी मदद मिलनेवाली है। उसके लिए जो कोशिश हो सकती है वह की जायगी। लेकिन ये जो भाई लिखते है या दूसरे भी, उनसे मै कहूगा कि आपको अभी तो खामोश रहना है, अभी तो कुछ होनेवाला नही है। उसकी तजवीज हो रही है। जब हो जायगी तो उसका मै ऐलान[1] कर दूगा। किसीके खुफिया तौरसे जानेकी तो बात है नही। मेरी तो ऐसी उम्मीद रहती है कि पाकिस्तान उनके लिए गाडी यहा भेज दे और फिर उसमें पाच हजार आदमी चले जाए। वे वहा शौकसे और हकसे जायगे। इसलिए वे जाएगे कि उनको वे वहा बुलाते है। अगर यह नही होता है तो वह चीज भी नही हो सकती है।

अभी एक तीसरी चीज और है और वह है पूर्वी अफ्रीकाकी। आपको याद रखना चाहिए कि पूर्वी अफ्रीकामें नेरोबी करके जो प्रदेश है वही सबसे अच्छा है। वह ऐसे ही है जैसे यहा शिमला है। यहा जैसे चार-पाच महीने तो मौसम अच्छा होता है और फिर गर्मी पडने लगती है और मैदानमें तो और भी अधिक गर्मी होती है। लोगोको ठडक चाहिए, इसलिए वे शिमला या दार्जिलिंग चले जाते है। हिंदुस्तान तो एक बडा मुल्क है, मगर पूर्वी अफ्रीका तो छोटा-सा है। इसके अलावा नेरोबीको बनानेवाले भी सिख थे। सिख लोग कोई ऐसे-वैसे थोडे ही है। बडी काबिल कौम है और बहुत तगडे और काम करनेवाले है। बड़ी जहमत[2] उठाकर उन्होने वहाकी रेल बनाई थी। मगर खूबीकी बात यह है कि रेल तो बनाई उन्होने और नेरोबीमे वे खुद जा भी नही सकते। जा तो सकते है, मगर मजदूरी करनेके लिए, रहनेके और तिजारत करनेके लिए नही। यह तो नेरोबीमे है, लेकिन आदमी जब बिगडता है तो स्वभावसे ही कुछ ऐसा है कि जब वह एक चीजमे बिगडता है तो पीछे सब चीजोमें ही बिगड़ जाता है। इसलिए जो भी हिंदुस्तानी वहा रहते है उनके विरुद्ध वे भारतीय प्रवेशविरोधी बिल बनाने जा रहे है, जैसा कि दक्षिण अफ्रीकामें भी बन गया है। हिंदुस्तानियोंके जो हक है उनको वे छीन लेनेकी कोशिशमें है। अभी यह बिल बना तो नही है, लेकिन उनकी लेजिस्लेटिव असेंबली

---

[1] जाहिर, [2] संकट।

या कौसिलमे तो आ गया है। इसलिए जो हिंदुस्तानी भाई वहा रहते है बेचारे उम्मीद तो हमसे रखते ही है। पडित नेहरूको भी उन्होने कुछ लिखकर भेजा है, क्योकि वे हमारे विदेश-मत्री है। बाहर जितनी चीजे होती है वे सब उनके हाथमें रहती है। इसके अलावा वे हमारे प्रधान मत्री भी है। इसलिए उनको उन्होने एक तार दिया और तारकी एक नकल मुझको भी दी है। वे कहते है कि इस बारेमें कुछ तो कहो। मै चूकि अफ्रीकामे रहा हू, इसलिए मुझपर भी उनका हक है। इसलिए मै तो आज कुछ कहे देता हू और पीछे मेरी आवाज वहां पहुच जायगी। हिंदुस्तान आजाद तो हो गया है, लेकिन आजाद हिंदुस्तानके साथ ऐसा ही होगा क्या? मुबासा और पूर्वी अफ्रीका जो है वह ब्रिटिश इलाका है। जो हिंदुस्तानी वहाँ गए हुए है उनके साथ ब्रिटिश इलाकेमे क्या ये हाल होनेवाले है? उनके साथ यह सब गोलमाल क्यो चलता है? आपको समझना चाहिए कि वहां हमारे काफी ताजिर लोग है, उनमे काफी मुसलमान है और खोजा तथा दूसरे मुसलमान भी वहा है। हिंदू भी वहां काफी पड़े है। हर जगहसे वे वहा गए है और पैसे भी काफी वहा कमाए है, कोई लूट या चोरी करके नही, बल्कि वहा जो हब्शी लोग रहते है उनके साथ तिजारत करके। वे अग्रेजोके जानेसे काफी पहलेके वहा है। यूरोपके अन्य लोग भी तबतक वहा नही गए थे और अगर गए भी होगे तो बहुत कम। हिंदुस्तानियोने वहा बडी-बडी हवेलिया बनाईं, क्योकि वे बनाने लायक थे। उस जमानेमें तो जहाज भी हमारे थे, लेकिन जब हम गिर गए तो हमारे जहाज भी सब गए।

पीछे तो वहा अग्रेज भी गए और यूरोपके दूसरे लोग भी। वह तो एक लबा इतिहास है, जिसपर मै नही जाता। हिंदुस्तानी वहाके हब्शी तथा दूसरे लोगोसे मिल-जुलकर रहे और उनके साथ तिजारत की। उन्होने शुद्ध कौडी ही कमाई हो, ऐसा दावा मै नही कर सकता। लेकिन इतना तो सही है कि उन्होने जबर्दस्ती किसीसे कुछ नही लिया। मुसलमान भी वहा गए और ऐसा कुछ नही था कि जो मुसलमान थे उनको वहा कुछ ज्यादा मिला हो और हिंदुओंको कम। उनमे ऐसा आज भी कोई भेदभाव नही है। इसलिए वे सब मिलकर लिखते है कि इस बिलको आप किसी-

न-किसी तरह रोके, नही तो हमारा बडा नुक्सान होता है। मै तो कहूंगा कि वह बिल रुक जाना चाहिए।

हिंदुस्तान आज एक आजाद मुल्क है। मुझको पता है कि जवाहर-लालजी तो इस बारेमें जो कुछ हो सकता है वह करनेवाले है।

: १८२ :

१८ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईका एक खत आया है जिसमे यह लिखा है कि जब आपको उर्दू जबानपर एतराज नही है तो अग्रेजीपर क्यो है? जब हिंदुस्तान सारी दुनियाका मित्र है, जैसा कि आप कह चुके है तो फिर जैसे मुसलमान है, वैसे अग्रेज है।

इस भाईको जो दु:ख हुआ है वह केवल अज्ञानताका कारण है। इससे ज्यादा अज्ञानका कारण कोई और हो सकता है मै तो नही समझता। उर्दूपर मुझको एतराज नही होता, मै तो उसका समर्थन कर रहा हू। प्रातीय भाषाकी हैसियतसे तो उर्दू है, पजाबी है, मराठी, गुजराती, बगला और उडिया वगैरा सब है। जितने भाषावार प्रात है उनकी उतनी ही भा। ।५ है। यो तो हिंदुस्तानमें बहुत अधिक भाषाए पडी है, लेकिन सब विद्वानोंने मिलकर जो फैसला किया है उसके मुताबिक तो १४ या १५ भाषाए है जो काफी भव्य है, जिनके अपने-अपने साहित्य है और जिनसे हम कुछ-न-कुछ सीखते ही है। लेकिन १५ या १४ भाषाए सब प्रातोमें तो नही चल सकती। सब प्रातोमे एक दूसरेके साथ व्यवहार करनेके लिए कौन-सी एक भाषा होनी चाहिए, यह सवाल है। जबसे मै दक्षिण अफ्रीकासे वापस आया हू तभीसे मै बराबर यह कहता आया हू कि हमारी राष्ट्रभाषा वही हो सकती है कि जिसको हिंदू और मुसलमान ज्यादा-से-ज्यादा तादादमें बोलते,और लिखते है। तब तो वह देवनागरी लिपि या उर्दू लिपिमें लिखी हुई हिंदुस्तानी ही हो सकती है। मैने तो कहा है कि मै उर्दूका समर्थन करता

हू, लेकिन सारी दुनियाका मित्र होते हुए भी मै अग्रेजीका समर्थन क्यों नही करता, यह समझने लायक बात है। अग्रेजी भाषाका यहां स्थान नही है। अग्रेजोने यहां राज चलाया और पीछे जो राज चलाता है वह अपनी भाषा भी चलाता है। वह परदेशी भाषा है, स्वदेशी भाषा नही है। इसलिए मुझको यह कहते हुए दु ख नही, बल्कि फख्र[1] होता है कि उर्दू हिंदुस्तानकी भाषा है और वह हिंदुस्तानमे ही बनी है। तुलसीदासके तो हम सब भक्त है और होना ही चाहिए, लेकिन उनकी रामायणमे आपको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितने ही अरबी और फारसीके शब्द ले लिए है। जो शब्द बाजारमे लोग बोलते थे वही उन्होने ले लिए। आखिर उन्होने लिखा है वह आपके लिए और मेरे लिए लिखा है। तुलसीदासजीने जो थोडेसे सस्कृत बोलनेवाले है, उनके लिए थोडे ही लिखा है! इसलिए जो तुलसीकी भाषा है वही हमारी भाषा है। अगर आपको फैसला करना है कि कौन-सी हमारी राष्ट्र-भाषा है तो मै यह दावेसे कह सकता हू, पीछे हिंदू मुझको चाहे मारें, काटे, या कुछ भी करे, कि हमारी राष्ट्र-भाषा वही हो सकती है जो देवनागरी और उर्दू दोनो लिपियोमे लिखी जाती है।

लाला लाजपतरायजी तो पजाबके शेर माने जाते थे। वह तो चले गए। मै तो उनका मित्र था और उनके साथ मजाक भी करता था कि हिंदीमे बोलना कब सीखोगे। वह कहते थे, यह नही होनेका। याद रखो वह समाजी थे और यह भी याद रखो कि वे हवन इत्यादि भी करवाते थे। चूकि मै उन्हीके घरमे ठहरता था, इसलिए मै यह सब देखता था। हवन-मे तो सस्कृत ही काममे आती है और अजीब बात थी कि यह सब होते हुए भी वे थोडा-थोडा पढ़ तो लेते थे देवनागरीमे, लेकिन उनकी मादरी जबान उर्दू ही थी। वे कहते थे कि उर्दूमे तो मुझसे कहो तो घटो बोल लेता हू और बोलते थे, और उर्दूके तो मै आपको क्या बताऊ, वे बडे भारी विद्वान थे और बहुत शीघ्रतासे लिख सकते थे। अग्रेजीमे भी वे घटो बोल सकते थे, लेकिन सस्कृतमय हिंदी तो उनकी समझमें भी नही आती थी। जब मै चुन-चुनकर अरबी-फारसीके शब्द लाता तब वे मेरी बात समझ सकते

---

[1] अभिमान।

थे। जब उनकी बात मैंने कर ली तो सबकी कर ली। तब वे भाई क्यो कहते है कि उर्दूपर एतराज क्यो नही है ? मै तो कहूगा कि किसीको भी नही होना चाहिए। लेकिन अग्रेजीके लिए एतराज है। आखिर हिंदी साहित्य सम्मेलन-का भी मै दो दफा सभापति रह चुका हू और सभापतिके पदसे मैने यही चीज कही और किसीने शिकायत नही की। की होगी तो शायद १-२ ने की होगी। सब लोगोने तालिया ही बजाईं और कहा कि मै बिल्कुल ठीक बात कहता हू। आज भी मै वही आदमी हू। तब क्यो आप मुझको ऐसा सुनाएगे कि मै हिंदीका पक्ष कम लेता हू और इसलिए कम हिंदुस्तानी हू। मुझको तो ऐसा लगता है कि जो आदमी उर्दूपर एतराज करता है, वही कम हिंदुस्तानी है।

हम आज अनेक झगडोमे पडे है और इस तरहसे आपस-आपसमें विष पैदा हो गया है। अजमेरमे भी तो यही हुआ है। अगर आप हिंदू-धर्म-की रक्षा करना चाहते है तो यहा जितने मुसलमान पडे है उनकी दुश्मनी करके नही कर सकते। मै तो आजकलका ही मेहमान हू। कुछ दिनोंमे यहासे चला जाऊगा। पीछे आप याद किया करोगे कि बूढा जो कहता था वह सही बात है। मै कोई अकेले हिंदू-धर्मकी ही बात नही करता। इस्लाम-धर्म भी मर जायगा अगर उन्होने कहा कि हम तो सिर्फ मुसलमानोको ही पहचानते है, बाकी तो हमारे दुश्मन है। इस तरह तो वे इस्लामको दफना देंगे, इस बारेमे मुझे कोई शक नही है। ईसाई-धर्मके लिए भी मै यही कहूगा। अगर वे कहे कि जो ईसाको नही मानते वे सब दुश्मन है और अहले[1]किताब नही है, तो मै कहूगा कि वे गलती करते है। दुनियाके जितने धर्म है उनके माननेवाले सब अहले किताब है। अगर वे कहे कि जो बाइबिलको माने वह अहलेकिताब है या जो कुरान शरीफको मानते है वही अहले किताब है, तो मै कहूगा कि वे गलत रास्तेपर है। दुनियाके जितने धर्म है वे सब अच्छे है, क्योकि वे भलाई सिखाते है। जो दुश्मनी सिखाते है उनको मै धर्म नही मानता।

अग्रेजोंके जमानेमे भी वही बात मै कहता था कि यहा अग्रेजी हो

---

[1]आस्मानी किताबो वाले।

नही सकती। मेरे दिलमे अग्रेजीकी कद्र है और मै अग्रेजी पढ-लिख भी लेता हू। सब मानते भी है कि मै न अग्रेजोंका दुश्मन हू, न उनकी भाषाका। लेकिन सब चीजें अपनी-अपनी जगहपर है। अग्रेजी दुनियाकी भाषा है। अगर दुनियाके साथ व्यवहार करना है तो अग्रेजीसे ही हो सकता है। अग्रेजी बहुत व्यापक बन गई है, लेकिन हिंदुस्तानी व्यापक नही है। हम अग्रेजी राज्यसे तो बरी हो गए, लेकिन अग्रेजी भाषा और अग्रेजी सभ्यताका जो प्रभाव हमपर पडा है, उस असरसे हम अभी नही निकले है, यह कितने दुखकी बात है!

याद रखो, मैंने कहा है कि हिंदुस्तानी वह चीज है जो उर्दू और हिंदीके सगमसे बनी है, जैसा गगा और जमनाका संगम प्रयागमे होता है। उस सगममे तो सरस्वती भी बताई जाती है, लेकिन उसको तो न देखते है, न जानते है। दोनोका व्याकरण तो एक होना ही चाहिए और वह हिंदुस्तानी है। उसमे सस्कृत, फारसी, अग्रेजी वगैरा सब भाषाओके शब्द भरे पडे है। अग्रेजीका शब्द जैसे कोर्ट है, तो उसको कोर्ट ही कहेगे। अगर कचहरी कहो तो वह भी बाहरका ही शब्द है, हमारा तो नही है। इसी तरह बाइसिकल है और रेल है। रेलको और क्या कहेगे? अग्रेजी शब्द हमारी भाषामे काफी दाखिल हो गए है और उनसे हमे घृणा नही है। लेकिन अगर ये भाई मुझको अग्रेजीमे खत लिखे तो मै फेक दूगा, क्योकि मै जानता हू कि वे हिंदुस्तानी लिख सकते है। इसी तरहसे अगर मेरा लडका अग्रेजीमें लिखे, क्योकि अग्रेजी तो वह जानता है, तो मै फेंक दूगा और नही पढूगा। इसी तरहसे अगर मै अग्रेजीमें कुछ लिखकर भेजू तो उसे फेकनेका अधिकार है। यह तो बिल्कुल ही सरल चीज है, लेकिन हम तो आज अपना धर्म-कर्म सब भूल गए और हमारे अदर एक प्रकारकी विकृति पैदा हो गई है। ईश्वर उस बलासे हमे बचा ले।

करनेवाला कौन है और कौन नही, इसको कौन जानता है? जो लोग गुनाह करते भी है उनको क्या आप हिंदुस्तानसे जला-वतन[1] करेंगे? यहासे निकाल देंगे या मार डालेगे? तुम यहासे चले जाओ, यह कहनेसे तो काम हो नही सकता। उनको तो सुधारना चाहिए और सच्ची तालीम देनी चाहिए। जो शराफतका रास्ता है वह उनको बताना चाहिए। एक तो यह बात हुई।

दूसरी बात चीनीकी है। चीनी हर जगहपर तो होती नही और शक्कर भी हर जगह नही होती। जहा होती है, उस जगहसे उसको लाना है। माना कि यहा नही है, तो यू० पी०से उसको लाना है। या कोयम्बटूरसे आ सकती है। लेकिन आए कैसे? वह तो रेलसे ही आ सकती है। लेकिन गाडिया तो आज है ही नही। डा० जान मथाईके हाथमे वह महकमा[2] है। वह कहते है कि मैं कहासे दू! जितने वैगन[3] है रेलवेके वे सब-के-सब तो निकाल दिए है। जितनी जल्दी वे माल ला सकते है, ला रहे है। इसके अलावा कोयला कम, लोहा कम और चलानेवाले कम, ये सब झंझट है। रेलवे स्टाफ जितना चाहिए उतना नही है। पीछे दूसरे-तीसरे काममे भी उनको लेना पडता है। वह तकलीफ तो जब रफा होगी तब हो जायगी। लेकिन बीच-बीचमे हम क्या करें? वह जो चीनी और शक्कर बनानेवाले है वे बदमाश है और वे दाम बढा देते हैं। आखिर हजारो और सैकड़ो मीलसे माल कोई सिरपर तो ला नही सकता। आज तो रेल और हवाई जहाज देखकर लोगोको ऐसा हो गया है कि उनके हाथ-पैर चलते ही नही है। तब क्या करना चाहिए? एक तो मथाई साहबको लिख देना चाहिए। यह सही है कि हमको रेलवे वैगन नही मिलते या ऐसा कहो कि रेल ट्रासपोर्ट[4] नही मिलता। मगर हिंदुस्तानमें ऐसा भी तो बन गया है कि एक तरफ रेलवे चलती है तो साथ-साथ दूसरी ओर मोटर भी चलती है। जितनी तेज रफ्तारसे रेल जाती है उतनीसे ही मोटर जाती है। रेलके लिए तो लोहेकी पटरी भी होनी चाहिए, लेकिन मोटरके लिए तो कुछ भी नही। साफ रास्ता हो तो अच्छा है, लेकिन रास्ता जैसा-तैसा हो तो भी जीप तो

---

[1] देश निकाला; [2] विभाग; [3] डिब्बे; [4] यातायात।

चली जाती है। काफी तादादमे ये मोटरें हिंदुस्तानमें चलती है। लेकिन उनके लिए पेट्रोल चाहिए और उसपर अभीतक अकुश है। मैंने बताया कि अभी सब अकुश तो छूटे नही है। अगर पेट्रोलपरसे अकुश हटा ले तो सब लारिया चलने लगे और माल लाए—और ले जाने लगें। उनमें तो पीछे नमक भी आ सकता है। यह कैसी भयानक बात है कि आज हमारे मुल्कमें नमक बन सकता है, उसपरसे कर भी चला गया है, तो भी वह महगा है, क्योंकि वह पूरा आता ही नही है। मेरी निगाहमें तो कुछ लोगोंको नमक बनाने और लानेका जो ठेका दिया गया है वह एक बडी गलती हुई है। सबको नमक लानेकी छूट होनी चाहिए। अगर पेट्रोलपरसे अकुश निकल जाए तो ये मोटर-लारिया नमक भी ला सकती है और दूसरी चीजें भी। एक चीजपरसे अकुश हटा लिया और दूसरीपर रखा तो वह ठीक नही बैठता। जब एक नीति हमने ग्रहण कर ली कि अकुश निकालना है तो पीछे सबको ही निकाल देना है और देखना है कि लोग क्या करते है। ऐसा आप नही कह सकते कि बाजारमें पेट्रोल नही है। पेट्रोलका तो चोर-बाजार चलता है और जबतक उसपर अकुश चलेगा तबतक यह चोर-बाजार चलता रहेगा। चोर-बाजार तो अधेरेमे चलना चाहिए, लेकिन वह तो साफ-साफ जाहिरमें चलता है। तब उसे ब्लैक मार्केट कहे या सफेद मार्केट कहें या उसको और कोई नाम दें ? पीछे क्या होता है, सुना है उसके पीछे रिश्वत भी बहुत बढ गई है। जो पेट्रोलका अफसर है, थोडा पैसा उसके हाथमें रखना ही चाहिए। थोडा पैसा कोई रुपया, दो रुपया नही, बल्कि सैकडोकी बात चलती है। जब एक चीज बुरी हो जाती है तो और भी बुराइया उसके साथ चलती रहती है। जिन चीजोपरसे अकुश निकल गया उससे लोग तो मानते हैं कि उनको राहत मिली है। फिर पेट्रोल तो कोई खानेकी चीज भी नही है और न हरएक आदमीके दरकारकी चीज है। जो लोग मोटर ट्रासपोर्ट चलाते है उनको पेट्रोल चाहिए। हकूमतको जितना पेट्रोल चाहिए उतना वह अपने लिए रख ले और बाकीको खुले बाजारमें रख दें। अगर माना कि बाजारमे वह बिल्कुल मिलता ही नही और रेलें भी सब-की-सब मिट गईं तो भी हिंदुस्तानका कारोबार पेट्रोलके बिना बद नही होनेवाला है। सिर्फ इधर-उधर माल ले जानेका तरीका, जो आज है वह बदल जायगा।

तब हम पुराने जमानेके तरीकेपर चले जायगे। अगर पेट्रोलका जो अकुश है वह निकल जाय तो मुझको उससे कुछ डर नही है।

एक बात यह भी है कि हमारे यहा पूरी खुराक तो पैदा नही होती है। तब लोगोको कहो कि वे जमीनको वो ले, उसमेसे पैदा हो जायगी। बात तो सच्ची है, लेकिन उसके लिए बाहरसे जो बनी बनाई खाद आती है, जिसको कि रसायन खाद बोलते है, उसमे हम चद करोड रुपये मुफ्तके दे देते है या ऐसा कहो कि जमीनको बिगाडनेके लिए वह पैसे देते है। यह मेरा कहना नही है, मै तो वह जानता ही नही, लेकिन जो इसका ज्ञान रखते है वे ऐसा कहते है। मीराबेनने ही यह सब किया है और उसने ही इस चीजके जानकार लोगोको इकट्ठा किया। उसको शौक है और वह सचमुच किसान बन गई है।

और भी बडे-बडे आदमी इस काममे उसके साथ थे। राजेद्र बाबू तो है ही, सर दातारसिंह है और भी दूसरे अच्छे-अच्छे खेतीका थोडा-बहुत जाननेवाले है, वे आ गए थे। वे मिले और जो किया वह अखबारोमें भी आ गया है। उन्होने यह निकाला है कि खाद किस तरह बना सकते है। उसको जिंदा खाद कहते है। हमारे यहा गोबर तो काफी होता है और जहा मनुष्य है वहा उनका विष्टा भी रहता है, उससे खासा अच्छा खाद बन जाता है। उसको मिश्रण करनेके बाद, यह कोई कह नही सकता कि वह कैसे बना है। अगर बननेके बाद उसको हाथमे ले लो तो सुगधि निकलती है, दुर्गन्धि नही। इस तरहसे उसका परिवर्तन हो जाता है। जो भी घास-पत्ता और कूडा-कचरा होता है वह सब मिला लिया जाता है और इस तरह वह मुफ्तमे खाद बन जाता है। कचरेमेसे करोडो रुपए कैसे निकल सकते है, यह इल्म लोगोको बतानेके लिए दो-तीन रोजके लिए ये कुछ लोग बैठ गए थे।

: १८४ :

२० दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

बडे दु खकी बात है कि यहा (दिल्लीमें) फिर थोडेसे पैमानेपर दगा शुरू हो गया है। अगर हम चाहते है कि सब मुसलमानोको यहासे जाना है तो फिर हमको साफ कह देना चाहिए, वह शराफत होगी या हकूमत कहे कि आप लोगोका यहा रहना मुफीद[1] नही है ? हम आपको थोडा-थोडा हलाक करके नही निकालना चाहते, लेकिन सचमुच तो आपको जाना ही है। मुझको तो इसका बडा दु ख होता है।

क्या ही अच्छा हो अगर हम सब अच्छे हो जाय, शरीफ बन जाय और बहादुर हो जाय। वह तो एक डरपोकका काम हो जाता है कि जो यह कहे कि मुसलमान मेरे पास नही रह सकता। क्यो नही रह सकता ? अगर वह खराब है तो उसको ठीक करना है—शराफतसे, मारपीटकर नही। इसलिए मुझको तो यह बडा चुभता है कि हम क्यो ऐसे बन गए कि जिससे मुसलमान यहा डरे और हिंदू तथा सिख पाकिस्तानमें डरे। और पीछे बडी-बडी बाते हम करे कि यहा सब लोग आरामसे रह सकते है। कहा आरामसे रह सकते है ? मैं तो हमारी हकूमतसे भी कहता हू कि अगर वह सच्ची बनना चाहती है तो ऐसा होना नही चाहिए। अपने सारे अफसरोको साफ-साफ यह कह दे कि हमारे रहते हुए ऐसे नही बन सकता है। आखिर आप ही लोगोके तो हम नुमायदे है, क्योकि सरकारी अफसर भी तो मतदाता होते है। इसलिए अफसरोको क्या, फौजको क्या और पुलिसको क्या, सबको शराफतसे चलना है। अगर हम लोग शराफतसे चलेंगे तो हमारी गाडी आगे चल सकती है, नही तो जो लगाम हमारे हाथमें आ गई है उसको हम छोड रहे है, इसका मुझको दु ख होता है। लेकिन आज तो मै वह बात नही करना चाहता था। मैं तो आपको वह सुनाना चाहता हू जो मैंने छोड रखी है।

---

[1] लाभदायक।

चरखा-सघकी जो बैठक हुई थी उसमें ग्राम-उद्योगसघकी बात मैंने अभीतक छोड रखी थी। थोडा-सा इशारा जरूर कर दिया था। चरखा तो ग्राम-उद्योगका मध्य-बिंदु है। अगर सात लाख गावोमे चरखा न चले तो अन्य गृह-उद्योग भी नही चल सकते है। चरखा तो सूरज है और दूसरे जो उद्योग हैं वे ग्रह है, जो सूरजके इर्द-गिर्द घूमते हैं। उनको ग्रह भी इसलिए कहा गया कि वे सूरजके इर्द-गिर्द फिरते रहते है। अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नही सकते, क्योकि वे सब सूरजपर ही आश्रित है, ऐसा दुनियामें बन गया है। लेकिन देहातका सूरज किसको कहे? हिंदुस्तानका सूरज तो वह चक्र है कि जो झडेमे मौजूद है, पीछे चाहे आप उसको सुदर्शन चक्र कहे या अशोक राजाका चक्र कहे। मेरी निगाहमें तो वह चरखेकी निशानी है। अगर वह देहातोमे चलता रहे तो अन्य ग्राम-उद्योग भी रुक नही सकते, लेकिन उसके चलते रहनेपर भी दूसरोको देखना तो है। अगर उनको सभाले ही नही और वे सब इर्द-गिर्द चलना छोड दे, तो फिर जो सूरज है, वह भी बेहाल हो जायगा। जितने हमारे खगोल-शास्त्री कहे जाते है उन्होने यह नही देखा है और उन्होने देखा होगा तो मै मूर्ख हू, जानता नही हू। लेकिन मै तो मानता हू कि अगर सब ग्रह डूब जाते है तो सूरजको भी डूबना है। यह मै शास्त्रीय तरीकेसे तो सिद्ध नही कर सकता हू, लेकिन यहा तो मै सिद्ध कर सकता हू कि जो दूसरे इर्द-गिर्दके उद्योग न चले तो चरखा बेचारा अकेला क्या कर सकता है? दिल्लीके इर्द-गिर्द क्या थोडे ग्राम पडे है। अगर वे सब दिल्लीको आश्रय दे और उनको दिल्लीका आश्रय लेना है तो पीछे वह सब बहुत खूबसूरत काम बन जाता है और आपस-आपसकी लडाईका सारा झगडा भी मिट जाता है। आखिर देहातोमेसे सब चीजे हमको चाहिए। आज तो वे चीजें आ नही सकती है। आप अगर न जानते हो तो जानना चाहिए कि दिल्लीमे बहुतसे कारीगर मुसलमान थे। वे चले गए। पानीपतमे देखो, कितने मुसलमान कबल वगैरा बनाते थे। आज तो वह धधा अस्त-व्यस्त हो गया। पीछे अगर हिंदू और सिख वहा गए तो देखा जायगा। लेकिन वे क्यो वहा जाए? वे कोई भूखे थोडे ही मरते है! हिंदूके पास जो पेशा है उसमेंसे वह कमा लेता है और मुसलमानके पास जो पेशा है उसमें वह कमा लेता है। अगर तब

मुसलमान अपना काम छोडकर यहासे चले जाते है तो उसमे हिंदुस्तानका नुकसान ही होता है। इस लिहाजसे तो पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनो डूब रहे है। क्या वजह है कि हम काश्मीरमें लडते है? वहा जो बागी लोग आ गए है वे लडे और फिर हम यहासे उसके लिए लश्कर भेज दे, वह तो एक बहशियाना बात मै समझता हू।

ग्राम-उद्योगकी बात तो एक बडी बुलद बात है। कल मैने आपको बताया था कि मीरा बेन उस कामको कर रही है और उसमे तो हमारी हकूमतके लोगोका भी हाथ है। वह खाद हम सब अपने घरोमें बना सकते है। हम लोग जो मैला करते है वह और गोबर तथा और भी जो कूडा-कचरा जमा हो जाता है, वह सब मिला ले। वह इस खूबीसे मिल जाता है कि पीछे एक खूबसूरत और सुगधित खाद बन जाती है।

इसलिए ग्राम-उद्योग और चरखा-सघका जो काम है वह तभी चल सकता है जब करोडो आदमी उसमें मदद दे। अगर वे न दे तो वह काम बिल्कुल चल नही सकता। चार चीजे, जहातक मुझको याद है, अर्थात् चरखा-सघ, हरिजन-सेवक सघ, ग्राम-उद्योग सघ और तालीमी सघ—जो बनी है, वे चारोकी चारो धनिकोके लिए नही, बल्कि गरीबोके लिए है। सब लोगोको इनके काममें हाथ बटाना है। अगर हाथ न बटाए तो वह काम चल नही सकता। अगर हम हिंदुस्तानमें पचायत राज्य या लोगोका राज्य चाहते है, तो सब लोगोको उस काममे मदद देनी है। वह कोई हवामेंसे तो आता नही है और न हिमालयसे चलकर आता है। वह तो यहाकी जनताके द्वारा ही हो सकता है। जनता एक तरहकी नीव है, जिसपर हम एक बहुत ऊचा मकान बना सकते है। अगर उसमें सब हाथ दे, तब तो खैर है और अगर न दें तो ठीक है। हम एक-दूसरेसे लड तो रहे ही है और नतीजा भी उसका वही आकर रहेगा जो यादव लोगोका हुआ था। यदुवशी तो कृष्ण भी हुए थे, लेकिन पीछे क्या हुआ कि सब लडते थे और दूसरोको डराते रहते थे। शराब पीना, व्यभिचार करना और आपसमे लडना, उनका काम रह गया था। नतीजा यह हुआ कि वह उस चीजमें जो घासकी थी, खत्म हो गए। यादवस्थल उसको हम कहते है। वह नतीजा या तो हिंदुस्तानको आनेवाला है और अगर नही

आनेवाला है तो केवल इससे कि ये चार चीजें बनी हैं उनको हम करते रहें। तभी हम सब आरामसे रह सकते हैं।

: १८५ :

मौनवार, २२ दिसंबर १६४७

(लिखित संदेश)

भाइयो और बहनो,

यहासे आठ-दस मीलके फासलेपर महरौलीमें कुतुबुद्दीन बख्तियार चिश्तीकी दरगाह है। वह पवित्रतामें अजमेरकी दरगाहसे दूसरे नबरपर मानी जाती है। इन दरगाहोंपर न सिर्फ मुसलमान जाते थे, बल्कि हजारो हिंदू और दूसरे गैर-मुस्लिम भी वहा पूजाभावसे जाया करते थे। पिछले सितंबरमें यह दरगाह हिंदुओंके गुस्सेका शिकार बनी। आस-पासमें रहनेवाले मुसलमान अपने ८०० साल पुराने घरोको छोड़नेपर मजबूर हुए। इस किस्सेका जिक्र करनेका कारण इतना ही है कि दरगाहके प्रति प्रेम और वफादारी रखने हुए भी, वहा आज कोई मुसलमान नही है। हिंदुओ, सिखो, वहाके सरकारी अफसरो और हमारी सरकारका यह फर्ज है कि जल्दी-से-जल्दी पहलेकी तरह उस दरगाहको खोलकर, यह कलकका टीका धो डाले। यह चीज देहलीमें और देहलीके इर्द-गिर्दके मुसलमानोकी सब धार्मिक जगहोपर लागू होती है। वक्त आ गया है कि दोनो तरफकी सरकार सख्तीके साथ अपनी-अपनी अक्सरियत[1] के सामने यह साफ कर दे कि अब धार्मिक स्थलोका अपमान बर्दाश्त नही किया जायगा, चाहे वह स्थल छोटा हो और चाहे बड़ा। इन स्थलोका जो नुक्सान किया गया है, उसकी मरम्मत होनी चाहिए।

मुस्लिम लीगकी सभाने कराचीमें जो फैसला किया है उसे देखते हुए मुसलमान मुझे पूछते है कि जो लीगके मेंबर है वे, जो सभा लखनऊमें मौलाना आजाद बुला रहे है, उसमें जावें या न जावे ? क्या मुस्लिम लीगके

---

[1] बहुसंख्यक।

मेंबरोकी जो सभा मद्रासमे होनेवाली है, उसमे भी जावे ? हर हालतमे यूनियनमें रहनेवाले मुस्लिम लीगके मेंबरोंका क्या रवैया[1] होना चाहिए ? मेरे दिलमें कोई शक नही कि अगर उन्हे व्यक्तिगत या जाहिर निमत्रण मिलें, तो उन्हे लखनऊकी मीटिंगमे जाना चाहिए, और मद्रासकी मीटिंग-में भी। दोनो जगह उन्हे अपने विचार निर्भयतासे और खुली तरह जाहिर करने चाहिए। अगर उन्होने पिछले ३० सालमे हिंदुस्तानकी अहिंसाकी लडाईका अभ्यास किया है तो उन्हे इस बातसे घबराहट नही होनी चाहिए कि यूनियनमें वे अकलियतमें[2] है, और पाकिस्तानकी अक्सरियत उनकी कोई मदद नही कर सकती। यह चीज समझनेके लिए उन्हे अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नही कि अकलियतको, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यो न हो, अपनी इज्जत और इन्सानको जो भी प्रिय और निकट लगता है, वह सब कुछ, बचानेके लिए डर रखनेका कभी कारण नहीं रहा। इन्सान ऐसा बना है कि अगर वह अपने बनानेवालेको समझ ले और यह समझ ले कि मैं उसी भगवानका प्रतिबिंब हू तो दुनियाकी कोई ताकत उसके स्वमानको छीन ही नही सकती। उसके स्वमानका हनन कोई कर सकता है तो वह खुद ही कर सकता है। जिन दिनो मै ट्रासवालकी जबर्दस्त हकूमतके साथ लड रहा था, मेरे एक प्रिय अंग्रेज मित्रने मुझे जोहासबर्गमें कहा, "मै हमेशा अकलियतका साथ देना पसद करता हू, क्योकि अकलियत आम तौरपर कभी गलती नही करती है, और करती है तो उसे सुधारा जा सकता है। मगर अक्सरियतको सत्ताका मद होता है, इसलिए उसे सुधारना कठिन रहता है।" अगर अक्सरियतसे हथियारोकी एकतरफा ताकतका भी मतलब हो तो इस दोस्तकी बात सही थी। हम अपने कडवे अनुभवपरसे जानते है कि कैसे मुट्ठीभर अंग्रेज यहा हथियारोकी ताकतसे अक्सरियत बने बैठे थे और सारे हिंदुस्तानको दबाए हुए थे। हिंदुस्तानके पास वे हथियार नही थे, और रहते भी तो हिंदुस्तानी उनका इस्तेमाल नही जानते थे। यह दुखकी बात है कि हमारे मुल्कमे अंग्रेजोकी हकूमतसे हिंदुओं और सिखो-ने पाठ नही सीखा। यूनियनके मुसलमानोको पश्चिममें और पूर्वमे अपनी

[1] तरीका, [2] अल्पसख्यक।

अक्सरियतका झूठा घमंड था। आज उस बोझसे मुक्त हो गए है। अगर वे अकलियतमें रहनेके गुणोंको समझेंगे तो वे अपने तरीकेसे इस्लामकी खूबियोका प्रदर्शन कर सकेंगे। उन्हे याद रखना चाहिए कि इस्लामका अच्छे-से-अच्छा जमाना हजरत मुहम्मदके मक्केके दिनोमे था। कान्सटेनटेन-की शहनशाहीके वक्तसे मिस्री धर्मका अस्त होने लगा। इस दलीलको यहा लबा करना नही चाहता। मेरी सलाहका आधार मेरा पक्का अकीदा[1] है, इसलिए अगर मुस्लिम मित्रोके मनमे इस चीजपर विश्वास नही है तो बेहतर होगा कि वे मेरी सलाहको फेंक दे।

मेरी रायमें उन्हे काग्रेसमे आनेके लिए तैयार रहना चाहिए। मगर जबतक काग्रेसमें उनको हार्दिक स्वागत न मिले, और समानताका बर्ताव न मिले, तबतक वे काग्रेसमें भर्ती होनेकी अर्जी न करे। सिद्धातके तौरपर तो काग्रेसमे अक्सरियत और अकलियतका सवाल उठता ही नही। काग्रेसका कोई धर्म नही, एकमात्र मानवताका धर्म है। उसमें हरएक स्त्री-पुरुष समान है। काग्रेस एक शुद्ध राजनैतिक सस्था है, जिसमे सिख, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, सब बराबर है। काग्रेस हमेशा अपने कहनेपर अमल नही कर सकी। इससे कभी मुसलमानोको लगा है कि यह तो मुख्यत सवर्ण हिंदुओकी ही सस्था है। जो भी हो, जहातक खेचतान जारी है मुसलमान बाइज्जत अलग खड़े रहे। जब उनकी सेवाओंकी काग्रेसको जरूरत होगी वे काग्रेसमें आ जावेगे। उस वक्त-तक जिस तरह मैं काग्रेसका हू, वे काग्रेसके रहे। काग्रेसका चार आनेका मेंबर न होते हुए भी काग्रेसमें मेरी हैसियत है, तो उसका कारण यह है कि जबसे १६१५ मे मैं दक्षिण अफ्रीकासे आया हू, मैंने वफादारीसे काग्रेसकी सेवा की है। हरएक मुसलमान आजसे ऐसा कर सकता तो वे देखेंगे कि उनकी सेवाओकी भी उतनी ही कदर होती है जितनी कि मेरी सेवाओकी।

आज हरएक मुसलमान लीगवाला और इसलिए काग्रेसका दुश्मन समझा जाता है। बदकिस्मतीसे लीगका शिक्षण ही ऐसा रहा है। आज तो दुश्मनीका तनिक भी कारण रहा नही। कौमीवादके[2] जहरसे मुक्त

---

[1] विश्वास; [2] सांप्रदायिकता।

होनेके लिए चार महीनेका अर्सा बहुत छोटा अर्सा है। इस दुःखी देशका दुर्भाग्य देखिए कि हिंदुओं और सिखोंने जहरको अमृत समझ लिया और लीगी मुसलमानोंके दुश्मन बने। ईंटका जवाब पत्थरसे देकर उन्होंने कलकका टीका मोल लिया और मुसलमानोंके बराबर हो गए। मेरा मुसलमान अकलियतसे अनुरोध है कि वे इस जहरी वातावरणसे ऊपर उठें, अपने आदर्श वर्तावसे उनके वारेमें जो वहम भर गया है, उसे वे गलत सिद्ध करें और वता दें कि यूनियनमें इज्जत-आवरूसे रहनेका एक यही तरीका है कि वे मनमें किसी तरहकी चोरी न रखकर हिंदुस्तानके शहरी बनें।

इसमेंसे यह परिणाम निकलता है कि लीग राजनैतिक सस्थाके रूपमें नहीं रह सकती। इसी तरह हिंदू-महासभा, सिख-सभा और पारसी-सभा भी नहीं रह सकती। धार्मिक सस्थाओंके रूपमें वे भले रहें। तब उनका काम अदरूनी सुधार होगा, धर्मकी अच्छी चीजें ढूढना और उनपर अमल करना होगा। तब वातावरणमेंसे जहर निकल जाएगा और ये सस्थाएं एक दूसरेके साथ भलाई करनेमें मुकावला करेंगी। वे एक दूसरेके प्रति मित्रभाव रखेंगी और हुकूमतकी मदद करेंगी। उनकी राजनैतिक महात्वाकाक्षाएं तो काग्रेसके ही द्वारा पूर्ण हो सकती हैं, चाहे वे काग्रेसमें हों या न हों। जब काग्रेस, जो काग्रेसमें हैं उन्हींका विचार करेगी, तो उसका क्षेत्र बहुत सकुचित हो जायगा। काग्रेसमें तो आज भी बहुत कम लोग हैं। काग्रेसकी आज कोई वरावरी नहीं कर सकता तो उसका कारण यह है कि वह सारे हिंदुस्तानकी नुमायदगीका प्रयत्न कर रही है। वह गरीब-से गरीब, दलित-से-दलितकी सेवाको अपना ध्येय वनाए हुए है।

: १८६ :

२३ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

आज तो मैंने विचार कर लिया है कि तीन चीज कहूंगा। एक

चीज तो यह है कि कल आपने देखा होगा कि यहा बहावलपुरके लोग आ गए थे। बडे परेशान है। उन लोगोने बताया कि वहा जितने हिंदू और सिख है उन सबको बुला लेना चाहिए, नही तो उनकी जान खतरेमे है। आज वहासे दो भाई भी आ गए थे। उन लोगोने भी यही बात बताई। उन लोगोने कहा कि अगर कुछ नही होता है तो गवर्नर-जनरलके घरके सामने जाकर भूख-हडताल करेंगे। तो मैंने कहा कि वहा भूख-हडताल करनेसे न तो आ सकते है और न बच सकते है और गवर्नर-जनरल तो अब नामके रह गए है। दस्तखत कर देते है, उनके पास तो आज सत्ता है नही। वे तो आज जैसे आप है वैसे है। अपने बलसे ऐसा कहो कि हमारे बलसे खडे है। हमारे प्रधान है, हमारे बलपर खडे है। तो सोचोगे कि पडित नेहरू या सरदारके घरके सामने भूख-हडताल करें, यह भी अज्ञानता है। उनमे एक-दो डाक्टर थे। वे समझ गए, इसलिए हडताल नही की। कल तो मेरी खामोशी थी, इसलिए कुछ नही कह सका। बहावलपुरके नवाबको चाहिए कि वे सब हिंदू सिखको जहा वे जाना चाहते है, भेज दें, नही तो उनके धर्मका पतन हो जायगा। नवाब साहबके होते हुए क्या हुआ, वह क्या बताऊ? वह काफी खतरनाक बात है। वहा काफी हिंदू, सिख मारे गए और परेशान भी हुए। सिखोने तो बहावलपुरको बनाया है—वे बहादुर है, वे लड सकते है, किसानका काम कर सकते है और वे वहा किसान बनकर रहते है, खाते-कमाते है। वैसे ही हिंदू भी है। आलसी बनकर बैठे है, ऐसे थोडे है। उन्होने कोई गुनाह तो किया नही, गुनाह इतना ही है कि वे हिंदू है या सिख है। बिना गुनाहके काफी हिंदू और सिखोको मार डाला और बाकी भाग गए। जब हिंदू और सिख वहा आरामसे रह नही सकते तो नवाब साहब कुछ भी कहे तो उससे क्या! मैं तो कहूगा कि नवाब साहब अपने धर्मका पालन करें, इसीमे उनकी शोभा है। अगर वे वहा उन लोगोको इज्जतसे रख नही सकते तो उनको चाहिए कि वे प्रबध कर उन लोगोको भेज दें, नही तो उन्हे ऐलान कर देना चाहिए कि वहा जितने हिंदू, सिख पडे है उनके बालको भी कोई छूनेवाला नही है। वे आरामसे पडे रह सकते है और अगर भूखो मरते है तो उनकी रोटीका प्रबध कर दिया जाय।

जो पागलपन हो गया वह हो गया। वैसा पागलपन तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनोंमें हो गया। उस पागलपनको अब छोड दें और शराफतसे काम करें।

दूसरी बात जो कहना चाहता हू वह आजके 'स्टेट्समैन' में है। वह यह कि लाहौरमें जो शिविर पडे है—उसमें तो दु खी लोग है, वहा तो मुसलमान पडे है—वे बहुत गदे है, वहा हैजा हो रहा है, सीतला निकल रही है और काफी लोग ऐसे है जिनको कुछ हुआ तो नही है, लेकिन ठडमे पड़े रहते है। कुछ लोग ठडके कारण भी मरते है, क्योकि बाहर पडे रहते है। बाहर रहे तो रहे, लेकिन आकाशके नीचे कैसे रह सकते है ? पानीसे बचनेको कुछ रहना चाहिए, तन ढकनेको चाहिए और रोटी भी चाहिए। ये न रहे तो मरनेका चारा हो गया। बाकी मै नही जानता कि वहा क्या-क्या हो रहा है। हा, ऐसा भी है कि वहा स्यालकोटसे भगी बुलाए गए है, जो शिविरोकी सफाईका काम करेंगे, मैला उठाएगे। वहाके अफसर कहते है कि वहा उनसे पूरा-पूरा काम होता नही है—मै तो जानता नही हू कि क्या है, लेकिन मैं इतना कहूगा कि परेशानीमे पडे है। वे लोग पाकिस्तानमे है तो क्या हुआ, मुसलमान है तो क्या हुआ, इन्सान ऐसे क्यो बने, मुझे इसका दु ख होता है। हमारी ज्यादतीके कारण वे लोग यहासे जान बचाकर भागे, यहासे घर-बार छोडकर चले गए। वहा उनका घरबार तो है नही तो तकलीफ तो होगी ही, लेकिन यह क्या बात है कि वे अपनी सफाईतक न रख सके। मै तो हर दु खीको—वहा पडे है उनको, और यहा पडे है उनको, सबको—कहूगा कि उन्हे ऐसा कहना नही चाहिए कि हमे खाना बनानेवाले दो, झाडू करनेवाले दो, मैला उठानेवाले दो। जब घर छोडकर भाग गए तो ऐसी माग क्यो करनी चाहिए। वे तो करोड़पतिके लिए है। वह चाहे तो एक आदमीके बदले दस आदमी रख सकता है, लेकिन सब कैसे रख सकते है ? मै तो कहूगा कि यह हमारे गिरनेके लक्षण है। उनको दृढता-से, हिम्मतसे कहना चाहिए कि हम स्यालकोटसे भगी नही बुलाएगे और अपने शिविरको हमें ही साफ रखना है। पाकिस्तानके अफसर और वहाकी हकूमतको भी कहना चाहिए कि हम आपके लिए स्यालकोटसे झाडू देनेवाले नही बुलाएगे। इन्सानसे जितना हो सकता है उतना तो करे। उसके बाद

मरे वह बात दूसरी है, लेकिन नही करते है तो गुनाह इन्सानका है और इन्सानपर खूनका बोझ पडनेवाला है। मै पहले भी कह चुका हू और अब भी कहता हू कि शरणार्थियोको शराफतसे रहना चाहिए। उन्हे चाहिए कि उनसे जितना काम हो सकता है, करे, किसीपर बोझ नही होना चाहिए। पजाबका नमूना देकर सबको कहूगा कि सफाईका काम खुद करना चाहिए। काम करनेमे कोई शर्म नही है।

एक बात और कहूगा। वह अच्छी बात है। आपको मैने एक वक्त शायद सुनाया तो था कि प्यारेलाल यहा आ गए है। आप लोग तो जानते ही है कि वे कौन है। वे तो मेरा मत्रीका काम करते है—वे बहुत दिनोसे नोआखालीमे काम करते थे। उनके साथ और लोग भी थे—वे सब-के-सब जानपर खेल रहे थे, उससे वहां जितने हिंदू कष्टमे थे उन सबको सहारा मिल गया और मुसलमान भी समझ गए कि वे हमारे दोस्त है, सेवक है, मारने-पीटने नही आए है, वे तो दोनोके बीचमे, अगर हो सके तो मेल कराने आए है। वे कहते है कि वहाकी एक चीज जानने लायक है, ऐसी तो कई चीज है, लेकिन यह एक बडी चीज है। वहा किसी मदिरको मुसलमानोने तोड़ दिया था और उसपर लोगोने अधिकार कर लिया था। तो यह तो झगडेकी बात हो गई। पीछे उन मुसलमानोने कहा कि हम हिंदुओके साथ मिल-जुलकर रहनेवाले है, लेकिन जब हिंदू मदिरको नही जा सकते, पूजा नही कर सकते तो यह जचनेवाली बात नही हुई। वह सब तो दुबारा सुनाऊगा, क्योकि अब वक्त हो रहा है। पीछे मुसलमानोने कहा कि वे अपने मदिरोमे जा सकते है, पूजा कर सकते है, हम भी जाकर उनके साथ पूजा करेंगे तो प्यारेलालने कहा कि क्या करोगे, मदिर तो है नही, मदिर तो होना चाहिए, तो उन लोगोने कबूल कर लिया कि ठीक है और मेहनत कर मंदिर बना दिया और कहा कि आप लोग आरामसे रह सकते है, पूजा कर सकते है, रामधुन चला सकते है। वहा प्रतिष्ठा हो गई। इस तरहसे अब सब बडे आरामसे रहते है। अमलदारोने भी इसमे हिस्सा लिया। वह अच्छी चीज है। अगर सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ऐसा हो जाय तो हमारी शक्ल बदल जाती है। अगर हम अपने धर्मपर कायम रहे और दूसरोके धर्ममें दखल न दे तो हमारा सब काम हो सकता है।

: १८७ :

२४ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास हमेशा सिख भाई आते रहते हैं। मैं अखबारोंमेंसे थोडा पढ लेता हू, मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते हैं। वे लोग कहते हैं कि मैं तो सिखोंका दुश्मन बन गया हू। उन्होंने इसकी परवा न की होती, अगर मेरी बात हिंदुस्तानके बाहर कुछ-न-कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिंदने अहिंसाके, शांतिके जरिये आजादी ली है। अगर ऐसा ही होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मगर पगु और नामर्दोंसे अहिंसा चल नही सकती। यह पगुपन और गूगा-पन शारीरिक नही। शरीरसे पगु बननेवाले तो ईश्वरकी मददसे अहिंसापर खडे रह सकते हैं। एक बच्चा भी अहिंसापर खड़ा रह सकता है—जैसे प्रह्लाद। ऐसा हुआ या नही, मैं नही जानता, पर कहानी बन गई है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया था कि मेरी कलमसे रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नही। मेरे सामने १२ बरसका बच्चा प्रह्लाद आज भी खडा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पगु है, अधा है, वह अहिंसाको समझ नही सकता। अहिंसाका पालन कर नही सकता। मैंने गलतीसे यह सोच लिया था कि हिंदुस्तानकी आजादीकी लडाई अहिंसक लड़ाई थी। लेकिन पिछली घटनाओंने मेरी आखे खोल दी हैं कि हमारी अहिंसा असलमें कमजोरोंका मद विरोध था। अगर हिंदुस्तानके लोग सचमुच बहा-दुरीसे अहिंसाका पालन करते, तो वे इतनी हिंसा कभी नही करते।

सिख भाइयोंके गुस्सेपर मुझे हँसी आती है। सिखो और हिंदुओंमे मैं फर्क नही समझता। गुरु ग्रथसाहब मैंने पढा है। सिख कहते हैं कि मैं गुरु गोविंदसिंहके बारेमें क्या समझू ? अगर मैं इस दिशामे अज्ञान होता, तो उनके बारेमे मैंने जो लिखा है वह नही लिख सकता था। मैं किसीका दुश्मन नही हू। उन्हे समझना चाहिए कि जब मैं सिखोंकी शराबखोरी या जुआ खेलनेकी बात करता हू, तो वह सारे सिखोंपर लागू नही होती। हिंदुओंमें भी ऐसे बहुत लोग पडे हैं। मगर जहा सिखोंकी

तलवार नही चलनी चाहिए, वहा चलती है यह-बुरी बात है। बुरा बर-ताव करनेवाला कोई भी क्यो न हो, वह ईश्वरके सामने गुनाह करता है।

आज २४ दिसबर है, कल २५। क्रिस्मस[1] ईसाइयोके लिए वैसा ही त्योहार है, जैसी हमारे लिए दीवाली। न दीवाली नाचरगके लिए हो सकती और न क्रिस्मस। जीसस क्राइस्टके नामसे यह चीज बनी है। इस मौकेपर सारे ईसाई भाइयोको मै बधाई देता हू और आशा करता हू कि वे अपने जीवनमे जीसस क्राइस्टके उपदेशोपर अमल करेंगे। मै नही चाहता कि कोई हिंदू, मुसलमान या सिख यह चाहे कि हिंदुस्तानके थोडेसे ईसाई बरबाद हो जाय या अपना धर्म बदल डाले। 'धर्म-पलटा' -शब्द मेरी डिक्शनरी[2]मे ही नही है। मै चाहता हू कि हर ईसाई अच्छा ईसाई बने। हर हिंदू अच्छा हिंदू बने। वह हिंदू-धर्मकी मर्यादा और सयमका पालन करे और उसमे जो तपश्चर्या बताई गई है, उसे अपने सामने रखकर जीवन व्यतीत करे। उसी तरह मै चाहता हू कि एक मुसलमान अच्छा मुसलमान बने और सिख अच्छा सिख बने। पाजी हिंदू अगर मुसलमान बने, तो वह अच्छा मुसलमान हो नही सकता। अगर मै अच्छा हिंदू बनता हू और ईसाईको अच्छा ईसाई बननेकी प्रेरणा देता हू, तो मै अपने धर्मका प्रचार करता हू।

ईसाई लोग जीसस[3]के धर्मपर कायम रहे। दुनियामे धर्मकी वृद्धि हो। मैने अखबारोमे देखा है कि चूकि अब ईसाई धर्म या दूसरे किसी धर्मको राजसे पैसेकी मदद नही मिलनेवाली है, बाहरसे भी बहुत पैसे नही आने-वाले है, इसलिए हिंदुस्तानके ७५फी सदी गिरजे बद हो जायगे। हमारे यहाके ज्यादातर ईसाई गरीब है। उनके पास पैसे नही है। मगर पैसेसे धर्म नही चलता। ईसाइयोको खुश होना चाहिए कि पैसेकी यह बला दूर हुई। हजरत उमरके घर एक बार बहुत-सा इनामइकराम आ गया। वह बहुत गभीर होकर अपनी बीबीसे कहने लगे कि यह बला आ गई है। पता नही, अब मै अपने धर्मपर कायम रह सकूगा या नही। भगवान तो हमारे पास पडा है, उसे हम पहचानें। सबसे बडा गिरजाघर है ऊपर आकाश और

---

[1] बड़ा दिन; [2] कोष; [3] ईसा।

नीचे धरती माता। खुलेमें क्या मैं भगवानका नाम नही ले सकता ? भगवानकी पूजाके लिए न सोना चाहिए न चादी। अपने धर्मका पालन हम खुद ही कर सकते है, और खुद ही उसका हनन कर सकते हैं।

: १८८ :

२५ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है, उसके बारेमें थोडा बहुत मुझे और आपको मालूम है। एक चीजकी तरफ मैं आपका ध्यान खीचना चाहता हू। अखबारोंमें आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीर-के बारेमें फैसला करनेका किसीको निमत्रण दे। यह पच नियुक्त करनेकी बात हुई ? कहातक ऐसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमें फैसला कर ही नही सकते ? कहातक हम आपसमें लडते रहेंगे ? दोनो काश्मीर और जम्मू एक है। वहा मुसलमानोकी अधिकता है। काश्मीरके दो टुकडे करें, तो यह टुकडे करनेकी बात कहा जाकर रुकेगी ? हिंदुस्तानके दो टुकडे हुए, इतना बस है, बससे ज्यादा है। हिंदुस्तानको ईश्वरने एक बनाया, उसके टुकडे मनुष्य कैसे कर सकता था ? पर वह हुआ। लीग और काग्रेस अलग-अलग कारणोसे उसमें राजी हुई। आज काश्मीरके टुकडे करें तो दूसरी रियासतोके क्यो नही ?

काश्मीरमें झगडा क्यो हुआ ? कहा जाता है कि हमला करनेवाले डाकू है, लुटेरे है, वे बाहरसे आते है, रेडर्स[1] है। मगर जैसे-जैसे वक्त बीतता है, वैसे-वैसे पता चलता है कि ऐसा नही है। उर्दूके कुछ अखबार यहा आ जाते है। मैं थोडा-बहुत खुद पढ सकता हू। कुछ मुझे आसपास वाले सुना देते है। आज 'जमीदार' नामके अखबारमेंसे मुझे थोडा सुनाया गया। 'जमीदार'के एडीटर[2]को मैं पहचानता हू। उनकी जबानपर कभी लगाम

---

[1] आक्रमणकारी; [2] सम्पादक।

नही रही। अब तो उन्होने खुल्लमखुल्ला निमत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीरपर हमला करनेके लिए भर्ती हो। डोंगरोको, सिखोको, सबको उन्होने गालिया दी है। काश्मीरकी लडाईको जिहाद[1] कहा है। मगर जिहादमे तो मर्यादा होती है—सयम होता है। यहा तो कुछ भी नही है। जो कुछ चल रहा है, वह होना नही चाहिए। क्या वह यह चाहते है कि हिंदू, सिख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहे? मुसलमान अगर हिंदुओ और सिखोको मारे-काटे, फिर भी हमारा धर्म क्या है? यह मै आपको रोज बतलाता हू। हिंदू और सिख कभी बदला न ले।

सीधी बात यह है कि काश्मीरपर पाकिस्तानकी ही चढाई है। हिंदुस्तानका लश्कर वहा गया हुआ है, मगर चढाई करनेको नही। वह महाराजा और शेख अब्दुल्लाके बुलानेपर वहा गया है। काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला है। हजारो मुसलमान उनपर फिदा है।

अपना गुनाह हरएकको कबूल कर लेना चाहिए। जम्मूके सिखो और हिंदुओने या बाहरसे आए हुए हिंदुओ और सिखोने वहा मुसलमानोको काटा। काश्मीरके महाराजा इग्लैडके राजाकी तरह नही है। उनकी रियासतमे जो भी बुरा-भला होता है, उसकी जिम्मेदारी उनके सिरपर है। वहा काफी मुसलमान कतल किए गए, काफी लडकिया उडाई गई। शेख अब्दुल्ला साहबने बचानेकी कोशिश की। जम्मूमे जाकर उन्होंने बहस की, लोगोको समझाया। काश्मीरके महाराजाने अगर गुनाह किया है तो उन्हे या जिस किसीने गुनाह किया है, उसे हटानेकी बात मै समझता हू। पर काश्मीरके मुसलमानोने क्या गुनाह किया है कि उनपर हमला होता है?

पाकिस्तानकी हकूमतसे मै अदबसे कहना चाहता हू कि आप कहते है कि इस्लामकी सबसे बडी ताकत पाकिस्तान है। मगर आपको उसका फख्र तभी हो सकता है, जब आपके यहा एक-एक हिंदू-सिखको इन्साफ मिले। पाकिस्तान और हिंदुस्तानको आपसमे बैठकर फैसला करना चाहिए, लेकिन तीसरी ताकतके मार्फत नही। दोनो तरफके प्रधान

---

[1] मजहबी लड़ाई।

: १८६ :

२६ दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपको यहाके तिबिया कॉलेजके बारेमे एक बात सुनाना चाहता हू । इस कॉलेजके जन्मदाता हकीम अजमलखा थे। आज कमनसीबीसे हम मुसलमानोको दुश्मन मानकर बैठ गए है । मगर जब तिबिया कॉलेज बना था, तब ऐसा नही था। हिंदू राजाओ और मुसलमान नवाबोने और हिंदू-मुस्लिम जनताने उसके लिए पैसा दिया था । हकीम साहब बडे तबीब (डॉक्टर) थे। वह इस कालेजको चलाते थे। इसका एक ट्रस्ट भी बना था। ट्रस्टमे हिंदू और मुसलमान दोनो थे । डॉ० अन्सारी भी उसके ट्रस्टियोमे थे। आज कुछ हिंदू सज्जन मेरे पास आए थे। उन्होंने पूछा कि तिबिया कॉलेजका क्या होगा ? अगर तिबिया कॉलेज् बद हो, तो मै समझता हू कि हमारे लिए बहुत दु.ख और शर्मकी बात होगी। आज तो वह बद पडा है। कॉलेज करोलबागमे है। हमने बहुतसे मुसलमानोको अपने पाजीपनसे भगा दिया। मगर दिल्लीमे आज मुसलमान कहा रह सकते है और कहा नही रह सकते, यह बडा प्रश्न है। दूसरोको मिटानेकी चेष्टा करनेवालोको खुद मिटना होगा। यह जीवनका कानून है। यह अपने आपको और अपने धर्मको मिटानेकी बात है।

दूसरी बात जो मै कहना चाहता हू, वह पहले कह चुका हू। मगर वह बार-बार कही जा सकती है। हजारो हिंदू और सिख लड़कियोको [illegible]लमान भगा ले गए है। मुसलमान लडकियोको हिंदुओ और सिखोने [illegible]गाया है। वे सब कहा है ? उनका पता भी नही है। लाहौरमे सबने [illegible]लकर यह फैसला किया था कि सारी भगाई हुई हिंदू, सिख और मुसलमान [illegible]रतोको निकाला जाय। मेरे पास पटियाला और काश्मीरसे भगाई [illegible]ई मुसलमान लडकियोंकी एक लबी लिस्ट[१] आई है। उनमेसे कई अच्छे [illegible]र मशहूर घरोकी लडकियां है। अगर वे लडकिया मिले तो उन्हे वापस

---

[१] सूची।

लेनेमें कोई कठिनाई नही होगी। लेकिन हमारे हिंदू लोग खोई हुई हिंदू और सिख लड़कियोंको आदरसे वापिस लेंगे या नही, यह बड़ा प्रश्न है। अगर उनके साथ किसीने निकाह भी कर लिया, उन्होंने इस्लाम भी कबूल कर लिया, तो भी मेरे विचारसे वे मुसलमान नही हुईं। उन्हें मैं आदरसे अपने पास रखूंगा। उनकी जो सतान होगी उसे भी आदरसे रखूंगा। वे दिलसे तो नही बिगड़ी। अगर वे दुष्टोंके पजेमें फस गईं तो मेरे मनमें उनके प्रति घृणा नही हो सकती, रहम ही हो सकता है। समाजको उन्हें वापस ग्रहण करना ही चाहिए। अगर उन्हें आदरसे वापस नही लेना हो तो उन्हें लोगोंके घरोंसे निकालनेकी चेष्टा ही क्यों की जाय? किसी लपटने उनपर जबरदस्ती की और उन्हें हमल[1] रह गया, तो क्या उन्हें मैं ठुकरा दू? नही, उन्हें मैं अपनी गोदमें बिठाऊगा।

ऐसी जो लड़किया हिंदू थी, वे हिंदू रहेंगी, और जो सिख थी वे सिख रहेंगी। बच्चोंका धर्म माका ही धर्म रहेगा, बडे होकर वे स्वेच्छासे भले किसी धर्ममें चले जाय। सुनता हू कि कई लड़किया आज कहती हैं कि हम वापस नही जाना चाहती। क्योंकि उन्हें डर है कि उनके मा-बाप या पति उनकी तौहीन[2] करेंगे। जिन लड़कियोंके रिश्तेदार हैं, उन्हें ऐसी लड़कियोंको आदरपूर्वक वापिस लेना चाहिए। जिनका कोई नही है, उन्हें हम कोई धधा सिखा दें, ताकि वे अपने पांवोपर खडी रह सकें। मेरे पास ऐसी कोई लडकी आ जायगी तो उसे मैं लाकर आपके सामने यहा बिठाऊगा। जैसा इन लडकियोंका आदर है, वैसा ही उसका भी होगा। वह मेरी गोदमें बैठेगी। अगर मैं बेरहम बन जाऊ, तो मैं हिंदू नही रह जाऊगा। गुडा मुसलमान हो या हिंदू, वह बुरा है। मुसलमान लडकियोंको हमें वापिस करना चाहिए और पचके सामने अपने गुनाहका प्रायश्चित्त करना चाहिए। यह लिस्ट देखकर मैं काप उठता हू। जम्मूमें भी यही हुआ। मर्दों और बूढी औरतोंको मार डाला और जवान लडकियोंको उठा ले गए। मैं नही जानता कि वे कहा हैं। अगर मेरी आवाज वहातक पहुच सकती हो, तो मेरा उन लोगोंसे अनुरोध है कि उन सब लडकियोंको वे लौटा दें।

---

[1] गर्भ; [2] अनादर।

कहते है कि काफी हिंदू और सिख लडकिया किसी पीरके यहां पडी है। वे कहते है कि उन्हे किसी तरहका नुकसान नही पहुचाया जायगा। मगर हम उन्हे तबतक वापिस नही करेगे, जबतक हमारी मुसलमान लडकिया वापिस नही आएगी। लकिन ऐसी चीजोमे सौदा क्या? हमे दोनो तरफसे सब लडकियां अपने-आप लौटा देनी चाहिए। वही आराम और शराफतसे रहनेका रास्ता है, नही तो हमारा मुल्क ४० करोड़ गुडोका मुल्क बन जायगा।

: १६० :

२७ दिसंबर १६४७

भाइयो और बहनो,

मुझे बड़ा हर्ष होता है कि मै आज इस देहात[1]मे प्रार्थना कर रहा हू। लेकिन आप मुझे प्रार्थनामे यहा धन्यवाद करते है या मान-पत्र देते है या हार पहनाते है, ऐसा होना नही चाहिए। प्रार्थना करना तो हमारा धर्म है। प्रार्थना तो जब प्रातःकाल हम उठते है तभी करते है। अगर हम नियमित रूपसे प्रार्थना करे तो फजर[2] और शाम को करे। शामको पाच बजे अगर हो सके तो मिलकर करे, लेकिन जाड़ेके दिनोमे जितनी जल्दी कर सके, अच्छा है। सोते है तब, और उठते है तब, ईश्वरकी याद करे। बीचमे जब काम करते है तब ईश्वरका काम करे, स्वार्थका काम न करें, सेवा करें। प्रार्थनामे क्या भरा है यह मै आज नही समझा सकता; क्योकि मेरे पास इतना समय नही है।

मैंने जब कह दिया कि मान-पत्र नही चाहिए, हार नही चाहिए तो भी आप लोगोने दिया तो मै इसके लिए आभारी हू। आपने मान-पत्र-मे सत्य और अहिंसाका जो उल्लेख किया है वह बहुत भारी चीज है। अगर हमारे आचार-विचार ऐसे नही है तो हम नाम लेनेसे घातक बनते

---

[1] दिल्लीसे बारह मील दूर सिंभालका नामक गांवमें; [2] सुबह।

है। मै तो ऐसा धोखा दे नही सकता हू। जबसे मै दक्षिण अफ्रीकासे हिंदुस्तान आया हू तबसे मै हिंदुस्तानका भ्रमण कर रहा हू। एक दफा नही, कई दफा सारे हिंदुस्तानका मैने भ्रमण किया है, हजारो देहातोको देखा है। लोग ऐसी बाते कह तो देते है, लेकिन करते नही है। उनको मानते है या नही, उसकी परवाह नही करते। हम ऐसा कभी न करे। खयाल एक चीजका करें, उच्चारण दूसरेका और आचरण तीसरी चीजका करे तो बात बनती नही है। हिंदुस्तानमे आपस-आपसमे हिंदू, सिख और मुसलमान एक दूसरेको काटे, गाली दे, हटा दे तो हमारे लिए शर्मकी बात है। दैवयोगसे आपके यहा झगडा नही है, क्योकि मुसलमानोकी ज्यादा आबादी नही है। अगर है तो थोडी-सी। तो वे बेचारे क्या करनेवाले है? अगर मै जान लेता कि यहा कितने है तो अच्छा होता और कुछ ज्यादा सुना सकता था। अगर हम आपस-आपसमे दुश्मनी करते है तो अहिंसा छोड दे। हम कम-से-कम इतने सच्चे तो हो जाय। अगर हम ऐसा नही करते है तो वह दुखकी बात है। हम आजाद हुए है तो एक दूसरेको काटनेके वास्ते नही। आजादीके माने यह है कि हम बिना किसी दबावके धर्मका पालन करें—धर्मकी आजादी मिली है, अधर्मकी नही। ईश्वरसे कोई ऐसी प्रार्थना थोडे करता है कि हमको झूठ बोलने दे। अगर हम ऐसा करते है तो हम शैतानकी बदगी करते है, उसके पजेमे पडते है और गुलाम बन जाते है।

आप लोगोने पचायत बनाई है तो अच्छा किया, इसके लिए मुबारकबाद देता हू। लेकिन अगर पचायतका काम नही किया तो मै कहूगा कि पचायतका नाम किया, लेकिन काम नही किया। आपकी पचायत सच्चे मानेमे पचायत नही है। पहले हिंदुस्तानमे सच्ची पचायत थी—आपने तथा मैने वह देखी नही है, लेकिन चीन और यूनानसे जो लोग हिंदुस्तान आए वे सब कहते है। उनकी किसीने खुशामद नही की, उनको किसीने पैसा नही दिया, उनको किसीने बुलाया भी नही। वे खुद बडी तकलीफ उठाकर आ गए—वे ज्ञान पाने आए, तो वे लिखते है कि हिंदुस्तानमे कही चोरी देखनेमे नही आई, किसी जगह ताला-कुजी नही देखा, यह कोई हजारो वर्षकी बात नही है। हजारो वर्षका इतिहास कहा है?

बाजारका कपडा बाहर आ गया और दाम कम हो रहा है।

उसी तरह चीनीका हो गया है। मुझको बताते है कि जिधर जाओ उधर चीनीका ढेर पडा है। वहांसे सब लोग ले जाते है। एक रुपया सेरके भावसे लेते है। आज मैंने सुना है कि कुछ लोग कहते है कि हम तो इस भावसे नही ले सकते, तो पद्रह आना सही, चौदह आना सही। यह तो व्यापार है। अकुश छूट जानेसे लोग आरामसे ले जाते है। इसमे ऐसी खूबी है। हर जगहसे इस तरहसे मेरे पास तार और खत आ रहे है। अकुश छूट जानेसे आराम महसूस करते है। पीछे मुझको लिखते है कि करोडोकी दुआ तुमको मिलती है। मै समझता हू कि मुझको दुआ क्यो मिले—करोडोको मिले। मैने तो करोड़ोकी आवाज उठाई—न उठाऊ तो मेरी आवाजको क्यो सुने? जब मै अपनी आवाज उठाता हू तब कौन सुनता है? मै कहता हू कि मुसलमानोको दुश्मन मत मानो तब लोग मुह मोड लेते है। लोग कहते है कि यह क्या पागलपन करता है। मेरी ऐसी आवाज कोई नही सुनता। हा, मै इतना तो जरूर कहूगा कि अगर करोडो लोग मेरी आवाज नही सुनते है तो अपने धर्मको हानि पहुचाते है। लोगोको समझना चाहिए कि मै जब हमेशा अच्छी बात कहता हू तो अभी बुरी बात क्यो कहूगा? मै गलत बात कहता ही नही। इसमें गलत बात क्या कहनी थी! मै जो कहता हू कि धर्मकी जड दया है वह तो तुलसीदासका है। उससे कहो कि तू दीवाना है। लेकिन उसकी रामायण जितनी चलती है उतनी सारे हिंदुस्तानमे दूसरी कोई पुस्तक नही चलती—शायद ही दुनियामें इतनी कोई दूसरी पुस्तक चलती होगी। वह पुस्तक सिर्फ बिहारमे चलती है या युक्तप्रातमें चलती है, ऐसी बात नही है। वह सब जगह चलती है। मैने तो उनका काम किया, उनकी आवाज उठाई। इसमे मुझको पागल कहनेकी क्या बात है। लकडीपर क्या अकुश रखना था! वह खानेकी चीज तो है नही कि न मिले। मानो कि मिलने लग जाय तो सब खा जायगे यानी जला डालेगे? लेकिन उतनी ही जलाएगे जितनी जरूरत होगी। कोई फालतू तो जलाएगा नही। तब उसपर अकुश क्यो? मुझको तबतक सतोष नही जबतक लकड़ीपरसे अकुश न हट जाय। आज उसका मिलना इतना मुश्किल हो गया है कि गरीबोंकी हानि होती है।

करोगे, पीछे जुआ खेलोगे। इससे और भी कई बुराइया सीखोगे। जब तालीम दी जायगी तब भले ही कुछ फायदा हो, लेकिन अभी तो मै ये बुराइया देख रहा हू। अभी तो आपमेंसे कई भाई शराब, गाजा, भाग पीते है, लेकिन जब सब भाई ये व्यसन छोड दे तब मै समझूगा कि आपने सचमुच पचायत बनाई। तब दिल्लीके लोग यहा देखने आएगे। पीछे आप अस्पृश्य बन जाय और छूआछूतको भूल जाय। आप जब यह समझने लगे कि मुसलमान, हिंदू, सिख, क्रिस्टी, पारसी सब भाई है तब आप हिंदुस्तानकी आजादी किसको कहते हैं, यह सिद्ध करके बतानेवाले है। तब हिंदुस्तान आपके गांवका नमूना देखकर नकल करेगा। ईश्वर आपको शक्ति दे कि आप यह सब काम कर सके।

आप लोग तालिया न बजाए, क्योकि मैंने जो कहा है वह भी प्रार्थनामे शामिल है और प्रार्थना तो ईश्वरका नाम है। मुझे आपलोगोका आशीर्वाद चाहिए और मैंने जो कहा है वह पूरा कर दिया तो मुझको आपने सब दे दिया, मेरा काम पूरा कर दिया, ऐसा मै माननेवाला हू।

: १६१ :

२८ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै व्यापारियोकी सभामे चला गया था। उन लोगोने भी बताया कि कुछ अन्य चीजोकी तरह कपडेपरसे भी अकुश हटा लिया जाय। मुझको इसमे शक नही है कि अकुश छूट जाना चाहिए। उस सभाकी सब चीज तो आप अखबारमे देख ही लेगे, लेकिन एक चीज कहने लायक है। वह यह कि व्यापारियोने बताया कि अकुश हटनेका ऐसा चमत्कार हो गया है कि कपडेपरसे अकुश न हटनेपर भी कपडेके दाम कम होने लगे है। इसका कारण यह बताया जाता है कि लोगोको ऐसा खयाल हो गया है कि अब चूकि गाधीजी लोगोकी आवाजको हकूमततक पहुचा रहे है, इसलिए कपडेपरसे शीघ्र अकुश हट जायगा। इसीसे चोर-

बाजारका कपड़ा बाहर आ गया और दाम कम हो रहा है।

उसी तरह चीनीका हो गया है। मुझको बताते हैं कि जिधर जाओ उधर चीनीका ढेर पड़ा है। वहांसे सब लोग ले जाते है। एक रुपया सेरके भावसे लेते है। आज मैंने सुना है कि कुछ लोग कहते है कि हम तो इस भावसे नही ले सकते, तो पद्रह आना सही, चौदह आना सही। यह तो व्यापार है। अकुश छूट जानेसे लोग आरामसे ले जाते है। इसमे ऐसी खूबी है। हर जगहसे इस तरहसे मेरे पास तार और खत आ रहे है। अकुश छूट जानेसे आराम महसूस करते है। पीछे मुझको लिखते है कि करोडोकी दुआ तुमको मिलती है। मै समझता हू कि मुझको दुआ क्यो मिले—करोडोको मिले। मैने तो करोड़ोकी आवाज उठाई—न उठाऊ तो मेरी आवाजको क्यो सुनें? जब मै अपनी आवाज उठाता हू तब कौन सुनता है? मै कहता हू कि मुसलमानोंको दुश्मन मत मानो तब लोग मुह मोड़ लेते है। लोग कहते है कि यह क्या पागलपन करता है। मेरी ऐसी आवाज कोई नही सुनता। हा, मै इतना तो जरूर कहूगा कि अगर करोडो लोग मेरी आवाज नही सुनते है तो अपने धर्मको हानि पहुचाते है। लोगोको समझना चाहिए कि मै जब हमेशा अच्छी बात कहता हू तो अभी बुरी बात क्यो कहूगा? मै गलत बात कहता ही नही। इसमें गलत बात क्या कहनी थी! मै जो कहता हू कि धर्मकी जड़ दया है वह तो तुलसीदासका है। उससे कहो कि तू दीवाना है। लेकिन उसकी रामायण जितनी चलती है उतनी सारे हिंदुस्तानमे दूसरी कोई पुस्तक नही चलती—शायद ही दुनियामे इतनी कोई दूसरी पुस्तक चलती होगी। वह पुस्तक सिर्फ बिहारमे चलती है या युक्तप्रातमे चलती है, ऐसी बात नही है। वह सब जगह चलती है। मैने तो उनका काम किया, उनकी आवाज उठाई। इसमें मुझको पागल कहनेकी क्या बात है। लकडीपर क्या अकुश रखना था! वह खानेकी चीज तो है नही कि न मिले। मानो कि मिलने लग जाय तो सब खा जायगे यानी जला डालेंगे? लेकिन उतनी ही जलाएगे जितनी जरूरत होगी। कोई फालतू तो जलाएगा नही। तब उसपर अकुश क्यों? मुझको तबतक सतोष नही जबतक लकडीपरसे अकुश न हट जाय। आज उसका मिलना इतना मुश्किल हो गया है कि गरीबोकी हानि होती है।

पीछे मुझको सुनाते है कि आपने इतना तो किया तो पेट्रोलपरसे अकुश हटानेके लिए आवाज उठाओ। मै तो कहूगा कि पेट्रोलपरसे भी अकुश हट जाना चाहिए और कल हट जाना चाहिए तभी हमारी भलाई होनेवाली है। पेट्रोलपरसे अकुश हट जायगा तब ज्यादा मोटरे चलेगी। इससे गरीबोको नुकसान नही होगा—फायदा होगा। अगर रेलगाडिया ज्यादा चले तो पेट्रोलकी ज्यादा जरूरत नही, लेकिन ज्यादा रेल बनाए तो करोडो रुपया खर्च होगा। जितना है उतना तो हजम होने दो। ज्यादा क्या करोगे ? रेलके लायक बने तो सही। हमको जितना चाहिए उतना है। जल्दीसे एक जगहसे दूसरी जगह जानेके रास्ते तो है, लेकिन पेट्रोल नही है। एक जगहसे दूसरी जगह हम जितनी चीज भेजना चाहे भेज सकते है। इसके लिए हमे रेल-यातायात नही, सडक-यातायातके साधनोकी जरूरत है। मै समझता हू कि अगर पेट्रोलपरसे अकुश उठ गया तब यह हो सकता है। अकुश हटानेसे सब दाम कम हो रहे है। किसी चीजका दाम बढ नही रहा है। अगर कोई ऐसा कहे तो वह गलत बात है। अगर दाम बढते तो मेरे पास इतने तार कहासे आते ! क्योकि दाम गिर रहे है, लोग कहते है कि अच्छा हुआ। पेट्रोलपरसे अकुश हट जाय तो सडक-यातायात बढ जायगा। इसके बढनेसे सब जगह अनाज और कपडा जा सकेगा। नमकका आना-जाना बढ जाएगा।

सबसे ज्यादा तो नमकका दाम कम होना चाहिए, लेकिन वह सबसे - द है। नमकपर कर बद हो गया, इसलिए दाम बढ गया, यह गलत बात है। हा, लेकिन नमकका दाम बढ गया है। हमारी आदत नही हुई है कि नमक पैदा कर ले। नमक बनाना हमने सीखा नही है। हिंदुस्तानके पास दरियाका किनारा इतना पडा है कि नमककी कमी हो नही सकती। दरियाके पानीसे अच्छा भी नमक बना सकता है। नमक बडे आरामसे बनाया जा सकता है। एक बहन बना सकती है। बगालसे नमकका पानी लाऊ तो बडे आरामसे नमक बन सकता है। इसके लिए इतना पैसा देना पडता है, इतने झझटमे पडते है। इसका सबब यह है कि जिस जगह नमक बनता है वहासे वह आ नही रहा है—वहासे शीघ्रतासे हम ला नही सकते। मै मानता हू कि उसमे एक गलती हो गई है। वह यह कि किसीको ठेका दे दिया है कि

तुम लाओ। वे बदमाशी करना सीख गए हैं, जिससे बहुत पैसा कमाते हैं। वहासे दूसरे ला नही सकते। इस ठेकेकी तबदीली[1] होनी चाहिए। अगर नमकको सस्ता करना है तो अकुश हटाकर चमत्कार देखो। हां, दो चीजे जरूरी है, एक यह कि ठेका-प्रणालीमें तबदीली हो और दूसरी सडक-यातायातकी व्यवस्था हो। बस आज मै इतना ही कहना चाहता हू।

: १६२ :

२६ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल हकीम अजमल खा साहबकी वार्षिक तिथि थी। वह हिंदुस्तानके हिंदू, मुसलमान, सिख, क्रिस्टी, पारसी, यहूदी सबके प्रिय थे। वह पक्के मुसलमान थे, मगर वह इस खूबसूरत देशके रहनेवाले सब लोगोकी समान सेवा करते थे। उनकी मेहनतकी सबसे बढिया यादगार दिल्लीका मशहूर तिबिया कालेज और अस्पताल था। वहापर हर श्रेणीके विद्यार्थी पढते थे और वहा यूनानी, आयुर्वेदिक और पश्चिमी डाक्टरी सब सिखाई जाती थी। साप्रदायिकताके जहरके कारण यह सस्था भी, जिसमे किसी तरह साप्रदायिकताको स्थान न था, बद हो गई है। मेरी समझमें इसका कारण इतना ही हो सकता है कि इस कालेजको बनानेवाले हकीम साहब मुसलमान थे, फिर वे चाहे कितने ही महान् और भले क्यो न रहे हो, और भले ही उन्होंने सबका मान सपादन क्यों न किया हो। उस स्वर्गवासी देशभक्तकी स्मृति, अगर वह हिंदू-मुस्लिम फिसादको दफन नही कर सकती, तो कम-से-कम इस कालेजको तो नया जीवन दे सके।

कल मैंने जिक्र किया था कि हमारी सभाए वगैरा खुलेमें, आकाशके मडपके नीचे हो। यह बहुत इष्ट चीज है। अगर यह आम रिवाज हो जाये

---

[1] परिवर्तन।

तो इस कामके लिए विचारपूर्वक जगह वगैराका प्रबंध करना होगा। छोटे-बडे शहरोमे इस कामके लिए मैदान रखने होगे; अपनी आदतें हमें बदलनी होगी; शोरकी जगह शाति और बेतरतीबीकी जगह करीने[1] से बैठना सीखना होगा। हमारी आदतें सुधरेंगी तो हम तभी बोलेंगे जब हमे बोलना ही चाहिए और जब बोलेंगे तब हमारी आवाज उतनी ही ऊची होगी, जितनी कि उस मौकेके लिए जरूरी होगी, उससे ज्यादा कभी नही। हम अपने पडोसीके हकका मान रखेंगे, और व्यक्तिगत रूपसे या सामूहिक रूपसे कभी दूसरोके रास्तेमें नही आएगे; दूसरोके कामोमे दखल नही देंगे। ऐसा करनेके लिए कई बार अपने आपपर बहुत सयम रखना पडेगा। ऐसी सामाजिक व्यवस्थामे दिल्लीके सबसे ज्यादा कारोबारवाले हिस्सेमें जो शोर और गदगी आज देखनेमें आती है, वह नही मिलेगी, चाहे कितने ही बडे हजूम[2] क्यो न हो, धक्कम-धक्का या फिसाद नही होगा। हम ऐसा न सोचें कि इस लक्ष्यको तो हम पहुच ही नही सकते। किसी-न-किसी तबके[3] को इस सुधारके लिए दिली कोशिश करनी होगी। जरा विचार कीजिए इस किस्मके जीवनमें कितना समय, शक्ति और खर्च बच जायगा।

मैंने काश्मीर और वहाके महाराजा साहबके बारेमें जो कुछ कहा है उसके लिए मुझे काफी डाट खानी पडी है। जिन्हे मेरा कहना चुभा है उन्होने मेरा निवेदन ध्यानपूर्वक पढा नही लगता। मैंने तो वह सलाह दी है जो मेरी समझमें एक मामूली-से-मामूली आदमी दे सकता है। कभी-कभी ऐसी सलाह देना फर्ज हो जाता है और वही मैंने किया। ऐसा किया इसलिए कि मेरी सलाह अगर मानी जाती तो महाराजा साहब अपनी और जगतकी आखोमें बहुत ऊचे चले जाते, उनकी और उनकी रियासतकी हालत आज ईर्ष्याके लायक नही। काश्मीर एक हिंदू राज है और उनकी प्रजामे बहुत बडी अक्सरियत मुसलमानोकी है। हमलावर अपने हमलेको 'जिहाद' कहते है। वे कहते है कि काश्मीरके मुसलमान हिंदू राजके जुल्मके नीचे कुचले जा रहे थे और वे उनकी रक्षा करनेको आए है।

---

[1] सलीका; [2] भीड़; [3] गिरोह।

शेख अब्दुल्ला साहबको महाराजाने ठीक वक्तपर बुलाया है। शेख साहबके लिए यह काम नया है। अगर महाराजा उन्हें इस लायक समझते हैं तो उन्हें हरएक तरहका प्रोत्साहन मिलना चाहिए। मुझे यह स्पष्ट है और बाहरके लोगोंके सामने भी स्पष्ट होना चाहिए कि अगर शेख साहब मुसलिम और अमुसलिम दोनोंको अपने साथ न रख सके तो काश्मीरको सिर्फ फौजी ताकतसे हमलावरोंसे बचाया नहीं जा सकता। महाराजा साहब और शेख साहब दोनोंने हमलावरोंका सामना करनेके लिए यूनियनसे फौजी मदद मांगी थी।

महाराजाको मेरी यह सलाह देनेमें कि वे इंगलैंडके राजाकी तरह वैधानिक राजा रहें, और अपनी हुकूमत और डोगरा[1] फौजको शेख साहब और उनके तत्कालीन मंत्रिमंडलके कहनेके मुताबिक चलावें, आश्चर्यकी बात क्या है? रियासतोंके यूनियनके साथ जुड़नेका शर्तनामा तो पहले ही ऐसा है। वह राजाको अमुक-अमुक हक देता है। मैंने एक सामान्य व्यक्तिकी हैसियतसे महाराजाको यह सलाह देनेका साहस किया है कि वे अपने आप अपने हकोंको छोड़ दें या कम कर दें और एक हिंदू राजाकी हैसियतसे वैधानिक कर्तव्यका पालन करें।

अगर मुझे जो खबरें मिली हैं उनमें कोई गलती है तो उसे सुधारना चाहिए। अगर हिंदू-धर्मके बारेमें और हिंदू-राजाके फर्जके बारेमें मेरे ख्यालात गलत हैं तो मेरी सलाहको वजन देनेकी बात नहीं रहती। अगर शेख साहब मंत्रिमंडलके मुखियाकी हैसियतसे या एक सच्चे मुसलमानकी हैसियतसे अपना फर्ज पूरा करनेमें गलती करते हैं तो उन्हें एक तरफ बैठ जाना चाहिए, और बागडोर अपनेसे बेहतर आदमीके हाथोंमें सौंप देनी चाहिए।

आज काश्मीरकी भूमिपर हिंदू-धर्म और इस्लामकी परीक्षा हो रही है। अगर दोनों सही तरीकेसे और एक ही दिशामें काम करें तो इन कार्यकर्ताओंको यश मिलेगा और कोई उनका यश और नाम और इज्जत छीन नहीं सकेगा। मेरी तो एक ही प्रार्थना है कि इस अंधकारमय

---

[1] राजपूतोंकी जाति।

देशमें काश्मीर रोशनी दिखानेवाला सितारा बने।

यह तो हुआ महाराजा साहब और शेख साहबके बारेमें। क्या पाकिस्तान सरकार और यूनियन सरकार साथ बैठकर तटस्थ हिंदुस्तानियोंकी मददसे दोस्ताना तौरपर अपना फैसला नही कर लेगी? क्या हिंदुस्तानमें निष्पक्ष लोग रहे ही नही? मुझे यकीन है कि हमारा ऐसा दिवाला नहीं निकला।

मुझे मथुरासे एक बहिनने ५०)का मनीआर्डर शरणार्थियोंके लिए कबल खरीदने को भेजा है, वह अपना नाम मुझे भी बताना नही चाहती और लिखती है कि प्रार्थना-सभामें अपने भाषणमें मैं उन्हें पहुच दे दू, मैं आभारके साथ उनके ५०) रु० की पहुच देता हू।

आश्चर्यकी बात है कि जिन रियासतोंके राजाओंने यूनियनमें जुड जानेका इरादा जाहिर किया है वहाकी प्रजाकी तरफसे मुझे शिकायतके तार आ रहे है। अगर किसी राजा या जागीरदारको यह लगे कि वह अकेला रहकर अपने आप अच्छी तरहसे अपना राज नही चला सकता तो उसे अलग रहनेपर कौन मजबूर कर सकता है? जो लोग तारोंपर इस तरहसे रुपया खर्च करते है उन्हे मेरी सलाह है कि वे ऐसा न करें। मुझे लगता है कि ऐसे तार भेजनेवालोंके बारेमें कुछ दालमें काला है। वे गृह-मत्रीके पास सलाह लेने आवें।

कई मुसलमान, खास तौरपर डाक और तारके महकमेवाले कहते है कि उन्होंने प्रचारकी खातिर यूनियनमें रहनेकी बात की थी, अब वे अपना विचार बदलना चाहते है। ऐसे भी मुसलमान है जिन्हें नौकरीसे बरखास्त किया गया है। उसका कारण तो मेरे खयालमें यही होगा कि उनपर शक किया जाता है कि वे हिंदुओंके विरोधी है। मेरी उन लोगोंके प्रति पूरी सहानुभूति है। मगर मैं महसूस करता हू कि सही तरीका यह है कि व्यक्तिगत किस्सोंमें यह शक कितना ही बेजा क्यों न हो, उसको क्षम्य समझा जाय और गुस्सा न करें। मैं तो अपना पुराना आजमाया हुआ नुस्खा ही बता सकता हू। सरकारी नौकरियोंमें बहुत थोडे लोग जा सकते है। जिंदगीका मकसद सरकारी नौकरी पाना कभी नही होना चाहिए। जीवनके इस क्षेत्रमें ईमानदारीकी जिंदगी बसर करना ही एकमात्र ध्येय

हो सकता है। अगर आदमी हर तरहकी मेहनत-मजदूरी करनेको तैयार रहे तो ईमानदारीसे रोटी कमानेका जरिया तो मिल ही जाता है। मेरी सलाह यह है कि आज जो सांप्रदायिक जहर हमपर सवार है जबतक वह दूर न हो तबतक मुक्ति नही। मै समझता हू, मुसलमानोके लिए अपना स्वाभिमान रखनेके लिए यह जरूरी है कि वे सरकारी नौकरियोमें हिस्सा पानेके पीछे न दौडे। सत्ता सच्ची सेवामेसे मिलती है। सत्ता पाकर बहुत बार इन्सान गिर जाता है। सत्ता पानेके लिए झगडा शोभा नही देता। उसके साथ-ही-साथ सरकारका यह फर्ज है कि जिन स्त्री-पुरुषोके पास कोई काम न हो, चाहे उनकी सख्या कितनी ही क्यो न हो, उनके लिए वह रोजी कमानेका साधन पैदा करे। अगर अक्लसे यह काम किया जाय तो सरकार-पर बोझ पडनेके बदले इससे सरकारको फायदा होगा। मै इतना मान लेता हू कि जिनके लिए काम ढूढना है वे शरीरसे स्वस्थ होगे, और काम-चोर नही, बल्कि खुशीसे काम करनेवाले होगे।

: १६३ :

३० दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

मैंने कलके भाषणमे कहा है कि हमारी सभ्यता कहांतक जानी चाहिए। हमें कब बोलना, कैसे चलना चाहिए कि करोडो आदमी साथ चलें, तो भी पूरी शाति रहे। ऐसी लश्करी तालीम हमें मिली नही। मैं यहासे जानेके बाद घूमता हू, तब लोग मुझे इधर-उधरसे देखनेकी कोशिश करते है। वे ऐसा न करे। प्रार्थनामे देख लिया, वह बस हुआ। वहा जो लाभदायक बातें सुनी, उनका वे मनन करे और अपने-अपने घर चले जाए।

बहावलपुरके बारेमें एक भाई लिखते है कि मैं बहावलपुरके लिए एक बार कुछ और कहू। वहाके नवाब साहबने तो कहा है कि उनके नजदीक उनकी सारी रैयत बराबर है। तो मै क्यो कहू कि यह सच्चा नही

है ? अगर सचमुच उनके लिए सारी रैयत एक-सी है तो उनको चाहिए कि अगर वे हिंदू-सिखोंकी सभाल नहीं कर सकते तो उन्हें अपनी गाड़ीमें विठाकर यहां भेज दें और आराममे आने दें। जबतक उनको वहांसे लानेका प्रबंध नहीं होता तबतक उनकी खानेकी, कपड़ेकी, ओढ़नेकी व्यवस्था उन्हें अच्छी तरह कर देनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेंगे।

मैं तो कायदे आजमसे कहना चाहता हू कि सिंधमें हिंदुओंका रहना दुश्वार हो गया है। वहा हरिजन परेशान है। उनको भी वहांसे आने देना चाहिए। सिंध जैसा पहले था वैसा आज नहीं है। इस यूनियनसे जो मुसलमान वहा गए हैं वे लोग वहांके हिंदुओंको घर छोड़नेपर मजबूर करते हैं, उनके घरोंमें घुस जाते हैं। अगर वे ऐसा करे तो कौन हिंदू वहा रह सकता है ? तब क्या पाकिस्तान इस्लामिस्तान हो जायगा ? क्या इसीलिए पाकिस्तान बना है ? कोई हिंदू वहा चैनसे रह ही नहीं सकता, यह दुखकी बात है।

पढरपुरमें विठोबाका मदिर है। महाराष्ट्रमें इससे बड़ा मदिर कोई नहीं है। वह मंदिर हरिजनोंके लिए वहांके ट्रस्टियोंने खुशीसे खोल दिया है, ऐसा तार आया था। अब वे लिखते हैं कि बड़े-बड़े ब्राह्मण पुजारी इसपर नाखुश हैं और अनशन कर रहे हैं। यह सुनकर मुझको बहुत बुरा लगा। मैं वहा जा तो नहीं सकता, मगर यहांसे दृढतासे कहना चाहता हू कि पुजारी लोग अपने आपको ईश्वरके पुजारी मानते हैं, लेकिन वे सच्चे तरीकेसे पूजा नहीं करते। आज तो वे लोगोंको लूटते हैं। विष्णु भगवान ऐसे नहीं है कि कोई भी उनके पास जावे और वे दर्शन न दें। ईश्वरके लिए सब एक हैं। सो इन पुजारी लोगोंको अनशन छोड़ना चाहिए और कहना चाहिए कि हम सब हरिजनोंके लिए मदिर खोलनेमें राजी हैं। हमारी धर्मकी आख खुल गई है। मदिरमें जानेसे पापका नाश होता है, यह माना जाता है। अगर सच्चे दिलसे पूजा करें तो पापका नाश होगा ही। ऐसा थोड़े ही है कि पापी मदिरमें नहीं जा सकते और पुण्यशाली ही जा सकते हैं। तब वहां पाप धुलेंगे किसके ? जिन हरिजनोंको हमने ही अछूत बनाया है वे क्या पापी हो गए ? मुझे आशा है कि अनशन करनेवाले समझ जाएंगे कि यह बात कितनी असगत है।

बवईमे चावल बहुत कम मिलते है। एक हफ्तेमे एक रतलसे ज्यादा नही मिलते। सो लोग काले बाजारसे चावल लेते है। अकुश छूटनेपर भी उस शहरमे अभी राहत नही मिली। अगर शहरी लोग ईमानदार बन जाय, तो ये तकलीफें मिटनी ही है। लोगोका पेट भर जाय तो चोरीका कारण ही क्यो रहे?

: १६४ :

३१ दिसबर १६४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास कई खत आए है। सबका जवाब अभी नही दे सकूगा। जिनका दे सकता हू, देता हू।

एक भाईने लिखा है कि सिंधमे जब हिंदुओपर सख्ती होती है और वहा हिंदू और सिख नही रह सकते, तो पजाबमे या पाकिस्तानके और हिस्सोमें फिरसे जाकर वे कैसे बस सकते है? खत लिखनेवाले भाईने मेरी इस बाबतकी सब बातोपर ध्यान नही दिया। कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान होकर मेरे पास आए थे। उन्होने उम्मीद दिलाई थी कि जो हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आ गए है, वे वहा वापिस जा सकेंगे, ऐसी आशा होती है। मैने वही आपसे कह दिया था। पर मै यह भी कह चुका हू कि अभी वह वक्त नही आया। अभी मै किसीको वापिस जानेकी सलाह नही दे सकता। जब वक्त आवेगा तब मै कहूगा। अभी तो सुनता हू कि सिंधमे भी हिंदू नही रह सकते। यह ठीक है। चितरालसे एक भाई मेरे पास आए थे। उन्होने बताया कि वहा ढाई सौके करीब हिंदू-सिख अभी पडे है, जो निकलना चाहते है। सिंधमे तो अभी बहुत है, हजारो है, जो वहासे निकलना चाहते है। वे सब जबतक नही आ जायगे, हिंद सरकार चुप नही बैठेगी। वह कोशिश कर रही है।

पर आखिरमे तो मै उसी बातपर जमा हूं। जबतक सब हिंदू और सिख भाई, जो पाकिस्तानसे आए है, पाकिस्तान न लौट जावे और सब

मुसलमान भाई, जो यहासे गए है, यहा न लौट आवे, तवतक हम शातिसे नही वैठ सकते हैं। मैं तो तवतक शातिसे वैठ ही नही सकता। हो सकता है कि कोई शरणार्थी भाई यहा खुश हो, पैसा भी कमाने लगे, फिर भी, उसके दिलसे खटक कभी नही जायगी। उसे अपना घर तो याद आवेगा ही, दिलमें गुस्सा और नफरत भी रहेगी। हमने दोनोंने वुरा किया है। दोनो विगडे है। इसलिए दोनो भोग रहे है। किसने पहले किया, किसने पीछे; किसने कम, किसने ज्यादा, यह सोचनेसे काम नही चलेगा। हम सव अपने-अपने विगाडको नही सुधारेंगे तो हम दोनो मिट जायगे। जवतक हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें दिलका समझौता नही होता हमारा दोनोका दु ख नही मिट सकता। दोनो अपना-अपना विगाड़ सुधार ले तो हमारी विगड़ी वाजी फिर सुधर जाय।

उन्ही भाईने लिखा है कि शरणार्थियोके कैंपोमें कुछ घरेलू धधे सिखाए जावें तो अच्छा है, जिससे वे कमाकर अपना खर्च निकाल सकें। मुझे यह वात वहुत अच्छी लगी। सव चाहेंगे तो मैं सरकारसे कहूगा और सरकार वडी खुशीसे इसका इतजाम कर देगी। सरकारके तो इससे करोडो रुपये वचेंगे। मैं चाहता हू कि जिस भाईने खत लिखा है, वह इसके लिए आदोलन करे, सव शरणार्थियोको राजी करे। शरणार्थी खुद यह कहे कि मुफ्तकी मिली खीरसे अपनी मेहनतका रूखा-सूखा टुकडा कही अच्छा है। इससे उनका मान वढेगा, मर्यादा भी वचेगी।

अभी तो एक हिंदू वहन मेरे पास आई थी। कहती थी कि वह अपने घरका ताला वद करके कही गई तो पाच-छ सिखोने आकर ताला तोड लिया और घरमें रहना शुरु कर दिया। वहनने आकर देखा तो पुलिसमें रिपोर्ट लिखाई। सुना है, कुछ सिख पकडे भी गए। एक भाग गया। हिंदुओ और दूसरोने भी ऐसी गदी वाते की है। इससे हमारे धर्मपर वडा कलक लगता है। ऐसी वातें वद होनी चाहिए। उस वहनने मुझसे पूछा, क्या मैं घर छोड दू ? मैंने कहा, कभी नही। सिख भाई अपना मान रखें, अपनी मर्यादासे रहें। हम सव अपनी मान-मर्यादासे रहे तो सारा झगड़ा खत्म हो जावेगा।

एक और खत आया है उससे मैं और भी खुश हुआ। एक भाई

लिखते हैं कि आपका रोजका भाषण तो सब रेडियोपर सुनते हैं, लेकिन प्रार्थना और भजन रेडियोपर सबको नही मिलते। वह भी सब सुन ले तो अच्छा हो। रेडियो क्या कर सकता है, मैं नही जानता। रेडियो अगर भजन भी ले ले तो मुझे अच्छा लगेगा। वह भाई अपना नाम भी नही देना चाहते। पर मैं एक बात यह भी कहना चाहता हू कि मैं रोज बोलता हू, जो बहस करता हू, वह भी प्रार्थना ही है, उसीका हिस्सा है। मेरा यह सब भी भगवानके लिए है। लड़किया जो भजन गाती हैं, वह भगवानके लिए गाती हैं। फिर उसमे सुरकी मिठास हो या न हो, भक्ति तो है। जिन्हें सुरकी मिठास चाहिए उनके लिए रेडियोपर बहुतेरे गाने होते हैं। जिन्हें भक्तिकी मिठास चाहिए, उनके लिए रेडियोपर ये भजन जा सके तो लाभ ही होगा।

कुछ भाइयोने जूनागढ़ और अजमेरकी बाबत मुझे तार भेजे हैं। जूनागढ़मे, जो काठियावाडमे है, तो मै पला हू। वहांका हाल मैं कह चुका हू। अजमेरमें तो बहुत बुरी बाते हुई हैं, इसमे शक नही। वहां जलाया भी है, लूट भी हुई, खून भी हुआ। पर बुरी बातको भी ज्यादा बढाकर कहनेसे हम अपना मामला कमजोर कर लेते हैं। इन तारोमे बात बढाकर कही गई है। अजमेरमे दरगाह शरीफ तो ठीक है। जितना है, उतना कहिए। सरकार अमन कायम करनेकी कोशिश कर रही है। हम उसपर भरोसा करे। भगवानपर भरोसा करे। सब अपनी-अपनी गलतियोको ठीक नही करेंगे तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो मिट जावेंगे।

: १९५ :

१ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज अंग्रेजी सालका पहला दिन है। आज इतने ज्यादा आदमियोंको यहां जमा देखकर मै खुश हू। पर मुझे दु:ख है कि बहनोको बैठनेकी जगह देनेमें सात मिनट लग गए। सभामे एक मिनट भी बेकार

जानेका मतलब है कि करोड़ों जनताके बहुतसे मिनट बेकार गए। फिर तो हमारा खात्मा है न ? भाइयोंको चाहिए कि बहनोंको पहले जगह देना सीखें। जिस देशमें औरतोंकी इज्जत नहीं, वह सभ्य नहीं। दोनोंको अपनी मर्यादा सीखनी चाहिए। यही मनु महाराजने बताया है। आजादी मिल जानेके बाद, हम सबको और भी मर्यादाके साथ बरतना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूं कि आगे इनसे भी ज्यादा लोग आवेंगे। पर जितने लोग आवें, वे प्रार्थनाकी भावना लेकर आवें; क्योंकि प्रार्थना ही आत्माकी खुराक है। भगवानके पाससे हमें जो खुराक मिल सकती है, वह और जगह नहीं मिल सकती। मैं उम्मीद करता हूं कि जो लोग आए हैं, वे सब यहां भी शांति रखेंगे और जाते वक्त घरोंको भी अपने साथ शांति ले जावेंगे।

यू० पी०में हालमें एक हरिजन कान्फ्रेंस हुई थी। कहते हैं, उसमें एक वजीरने हरिजनोंको उपदेश दिया कि आप गंदे रहना, गंदे कपड़े पहनना और शराब पीना छोड़ दें। इसपर कोई हरिजन बोल पड़ा कि जैसे सरकार ताड़ीके दरख्तोंको उखाड़कर फिकवा सकती है और शराबकी सब दुकानें बंद करा सकती है, वैसे ही वह गंदे कपड़े भी फुंकवा दे, हम नंगे रहेंगे, पर गंदे नहीं। मैं उस हरिजन भाईकी हिम्मतको सराहता हूं। मैं तो ताड़ीका गुड़ बना लेता हूं। पर मैं हरिजन भाइयोंसे कहूंगा कि असली इलाज उनके अपने हाथोंमें है। शराब अगर दुकानपर बिकती भी हो तब भी उन्हें जहरकी तरह उससे बचना चाहिए। सच यह है कि शराब जहरसे भी ज्यादा बुरी है। मजदूर लोग घरमें आकर जो दुःख देखते हैं उसे भुलानेके लिए शराब पीते हैं। जहरसे शरीर ही मरता है, शराबसे तो आत्मा भी जाती है। खुद अपने ऊपर काबू पानेका गुण ही मिट जाता है। मैं सरकार-को सलाह दूंगा कि शराबकी दूकानोंको बंद करके उनकी जगह इस तरहके भोजनालय खोल दे जहां लोगोंको शुद्ध और हल्का खाना मिल सके, जहां इस तरहकी किताबें मिलें जिनसे लोग कुछ सीखें और जहां दूसरा दिल बहलानेका सामान हो। लेकिन सिनेमाको कोई स्थान न हो। इससे लोगोंकी शराब छूट सकेगी। मेरा यह कई देशोंका तजुरबा है। यही मैंने हिंदुस्तानमें भी देखा और दक्षिण अफ्रीकामें भी देखा था। मुझे इसका पूरा यकीन है

कि शराब छोड देनेसे काम करनेवालोका शारीरिक बल और नैतिक बल दोनो बहुत बढ जाते हैं और उनकी कमानेकी ताकत भी बढ़ जाती है। इसलिए सन् १९२०से शराबबदी कांग्रेसके कार्यक्रममें शामिल है। अब, जब हम आजाद हो गए हैं सरकारको अपना वादा पूरा करना चाहिए और आबकारीकी नापाक आमदनीको छोडनेके लिए तैयार हो जाना चाहिए। आखिरमे सचमुचमे आमदनीका भी नुकसान नही होगा और लोगोका तो बहुत बडा लाभ होगा ही। हमारे लिए तरक्कीका यही रास्ता है। यह हमें अपने आप, अपने पुरुषार्थसे करना है।

: १९६ :

२ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

नोआखालीमें किसान लोग धूपसे बचनेके लिए यह टोप ओढते हैं।[1] मैं दो बातोकी वजहसे इसकी बडी कदर करता हू। एक तो मुझे यह एक मुसलमान किसानने भेंट किया है। दूसरे यह छतरीका अच्छा काम देता है और उससे सस्ता है, क्योकि सब गांवकी ही चीजोसे बना है।

प्रार्थनामें जो भजन गाया गया है, आपने सुना कितना मीठा है। पर यह भजन असलमें सुबहका है। इसमें भगवानसे प्रार्थना की गई है कि उठकर इतजारमें खड़े भक्तोको दर्शन दो। यह सत्य है कि ईश्वर कभी सोता नही है। भजनमें तो भक्तके दिलकी भावना है।

हालमें इलाहाबादसे मेरे पास एक खत आया है। भेजनेवाले भाईने लिखा है कि थोडेसे भले लोगोको छोड़कर किसी मुसलमानपर यह एतबार नही किया जा सकता कि वह हिंद सरकारका वफादार रहेगा—

---

[1]पानी बरसनेके कारण गांधीजी नोआखालीका टोप पहनकर आए थे जिसे देखकर लोग हँसने लगे। इसलिए गांधीजीने टोपसे ही शुरू किया।

खासकर अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे लडाई हुई। इसलिए थोडेमे नेशनलिस्ट[1] मुसलमानोको छोडकर और सब मुसलमानोको निकाल देना चाहिए। मै कहता हू कि हर आदमीको यही चाहिए कि जबतक कोई बात इसके खिलाफ साबित न हो, वह मुसलमानोकी बातका एतबार करे। अभी पिछले हफ्ते करीब एक लाख मुसलमान लखनऊमे जमा हुए थे। उन्होने साफ शब्दोमे अपनी राष्ट्रभक्तिका ऐलान किया। अगर किसीकी बेवफाई या बेईमानी साबित हो जावे तो उसे गोलीसे मारा भी जा सकता है, गो कि यह मेरा तरीका नही है। पर फिजूलकी बेएतबारी जहालत और बुजदिलीकी निशानी है। इसीसे साम्प्रदायिक नफरते फैली है, खून बहे है और लाखो बेघरबार किए गए है। यह अविश्वास जारी रहा तो देशके अलग-अलग टुकडे हमेशाके लिए बने रहेगे और आखिरमें दोनो डोमिनियन नष्ट हो जावेगी। भगवान न करे, अगर दोनोमे लडाई छिड गई तो मै तो जिंदा रहना पसद न करूगा। पर जो मेरी तरह लोगोमे भी अहिंसामे विश्वास होगा, तो लडाई नही होगी और सब ठीक ही होगा।

: १६७ :

३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे खुशी है कि आज मै अपना बहुत दिनोका वादा पूरा कर सका और इस कैंप[2] के शरणार्थियोसे बाते कर सका। मुझे बडी खुशी है कि यहा जितने भाई है, उतनी ही बहने है। मै चाहता हू आप सब मेरे पास इस प्रार्थनामें शामिल हो कि हमारे मुल्कमे और दुनियामें फिरसे शाति और प्रेम कायम हो। शाति बाहरकी किसी चीजसे, जैसे दौलतसे या महलोसे, नही मिलती। शाति अपने अदरकी चीज है। सब धर्मोंने इस सचाईका ऐलान किया है कि जब आदमीको

---

[1] राष्ट्रीय; [2] वेवल कैंटीन।

इस तरहकी शांति मिल जाती है तो उसकी आंखो, उसके शब्दो और उसके कामो—सबसे वह शांति टपकने लगती है। इस तरहका आदमी झोपडीमें रहकर भी संतुष्ट रहता है और कलकी चिंता नही करता। कल क्या होगा, यह भगवान ही जानते है। श्रीरामचंद्रको, जो हमारी तरह आदमी थे, यह पता नही था कि ठीक उस वक्त जब उनके गद्दीपर बैठनेकी आशा थी, उन्हे वनवास दे दिया जायगा। पर वह जानते थे कि सच्ची शांति बाहरकी चीजोपर निर्भर नही है। इसीलिए वनवासके खयालका उनपर कुछ भी असर न हुआ। अगर हिंदू और सिख इस सचाईको जानते होते तो यह पागलपनकी लहर उनपरसे फिर जाती, और मुसलमान चाहे कुछ भी करते, वे खुद शांत रहते। अगर ये शब्द हिंदुओ और सिखोके दिलोमे घर कर ले तो मुसलमानोपर तो अपने आप उसका असर जरूर होगा ही।

मैंने सुना है कि यह कैंप कुछ अच्छी तरह चल रहा है। मै यह बात तबतक पूरी तरह नही मान सकता, जबतक सब शरणार्थी मिलकर इस कैंपमे उससे ज्यादा सफाई और तरतीबी न रखें जितनी दिल्ली शहरमे दिखाई देती है। आपको जो मुसीबते भोगनी पड़ी है वह मै जानता हू। आपमेंसे कुछ बडे-बडे घरोके लोग थे। पर आपके लिए उतने ही आराम-की उम्मीद यहा करना फिजूल है। आप सबको सीखना चाहिए कि नई जरूरतोंके मुताबिक अपनेको कैसे ढाला जाय और जहांतक बन पड़े इस हालत[1]को ज्यादा अच्छा बनाना चाहिए। मुझे याद है कि सन् १८९९की बोअर वारसे[2] ठीक पहले अंग्रेज लोग ट्रांसवालको छोडकर वहांसे नेटाल गए थे। वे जानते थे कि मुसीबतका कैसे सामना किया जावे। वे सब-के-सब बराबरकी हैसियतसे रहते थे। उनमेंसे एक इंजीनियर था और मेरे साथ बढ़ईका काम करता था। हम सदियोसे विदेशियोके गुलाम रहे है, इसलिए हमने यह बात नही सीखी। अब जब हम आजाद हुए है—और आजादी कैसी अनमोल बरकत है—मै उम्मीद करता हू कि शरणार्थी भाई-बहन अपनी इस मुसीबतसे भी पूरा फायदा उठाएंगे। वे अपने इस कैंपको एक ऐसा आदर्श कैंप बना देंगे कि अगर सारी दुनियासे नही तो सारे हिंदुस्तानसे

---

[1] व्यवस्था; [2] बोअर युद्ध।

लोग आ-आकर इसपर फख्र करें। प्रार्थनामे जो मत्र पढा गया है उसका मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ है, हम सब भगवानके अर्पण कर दे और फिर जितनेकी हमें सचमुच जरूरत हो, उतना ही उसमेंसे ले लें। अगर हम इस मत्रके अनुसार रहें तो इस कैंपमें ही नही, सारी दिल्लीमें, जो हालमे बदनाम हो गई है, फिरसे नई जान आ जावेगी और हमारे सबके जीवन अदरके सुखसे भर जावेगे।

: १६८ :

४ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज यहा तो हर जगह लडाईकी ही बात हो रही है। कहते है कि पाकिस्तान और हिंदुस्तानके बीच शायद लडाई छिड़ जायगी। अगर लडाई छिड जाती है तो हम दोनोका बडा दुर्दिन है, ऐसा मैं मानता हू। और बस हम दोनो आपस-आपसमे सुलहसे नही बैठ सकते है। अभी मैं हैरान हुआ कि हिंदुस्तानकी यूनियनने, जो सारी प्रजाका या समग्र प्रजाका मडल बन गया है, पाकिस्तानको लिखा है। ऐसी जब कोई बात हो जाती तो इस मडलको इन्साफ करने और लडाई रोकनेके लिए कहा जाता है। इसलिए उनको इडियन यूनियनने लिखा है कि यह जो कुछ भी है, चाहे मामूली चीज ही हो, लेकिन इसमेंसे लडाई छिड सकती है। अच्छा लबा-चौडा लिखकर भेजा है और चूकि वह तारसे जा सकता था इसलिए उससे भेज दिया। उसपर पीछे पाकिस्तानसे एक तो जफरुल्ला साहब और दूसरा लियाकतअली साहबने एक बहुत लबा बयान निकाला है। वे दोनो भाई मुझको कहने देंगे कि वह मुझको कोई अच्छी बात नही लगी। तब कहो कि यूनियनके जो सचिव है, उन्होने जो चीज भेजी वह अच्छी लगी क्या? मैं कहूगा कि मुझको अच्छी भी लगी और बुरी भी। अच्छी तो यो लगी कि आखिर वे करे क्या? उन्होंने मान लिया है कि हम जो कर रहे है वह सही कर रहे है। अगर काश्मीरकी सरहदके बाहरसे लडाई

होती रहे तो जाहिर है कि उनके दिलमे यही होगा कि उसमें पाकिस्तानका कुछ-न-कुछ हिस्सा तो है ही। वह नही है, ऐसा वह कहते है। लेकिन उनके कहनेसे तो काम नही निपट सकता। काश्मीर हमारे पास आ गया है। एक शर्तसे हमने उसको यूनियनमे ले लिया है। अगर पाकिस्तान उसको नाराज करे और काश्मीरके नेता शेख अब्दुल्ला यह मागे कि हमको मदद दे दो, तो यूनियन तो मदद देनेके लिए मजबूर हो जाता है। इसलिए मदद तो दी, लेकिन यहा तो इस तरहसे हो रहा है कि पाकिस्तानसे मिन्नत करते है कि जो हमलावर है उनको वहासे निकल जाना चाहिए और कोई आपसी निपटारा हो जाना चाहिए। अगर यह निपटारा नही होता है तो फिर तो लड़ाईमें ही फस जाना पडेगा। इस लड़ाईमे न फसनेके लिए ही उन्होने ऐसा कर लिया है। यह सब ठीक है या नही, यह तो ईश्वर ही जानता है। न मै जानता हू, न कोई और जानता है।

पाकिस्तानमें चाहे कुछ भी था, लेकिन मै तो ऐसे करता कि उनको यहा आनेके लिए कहता। वे यहा आ सकते थे या किसीको भेज सकते थे। इस बारेमें कोई समझौता करनेके लिए हम मिल तो ले। सारी दुनियाको जाहिर तो यह करते है कि हम मिलना चाहते है, लेकिन मिलनेका सामान पैदा नही करते, ऐसा मुझको लगता है। इसलिए पाकिस्तानके जो जिम्मेदार आदमी है उनसे मै तो मिन्नत करूगा कि हमारे दो टुकड़े तो हो गए, हालाकि मुझको तो अच्छा नही लगा कि दो टुकड़े हो गए, लेकिन हो गए, क्योकि आप लोग चाहते थे। दो टुकडे होनेके बाद अब ऐसा इकरार तो होना ही चाहिए था कि हम आपसमें सुलहसे रहेगे। मान लिया कि हिंदुस्तानमे तो सब बुरे आदमी रहते है, लेकिन पाकिस्तान तो एक नई पैदाइश है और वह भी धर्मके नामपर या इस्लामके नामपर। तब उसको तो साफ ही रहना चाहिए था। लेकिन वह नही है, ऐसा वे खुद भी तो कबूल करते है। पाकिस्तानमें मुसलमानोने ज्यादतियां नही की, ऐसा वे खुद भी नही कहते है। की है, इसलिए मै तो उनसे मिन्नत करूगा कि आपका तो परम धर्म हो जाता है कि जहांतक हो सकता है हिंदुस्तानके साथ मिल जाना चाहिए और दोनोंको साथ-साथ काम चलाना चाहिए। गलतिया हो गई है दोनोसे, इसमें मुझे कोई शक नही है। लेकिन इसका यह मतलब नही है कि हम गलतियां

करते ही रहे। आखिरमें नतीजा तो यही होगा कि हम दोनों आपसमें लड़े और मरे। तब तो सारा हिंदुस्तान एक तीसरी ताकतके हाथ चला जाता है। इससे बुरी बात हिंदुस्तानके लिए, या किसी भी हिंदुस्तानीके लिए, कोई और हो क्या सकती है, यह मेरे जहनसे[1] तो बाहरकी बात है। इसलिए दोनों ताकतोंको ईश्वरको दरमियान रखकर आपस-आपसमें मिल जाना चाहिए। आखिर यू० एन० ओ०में तो यह मामला चला ही गया है। उससे तो कौन छीन सकता है। लेकिन एक ताक़त तो उनसे भी यह मामला छीन सकती है और वह यह कि अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिल जाते है तब यू० एन० ओ० मे जो बड़े-बड़े लोग पडे हैं, वे तो राजी होनेवाले है। वे कोई नाराज थोडे ही होंगे। आखिर उनके हाथमें तो कलम पडी है। वे तो यही कहेंगे कि हमारे पास जो चीज आती है उसके लिए हम भी कोशिश करेंगे कि दोनों आपसमें मिल जाए, ताकि हमें कुछ करना ही न पडे। ऐसी अगर वे कोई कोशिश न करें तो वे भी आखिर खिलौना थोडे ही हैं कि कोई हरएक बात उसमें ले जाई जाय। जब दोनों मजबूर हो जाए कि आपसमें उनका कोई फैसला हो ही नही सकता है तब वे उसको यू० एन० ओ० में ले जाते हैं। एक तो मैं यह बात आपको कहना चाहता था। इसलिए हम ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं और जो प्रार्थना यहा करें, वही हम हमेशा अपने घरमें भी करें कि किसी-न-किसी तरह भगवान दोनों हकूमतोंको लडनेसे बचा ले। लेकिन हर तरहसे लडनेसे बचा लें, वह प्रार्थना भी हम न करें। मैं तो कहता हू कि हे ईश्वर! या तो दोनोंको आदर और मोहब्बतके साथमें रख या अगर भीतरसे दुश्मन ही रहते हैं तो बेहतर यही है कि हमको पेटभरके लडने दे। हम भले ही मूर्ख हों, लेकिन लड़ने तो दो। पीछे कभी-न-कभी तो शुद्ध हो ही जायगे। आप भी यही प्रार्थना करें।

अब कुछ दिल्लीके बारेमें भी कहना मैं मुनासिब समझता हू। यहा क्या हो गया, इसका मुझको रातको ही पता चल गया था। मुझको बृजकिशनजीने बता दिया था। मैं भी कल उस तरफ प्रार्थना करने चला

---

[1] अक्लसे।

गया था। मैं तो आ गया था, लेकिन वह कैंप[1] देखने और लोगोसे बात करनेके लिए वही ठहर गए थे। वहांके कुछ फासलेपर ही चार-पांच सौ आश्रित दुःखी स्त्रिया, थोडे बच्चे और बाकी पुरुष गए। उन लोगोने क्या किया? किसीसे मारपीट तो नही की, ऐसा मैं सुनता हू। कुछ मुसलमानोके घर थे, थोडे उनमे खाली भी थे, मगर जो भी खाली हों, उन्हीमें वे जाकर बैठ जाय, ऐसा थोडे ही है। लेकिन जिन घरोमे लोग रहते थे उनपर भी जबर्दस्ती कब्जा करनेकी उन्होने कोशिश की। पुलिस तो नजदीक ही थी। सुनते ही वह वहा पहुच गई और सात या साढ़े-सात बजेसे यह शुरू हुआ और ६ बजेके बाद वह तो अखबारोमें है। मैंने सुना है, ११ बजेके बाद मामला शांत हुआ। पुलिस वही रही और जो एक नया शस्त्र निकला है न, अश्रु-गैस, वह भी चलाया गया। उससे लोग परेशान हो जाते है, मरते तो नही हैं; लेकिन परेशानी तो बहुत होती है। पीछे ये लोग वहासे गए और सुना है कि आज दिनमें भी कुछ हो रहा था। वे वहांसे चले नही गए थे।

मैं तो कहूंगा कि इससे हमको लज्जित होना चाहिए। जो आश्रित लोग है वे दुःखमेंसे भी इतना नही सीखे कि हम मर्यादित है। यह कोई मर्यादा नही है कि हम किसीके घरमे जाकर बैठ जायं। उनके लिए घर या कुछ भी चाहिए वह हकूमतका काम है। आज तो हकूमत भी हमारी हो गई है, लेकिन उस हकूमतको भी वे बेकार करे और जो पुलिस है उसकी भी कोई परवा न करे और किसीके घरमें घुसकर बैठ जाय तो इस तरह तो हमारी हकूमत चलनेवाली नही है। और पीछे दिल्लीमे अर्थात् हिंदुस्तानके पाया-तख्त[2]मे ऐसा हो, जहा इतने लोग पड़े है, बाहरसे बड़े-बडे एलची यहां आए हुए हैं! क्या उनको यह देखनेको मिले कि लोग जहा चाहे वहां कब्जा करके बैठ जाते हैं। पुलिस अगर मिन्नत करे कि मेहरबानी करके जाइए तो कोई मेहरबानी करनेका ही नही। इसपर भी औरतो और बच्चोंको आगे रखना तो कोई इन्सानियत नही है। मैं तो उसको हैवानियत मानता हू। हम कोई जगली थोड़े ही हैं! पुरुष

---

[1] बेबल कैंटीन; [2] राजधानी।

स्त्रियोको आगे रखे वह तो ऐसे ही हुआ जैसा कि मुसलमान बादशाहोंके वक्तमे गायोको फौजके आगे रखते थे, ताकि हिंदू लडे ही नही। मैं तो उसको भी सभ्यता नही, असभ्यता मानता हू। लेकिन उससे भी बडी असभ्यता मै यह मानूगा कि औरतो और बच्चोको आगे रखें ताकि पुलिस उनपर गैस या डडा न चला सके। वह तो औरतका बहुत बडा दुरुपयोग किया है, ऐसा मै मानूगा। इसलिए जितने दु खी लोग, औरत-बच्चे, सब पडे है, उन सबको मै कहूगा और बहुत विनयके साथ कि वे ऐसा न करें। वे सब शातिसे बैठ जाए। अगर नही बैठते है तो दो हकूमतोका लडना तो दरकिनार रहा, हम आपस-आपसमे ही लडकर ख्वार हो जायगे। हम दिल्लीको गवा बैठेंगे और सारी दुनिया हमपर हँसेगी कि ये लोग हकूमतको नही चला सकते है। इनका लोगोपर कोई काबू नही है। हिंदुस्तान आजाद रहे, ऐसा अगर हम चाहते है तो जो चीजे आज हिंदुस्तानमे हो रही है उनसे हम बच जाय। यहा किसी किस्मका उपद्रव न हो, इसके लिए कोई और दूसरा चारा हमारे पास नही है।

: १९९ :

५ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अकुश निकल जानेके कारण बाजारमे बेतहाशा ऊनी और रेशमी कपडा आ गया है। ऊनी और रेशमी कपडेकी कीमत कम-से-कम ५० फी सदी गिर गई है। काफी जगह ६६ प्रतिशत गिरी है।

इस आशासे कि सूनी कपडे और सूतपरसे भी अकुश जल्दी ही निकल जायगा, कीमतें धीरे-धीरे गिर रही है। अगर सूती कपडेपरसे पूरी तरह अकुश उठा लिया जाय तो कीमत कम-से-कम ६० प्रतिशत गिर जायगी और कपडा भी ज्यादा अच्छा मिलने लगेगा। मिल-मालिकोको एक दूसरेके साथ मुकाबला करना पडेगा। रेशमी और ऊनी कपड़ेकी तरह, अकुश हट जानेसे सूती कपड़ा भी ढेरो मिलने लगेगा। सूती कपडेपरसे अगर

अकुश उठाया गया तो उसे सफल बनानेके लिए कम-से-कम तीन सालतक हिंदुस्तानसे बाहर कपडा भेजनेकी मनाही होनी चाहिए ।

सरकारी दफ्तरोके आकडे तो जादूका खेल-सा रहते है । वे खुराक और कपड़ेपरसे अकुश उठानेके रास्तेमे नही आने चाहिए ।

पेट्रोलपर अकुश तो युद्धके कारण लगाया गया था, अब उसकी जरूरत नही है । सच्ची बात तो यह है कि इस कट्रोलसे थोडी-सी ट्रासपोर्ट कपनियोको फायदा पहुच रहा है और वे इसे रखना चाहती है । करोडो जनताका तो इसके साथ कोई सबध ही नही है । यह कहनेकी जरूरत नही कि एक भी बस या ट्रामका मालिक, जिसके पास एक ही रास्तेका लाइसेस है, आज दस-पद्रह हजार रुपया हर महीने कमा रहा है । अगर पेट्रोलपर अकुश न रहे, और गाडिया चलानेमें भी किसी एकके इजारे (स्वत्व) का रिवाज न रहे, तो एक गाडीका मालिक महीनेमें ३०० रु० से ज्यादा नही कमा सकता । आज तो पेट्रोलकी चिट्ठियोकी[१] तिजारत होती है । एक लारीकी पेट्रोलकी चिट्ठी आज किसी ट्रासपोर्ट डीलरके पास दस हजारमे बेची जा सकती है । अगर पेट्रोलपरसे अकुश हटा दिया जाए तो खुराक, कपडे और मकानोका प्रश्न और कई दूसरे प्रश्न, जो आज देशके सामने है, अपने आप हल हो जाएगे । पेट्रोलके राशनिगसे ट्रांसपोर्ट कपनिया पैसे कमा रही है, और करोड़ो लोगोंका जीवन बर्बाद हो रहा है । अकुश निकलवाकर आप दुखी जनताकी सहायता करें तब यह देश चद खुशकिस्मतोके रहने लायक ही नही, पर करोडों बदकिस्मतोके रहने लायक भी बनेगा । अकुश लडाईके जमानेके लिए थे । आजाद हिंदमें उनका कोई स्थान नही होना चाहिए ।

मुझे लगता है कि इन आकडोंके[२] सामने कुछ कहा नही जा सकता । हो सकता है यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा है । अगर ऐसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आकड़े बताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी

---

[१] कूपन ।

[२] गांधीजीने नीचेके भाव बताते हुए कहा कि देखिए, चीनी इत्यादिका भाव सौ प्रतिशत गिर गया है ।

कृपा करें। मैंने ये बातें मान ली हैं, क्योंकि जानकार लोगोंका मत भी इसी तरफ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोई चीज चाहती है तब लोकतंत्रमें विरोधको स्थान नहीं रहता। जनताके प्रतिनिधियोंको जनताकी मांग ठीक स्वरूपमें रखनी चाहिए, ताकि वह पूरी हो सके। जनताका मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाइयां जीतनेमें बहुत मदद दे चुका है।

कहते हैं कि दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है, उसका एक

आजकलका भाव	नवंबरमें अंकुश उठानेसे पहलेका भाव
चीनी ३७॥) मन	......८०) से ८५) मन
गुड़ १३) से १५) मन	......३०) से ३२) मन
शक्कर १४) से १८) मन	......३७) से ४५) मन
चीनीके क्यूब ॥≡) फी पैकेट	......१॥) से १॥।) फी पैकेट
चीनी देशी ३०) से ३५) मन	......७५) से ८०) मन
अनाज	
गेहूं १८) से २०) मन	......४०) से ५०) मन
चावल बासमती २५) मन	......४०) से ४५) मन
मकई १५) से १७) मन	......३०) से ३२) मन
चना १६) से १८) मन	......३८) से ४०) मन
मूंग २३) मन	......३५) से ३८) मन
उड़द २३) मन	......३४) से ३७) मन
अरहर १८) से १९) मन	......३०) से ३२) मन
दालें और तेल	
चनेकी दाल २०) मन	......३०) से ३२) मन
मूंगकी दाल २६) मन	......३९) मन
उड़दकी दाल २६) मन	......३७) मन
अरहरकी दाल २२) मन	......३२) मन
सरसोंका तेल ६५) मन	......७५) मन

प्रतिशत ही हिंदको मिलता है। निरुत्साह या निराश होनेका कारण नही। हमारी मोटरें तो चलती ही हैं। क्या इसका यह मतलब है कि क्योंकि हम युद्ध करनेवाले लोग नही, इसलिए हमें ज्यादा पेट्रोलकी जरूरत ही नही, और अगर हमें ज्यादा जरूरत पड़े और दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले तो दुनियाके लिए पेट्रोल कम पड़ेगा? टीकाकार मेरे घोर अज्ञानकी हँसी न करें। मैं तो प्रकाश चाहता हू। अगर मै अपना अंधेरा छिपाऊ तो प्रकाश पा नही सकता। सवाल यह उठता है कि अगर हमारे हिस्सेमें बहुत कम पेट्रोल आता है, तो काले बाजारमे पैट्रोलका अटूट जखीरा कहांसे आता है, और गाड़ियोका अनावश्यक आना-जाना, बिना किसी तरहकी रुकावटके कैसे चलता है?

पत्र लिखनेवाले भाईने जो हकीकत बयान की है वह सच्ची हो तो चौंकानेवाली चीज है। अकुश अमीरके लिए आशीर्वादरूप है और गरीबके लिए शापरूप, और अकुश रखा जाता है गरीबोकी खातिर। अगर इजारेका रिवाज इसी तरह काम करता है तो उसे एक क्षण भी विचार किए बिना निकाल देना चाहिए।

कपडेके बारेमे तो, अगर खादीको, जिसे आजादीकी वर्दी कहा गया है, हम भूल नही गए तो कपडेपर अकुश रखनेके पक्षमे तो एक भी दलील नही है। हमारे पास काफी रुई है और काफी हाथ है जो देहातोमें चर्खा और कर्घा चला सकते है। हम आरामसे अपने लिए कपड़ा तैयार कर सकते है। न उनके लिए शोरगुलकी जरूरत है, न मोटर-लारियोकी। पुराने जमानेमें हमारी रेलवेका पहला काम फौजकी सेवा था, दूसरे नंबरपर बंदरगाहोंपर रुई ले जाना और बाहिरसे बना कपड़ा भीतर ले आना। जब हमारी कैलिको, जिसे खादी कहते है, देहातोमें बनती है, और वही खपती है, तब इस केंद्रीकरणकी कोई जरूरत नही रहती। अपने आलस्य या अज्ञान, अथवा दोनोंको छिपानेके लिए हम अपने देहातोंको गाली न दें।

यहां मुसलमान नही चाहिए। यह शराफत तो नही है, लेकिन इतना तो होगा कि टेढी तरहसे निकालनेके बदले सीधे तौरसे निकाल दे। साफ-साफ कह दो कि हम पाकिस्तानमे हलाक हो गए है तो हम तुमको भी हलाक करेगे। हमको तुम्हारा एतबार नही है। इसको तो मै समझ सकता हू, लेकिन आज जैसा हो रहा है वह पागलपन है।

हमारे मुल्कमे बदकिस्मतीसे ऐसा हो गया है कि बिना सोचे-विचारे कई काम इधर-उधर ऊटपटाग कर बैठते है। लोग कुछ ऐसा समझते है कि हमारा मुल्क आजाद हो गया है, हमारा राज हो गया है तो हम जैसा चाहे वैसा करे। बवईसे खबर आई है कि वहा सल्तनत बडी मुसीबतमे पडी है। बदरगाहके मजदूरोने हडताल कर दी है। इस तरहकी हडतालसे हम मरनेवाले है। इससे जो मजदूर हडताल करते है उनका भी कोई भला नही होनेवाला है। उसमे चाहे किसी दलका हाथ हो, चाहे काग्रेसका हो या समाजवादी दलका हो, या कम्यूनिस्टका हो या और किसी दलका हो, मुझे इसकी परवा नही है। मै तो सबके लिए कहूगा कि इस तरहसे कारोबार नही चलेगा। ऐसा करनेसे हम मरनेकी कोशिश कर रहे है। आज हमारे देशकी स्थिति नाजुक है, इसलिए हमें तो ऐसी कोशिश करनी चाहिए, जिससे हम बच जाय।

मुझको औंधसे वहाके महाराजा साहबने लिखा है। औंध महा-राष्ट्रमें एक छोटी-सी रियासत है। उन्होंने तो जब अग्रेजी सल्तनत थी तभीसे अपनी रियासतका सब काम वहाके लोगोंके हाथ सौंप दिया था। उनके और उनके पुत्रके दिलमें हुआ कि प्रजाकी सेवा करनी चाहिए तो उन्होने वहाके लिए खासा निजाम बना लिया, पचायत राज बना दिया और सत्ता उसके सुपुर्द कर दी। तो महाराजा साहब लिखते है कि सब ऐसा कहते है कि आप अकेले ऐसा नही कर सकते, सब करे तब आप करे। उन्होने हिंदुस्तानमें अपनी रियासतको मिलानेका तय तो करीब-करीब कर ही लिया है, तो भी राजा तो रह जाते है, लेकिन लोगोका दास होकर रहते है, लोग उन्हे जितना दें उतना ही वे ले सकते है। खालसा हो गया है, उसके माने यह है कि जैसी रैयत है वैसा ही राजा है। उन्होने ऐसा कर दिया है। सरदार साहबने उड़ीसासे शुरू

किया कि राजा लोगोको भी कुछ पेंशन दे दी जाय, काम करे चाहे न करे । औंधके राजा साहबको भी पेंशन दे दी जाय और वैठ जाय तो इसे मै अच्छा नही समझता । हा, वे दखल न दें। वे कहते है कि पचायत राज दे दिया है तो उसके मुताबिक रियासतमे काम चल सकता है या नही; क्योकि उनसे कहा गया है कि हिंदुस्तानसे जैसी अन्य मिली हुई रियासतोमे काम चलेगा वैसे ही वहा चलेगा, अलग कानून नही हो सकता । मै तो कहूगा कि उसमे कानूनकी जरूरत नही । क्यो ? क्योकि राजा तो है नही, तो कानून कौन बनाए । मै तो कहूंगा कि जब हमारी हकूमत है—वह खालसा तो है ही, पचायत है—उसका हक तो कोई एक आदमी छीन नही सकता, तब उसमे डरनेकी क्या बात है ! सच्चा हक तो वही है जो छीना नही जा सके । वह तो धर्मके अमलसे पैदा होता है । उनका यह धर्म हो जाता है कि वे अपना फर्ज अदा करें। अगर कुछ लोग मिल जाते है और कोई गिरोह बना लेते है तो भी क्या ? पूछना क्या था ? पचके मार्फतसे न्याय करेगे। जो अदालते बनी है उनमें नहीं जायगे। अपने आप सब कर लेगे। वहा ज्यादा लोग गुनाह नहीं करते है—थोडे आदमी करते है। जो करते है वे भी पचायतके बाहर जानेवाले नही है। सभी लोग ऐसा ही चाहते है। इसका नाम सचमुच प्रजासत्ता या प्रजाराज है। प्रजासत्ता बन गई इसका मतलब यह नही है कि राज दिल्लीसे चले। अगर सचमुच वैसी सत्ता बन जाती है तब तो वह प्रजाके मार्फत ही बनेगी और उसमे देहातके लोग रहेगे। ऐसी जो पचायत है वह काम चलाए। उसमे दखल देनेकी गुजाइश नही। उसमे कोई दखल दे नही सकता। दखल देनेका कानून भी नही बनाया जा सकता; नही तो वह लौकिक राज या पचायत राज नही होगा। तलवारके जरिए पचायत राज नही हो सकता।

तीसरी बात मै और अभी कह देना चाहता हू। एक भाई लिखते है—वह खासा खत है, हिंदुस्तानीमे है—कि सच्ची चीज तो ऐसी है कि जो मुल्क हमेशा सुखी है वही राम-राज्य हो सकता है। बाहरके मुल्कसे कोई माल लेता नही, ऐसा नही है, लेकिन उतना ही लेना चाहिए जितनी कीमतका माल हम भी भेज सकें। तब हिसाब सीधा हो जाता है। अगर

हम वाहरसे माल खरीदनेमे पचास रुपए खर्चें तो उतना वाहरसे भी आना चाहिए, तव तो ठीक है। वह कहते है कि हमारा मुल्क हमेशा ऐसा रहा नही है। हमेशा हम कर्जदार रहे हैं। अभी ऐसा हो गया है कि हम लेनदार हो गए है, लेकिन कवतक रहेगे अगर हम अभी खर्च ही करते रहे ? कहनेका मतलव यह है कि हम वाहरसे उतना माल मगाते नही रहे जितना हम भेजते नही। अगर भेजते हैं तव ठीक हो जाता है, लेकिन नगद भेजकर मगाते है तो ठीक नही। आज तो हमें ऐसा करना चाहिए कि वाहरसे जो माल मगवाते है वह ज्यादा होना ही नही चाहिए—हम वाहरसे कम माल मगवाए और ज्यादा भेजे तव तो हमारा देश लेनदार देश हो सकता है, तव हमारी जमा वढ जाती है, यानी हमारे पास ज्यादा पैसे हो जाते है। अगर हम ऐसा कर सकेंगे तब हम जो काम करना चाहते हैं कर सकते हैं, नही तो नही।

एक वात यह है कि हम वाहरसे जो मगवाते हैं वह हमारे कच्चे मालका पक्का माल वनकर आता है। इससे हमारा सिलसिला वदल जाता है। हमे तो अपने देशको ऐसा वना लेना चाहिए कि वाहरसे मगवानेकी जरूरत ही न रहे। अगर मगवाते है तो दूसरोकी सहायता करनेके लिए। कोई कहे कि हमको कुछ पैसेकी दरकार है तो पैसे है तो भेज दो। वह ठीक कहते है कि ऐसे ही अमरीका वना है। हमे अमरीका-जैसे नही वनना है; लेकिन हम इतना तो कर ले कि हम वाहर ज्यादा भेजे नही तो वाहरसे मगवाए भी नही। तभी हमारी खैर है।

: २०१ :

७ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

अभी सुना है कि विद्यार्थी लोग हडताल करनेवाले हैं—वह ६ तारीखसे शुरू होनेवाली है। मुझको इसके वारेमे इतना ही कहना है कि यह वहुत गलत वात है। इस तरहसे हड़ताल करना और उससे

अपना काम निकालना कोई बेहतर चीज नही है—यह अहिंसक चीज तो है ही नही, इसके बारेमे मेरे दिलमे कोई सदेह ही नही। मैंने बहुत अहिंसक हडताल कराई है। हरएक हडताल अहिंसक है या हरएक हडताल उचित है, यह नही कहा जा सकता। विद्यार्थी जब विद्याभ्यास करते है तब उनको हडताल क्या करना था और इस तरहसे तो हमारा काम बिगडता है। अगर वे लोग मेरी प्रार्थना मानें तो अच्छी बात है। इसके बारेमें भी कहूगा कि अनुभव लेते हुए मुझे करीब पचास वर्ष हो गए। यह अनुभव हिंदुस्तानसे नही, दक्षिण अफ्रीकासे शुरू किया और कामयाब हुआ। मुझे ऐसा कोई ख्याल नही है कि जिसमे पडा उसमे कामयाब नही हुआ। ऐसा हो ही नही सकता। अगर वह सचमुच न्याय है और उसके सिवा दूसरा कोई चारा नही है तो कामयाबी मिलती ही है।

मेरे पास आज पजाब, सिंध, सरहदी-सूबा और कहा-कहाके नही थे—सब जगहके भाई आ गए थे, लेकिन सब पाकिस्तानवाले थे। प्रतिनिधि मिलने आए। सब थोडे आ सकते थे। वे अपने दुखकी कहानी सुना रहे थे। कहते थे कि आप इसके बारेमें दिलचस्पी क्यो नही लेते है? बात तो यह है कि वे बेचारे कहासे जान सकते है कि मैं क्या कर रहा हू। मै तो यहा इसी कामसे बैठा हू कि किसीके पाससे करवा सकता हू तो करवाऊ। आज तो मेरी दीन हालत हो गई है। एक जमाना था, जब कि मैंने कहा कि ऐसा होना चाहिए तो हो जाता था। आज ऐसी बात नही रही। मै तब भी एक अहिंसक सेनापति था—अब जब कोई मानता नही है तो सेनापति कैसा? वह जमाना चला गया। लेकिन उस जमानेमें भी मैंने ऐसा कभी दावा नही किया कि मै जो कहता था उसको सब मानते थे, लेकिन लोग मानते थे, जगत मानता था। आज मेरी बात कौन मानते है, मैं नही जानता हू। मै जो आज कहता हू वह अरण्यरोदन है, लेकिन धर्मराजने तो ऐसा कहा है कि अकेले रहनेपर भी क्या हुआ; धर्मकी बात तो करनी ही चाहिए। लोग कहते है कि हकूमत है, उसमे तो तुम्हारे दोस्त है, तो तुम जो कहोगे उसको तो वे लोग माननेवाले है। उसके मुताबिक उनको चलना ही चाहिए। बात सच्ची है—वे मेरे दोस्त है, लेकिन मेरे कहनेके मुताबिक वे क्यो चले? आप सब मेरे दोस्त है, इसका मतलब

ऐसा थोड़ा हूं कि मैं जैसा कहूं वैसा करे। दिलमें घुसता है, जमता है तब करे और न करें तो आलसी है। हकूमतमे मेरे दोस्त है तो उनसे बहस करूंगा और कहूंगा। मान जायगे तो अच्छा है, नही तो मैं लाचार हूं। वे लोग मुझसे कह सकते है कि हकूमत चलानेमें कई मुश्किलोका सामना करना पड़ता है, तुम भी हकूमत चलाओगे तब भी वैसा नहीकर सकोगे। हकूमतमे आज जो मेरे दोस्त है वे करे, पीछे उनके सेक्रेटरी हैं वे भी मेरे दोस्त है; क्योकि वे लोग जानते है कि मैं किसीका शत्रु नही हूं, वे माने, पुलिस है वे भी माने, तो पीछे क्या चाहिए? अगर इस तरहसे हो तो आज जो हिंदुस्तानमे हो रहा है वह होनेवाला नही था। हकूमत कह सकती है कि हमारे पास ऐसे सिपाही, कारकून, कहा है? जो अंग्रेजोंके जमानेमे थे वे ही है। निकल जाय तो भी काम नही चलता है। ऐसा उन्हें कहनेका अधिकार है। चाहे कुछ भी हो, मैं आज जो चाहता हू वैसा करवा नही सकता हूं। मैं तो आप लोगों-जैसे मिस्कीन हूं। मैं परमेश्वर तो हूं नही। मेरी जितनी ताकत है उतना करता हूं।

तो भी वे लोग कहते हैं—ठीक कहते हैं—कि इसके बारेमे हम क्या करें। रहनेके लिए कुछ तो होना चाहिए, पहननेको चाहिए और खानेके बारेमें होना चाहिए—तीनों चीजे चाहिए। मेरे पास है तब उनके पास क्यों नही होनी चाहिए—सबके पास क्यो नही होनी चाहिए। उन लोगोने कोई गुनाह किया है, ऐसी बात नही है। शरणार्थियोने कोई गुनाह नही किया है, उन लोगोने मारा नही है, पीटा नही है, हकीकतमें उन्हे डराकर मार-पीटकर, भगा दिया है। वे इस तरहसे है, बेगुनाह हैं। मेरे भाई है, बहन है, उनपर ऐसा दबाव डाला जाय, अन्याय हो और यहां आनेपर भी आरामसे नही रह सके तो उन्हें ऐसा कहनेका हक़ है कि तुमको तो सब मिलता है, हमको नही मिलता है, यह कहाका न्याय है? मुझको यह कबूल करना होगा कि यह अन्याय है। तो वे क्या करें? यह तो मैंने बता दिया है। किसीके मकानमें जाकर बैठ जायं, यह कहाका तरीका है? हमला करनेका तरीका मैंने बता दिया है, अहिंसक हमला करें। किस घरपर हमला करें, यह भी बता दिया है।

मैं तो कहता हू कि आप सीधी बात करें और कह दे कि जो काम

हमको दिया जायगा उसको करेंगे—आगे न चले तो बात दूसरी है। जैसे एक आदमीको लिखनेका काम दिया, लेकिन लिख नही सकता था तो क्या करे! एकको कुदाली दी तो वह कहे मुझसे कलम चलती है, इसलिए मुझको वही दो। ऐसा मैं नही सुन सकता हू। जो काम दिया जाय उसको करना चाहिए। इसी तरहसे जिस जगह मकान दिया जाय, तबू दिया जाय, उसमे रहे। घास-फूसके जो मकान दें उनमें भी रहना चाहिए। हा, मकान होना चाहिए—ऊपर छत होनी चाहिए। मैं उसमें रहा हू, इसलिए कहता हू। चारपाईकी कोई दरकार नही। मैं तो बताता हू कि घासमें—हरी घासमें नही, सूखी घासमें—भी कोई भी आदमी आरामसे सो सकता है। उसमें हर्ज नही होता है। रुईवाले गद्देमें सोनेसे जितनी गर्मी मिलती है, उतनी गर्मी सूखी घासमें भी मिलती है, यह मै तजुर्बेकी बात कहता हू। किसी एकके पास गद्दा है तो मुझको भी गद्दा चाहिए, नही तो वैसे ही पडा रहूगा, ऐसा कहना नादानी है। जो मिलता है उसको ईश्वरका अनुग्रह मानकर ले ले, तब तो सब काम हो सकता है। ऐसा करे तो आज जो हमारे साथ चंद लाख शरणार्थी पडे है, उतना ही नही, अगर करोड भी हो तब भी काम अच्छी तरह चल सकता है। यहा काफी जगह पडी है। सीधी बात यह है कि उनका दिल साफ होना चाहिए, लेकिन होता है उल्टा।

आपने देखा होगा कि कराचीमे क्या हो गया। लोग कहते थे कि सिंधमें ऐसा नही हुआ है, हो नही सकता है। मै तो कहता था कि सिंधमे हिंदू आरामसे रह नही सकते, हिंदूके सिवा दूसरे भी नही रह सकते, उनका भी रहना दुश्वार है—हिंदू और सिख वहा रह नहीं सकते। वे वहासे निकलनेके लिए गुरुद्वारा आए थे। तो गुरुद्वारापर हमला शुरू कर दिया, उनपर हमला हुआ, चद आदमी मारे गए, चद जख्मी हुए। इस तरहसे सिंधमें हुआ। हकूमत कहती है कि हालत जितनी जल्दी काबूमें की जा सकती थी, कर ली गई। ठीक है, लेकिन मैं इस चीजको इसलिए कहता हूं कि ऐसा होना ही नही चाहिए था। मै पाकिस्तानकी हकूमतको कहूगा कि या तो ऐसा होने नही देना चाहिए, नही तो हकूमत छोड देनी चाहिए। हा, ऐसा करनेसे कुछ दिन लुटेरोका राज कायम हो जाएगा, लेकिन पीछे

हालत सुधरने लगेगी। जो मै वहांकी हकूमतको कहता हू वही बात यहाकी हकूमतको भी कहता हू। मै हकूमतकी ऐसी बात नही सुनना चाहता कि लोग नही मानते है। मै कहूगा कि लोग नही मानते है तो आप हकूमत मत चलाइए। हकूमत अगर कहे कि मजबूरी है तो मै कहूगा कि मजबूर होनेकी क्या जरूरत है। थोड़ा यहा किया, थोड़ा वहा किया, मनको फुसला लिया कि सब चलता है। तो इससे काम बनता नही है, ऐसा मेरा तजुरबा है। हा, मै ऐसा मान सकता हू कि गाड़ी हमारी चल तो रही है चाहे वह एक ही कदम आगे गई हो। लेकिन आज तो वह पीछे जा रही है, यह खराब है। पाकिस्तानकी हकूमतको कहता हू तो यहाकी हकूमतको न कहू, यह बात नही हो सकती। मेरे लिए तो दोनो बराबर है।

अगर पाकिस्तानकी हकूमत इस तरह लोगोको मरने देगी तो उससे बेहतर है कि हकूमत चलाना छोड़ दे। सो नही होता तो हकूमतको भी मरना है। मै आप लोगोको भी बता देना चाहता हू कि इसके कारण आप दीवाने न बने। दुःखी है तो गुस्सेसे भरे है—गुस्सेके सिवा ऐसा बन नही सकते। इस गुस्सेको पीना इन्सानियत है। गुस्सेका जवाब गुस्सेसे दे और कहे कि कराचीके गुरुद्वारामें ऐसा हुआ तो हम भी मस्जिदोको ढा डालें, उनपर कब्जा कर ले, पीछे मुसलमानोको मार डाले, यह न्याय नही है। इस तरहसे बदला लेनेसे हकूमत रहती कहा है? हकूमतका काम इस तरहसे चलता नही है। ऐसा करनेसे आखिरमें हमे बिगडना होगा। हा, शरणार्थियोंके लिए इन्सान जितनी सहूलियतें पैदा कर सकता है, करना चाहिए, नही तो शर्मकी बात है। कराचीमें ऐसा हो गया, उससे न डरना है, न घबराहटमे पड़ना है और न गुस्सा करना है। उसका बदला हम ऐसे ले सकते है कि हम अच्छी तरहसे रहे। हम यहा ठीक तरहसे रहे, मुसलमानोको रखें और शरणार्थी सभ्यतासे रहे तो आज जो दर्द पैदा हो गया है उसको हम मिटा देनेवाले है, इसमे मुझे कोई शक नही है।

: २०२ :

८ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक भाई लिखते हैं कि मैंने हरिजनोंको शराबके बारेमें लिखा था। मैंने तो हरिजनोंके लिए ही नहीं, सबके लिए लिखा था। वे लिखते हैं कि क्या हरिजनोंको शराब छोड़ देनी चाहिए और पीछे फौजी पड़े है, धनिक पड़े है उनको क्या छोड़नेकी जरूरत नहीं है? सच्ची बात यह है कि यह प्रश्न पूछने लायक नहीं है। धनिक न छोड़े, फौजी न छोड़े तो क्या दूसरे भी न छोड़ें! कानून भी न हो कि शराब न पीए तो वह धर्म थोड़े हो जाता है। दूसरे पाप करें तो क्या हम भी पाप करें; ऐसा बन नहीं सकता है। वे पूछते हैं तो मैं कहूंगा कि इस तरहसे जो शराब पीते हैं उनको तो छोड़नी ही चाहिए। हरिजन हैं, मजदूर हैं वे इसे समझ नहीं सकते तो कानून बताता है कि मत पीओ। उनके पास आरामकी चीजें नहीं रहती हैं तो शराब पीकर दर्द दूर करना चाहते हैं। कंगालपन है उसको भी वे इसीसे भुलाना चाहते हैं। इस तरहसे उनके ऐसा करनेका कुछ सबब हो सकता है, लेकिन धनिक है, फौजी हैं उनको पीनेकी क्या जरूरत है? मैं धनिकोंको क्या समझा सकता हूं? फौजी कहें कि इसके बिना काम कैसे चल सकता है, लेकिन मैं तो फौजको मानता ही नहीं हूं तो फिर इसको क्या माननेवाला हूं! मेरे दोस्त भी पड़े हैं जो शराब नहीं पीते हैं। हमारे यहां सब पीते हैं, ऐसा नहीं है। सब फौजी पीते हैं ऐसा भी नहीं है। अंग्रेजोंमें भी ऐसे पड़े हैं जो शराब नहीं पीते। ऐसे थोड़ा है कि मैं चाहता हूं कि हरिजन ही छोड़ दें। मैं तो कहता हूं कि सबको छोड़ना चाहिए। कानूनकी बात तो सबके वास्ते है। कानून थोड़े कहता है कि धनिक पी सकते हैं और हरिजन नहीं।

अभी विद्यार्थियोंकी हड़तालकी बात करना चाहता हूं। सुनता हूं कि कांग्रेसके विद्यार्थी हड़तालमें शामिल नहीं होंगे। यह तो कम्यूनिस्ट विद्यार्थियोंकी हड़ताल है। विद्यार्थियोंमें सब होते हैं—कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, कांग्रेसी—इससे मेरा वास्ता नहीं है। मैं तो सबके लिए कहता हूं। कांग्रेसके

विद्यार्थी हड़ताल नही करते है तो वे धन्यवादके पात्र है। कम्यूनिस्ट हड़ताल कर सकते है, ऐसा थोड़ा है। जैसे शराबके बारेमें कहा है, वैसा यह भी है। काग्रेस क्या, मै तो सबको कहूगा कि उन लोगोंको ऐसा नही करना चाहिए। मुझको दर्द होता है कि कम्यूनिस्ट भाई ऐसा कर रहे है। कम्यूनिस्ट भाई होशियार होते है, वे देशकी सेवा करना चाहते है, लेकिन इस तरहसे देशकी सेवा नही हो सकती। फिर विद्यार्थी किसी दलका पक्ष क्यो लें—विद्यार्थियोका पक्ष एक है। विद्यार्थी तो विद्याभ्यास करते है सारे मुल्कके लिए—अपने कामके लिए नही, अपना पेट भरनेके लिए नही। अपना काम निकालनेका तो दूसरी तरहसे हो सकता है—पहले ऐसा होता था, आजतक ऐसा होता था, लेकिन अब तो बागडोर हमारे हाथमें आ गई है तो विद्यार्थी ज्यादा चाहिए और सच्चे विद्यार्थी चाहिए। उनको सबकी सेवा करनी चाहिए, विद्याभ्यास करना चाहिए, उनको उसको हजम करना चाहिए, उसपर अमल करना चाहिए। विद्यार्थियोंके लिए समाजवाद है नही; कम्यूनिज्म है नही, काग्रेस है नही—उसका एक काम है विद्याभ्यास करना, जिससे ज्ञानकी वृद्धि हो। हड़ताल उनके लिए निकम्मी है—यह सबके लिए घातक है।

एक प्रश्न आ गया है, अच्छा है। वे लिखते है कि आप तो बुरी वस्तुका त्याग करवाना चाहते है, आप भी करते है, यह अच्छी चीज है। तो वे कहते है कि आप पाकिस्तानमें जाकर क्यो नही करते? वहां सत्याग्रह क्यों नही चलाते? यहा तो काफी कह दिया, अब वहा तो जाओ। मैंने तो इसका जवाब दे दिया है। हां, सत्याग्रह करनेका जवाब नही दिया है। मैंने तो कह दिया है कि मैं किस मुहसे पाकिस्तान जा सकता हूं। यहां हम पाकिस्तानकी चाल चले तो कैसे बन सकता है!

ऐसा आप पूछते है तब जवाब देता हूं। मै पाकिस्तान तभी जा सकूगा जब हिंदुस्तानमे साफ हो, कहने लायक कुछ चीज नही हो। मुझे तो यहा करना या मरना है। दिल्लीके हिंदू, सिख पागल हो गए है। वे चाहते है कि यहांसे सब मुसलमानोको हटा दिया जाय, काफीको हटा भी दिया है। बाकी बचे है वे भी हटा दिए जाएं। ऐसेमें मेरा जाना फजूल है। वहां पाकिस्तानमे जितने हिंदू, सिख पड़े है वे आना चाहते है तो

सत्याग्रह कौन करे? आज सत्याग्रह कहा रहा? सत्याग्रह नही तो अहिंसा नही। अहिंसाको आज कौन मानता है? सब हिंसाको मानते है। सब फौज मागते है और जब यह मिले तब राजी हो सकते है, चैनसे बैठ सकते है, नही तो चैनसे नही बैठ सकते। आज ऐसा हो गया है कि ईश्वर-का स्थान फौजको मिल गया है। इसका मतलब यह है कि लोग हिंसाके पुजारी हो गए है। तो हिंसाके पुजारी होते हुए सत्याग्रह कैसे चलाए? मेरी सुनें तो अखबारोकी शकल बदल जाय। आज हमारे अखबार भी काफी गदगी फैला रहे है। आज तो हम सत्याग्रहको भूल गए है। वह हमेशा चलनेवाली चीज है, लेकिन चलानेवाले सत्याग्रही नही है।

फिर वह भाई कहते है कि जब पाकिस्तानसे इतने हिंदुओ और सिखोको यहा हटा लिया तब मुसलमानोके लिए जगह कहा है? जबतक उतने मुसलमानोंको यहासे हटा नही देते तबतक उनको कहा रखोगे? तो जितने हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आए है उतने मुसलमान तो यहासे वहा जाय। मैं ऐसा मानता हू कि करीब-करीब उतने मुसलमान तो चले गए। बाकी पडे है। पाकिस्तानसे सब हिंदू और सिखोको हटानेकी चेष्टा हो रही है, इसलिए यहासे सब मुसलमानोको हटाया जाय, यह पागलपन है। यहा मुसलमानोकी काफी तादाद रह जाती है। इसलिए मौलाना साहबने लखनऊमे सम्मेलन बुलाया। वहा, कहते है, कम-से-कम सत्तर हजार लोग आ गए थे—काफी तादाद हो गई। इस जमानेमे मुसलमानोकी इतनी बडी सभा नही हुई। उसके बारेमे भली-बुरी बातें निकलती है। उनको मै छोड देता हू। यहा जो मुसलमान पडे है उनके प्रति-निधि उसमे गए। क्या हम इन मुसलमानोको मार डालें या पाकिस्तान भेज दे? भेजे तो किस वास्ते? यह समझने लायक चीज है। आज मै यही कहूगा कि ऐसा कहना कि मुसलमानोको यहासे हटा दें, मुझको लज्जा-स्पद बात लगती है। मेरी जबानसे ऐसी चीज निकलनेवाली नही है। इसमे कोई बहादुरी नही है। तो हिंदुस्तानमें साम्प्रदायिकता फैल गई, ऐसा कहना पडेगा। ऐसा दुनियामें कहा नही है? है, तो भी मुझको परवाह नही है। दुनियाकी बुराइयोकी नकल थोडी करनी है, हमें नेकियोंकी नकल करनी है।

आज मेरे पास बहावलपुरके काफी लोग आ गए थे। मीरपुर काश्मीरके लोग भी आ गए थे। वे परेशान हैं। वे अदबसे बातें करते थे। वे बैठे थे, इतनेमे पडितजी आ गए। तो मैंने पडितजीको कहा कि इनकी बाते सुन लें। मीरपुरवाले पडितजीसे बातचीत कर गए। मेरी उम्मीद है कि कुछ-न-कुछ हो जायगा। पूरा हो जायगा, ऐसा मै नही समझता हू। आज लडाई छिड तो नही गई है, लेकिन एक किस्मकी चल रही है। तब ऐसा रास्ता निकालना और सबको एकाएक लाना हो नही सकता। जितना हो सकेगा, करेंगे, ऐसा मै मानता हू। इतना करनेपर भी अगर कोई न बच सका, न लाया जा सका तो क्या करें। हमारे पास, जितनी चाहिए, उतनी गाड़िया नही हैं। आज तो काश्मीरका रास्ता इतना नही खुला है कि लाखों आ-जा सके। है, थोड़ा-सा रास्ता है, उस रास्तेसे इतनी तादादमें लाना मुश्किल हैं।

बहावलपुरकी बात सुनने लायक है। वहाके जो लोग आज मुझसे मिले, उन्होने बताया तो मैंने कहा कि मेरेसे जितना हो सकेगा कोशिश करूगा। वे लोग कहते है और ठीक कहते हैं कि जो सूबेसे आए वे भी शरणार्थी और बहावलपुर रियासतसे आए वे भी शरणार्थी, लेकिन सूबेसे आए वे तो नौकरीके लिए दरखास्त कर सकते है—ऐसा सिलसिला हो गया है कि नौकरी वगैरा दिलानेके लिए नाम रजिस्ट्री करवाने है—तो हमारा नाम क्यो न उसके लिए दर्ज किया जाय? इतनी तकलीफ हम क्यो गवारा[1] करें? मै समझता हू कि ऐसा है नही और होना नही चाहिए। लेकिन वे लोग कहते है—अच्छे आदमी है तो मैंने कहा कि पता लगाऊगा। हकूमतमे ऐसे पडे हैं, उनके पास सब पहुच नही सकते हैं। मेरे पास तो सब आ सकते है। मै तो इसी कामके लिए पडा हू। मेरा दूसरा काम नही है। तो वे सब आ गए थे, सब अदबसे बातचीत करते थे, वहशियाना बात नही करते थे। वे कहते थे कि ऐसा नही है तो ठीक है; लेकिन हम इसको बर्दाश्त नही करेंगे। हम कुछ नही हैं; क्योंकि हम रियासतसे आए और खालसासे आते तो बात दूसरी थी। यह कहांका न्याय है?

[1] सहे।

सरहदी सूबा, पजाब, सिंघसे आते हैं उनकी दरखास्त ली जाती है, नही तो नही। मैंने कहा कि ऐसा हो नही सकता। अगर हुआ है तो गलतीसे हुआ है। सरदारने कहा कि ऐसा हो नही सकता और हुक्म भी यह निकाला तब भी नही होता है। है कि नही, मै पता लगाऊगा, लेकिन मुझको लगा कि इतना भी कह दू तो इतमीनान हो जायगा कि चलो, हमारा काम भी चलता है।

: २०३ :

९ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज बहावलपुरके मदिरके मुखिया मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझसे बताया कि वहा उस मदिरमे शरणार्थियोको किस तरह मारा गया। उन्होने कहा कि अब वहाके बचे हिंदुओको लानेके लिए कुछ प्रबध होना चाहिए। तो मैंने कहा कि एक इन्सानसे जितना हो सकता है कर रहा हू। आज हकूमत दो हो गईं तो दो राजा हो गए है, इसलिए इस राज्यको उस राज्यमे दखल देनेका ऐसा कोई हक नही है। आजका समय इतना नाजुक है कि लोगोंमें धैर्य होना चाहिए और लोगोको मरनेसे डरना नही चाहिए; क्योकि आज नही तो कल आखिर मरना ही है तो बहादुरीके साथ क्यों न मरें? (सत्याग्रही की तरह क्यों न मरें?)

एक भाईका पत्र आया है। वे कहते है कि आप बिड़ला-भवनमें है तो भी प्रार्थना तो होती ही है; लेकिन गरीब वहा नही जा सकते। पहले भगी बस्ती या वाल्मीकि-बस्तीमें रहते थे, उसमे गरीब भी जाते थे; लेकिन अब उनको बिडला-भवनमें जानका मौका नही मिलता। मेरा तो खयाल है कि मै जब यहां आया था तभी इसके बारेमे कह दिया था, लेकिन आज दुबारा कहनेकी आवश्यकता है। मै अबकी बार जब यहा आया उस समय मार-पीट हो रही थी। दिल्ली स्मशान-सी लगती थी। उस समय भगी-बस्तीमे शरणार्थी भी पड़े थे। फिर उस समय कहापर क्या

होगा कोई नही जानता था। तो सरदारने कहा कि हम तुमको वहां नहीं रखेंगे, बिडला-भवनमे रखेंगे, तो मै यहा आ गया। मैंने कहा कि मैने ऐसी कोई शपथ थोडी ले ली है कि मै हर हालतमें वही रहूगा। मुझको किसी जगह एक कमरा देते तो उससे गुजर हो नही सकती; क्योकि मेरे साथ दफ्तर रहता है, रसोई-घर रहता है, और भी लोग रहते हैं। भगी-बस्तीमे गरीबोंके मकान है, फिर उसमे स्कूल है, उसमें एक कमरा मिले तो काम चल नही सकता। इसलिए वहा कैसे जाऊ? मैं यह भी नही जानता कि आज वह खाली है या नही। लेकिन मैं समझता हू कि वहा रहनेका मेरा धर्म नही है। मै चला जाऊ पीछे शरणार्थी आए तो उनको कहां रखोगे—रखना तो है ही। मैं रहूगा तो कोई निकालेगा नही, निकाले तो अच्छा है। वे कह सकते हैं कि तुम भाग जाओ, यहा रहनेका तुम्हारा क्या अधिकार है, हम बाहरसे आए हैं। इसलिए मुझको अपनी मर्यादा समझनी चाहिए। मुझे वहा रहनेका शौक है, लेकिन शौक छोड़कर यहां पडा हू। फिर ऐसा नही है कि गरीब यहा नही आ सकते। ऐसी मनाही नही है, लेकिन मै मानता हू कि इतनी दूरसे नही आ सकते। वे अगर आना चाहते है तो पैदल ही आ सकते है, मोटरसे तो गरीब आ नही सकते। अमीर मोटरसे आ सकते है।

फिर आज मैं यहा पडा हू तो मुसलमानोंको तो कुछ मदद पहुचा सकता हू—उस कामके लिए मेरा यहां रहना बड़ा मुफीद है। मै यहां रहता हू तो हकूमतके लोगोसे जल्दी मिल सकता हू, क्योकि वे पासमे रहते हैं—वे मुझको नही बुलाते है, खुद आ जाते है, यह उनकी मेहरबानी है। वे लोग यहां दो मिनटमें आ जाते हैं। भगी-बस्ती जानेमे दस-पद्रह मिनट लगते है। इसलिए यहा पड़ा हूं। मुसलमान भाइयोको भी यहां आनेमें सुविधा है, वहा जानेमें डर रहता है। आज जो रह गए है उनको बचा ले तो अच्छा है। आज तो जिधर सुनता हू उधर ऐसा हो रहा है कि एकाएक लुटेरे निकल आते हैं और कोई आदमी बाइसिकलमें बैठा हो तो उसको उतार देते है और उसके पास जो कुछ पैसा, रुपया, घड़ी रहती है उसको ले लेते है। कोई मोटरमें रहता है उसको भी रोककर उसके पाससे सब छीन लेते है। हम आज ऐसे बन गए है। यह हमारे हिंदुस्तानके लिए शर्मकी बात है।

: २०४ :

१० जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

यह देखने लायक बात है कि आज हम कहातक गिर गए है। साधु होनेका, सयमका, गीता आदि पढनेका जो दावा करते है, वे इतना सयम क्यो न रखे ? उन्हे एक बार कहनेसे ही बैठ जाना चाहिए[1]। इतनी दलील भी क्यों ? आजकल प्रार्थना-सभामे आम तौरसे सब लोग इतनी शाति रखते है, वह अच्छा लगता है।

बहावलपुरके भाइयोकी भी ऐसी ही बात है। अपने दु खकी बात कहिए, फिर प्रार्थनामे शात रहिए। मुझसे किसीने कहा था कि बहावलपुर-वाले भाई आज हमला करनेवाले है। प्रार्थनामें चीखते ही रहेगे। मैंने कहा, ऐसा हो नही सकता। उनका नमूना सबके सामने रखता हू। उनके दु खका मै साक्षी हू। वे इतमीनान रखे कि वहाके सब हिंदू-सिख आ जायगे। नवाब साहबका वचन है—अगरचे मै नही जानता कि राजा लोगोके वचनपर कितना भरोसा रखा जा सकता है—पर नवाब साहब कहते है, "जो हो चुका सो हो चुका। अब यहापर हिंदुओ और सिखोको कोई दिक नही करेगा। जो जाना ही चाहेगे उन्हे भेजनेका इतजाम होगा। जो रहेगे, उन्हे कोई इस्लाम कबूल करनेकी बात नही कहेगा।" हो सकता है, वहा सब सही-सलामत हो। यहाकी हकूमत भी बेफिकर नही है। मै आशा रखता हू कि अभी वहा सब लोग आरामसे है। आप कहेगे, वे आज ही क्यों नही आते ? आपको समझना चाहिए कि पहले मुल्क एक था। अब हम दो हो गए है। वह भी एक दूसरेके दुश्मन। अपने देशमे परदेशी-से बन गए है। सो जो हो सकता है सो करते है। वहा तो सत्तर हजार हिंदू-सिख पडे है। सिंधमे और भी ज्यादा है। वे वहा सुरक्षित नही।

---

[1] भाषणसे पहले साधुके कपड़े पहने हुए एक भाईने जिद की कि वे अपना खत गांधीजीको पढ़कर सुनावेंगे। गांधीजीको काफी दलील करके उन्हें रोकना पड़ा। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने भाषण उसीसे शुरू किया।

कराचीसे एक तार आया है। वह मैंने यहा आनेसे पहले पढा। उसमे लिखते है कि अखबारोमे जो आया है, उससे बहुत ज्यादा नुकसान वहा हुआ है। आज ऐसा जमाना है कि हमे शाति और धीरज रखना है। हम धीरज खो दे, तो हम हार जाएगे। हार शब्द हमारे कोषमे होना ही नही चाहिए। उसके लिए यह जरूरी है कि गुस्सेमे न आवे। गुस्सेसे काम बिगडता है। ऐसे मौकेपर क्या करना चाहिए सो हमे सोचना है। मैं तो आपको वह बताता ही रहता हूं।

मेरे पास आज ईरानके एलची आए थे। वह यहांकी हकूमतके मेहमान है। वे मिलने आए और कहने लगे, "कि एक काम है। ईरान और हिंदमे बडी पुरानी दोस्ती रही। ईरानी और हिंदी दोनो आर्य है। हम तो एक ही है।" यह भी ठीक है। जेंदावस्ताको देखे, उसमे बहुत सस्कृत शब्द हैं। हमारा व्यवहार भी साथ-साथ रहा है। वे कहते है, "एशियामे आप सबसे बड़े है। आपकी बदौलत हम भी चमक सकते है। हम दिलसे एक होना चाहते है।" गुरुदेव वहा गए थे। वे ईरानको देखकर खुश हो गए। उन्होने कहा—हमारे ही लोग वहा रहते है।

ईरानके एलचीने कहा, ईरान और हिंदका सबध नही बिगड़ना चाहिए। मैंने कहा, कैसे बिगड सकता है? उन्होंने बबईका एक किस्सा सुनाया। वहां काफी ईरानी है। चायकी दूकान रखते है। वहा काफी हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई जाते है। उनकी चायमे कुछ खूबी है। वहा कुछ फसाद हुआ होगा। मै नही जानता। सुनता हू, कुछ ईरानी मारे गए। ईरानी मुसलमान तो है ही। ईरानी टोपी पहनते है। आज हम दीवाने बन गए है। किसीके दिलमे हुआ होगा कि वे मुसलमान है तो काटो उनको। अगर ऐसा हुआ है तो बुरी बात है। मैंने पूछा, वहाकी हकूमतके बारेमें क्या कुछ कहना है? उन्होने कहा, वहांकी हकूमत तो शरीफ है। उन्होंने जल्दीसे सब ठीक कर लिया। यहांकी हकूमत भी बडी शरीफ है, ऐसा वे कहते थे। यहां जो मुसलमान भाई है, उनके लिए गार्ड रखे गए है। उन्हें आदरसे रखते हैं। हकूमतसे हमे कोई शिकायत नही है। उन्होने कहा कि ईरानमे भी हिंदू, सिख, मुसलमान सौदागर सब मिल-जुलकर रहते हैं। हिंदसे बढ़ा-चढ़ाकर

खबरें जाती है। उससे आगे क्या होगा, सो पता नही। मगर हम इस बारेमे होशियार है।

एक भाई लिखते है—"अनाज वगैराका अकुश हटवा दिया और हट-वानेकी कोशिश करते है। कई लोग कहते है, यह अच्छा है। पर दरअसल ऐसा नही। मै आपको जताए देता हू।" मै इन भाईको जानता हू। मैने उन्हें लिखा है—आपने कहा तो अच्छा किया; पर मुझतक लिखकर ही मौकूफ रखेंगे तो हारेंगे। एक तरफसे मुझे इतने मुबारकवादीके तार आते है, उनको मै फेंक नही सकता। मै भविष्यवेत्ता नही और न मेरे दिव्यचक्षु है। जितना इन आंखोसे देख सकू, कानोंसे सुन सकू, वही मेरे पास है। मेरे हाथ, पाव, कान, आख, सब जनता है। आप अपने विचार सबसे कहे। धन्यवाद देनेवाले बहुत है, मगर मै दूसरा पहलू भी जानना चाहता हू। मै कहू इसलिए आप कोई बात न माने। अपनी आखोसे देखें सो करें; मेरे कहनेसे नही। २० महात्मा कहे तो भी नही। तजरबेसे गलती करके आप सीखेंगे। जो ठीक लगे सो करे। ऐसा करेंगे तभी आप आजादीको रख सकेंगे और उसके लायक बन सकेंगे।

: २०५ :

११ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक चीज आई है—वह करुणाजनक है। आघ्रसे दो खत आए है। एक तो बूढे बुजुर्गका है, मै उनको पहचानता हू। वह हमेशा कहांसे खत लिखें, लेकिन इस वक्त लिखा। दूसरा खत एक नौजवान भाईका है, उनको मै नही पहचानता हू। मेरे पास नाम दोनोंके है; लेकिन नामको आप जानते नही है तब देनेसे क्या फायदा। दोनोका मतलब यह है कि जबसे पद्रह अगस्त आया है तबसे लोगोंके दिलमे ऐसा आ गया है कि अभी हमारा क्या है। अंग्रेजोका डर था वह रहा नही, सजाका डर नही है, अब किसीका डर नहीं है। भगवानका डर कौन

पहचानता हूं। आंध्रमें तो लोग तगड़े रहते हैं। जब ऐसे रहते हैं और आजाद हो जाते हैं तब काबूके बाहर चले जाते हैं। तो अब ऐसे बाहर चले गए हैं कि पेट भरनेका काम करते हैं, दूसरा नही करते। एक भाई लिखते हैं कि कांग्रेसमें ऐसे-ऐसे लोग थे, जिनका कोई स्वार्थ नही था–हिंदुस्तानको आजाद करनेके लिए बलिदान कर दिया तो क्या इस कारण किया? आज कांग्रेस गिरती जा रही है। कांग्रेसमें जितने हैं वे सब असेम्बलीके सदस्य बनते हैं। सदस्य बनकर देशका काम नही करते, अपना करते हैं। सदस्य बनते हैं तो कम पैसे नही मिलते—मैं भूल गया हूं कि कितना मिलता है, लेकिन काफी मिलता है जिससे सदस्य बननेवालेका पेट भर जाता है। तो वे लिखते हैं कि इस तरहसे पैसा खाते हैं। इतना ही नही, सिविल कर्मचारियोंको डराते हैं। कहते हैं कि नही मानोगे तो तुम्हारा ऐसा हो जायगा। बेचारे पेट भरनेके लिए तो काम करते हैं, क्या करें। इस तरहसे दोनों तरफसे बिगड़ते हैं—हमारे दफ्तरमें पड़े हैं वे बिगड़ते हैं और प्रतिनिधि कहलाते हैं वे बिगड़ते हैं। लोगोंको समझना चाहिए कि किसको अपना मत दे, लेकिन आज तो ऐसा है नही। वे दु:खसे यह बात लिखते हैं—दोनों ऐसा लिखते हैं। बुजुर्ग आदमीको बुरा लगता है तो वे कहते हैं कि यहां तुम रहो कुछ दिन और देखो–यह अच्छा लगता है। मैं आंध्र क्या, सबके बीच रहा हूं। मैं नही जानता हूं कि ऐसा नही है। यह आंध्रका है, या मद्रासका है या किसी भी प्रांतका है, मुझसे छिपा नही है। मेरे लिए तो सब हिंदुस्तानके हैं। हिंदुस्तानमें पड़े हैं, फिर अलग-अलग भाषा है तो उसमें क्या। कोई कहे कि मैं तो आंध्रका हू, देशसे मेरा वास्ता नही हो सकता है। तो मुझको भी उनसे वास्ता नही हो सकता। तो मैंने सोचा कि इतना कह तो दूं। मेरी आवाज वहांतक पहुंचे तो अच्छा है, जिससे वे समझ जायं कि किस तरहसे काम करें।

वे लिखते हैं कि इस तरहसे हमारा दु:ख है और यह गंदगी हमारेमें फैल गई है। इसको मिटानेके लिए ज्यादा भेजें तो ज्यादा गंदगी होती है। दूसरा वे कहते एक जगह एक हजार भेजने है तो हजारमें गंदगी फैलती है, यह मेरी निगाहमें ऐसा है कि एक ही आदमीको गंदा करने दो, उसको हटानेमें दुश्वारी नही होती है, लेकिन अगर एकके बदलेमें एक हजार भेजें

तो ज्यादा बिगडता है। तो वे लिखते है कि जितने सदस्य है उन्हे कम तो करो, इससे कम गदगी होगी---पीछे ज्यादा गदे आदमी जा नही सकते---वे सच्चे प्रतिनिधि तो बनते नही है, वे पेट भरते है, यह बुरी बात है। पीछे काग्रेसपर कब्जा करनेकी कोशिश करते है। फिर और दूसरी बातें पड़ी है, कम्यूनिस्ट है, समाजवादी है, ऐसे लोग पडे है। वे भी आपसमे ऐसा कहते है कि हम बडे हो गए, हम सारे हिंदुस्तानपर कब्जा कर लेंगे। तो हिंदुस्तान किसपर कब्जा करेगा। काग्रेसमे भी यही है, समाजवादियोंमें भी यही है, कम्यूनिस्टमे भी यही है, तो मैं सबसे कहूगा कि हम हिंदुस्तानके बने, हिंदुस्तान हमारा न बने। हिंदुस्तान एक-एकका बने तो हिंदुस्तान कहा जाय। इसलिए हिंदुस्तानको अपनाते है तो अपना पेट भरनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोंको पैसा देनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोको नौकरिया देनेके लिए नही। मैं तो कहूगा कि यह काम हमारा पहले दर्जेका होना चाहिए, नही तो हमारा काम बिगड जाता है।

बहने बातें कर रही है, यह बुरी बात है। ऐसा करना है तो यहां आकर भाषण दें। मै जो यह कह रहा हू उसे शायद सुनती ही नही है---सुननेके लिए यहा थोडे आती है। इतवार है तो गुनाह हो गया। सब आ जाते है, सुननेको नही, जिसको कुछ काम नही यहा आकर बैठ जाते है।

: २०६ :

मौनवार, १२ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

सेहत सुधारनेके लिए लोग सेहतके कानूनोंके मुताबिक उपवास करते है। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है तब प्रायश्चित्तके रूपमें भी उपवास किया जाता है। इन उपवासोमे उपवास करनेवालेको अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नही, मगर ऐसा मौका भी आता है जब अहिंसाका पुजारी समाजके किसी अन्यायके सामने विरोध प्रकट करनेके लिए उपवास करनेपर मजबूर हो जाता है। वह

ऐसा तब ही करता है, जब अहिंसाके पुजारीकी हैसियतसे उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नही रह जाता। ऐसा मौका मेरे लिए आ गया है।

जब ९ सितबरको मैं कलकत्तेसे दिल्ली आया था तब मैं पश्चिमी पजाब जा रहा था। मगर वहा जाना नसीबमें नही था। खूबसूरत रौनकसे भरी दिल्ली उस दिन मुर्दोंके शहरके समान दीखती थी। जैसे ही मैं ट्रेनसे उतरा, मैंने देखा कि हरएकके चेहरेपर उदासी थी। सरदार जो हमेशा हँसी-मजाक करके खुश रहते है, वे उस उदासीसे बचे नही थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नही था। वे स्टेशनपर मुझे लेनेके लिए आए थे। उन्होने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि यूनियनकी राजधानीमें झगडा फूट निकला है। मै फौरन समझ गया कि मुझे दिल्लीमे ही करना या मरना होगा। मिलिटरी या पुलिसके कारण आज दिल्लीमे ऊपरसे शाति है, मगर दिलके भीतर तूफान उछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। इसे मैं अपनी करनेकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति नही समझता, जो ही मुझे मृत्युसे बचा सकती है—मृत्युसे, जिसके समान दूसरा मित्र नही। मुझे बचानेके लिए पुलिस और मिलिटरीके द्वारा रखी हुई शाति ही बस नही। मै हिंदू, सिख और मुसलमानोमे दिली-दोस्ती रखनेके लिए तरस रहा हू। कल तो ऐसी दोस्ती थी। आज उसका अस्तित्व नही है। यह ऐसी बात है कि जिसको कोई हिंदुस्तानी देशभक्त, जो इस नामके लायक है, शातिसे सहन नही कर सकता।

मेरे अदरसे आवाज तो कई दिनोसे आ रही थी, मगर मैं अपने कान बंद कर रहा था। मुझे लगता था कि कही यह शैतानकी यानी मेरी कमजोरीकी आवाज तो नही है। मैं कभी लाचारी महसूस करना पसद नही करता। किसी सत्याग्रहीको नही करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरोकी तलवारकी जगह लेता है।

जो मुसलमान भाई मुझसे मिलते रहते है उनके इस सवालका कि 'वे अब क्या करें' मेरे पास कोई जवाब नही। कुछ समयसे मेरी यह लाचारी मुझे खाए जा रही है। उपवास शुरू होते ही यह मिट जाएगी। मै पिछले तीन दिनसे इस बारेमे विचार कर रहा हू। आखिरी निर्णय बिजलीकी तरह मेरे सामने चमक गया है और मैं खुश हू। कोई भी इन्सान, जो पवित्र

है, अपनी जानसे ज्यादा कीमती चीज कुरबान नही कर सकता। मै आशा रखता हू और प्रार्थना करता हू कि मुझमे उपवास करनेके लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबूके साथ या इन चीजोके बगैर पानी पीनेकी मै छूट रखूगा। उपवास कल सुबह पहले खानेके बाद शुरू होगा।

उपवासका अर्सा[1] अनिश्चित है और जब मुझे यकीन हो जाएगा कि सब कौमोके दिल मिल गए है, और वह बाहरके दबावके कारण नही; मगर अपना-अपना धर्म समझनेके कारण, तब मेरा उपवास छूटेगा।

आज हिंदुस्तानका मान सब जगह कम हो रहा है। एशियाके हृदयपर और उसके द्वारा सारी दुनियाके हृदयपर हिंदुस्तानका रामराज्य आज तेजीसे गायब हो रहा है। अगर इस उपवासके निमित्त हमारी आखे खुल जाय तो यह सब वापिस आ जायगा। मै यह विश्वास रखनेका साहस करता हू कि अगर हिंदुस्तानकी आत्मा खो गई तो तूफानोसे दुःखी और भूखी दुनियाकी आशाकी आखकी किरणका लोप हो जायगा।

कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई है तो—मुझपर गुस्सा न करें। कई ऐसे मित्र है, जो मनुष्य-हृदयको सुधारनेके लिए उपवासका तरीका ठीक नही समझते। वे मेरी बर्दाश्त करेंगे और जो आजादी अपने लिए चाहते है, वह मुझे भी देगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है। मुझे किसी औरकी सलाहके बिना यह निर्णय करना चाहिए। अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूलका पता चल जाता है तो मै सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूगा और अपना कदम वापस लूगा। मगर ऐसी सभावना बहुत कम है। अगर मेरी अतरात्माकी आवाज स्पष्ट है, और मै दावा करता हू कि ऐसा है, तो उसे रद नही किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस बारेमे दलील न की जाय और जिस निर्णयको बदला नही जा सकता, उसमे मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिंदुस्तान-पर या कम-से-कम दिल्लीपर, ठीक असर हुआ तो उपवास जल्दी भी छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देरसे छूटे या कभी भी न छूटे, ऐसे नाजुक मौकेपर किसीको कमजोरी नही दिखानी चाहिए।

---

[1] अवधि।

मेरे जीवनमे कई उपवास आए है। मेरे पहले उपवासोके वक्त टीकाकारोंने कहा है कि उपवासने लोगोपर दवाव डाला और अगर मै उपवास न करता तो जिस मकसदके लिए मैंने उपवास किया, उसके स्वतत्र गुण-दोषके विचारसे निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है तो विरुद्ध निर्णयकी क्या कीमत है। शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्मपालनकी तरह है। उसका फल अपने आप मिल जाता है। मै कोई परिणाम लानेके लिए उपवास नही करना चाहता। मै उपवास करता हू, क्योकि मुझे करना ही चाहिए।

मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शात चित्तसे इस उपवासका तटस्थ वृत्तिसे विचार करे और यदि मुझे मरना ही है तो मुझे शातिसे मरने दें। मै आशा रखता हू कि शाति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिंदुस्तानका, हिंदू-धर्मका, सिखधर्मका और इस्लामका बेबस बनकर नाश होते देखना इसकी निस्वत मृत्यु मेरे लिए सुदर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तानमे दुनियाके सब धर्मोके लोगोको समान हक न मिले, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तानकी नकल करे तो दोनोका नाश निश्चित है। उस हालतमे इस्लामका तो हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें ही नाश होगा—बाकी दुनियामें नही—मगर हिंदू-धर्म और सिख-धर्म तो हिंदुस्तानके बाहर है ही नही।

जो लोग दूसरे विचार रखते है, वे मेरा जितना भी कडा विरोध करेंगे, उतनी मै उनकी इज्जत करूगा। मेरा उपवास लोगोकी आत्माको जाग्रत करनेके लिए है, उसे मार डालनेको नही। जरा सोचिए तो सही, आज हमारे प्यारे हिंदुस्तानमे कितनी गंदगी पैदा हो गई है। तब आप खुश होंगे कि हिंदुस्तानका एक नम्र पूत, जिसमे इतनी ताकत है, और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गदगीको मिटानेके लिए ऐसा कदम उठा रहा है, और अगर उसमे ताकत और पवित्रता नही है तब वह पृथ्वीपर बोझ-रूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाए और हिंदुस्तानको इस बोझसे मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सबके लिए अच्छा है। मेरे उपवासकी खबर सुनकर लोग दौडते हुए मेरे पास न आवे। सब अपने आसपासका वातावरण सुधारनेका प्रयत्न करें तो बस है।

: २०७ :

१३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरी उम्मीद है कि मैं पंद्रह मिनटमें जो कहना है, कह सकूंगा। बहुत कहना है, इसलिए शायद कुछ ज्यादा समय भी लगे।

आज तो मैं यहां (प्रार्थना-सभामें) आ सका, क्योंकि जब कोई फाका करता है तब पहले दिन—चौबीस घंटेतक—तो किसीको कुछ लगना न चाहिए। मैंने तो आज साढ़े नौ बजे खाना शुरू किया। उसी समय लोग आते रहे, बात करते रहे तो खाना ग्यारह बजे पूरा कर सका। सो आजके दिनकी तो कीमत नहीं। इसलिए आज प्रार्थना-सभामें आ सका हूं तो किसीको आश्चर्य नहीं होना चाहिए। आज तो आ-जा सकता हूं, बैठ सकता हूं और सब काम भी किया है। कलसे डर है। मैं यहां आऊं और फिर न बोलूं, इससे अच्छा तो वहीं पड़ा रहकर विचार कर सकता हूं। आखिर भगवानका नाम लेना है तो वहीं लूंगा। कलसे आपके सामने प्रार्थनामें आना मेरे लिए मुश्किल मालूम होता है। मैं आना चाहूं और न आ सकूं, लेकिन प्रार्थना आप सुनना चाहते हैं तो आप आ सकते हैं। लड़कियां तो प्रार्थना करने आएंगी— सब नहीं तो एक आ जायगी। आप प्रार्थना तो कर सकते हैं। मेरे यहां आनेकी आशासे तो आपको निराशा हो सकती है।

मैंने उपवास किया तो है, लेकिन कई पूछते हैं कि आप क्या कर रहे हैं? मुसलमानने गुनाह किया, हिंदूने गुनाह किया या सिखने गुनाह किया? किसने गुनाह किया? फाका कबतक चलनेवाला है? ठीक है, जो पूछते हैं कि क्या इल्जाम हमपर है? मैं कहता हूं कि इल्जाम किसीपर नहीं है। मैं इल्जाम लगानेवाला कौन हूं? हां, मैंने सुनाया तो कि हम गुनहगार बन गए हैं, लेकिन कोई एक आदमी गुनहगार थोड़ा है! हिंदू मुसलमानको हटाते हैं तो अपने धर्मका पालन नहीं करते और आज तो हिंदू और सिख दोनों साथ करते हैं। लेकिन मैं सब हिंदुओं या सब सिखोंपर भी इल्जाम नहीं लगाता हूं, क्योंकि सबने थोड़े किया।

यह समझने लायक बात है। न समझे तो मेरा काम नही होगा और फाका भी बद नही होगा। अगर मैं अपनेको जिंदा नही रख सका तो इसका इल्जाम किसीपर नही है। मैं नालायक सिद्ध होता हू तो ईश्वर उठा लेगा। मुझको उठा ले तो कौन-सी बडी बात है ? तो मुझसे पूछते है कि इसका मतलब यह हुआ कि तुम मुसलमान भाईके लिए करते हो ? ठीक कहते है। मै कबूल करता हू कि मैंने उनके लिए तो किया। क्यो ? क्योंकि आज मुसलमान यहा तेजी[1] खो बैठे है—हकूमतका एक किस्मका सहारा था कि इतनी जगह मुसलमानोकी है, मुस्लिम लीगकी भी यहां चलती है, वह अब रही नही। आज यहा मुस्लिम लीग नही रही, मुस्लिम लीगका सहारा सच्चा नही है— पीछे लडाई करते है, यह बात दूसरी है— बाकी उनकी हकमत नही रही। लीगने दो टुकडे करवा दिए। इसीलिए दो हिस्से बन गए। इसके बाद भी मुसलमान यहां रहते है। मेरा तो हमेशा ऐसा मत रहा है कि जो थोड़े रहते है, उनकी मदद की जाय। ऐसा करना मनुष्यमात्रका धर्म है।

यह आत्म-शुद्धिका उपवास है तो सबको शुद्ध होना चाहिए। सबको शुद्ध होना ही नही है तो मामला बिगड जाता है। सबको शुद्ध होना है तो मुसलमानको भी होना है। सबको साफ-सुथरा और शुद्ध बन जाना है और मुसलमान कुछ भी करे, उनका कोई दोष नही निकालना है। आत्म-शुद्धिका उपवास इस तरहसे नही हो सकता। अगर मै कहूं कि मैंने किसीके सामने गुनाह किया तो वह प्रायश्चित्त है। जिसके सामने हम गुनाह कबूल करते है वह प्रायश्चित्त है।

मै जब कहता हू तब मुसलमानकी खुशामद करने या किसी और दूसरेकी खुशामद करनेके लिए नही कहता हू। मैं तो अपनेको राजी रखना चाहता हू। इसका मतलब यह है कि मै ईश्वरको राजी रखना चाहता हू। मै ईश्वरका गुनहगार नही बनना चाहता। मै तो कहूगा कि मुसलमान-को भी शुद्ध बनना है और यहा रहना है। बात ऐसी है कि चुनावमें—सही हो या गलत— हिंदू-सिखने मुस्लिम लीगको मान लिया, उसके पहले भी

---

[1] (गुज०) हिम्मत, उत्साह।

मानते थे और कहते भी थे। मैं उसके इतिहासमें नही जाऊगा। इसके बाद देशके हिस्से हो गए— उसके पहले दिलके हिस्से हो गए। उसमें मुसलमानोने भी गलती की। सब गलती उन्हीकी थी, ऐसी बात नही है। हिंदू, सिख, मुसलमान—तीनो गुनहगार थे। अब तीनों गुनहगारोंको दोस्त बनना है। इन तीनोंके बीचमें एक चीज पटी है। वह है ईश्वरको सब मानें, शैतानको नही, तो यह काम बन सकता है। मुसलमान भी काफी पडे है, जो शैतानकी पूजा करते है, खुदाकी नही। काफी हिंदू भी शैतान-राक्षसकी पूजा करते है, सिख भी गुरु नानक और दूसरे गुरुओकी पूजा नही करते— ऐसे हम बन गए है। हम तो धर्मके नामपर अधर्मी बन गए। अगर हम तीनो धर्म-पथपर चलें तो किसी एकको डरनेकी आवश्यकता नही है।

मैंने मुसलमानोंके नामसे उपवास शुरू किया है, इसलिए उनके सिरपर जबरदस्त जिम्मेदारी आती है। क्या जिम्मेदारी आती है? उनको यह समझना है कि हम हिंदू सिखके साथ भाई-भाई बनकर रहना चाहते है, इसी यूनियनके है— पाकिस्तानके नही सही— हम वफादार बनकर रहना चाहते है। मैं यह नही पूछता हू कि आप वफादार है या नही? पूछकर क्या करना है! मैं तो कामोसे देखता हू।

पीछे सरदारका नाम आ जाता है। वे कहते है कि सरदारको हटा दो, तुम अच्छे हो। पीछे सुनाते है कि जवाहर भी अच्छा है। तुम हकूमतमें आ जाओ तो हकूमत अच्छी चले। सब अच्छे हैं, सरदार अच्छे नही है। तो मैं मुसलमानोसे कहूगा कि मुसलमान ऐसा कहेंगे तो कोई बात चलनी नही है। क्यों नही? क्योंकि आपका हाकिम वह मन्त्रिमडल है। हकूमतमें न अकेला सरदार है और न जवाहर है। वे आपके नौकर है। उनको आप हटा सकते है। हा, ऐसा है कि सिर्फ मुसलमान तो हटा नही सकते हैं, लेकिन इतना तो करें कि सरदार जितनी गलती करते है— लोगोमें आपस-आपसमें बात करनेसे निपटता नही है— उनको बताओ। ऐसा नही कि उन्होने यह बात कही, वह बात कही, लेकिन उन्होंने किया क्या, यह बताओ। मुझको बता दो। उनसे मैं मिलता रहता हू और सुनता भी हूं तो मैं कह दूंगा। वही जवाहर, वही सरदार दोनों हकूमत चलाते है।

जवाहर तो उनको निकाल सकते है, लेकिन ऐसा नही करते है तो कुछ है। वे उनकी तारीफ करते है। फिर मन्त्रि-मडल है, वह हकूमत है। सरदार जो कुछ करता है उसके लिए सारी हकूमत जवाबदार है। आप भी जवाबदार है, क्योकि वे आपके नुमायदे है। इस तरहसे हमारा काम चलता है। इसलिए मै कहूगा कि मुसलमानोको बहादुर, निर्भय बनना है। उसीके साथ खुदा-परस्त बनना है। वे ऐसा समझे कि हमारे लिए लीग नही है, काग्रेस नही है, गाधी नही है, जवाहर नही है, कोई नही है, खुदा है। उसके नामपर हम यहा पडे है। मै चाहता हू कि हरएक मुसलमान इस तरहका बने। हिंदू, सिख चाहे कुछ भी करते है, आप बुरा न माने। मै आपके साथ पडा हू। मै आपके साथ मरना या जिंदा रहना चाहता हू। मै मरनेकी क्या कोशिश करनेवाला हू ? मै करूगा या मरूगा। अगर आप लोगोको साथ नही रख सकता हू तो मेरा जीना निकम्मा बन जाता है। इसलिए मुसलमानपर बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। इसे आप भूले नही। ऐसी बात नही करता कि मै मुसलमानकी गलती न निकालू। क्यों न निकालू ?

सरदार सीधी बात बोलनेवाले है। वे बोलते है तो कडवी लगती है। वह सरदारकी जीभमे है। मैने उनसे कहा कि आपकी जीभसे कोई बात निकली कि काटा हो गई। तो उनकी जीभ ही ऐसी है कि काटा है, दिल वैसा नही है। उसका मै गवाह हू। उन्होने कलकत्तेमे कह दिया, लखनऊमें कह दिया कि सब मुसलमानोको यहा रहना है, रह सकते है। साथ ही मुझको यह भी कहा कि उन मुसलमानोका एतबार नही करता हू, जो कलतक लीगवाले थे और अपनेको हिंदू-सिखका दुश्मन मानते थे— वे जब कलतक ऐसे थे तब आज एक रातमे दोस्त कैसे बन सकते है ? पीछे ऐसा है कि लीग रहेगी तो वे लोग किसकी मानेंगे— हमारी हकूमतकी या पाकिस्तानकी ? लीग अभी भी वैसा ही कहती है तो उनको शक होता है। उनको शक करनेका अधिकार है। सबको शक करनेका अधिकार है। सरदारने जो कहा है उसका सीधा अर्थ निकाल ले तो काम बन जाता है। जैसे कोई मेरा भाई है, लेकिन उसपर शक है तो क्या करू ? शक साबित हो तब काटू, यही मै कर सकता हू। लेकिन मै पहलेसे ही भाईकी बुराई करू, ऐसा कैसे हो सकता

है ? वे कहते है कि हमारे दिलमें आज मुस्लिम लीगके मुसलमानोंके बारेमें एतबार नही है, उनपर कैसे भरोसा रखे ? मुसलमान सबूत दें कि वे ऐसे नही है। ऐसा करे तो सब अंजाम पहुच जाता है। पीछे मुझे यह कहनेका हक मिल जाता है कि हिंदू, सिख क्या करें। इस यूनियनमें सरदार क्या करे, जवाहर क्या करे, उसमें कोई भी क्या करे, मैं क्या करू ?

इन लडकियोने अभी जो गीत सुनाया है वह गुरुदेवका प्रसिद्ध गीत है। नोआखालीमें पैदल चलते थे तब इस गीत[1] को गाते थे। उसमें एक बात है। अकेला जब कोई आदमी चलता है तो किसीको कैसे बुलाते है आओ ऐ भाई, आओ ऐ भाई, मदद तो दे दो। कोई नही आता है, अधेरा है तो गुरुदेव कहते थे कि अकेला चले तो भी क्या, क्योकि उसका एक साथी— ईश्वर तो साथ है ही। मैंने आज लडकियोसे इस गीतको गानेको कहा तो गा दिया, नही तो यहा बगाली गीत क्या गाना था ! हिंदुस्तानी चलता था। उसमें बड़ा गुण पडा है।

---

[1]

यदि तोर डाक शुने केउ न आसे तबे एक्ला चलो रे,
एक्ला चलो, एक्ला चलो, एक्ला चलो रे॥
यदि केउ कथा न कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि सबाई थाके मुख फिराये, सबाई करे भय—
तबे परान खुले
ओ तुई मुख फूटे तोर मनेर कथा, एक्ला बोलो रे।
यदि सबाई फिरे जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि गहन पथे जाबार काले, केउ फिरे ना चाय—
तबे पथेर कांटा
ओ तुई रक्तमाखा चरनतले एक्ला दलो रे।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि झड़ बादले आंधार राते दुआर देय घरे—
तबे वज्रानले

तो मैंने कहा कि आज इसे गाओ। गुरुदेवका यह प्रिय भजन है। तो मैं कहूंगा कि अगर हिंदू-सिख ऐसा नही बनते है तो सच्चे नही हैं। उनमे इतनी बहादुरी नही होती कि थोडेवालोको भी नही रहने दोगे—क्या मारोगे-पीटोगे— मारोगे नही, पीटोगे नही, लेकिन ऐसी हवा पैदा कर दो कि सब मुसलमान जानेको मजबूर हो पाकिस्तान जाय, तो काम कैसे बन सकता है ? इसलिए कहता हू कि हिंदू-सिखको यहातक बहादुर बनना है कि पाकिस्तानमे मुसलमान चाहे कुछ भी करे, चाहे सभी हिंदू और सिखोको मार डाले तो भी यहा ऐसा न हो। मैं वहातक जिंदा रहना नही चाहता कि पाकिस्तानकी नकल हो। मैं जिंदा रहूंगा तो सब हिंदू, सिखको कहूंगा कि एक भी मुसलमानको न छूवे, एक भी मुसलमानको मारना बुजदिली है। हमें तो यहा बहादुर बनना है, बुजदिल नही।

फाका छूटनेकी शर्त यह है कि दिल्ली बुलद हो जाय। अगर दिल्ली बुलद हो जाती है तो सारे हिंदुस्तान ही क्या, पाकिस्तानपर भी

आपन बुकेर पांजर ज्वालिये निये एक्ला जलो रे।

अर्थात्—

यदि तेरी पुकार सुनकर कोई नहीं आता तो तू अकेला ही चल !
अकेला चल, अकेला चल, अकेला ही चल !
यदि कोई बात नही करता, अरे, अरे, ओ अभागे !
यदि सभी मुंह मोड़े रहते हैं, सभी डरते हैं,
तो दिल खोल कर तू अपने मनकी बात अकेला ही कह।
यदि तेरे सभी लौट जायं, अरे, अरे, ओ अभागे !
यदि गहन पथमें जाते समय कोई तेरी ओर फिर कर न देखें।
तो राहके कांटोको
लोहू लुहान पैरोसे अकेले ही दल,
यदि कोई रोशनी नही दिखाता
यदि आंधी पानी और अंधकार भरी रात में कोई घरका दरवाजा बंद कर देता है तो वज्राग्नि से अपने हृदय-पंजर को प्रज्वलित करके तू अकेला ही जल।

असर पडेगा। अगर दिल्ली ठीक हो जाती है और यहा कोई मुसलमान भी अकेला घूम सकता है तो मेरा फाका छूट जाता है। इसका मतलब यह है कि दिल्ली पायातख्त है। सब दिन यह हिंदुस्तानका पायातख्त रही है। दिल्लीमे सब ठीक नही होता है तो सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें ठीक नही हो सकता। यहा कहे कि हम भाई-भाई बन गए है, यहा हिंदू, मुस्लिम, सिख सब एक-दूसरेसे मिलते-जुलते है। पीछे चाहे सुहरावर्दी साहब हो—गुडोके सरदार माने जाते है तो उससे मुझको क्या—अब वह गुडा बने तो गोलीसे उडा दे। सुहरावर्दीको मै यहा क्यो नही लाता हू ? क्योकि डर है कि उनका कोई अपमान न कर दे। अगर कोई उनका अपमान करता है तो मेरा भी अपमान होगा। आज ऐसा थोडा है कि वे दिल्लीकी गलियोमे घूम सकते है। घूमेगे तो काट डाले जायगे। मै तो कहूगा कि उन्हे अधेरेमे भी घूमनेकी आजादी रहनी चाहिए। ठीक है कि कलकत्तेमे मुसलमानोपर आ पडी तो किया, लेकिन बिगाडना चाहते तो बिगाड सकते थे— वे बिगाडना नही चाहते थे। कलकत्तेमें जिस चीज-पर मुसलमान कब्जा लेकर बैठ गए थे उनको उन्होंने खीच-खीचकर निकाला और कहा कि मै प्रधान-मत्री था, ऐसा कर सकता हू। मुसलमानोने जिनपर कब्जा किया था वह हिंदुओ और सिखोका था, तो भी उन्होने किया। तो मै कहूगा कि यहा असली शांतिके लिए एक दिनके बदले एक महीना लगे तो क्या, मेरा उपवास बीचमे ही छुडवानेके लिए कोई ऐसा काम न करे। इससे सारा हिंदुस्तान तो बच जाता है। आज तो गिरा हुआ है। ऐसा करें तो हिंदुस्तान ऊचा जानेवाला है।

तो मै यही चाहता हू कि हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान जो हिंदुस्तानमें पडे है, यही रहे। हिंदुस्तान ऐसा बने कि किसीके जान-मालको नुकसान न पहुचे। तब हिंदुस्तान ऊचा होगा।

: २०८ :

१४ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

कल तो मैने आपको बताया था कि आज मैं यहा आ सकूगा या नही, इसमे शक है। हो सका तो आज आ गया। कल-परसो ऐसे दिन आनेवाले है कि मै घूम नही सकूगा। डाक्टर तो ऐसे है कि आजसे ही मनाही करते है। लेकिन मैं तो डाक्टरोके हाथमे नही हू, ईश्वरके हाथमे पडा हू। मुझे ऐसा मोह नही है कि जिदा रहू तो ठीक है। जिदा रखेगा तो वही रखेगा और मारेगा तो वही मारेगा। मेरी प्रार्थना है कि मेरी अटल श्रद्धा कायम रहे और उम्मीद करता हूं कि उस श्रद्धामे कोई विघ्न न डाले। आज ऐसा हो गया है कि आदमी दुर्बल पडा है। कहता है कि ईश्वर कहा है? ऐसे दुर्बल आदमी पडे है। तो मैं कहता हूं कि सब सबल बनें, इर्द-गिर्द सबल बनें। तभी आदमी आपत्तिसे निकल सकता है। तो मैंने अपनी रामकहानी कह दी।

मैं तो आज आपको दो-चार चीज कह देना चाहता हूं। सचमुच मैंने अग्रेजीमे तो लिख डाला है या लिखा दिया है। पीछे ऐसा था कि दिल कैसे चलेगा। नही जानता था। ताकत नही हो तो तर्जुमा करके सुना देगे। ऐसा हो सकता था। पीछे मैंने सोचा कि मै सुना दू तो अच्छा है। यह आपके लिए ही नही है। इसे रेडियोके जरिये सारे हिंदुस्तानके लाखो आदमी सुन लेते है। वे सुनना चाहते है कि मैं क्या कहता हू, मेरी आवाज कैसी है। मैं तो प्रेमके बसमे हू। तो मुझको लगा कि आज भी मेरी आवाज सुन लें तो अच्छा है। मै ऐसा मानता हू कि ३६ घटेका उपवास तो कामकी चीज है — शरीरको स्वच्छ करता है। इतनेसे हानि किसीको नही पहुचती है। हां, यह ठीक है कि भविष्यके लिए ताकतको इकट्ठा रखना है, लेकिन वह तो भगवान करा लेगा।

मेरे पास काफी तार आए है, मुसलमानोंके भी काफी तार आए है हर जगहसे। हिंदुस्तानके बाहरके भी काफी तार आए है। तो मैंने प्यारेलालको कह दिया कि उनमेंसे कामके निकालो। सबको छपवाना थोड़े

है। उससे फायदा क्या ? कितने ही ऐसे तार आए है। एक किस्मके तार तो ऐसे है कि जिनमेंसे लोगोको शिक्षा मिलेगी। ऐसे भी तार है कि हम सब कर लेंगे, उपवास छोड दो। उपवास ऐसे कोई छुट सकता है? ईश्वरने करवाया है, ईश्वर ही छुडवा सकता है। दूसरी कोई ताकत नही। वह ताकत तो वही है जो मैंने लिखा है।

मृदुलाबेनका टेलीफोन आया। वह लाहौरमें पडी है। उसके काफी मुसलमान दोस्त है। वह हिंदू लडकी है। वह तो व्याकुल बन गई है। छोटी थी तबसे मेरी गोदमें पडी थी। अब तो बडी हो गई है। हर जगह घूमती है—अकेली। तो कहती है कि सब मुसलमान मुझसे पूछते है, अफसर भी पूछते है—गाधी जो कर रहे है वह हमारे लिए कर रहे है तो पूछो—क्या हमको बता देंगे कि हमसे क्या उम्मीद रखते है ? मुझको यह अच्छा लगा। तो उत्तर देनेके लिए कहे देता हू। टेलीफोन वहा पहुचा या नही, एक रातमें क्या होगा, कल तो वहां यह पहुच ही जायगा। और जो तार भेजते है उनको कहूगा कि यह कौन-सी बडी बात है कि आप मेरे बारेमें पूछते है ? पूछनेकी क्या जरूरत है ? यह दिल्लीका यज्ञ तो है, लेकिन सारे देशके लिए भी है। यह यज्ञ अकेलेके लिए है या सबके लिए, ऐसा सवाल ही नही है।

यह उपवास आत्म-शुद्धि करनेके लिए है। जहा आज शैतान बैठा है वहा ईश्वरको बैठा दो कि शैतान उसे हटा न सके। तो उसकी कुछ निशानी होनी चाहिए। इसके लिए सब तो फाका कर नही सकते। यह मेरे शुभ नसीबमें है। सबको ऐसा नसीब मिले तो सब प्रेमसे चलें। हिंदू कहता है कि मुसलमानको मारो, मुसलमान हिंदूको मारनेके लिए तैयार होता है, और सिख कहता है कि मुसलमान को मार डालो। इस तरह सिख, हिंदू, मुसलमान झगडा करें तो बुरी बात है। यज्ञमें हिस्सा लेना है, लेना चाहते है तो सब भाई-भाई बन जाय, वैर-भावके बदले प्रेम-भाव करें। हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसा बने तो उस जगह शराब नही देखूगा, अफीम नही देखूगा, व्यभिचारी लोगोंको नही देखूगा, व्यभिचारिणी औरतोको नही देखूगा। सब ऐसा समझेंगे कि यह मेरी बहन है या मा है या पत्नी है या लडकी है। सब परहेजसे रहें, साफ-सुथरे रहें तो भी अगर

मै समझू कि मै पाकिस्तानका दुश्मन हू, पाकिस्तान पापसे भरा हैं तो मुझे प्रायश्चित्त करना होगा और कहना होगा कि पाकिस्तान पाप-भूमि नही, पाक-भूमि है। ऐसा बनना है तो अच्छा है। कहनेसे नही बने, करनेसे बने। पाकिस्तानमें जितने मुसलमान पड़े है वे ऐसे रहे तो इसका असर इधर भी होगा। पाकिस्तानने हिंदुओंके साथ गुनाह किया है यह मैंने कभी छिपाया नही है।

अभी कराचीमें क्या हो गया? बेगुनाह सिख मार डाले गए, जायदाद लूट ली गई। अब सुनता हू कि गुजरातमे भी हो गया। वे बेचारे बन्नूसे या कहासे, मुझको पता नही, आ रहे थे। सब शरणार्थी थे। वहासे जान बचानेके लिए भाग रहे थे यहा आनेके लिए। रास्तेमें काट डाले गए। मै सब किस्सा नही कहना चाहता हू। मै मुसलमानोंको कहता हू कि आपके नामसे पाकिस्तानमें ऐसा बनता रहे तो पीछे हिंदुस्तानके लोग कहा-तक बर्दाश्त करेंगे? मेरी तरह सौ आदमी भी फाका करें तो भी नही रुक सकता है। मेरे-जैसे मिस्कीनके फाका करनेसे क्या होगा? तो आप ऐसा करें कि सब अच्छे बन जाय। कोई मुसलमान हो, कबीलेवाले हो तो उनको भी अच्छा बनना है। और कहे कि हम सब सिख, हिंदूको यहा लानेवाले है।

कविने कहा—मैंने यह पढा है—कि अगर आपको जन्नत देखना है, तो यहा है, बाहर नही है। वह तो एक बगीचेके लिए कहा है। लिखनेवाले उस्ताद रहते है। क्या खूबसूरत चीज है, यह उर्दूमे लिखा है। मैंने इसे बर्षों पहले—बचपनमे पढ़ा था। जन्नत ऐसे आता नही है। अगर हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसे शरीफ बने, सब-के-सब भाई-भाई बनें तो कहूगा कि वही शेर सब दरवाजेमे लगाए जाय। पीछे कहूगा कि वही नही, यहा भी लगाए जाय। लेकिन कब लगाया जायगा, जब पाकिस्तान पाक हो जायगा। कहना एक और करना दूसरा तो दोजख हो जायगा। दिलको साफ कर लो, उसमें शैतान नही, खुदाको विराजमान करो। ऐसा करोगे तो जन्नत यही है। जन्नत देखना हो तो वहा देखो। अगर वहा ऐसा हो जाय तो हम यहा मुकाबला करेंगे और उससे भी आगे बढनेकी कोशिश करेंगे। हिंदुस्तानके दो टुकडे है तो क्या, दिल तो एक हो गया है। भूगोलमें टुकडे

रहें तो क्या हुआ, हकूमत अलग है तो उससे क्या? सारी दुनियामे हकूमत अलग-अलग है। हकूमत पचास रहें, पांच-सौ रहे तो क्या? मै तो कहूगा कि सात लाख गाव है तो सात लाख हकूमत बनी ऐसा मानो, तो छोटी वह होगी, अच्छी रहेगी। पीछे देहातोका काम, बहनें पडी है उनके हाथ छोड सकते है। यह ऐसी खूबसूरत चीज है।

मुझसे कहते हैं—कहते-कहते घूट पी लेते हैं—कि यह पागल है। एक छोटी-सी चीजको लेकर फाका कर लेता है; लेकिन मै क्या करू? मै बचपनसे ऐसा बना हू। जब छोटा था तब अखबार भी नही पढता था। मै सच कहता हू कि अखबार नही पढता था। मै अग्रेजी मुश्किलसे पढ सकता था, गुजराती भद्दी जानता था तो मै अखबार कैसे पढ सकता था? तबसे मेरा खयाल रहा है कि सारे हिंदुस्तानमें—राजकोटमे ही नही—हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान एक बनकर रहे तो पीछे हम यहा आरामसे रह सकते हैं। मेरा ऐसा ख्वाब रहा है। अभी जो स्वराज आया है वह निकम्मा है। जवानीमें मैंने जो ख्वाब देखा है वह अगर सच्चा होता है—मै तो बूढा हो गया हू, मरनेके किनारे हू—तो मेरा दिल नाचेगा, बच्चे नाचेंगे और देखेंगे कि हिंदुस्तानमे सब खैर हो गया, लडते-भिडते नही, साथ रहते है। आप सब इस काममे मदद करे। पाकिस्तानके लोग सुनेंगे तो वे भी नाच उठेंगे। सिख, हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई, सब भूल जाय कि हम दुश्मन थे, अलग-अलग थे। अगर हम अपने-अपने धर्ममें कायम रहे और अच्छे बनें तो सब धर्म एक साथ चल सकते हैं। पीछे धर्म ही देखेंगे, शरीफ रहेंगे। इस तरहसे दोनो हिंदुस्तान और पाकिस्तान जाय तो मै नाचूगा। आपको भी नाचना पडेगा। वह तो एक नशा है—ईश्वर ऐसा नशा देग और हमे किसीका डर नही रहेगा। हम ऐसे नही डरनेवाले हैं कि यह सिख है या ऊचा पठान है। हमें तो सिर्फ ईश्वरसे डरना है। मै ऐसा देखना चाहता हू।

आप अपनेको ऐसा बना सकते है। समाज क्या है? आप सबसे समाज बना है। हम उसमें है तो समाज बनता है। समाज हमको नही बनाता है। हम उसको बनाते है। हम सोए हुए पडे है। इसलिए कहते है कि समाज ऐसा है और हम समाजसे लाचार है। उसी तरह हकूमत है।

हकूमत तो हम हैं। एक आदमी ऐसा कर सकता है। एक है तो अनेक बनेगा, एक नही तो शून्य है।

आपको पता नही था कि मैं आज बोलूगा। कल आनेमे शक है, लेकिन प्रार्थना होगी और लडकिया भजन सुनाएंगी।

: २०६ :

१५ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरे लिए यह एक नया अनुभव है। मुझको इस तरहसे लोगोंको सुनानेका कभी अवसर नही आया है, न मैं चाहता था। मैं इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है वहा नही जा सकता हू। इसलिए प्रार्थनामें जो लोग आए हैं वहातक मेरी आवाज यहासे नही पहुच सकती है। फिर भी मैंने सोचा कि आप लोगोतक, जिधर आप बैठे है, मेरी आवाज पहुच सके तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझको बडा आनद होगा। जो मैंने लोगोंके सामने कहनेको तैयार किया है, वह तो लिखवा दिया था। ऐसी हालत कल रहेगी कि नही, मैं नही जानता।

आपलोगोसे मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हर एक आदमी दूसरे क्या करते है उसे न देखें, बल्कि अपनी ओर देखे और जितनी आत्म-शुद्धि कर सकते हैं, करे। मुझे विश्वास है कि जनता बहुत परिमाणमें आत्म-शुद्धि कर लेगी तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा। हिंदुस्तानका कल्याण होगा और सभव है कि मैं जल्दीसे जो उपवास चल रहा है उसे छोड़ सकू। मेरी फिक्र किसीको नही करनी है, फिक्र अपने लिए की जाय। हम कहांतक आगे बढ रहे हैं और देशका कल्याण कहातक हो सकता है, इसका ध्यान रक्खें। आखिरमें सब इन्सानोंको मरना है। जिसका जन्म हुआ है उसे मृत्युसे मुक्ति मिल नही सकती। ऐसी मृत्युका भय क्या? शोक भी क्या करना? मैं समझता हू कि हम सबके लिए मृत्यु एक आनददायक मित्र है, हमेशा धन्यवादके लायक है, क्योंकि मृत्युसे अनेक प्रकारके दुखोंमेंसे हम एक समय तो निकल जाते है।

वह मेरी कल्पनामे भी नही आया। अगर मुझे पता होता कि ऐसा अर्थ किया जा सकता है तो मै पहलेसे इस चीजको साफ कर देता।

कई मुसलमान दोस्तोने शिकायत की थी कि सरदारका रुख मुसलमानोके खिलाफ है। मैने कुछ दु खसे उनकी बात सुनी मगर कोई सफाई पेश न की। उपवास शुरू होनेके बाद मैने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगाई हुई थी वह चली गई। इसलिए मैने टीकाकारोको कहा कि सरदारको मुझसे और पडित नेहरूसे अलग करके और मुझे और पडित नेहरूको खामख्वाह आसमानपर चढाकर वे गलती करते है।

इससे उनको फायदा नही पहुच सकता। सरदारके बात करनेके ढगमे एक तरहका अक्खडपन है, जिससे कभी-कभी लोगोका दिल दुख जाता है, अगरचे सरदारका इरादा किसीको दु खी बनानेका नही होता। उनका दिल बहुत बडा है। उसमे सबके लिए जगह है। सो मैने जो कहा उसका मतलब यह था कि अपने जीवनभरके वफादार साथीको एक बेजा इल-जामसे[1] बरी[2] कर दू। मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले कही यह न समझ बैठे कि मै सरदारको अपना 'जी हुजूर' मानता हू। सरदारको प्रेमसे मेरा 'जी हुजूर' कहा जाता था। इसलिए मैने सरदारकी तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्तिशाली और मनके मजबूत है कि वे किसीके 'जी हुजूर' हो ही नही सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे तब वे ऐसा कहने देते थे; क्योंकि जो कुछ मै कहता था वह अपने आप उनके गले उतर जाता था। वे अपने क्षेत्रमे बहुत बडे थे। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी-मे उन्होने शासन चलानेमे बहुत काबलियत[3] बताई थी। मगर वह इतने नम्र थे कि उन्होने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। उन्होने उसका कारण मुझे बताया था कि जब मै हिंदुस्तानमे आया था उन दिनो जिस तरहका राज-काज हिंदुस्तानमे चलता था, उसमें हिस्सा लेनेका उन्हें मन नही होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले आ पड़ी तब उन्होने देखा कि जिस अहिंसाको वे आजतक सफलतापूर्वक चला सके अब वही नहीं चला सकते। मैने कहा है कि मैं समझ गया हू कि जिस चीजको मैं

---

[1]अपराध; [2]मुक्त; [3]योग्यता।

और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे वह सच्ची अहिंसा न थी। वह तो नकली चीज थी और उसका नाम है निष्क्रिय प्रतिरोध। हा, किनके हाथोमे निष्क्रिय प्रतिरोध किसी कामकी चीज है? जरा सोचिए तो सही कि एक कमजोर आदमी जनताका प्रतिनिधि बने तो वह अपने मालिकोकी हँसी और बे-इज्जती ही करवा सकता है। मै जानता हू कि सरदार कभी उन्हे सौपी हुई जिम्मेदारीको दगा नही दे सकते। वे उसका पतन बर्दाश्त नही कर सकते। मै उम्मीद करता हू कि यह सब सुननेके बाद कोई ऐसा खयाल नही करेंगे कि मेरा उपवास गृह-विभागकी निंदा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करनेवाला है तो मै उसको कहना चाहता हू कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने-आपको नुकसान पहुचाता है, मुझे या सरदारको नही। मै जोरदार लफ्जोंमे कह चुका हू कि कोई बाहरी ताकत इन्सान-को नीचे नही गिरा सकती। इन्सानको गिरानेवाला इन्सान खुद ही बन सकता है। मै जानता हू कि मेरे जवाबके साथ इस वाक्यका कोई ताल्लुक नही है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि उसे हर मौकेपर दोहराया जा सकता है।

मै साफ लफ्जोंमे कह चुका हू कि मेरा उपवास यूनियनके मुसलमानो-की खातिर है। इसलिए वह यूनियनके हिंदू और सिखो और पाकिस्तानके मुसलमानोके सामने है। इस तरहसे यह उपवास पाकिस्तानकी अकलियत[१] की खातिर भी है। जो विचार मै पहले समझा चुका हू उसीको मै यहां थोडेमे दोहरानेकी कोशिश कर रहा हू।

मै यह आशा नही रख सकता कि मेरे-जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सानका फाका दोनो तरफ की अकलियतोको सब तरहके खतरोसे पूरी तरह बचानेकी ताकत रखे। फाका सबकी आत्म-शुद्धिके लिए है। उसकी पवित्रताके बारेमे किसी तरहका शक लाना गलती होगी।

तीसरा सवाल यह है, "आपका उपवास ऐसे वक्तपर शुरू हुआ है जब सयुक्त राष्ट्र-सघकी सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है। साथ ही अभी ही कराचीमें फिसाद हुआ है और गुजरात (पजाब) में कत्लेआम

---

[१] अल्पसंख्यक।

हुआ है। हम नही जानते कि विदेशके अखबारोमे इन वाकयातकी तरफ कहांतक ध्यान दिया गया है। इसमे शक नही कि आपके उपवासके सामने यह वाकयात छोटे लगने लगे है। पाकिस्तानके प्रतिनिधियोके पिछले कारनामोसे हम समझ सकते है कि वे जरूर इस चीजका फायदा उठाएगे और दुनियाको कहेंगे कि गाधीजी अपने हिंदू अनुयायियोसे, जिन्होने हिंदुस्तानमे मुसलमानोकी जिंदगी आफतमे डाल रखी है, पागलपन छुडानेके लिए उपवास कर रहे है। सारी दुनियाभरमें सच्ची बात पहुचनेमें देर लगेगी। इस दरमियान आपके उपवासका यह नतीजा आ सकता है कि सयुक्त राष्ट्र-संघपर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।" इस सवालका लंबा-चौडा जवाब देनेकी जरूरत थी। दुनियाकी हकूमतो और दुनियाके लोगोको जहातक मैं जानता हू मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि उपवासका असर अच्छा ही हुआ है। बाहरके लोग, जो हिंदुस्तानके वाकयातको निष्पक्षतासे देख सकते हैं, मेरे फाकेका उल्टा अर्थ नही लगाएगे। फाका यूनियनके और पाकिस्तानके रहनेवालोसे पागलपनको छुडानेके लिए है।

अगर पाकिस्तानमे मुसलमानोकी अकसरियत सीधी तरहसे न चले, वहाके मर्द और औरते शरीफ न बने तो यूनियनके मुसलमानोको बचाया नही जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बेनके कलके सवालपर ऐसा लगता है कि पाकिस्तानके मुसलमानोकी आखे खुल गई है और वे अपना फर्ज समझने लगे है।

सयुक्त राष्ट्र-सघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करनेमे मदद देनेवाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिंदुस्तानका उचित पथ-प्रदर्शन कर सके।

: २१० :

१६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे आशा तो नहीं थी कि आज भी मैं बोल सकूंगा, लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाजमें जितनी शक्ति थी उससे आज ज्यादा महसूस करता हूं। इसका मतलब तो यही किया जाय कि ईश्वरकी बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझमें (पहले) जब मैंने फाका किया, तब इतनी शक्ति नहीं रहती; लेकिन आज तो है। मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि अगर आप सब लोग आत्म-शुद्धि करनेका यज्ञ करते रहेंगे तो बोलनेकी मेरी शक्ति आखिरतक रह सकती है। मैं इतना तो कहूंगा कि मुझे किसी प्रकारकी जल्दी नहीं है। जल्दी करनेसे हमारा काम नहीं बनता है। मैं परम शांतिमें हूं। मैं नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा जब यहां ठीक होगा तो सारे हिंदुस्तानमें ठीक होगा। इसलिए मैं समझता हूं कि जब इर्द-गिर्दमें, सारे हिंदुस्तानमें और सारे पाकिस्तानमें, शांति नहीं हुई है तो मुझे जिंदा रहनेमें दिलचस्पी नहीं है। यह इस यज्ञके माने हैं।

(लिखित संदेश)

किसी जिम्मेदार हकूमतके लिए सोच-समझकर किए हुए अपने किसी फैसलेको बदलना आसान नहीं होता। मगर तो भी हमारी हकूमतने, जो हर मानेमें[1] जिम्मेदार हकूमत है, सोच-समझकर और तेजीसे अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है।

उनको काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारीतक और कराचीसे लेकर

---

[1] पाकिस्तानका जो पचपन करोड़ रुपया निकलता था उसे भारत-सरकारने काश्मीरका मामला तय हो जानेपर दिलानेका निश्चय किया था। गांधीजीके उपवास प्रारंभ करते ही भारत सरकारने उसे दे देनेका फैसला कर लिया।

डिबरूगढ़तक सारे मुल्कको मुबारकबाद देना चाहिए। मै जानता हू कि दुनियाके सब लोग भी कहेंगे कि ऐसा बडा काम हमारी हकूमतके जैसी बडे दिलवाली हकूमत ही कर सकती थी। इसमें मुसलमानोको सतुष्ट करनेकी बात नही है। यह तो अपने आपको सतुष्ट करनेकी बात है। कोई भी हकूमत, जो बहुत बडी जनताकी प्रतिनिधि है, बेसमझ जनतासे तालिया पिटवानेके लिए कोई कदम नही उठा सकती है। जहां चारों तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहा आकर बडे-से-बड़े नेता बहादुरीसे अपना दिमाग ठडा रखकर जो जहाज चला रहे है क्या उसको डूबनेसे न बचावे?

हमारी हकूमतने क्यो यह कदम उठाया? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवाससे उनकी विचारधारा ही बदल गई। उपवासके बिना वे, कानून जितना उनसे करवाता, उतना ही करनेवाले थे। मगर हिंदुस्तानकी हकूमतका यह कदम सच्चे मानेमे दोस्ती बढाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तानकी भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह होना चाहिए कि न सिर्फ काश्मीरका, बल्कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे जितने मतभेद है सबका सम्मानजनक आपस-आपसमे फैसला हो जावे। आजकी दुश्मनीकी जगह दोस्ती ले। न्याय कानूनसे बढ जाता है। अग्रेजीमे एक घरेलू कहावत है, जो सदियोसे चली आई है, उसमे कहा है कि जहां मामूली कानून काम नही देता, वहा न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नही हुआ जब कानूनके लिए और न्यायके लिए वहां अलग-अलग कचहरिया हुआ करती थी। इस तरहसे देखा जाय तो इसमें कोई शक नही कि हिंदुस्तानकी हकूमतने जो किया है वह सब तरहसे ठीक है। अगर मिसालकी जरूरत है तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्डका निर्णय न था, बल्कि सारे ब्रिटिश मन्त्रिमडलका और दूसरी गोलमेज परिषद्के अधिकतर सदस्योका भी निर्णय था। मगर यरवदाके उपवासने तो रातो-रात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया कि यूनियनकी हकूमतके इस बडे कामके कारण तो अब मैं अपने उपवासको छोड दू। काश कि मै अपने दिलको ऐसा करनेके लिए समझा सकता!

मै जानता हू कि उन डाक्टर लोगोंकी चिंता जो अपनी इच्छासे काफी त्याग करके मेरी देख-भाल कर रहे है, जैसे-जैसे उपवास लबा होता जाता है, बढती जाती है। गुरदे ठीक तरहसे काम नही करते। उन्हें इस चीजका इतना खतरा नही कि आज मर जाऊगा, मगर उपवास लबा चला तो हमेशाके लिए शरीरकी मशीनको जो नुकसान पहुचेगा, उससे वे डरते है। मगर डाक्टर लोग कितने ही होशियार क्यो न हो, मैंने उनकी सलाहसे उपवास शुरू नही किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है, वह कभी गलती नही करता। वह सर्वशक्तिमान है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीरसे कुछ और काम लेना होगा तो डाक्टर लोग कुछ भी कहे वह मुझे बचा लेगा। मैं ईश्वरके हाथोमें हू। इसलिए मैं आशा करता हू कि आप विश्वास रखेंगे कि मुझे न मौतका डर है, न अपग होकर जिंदा रहनेका। मगर मुझे लगता है कि अगर देशको मेरा कुछ भी उपयोग है तो डाक्टरोकी इस चेतावनीके परिणामस्वरूप लोगोको तेजीके साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनतसे आजादी पानेके बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग, जिनपर दुश्मनीका शक होता है, उनपर भी विश्वास रखते हैं। बहादुर लोग अविश्वासको अपनी शानके खिलाफ समझते है। अगर दिल्लीके हिंदू, मुसलमान और सिखोमें ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानके बाकी हिस्सोंमें आग भडके तो भी दिल्ली शात रहे तब मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुश-किस्मतीसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो तरफके लोग अपने-आप समझ गए लगते है कि उपवासका अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशोमें ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्मके लोग दोनो तरफ बिना किसी खतरेके आ-जा सकें और रह सकें। आत्म-शुद्धिके लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

हिंदुस्तान और पाकिस्तानके लिए दिल्लीपर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। यूनियनके रहनेवाले भी आखिर तो इन्सान है। हमारी हकूमतने लोगोके नामसे एक बहुत बडा उदार कदम उठाया है और उसको उठाते समय उसकी कीमतका खयालतक नही किया। इसका जवाब पाकि-स्तान क्या देगा? इरादा हो तो रास्ते तो बहुत हैं। मगर क्या इरादा है?

: २११ :

१७ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

ईश्वरकी ही कृपा है कि आज पाचवा दिन है तो भी मै बगैर परिश्रमके आपको दो शब्द कह सकता हू। जो मुझको कहना है वह तो मैंने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभामे सुशीला बहन सुना देगी।

इतना है कि जो कुछ भी आप करे, उसमे परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर यह नही है तो कुछ भी नही है। अगर आप मेरा खयाल रखे कि इसे कैसे जिदा रखा जाय तो बड़ी भारी गलती करनेवाले है। मुझको जिदा रखना या मारना किसीके हाथमे नही है। वह ईश्वरके हाथमे है। इसमे मुझे कोई शक नही है। किसीको भी शक नही होना चाहिए।

इस उपवासका मतलब यह है कि अत करण स्वच्छ हो और जाग्रत हो। ऐसा करे तभी सबकी भलाई है। मुझपर दयाकर आप कुछ न कीजिए। जितना दिन उपवासका काट सकता हू काटूगा। ईश्वरकी इच्छा होगी तो मर जाऊगा।

मै जानता हू कि मेरे काफी मित्र दु खी है, और सब कहते है कि आज ही उपवास क्यो नही छोड़ा जाय। आज मेरे पास ऐसा मामान नही है। ऐसा मिल जाय तो नही छोडनेका आग्रह नही करूगा। अहिंसाका नियम है कि मर्यादापर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मै जो कह रहा हू उसमे अभिमान नही है। शुद्ध प्यारसे कह रहा हू। ऐसा जो जानता है वही रहनेवाला है।

(लिखित संदेश)

मै पहले भी कह चुका हू और फिरसे दोहराता हूं कि फाकेके दबावके नीचे कुछ भी न किया जाय। मैंने देखा है कि फाकेके दबावके नीचे कई बाते कर ली जाती है और फाका खत्म होनेके बाद मिट जाती है। अगर ऐसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। ऐ [illegible] होना ही

नही चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है, वह है दिलकी सफाई। अगर दिलकी सफाई ईमानदारीसे की जाय तो जिस कारणसे सफाई की गई थी वह कारण मिट जानेपर भी सफाई नही मिटती। किसी प्रियजनके आनेके कारण कमरेमे सफेदी की जाती है तो जब वह आकर चला जाता है तो सफेदी मिट नही जाती। यह तो जड़ वस्तुकी बात है। कुछ अर्सेके बाद सफेदी मिटने लगती है और फिरसे करवानी पडती है। दिलकी सफाई तो एक दफा हो गई तो मरनेतक कायम रहती है। फ़ाके-का दूसरा कोई योग्य मकसद नही हो सकता।

राजा, महाराजा और आम लोगोके तारोका ढेर बढ रहा है। पाकिस्तानसे भी तार आ रहे है। वे अच्छे है, मगर पाकिस्तानके दोस्त और शुभचिंतककी हैसियतसे मै पाकिस्तानके रहनेवालों और जिनको पाकिस्तानका भविष्य बनाना है उनको कहना चाहता हू कि अगर उनका जमीर[1] जाग्रत न हुआ और अगर वह पाकिस्तानके गुनाहको कबूल नही करते तो पाकिस्तानको कभी कायम नही रख सकेगे। इसका यह मतलब नही कि मै यह नही चाहता कि हिंदुस्तानके दोनो टुकडे अपनी खुशीमे फिरसे एक हो। मगर मै वह साफ कर देना चाहता हू कि जबरदस्तीसे मिटानेका मुझे खयालतक नही आ सकता। मै उम्मीद रखता हू कि मृत्यु-शय्यापर पडे मेरे यह वचन किसीको चुभेगे नही। मै उम्मीद रखता हू कि सब पाकिस्तानी यह समझ जायगे कि अगर कमजोरीकी वजहसे या उनका दिल दुखानेके डरसे मै उसके सामने अपने दिलकी सच्ची बात न रखू तो अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित होऊगा। अगर मेरे हिसाबमे गलती रही हो तो मुझे बताना चाहिए। मै वायदा करता हू कि र मै गलती समझ गया तो अपना वचन वापस लेलूगा। मगर जहातक मै जानता हू, पाकिस्तानके गुनाहके बारेमे दो विचार हो ही नही सकते।

मेरे उपवासको किसी तरहसे भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अतरात्माकी जबरदस्त आवाजके जवाबमे धर्म समझकर किया

---

[1] विवेक।

गया है। महायातना भुगतनेके वाद मैंने फाका करनेका फैसला किया। दिल्लीके मुसलमान भाई इस बातके साक्षी है। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिनभरकी रिपोर्ट देने आते है। इस पवित्र मौकेपर मेरा उपवास छुड़वानेके हेतु मुझको धोखा देकर राजा, महाराजा, हिंदू, सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेंगे, न हिंदुस्तानकी। वे सब समझ ले कि मैं कभी इतना खुश नही रहता, जितना कि आत्माकी खातिर उपवास करते वक्त। इस फाकेसे मुझे हमेशासे ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसीको इसमें विघ्न डालनेकी जरूरत नही है। विघ्न इसी शर्तपर डाला जा सकता है कि ईमानदारीसे आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझकर शैतानकी तरफसे मुह फेर लिया है और ईश्वरकी तरफ चल पड़े है।

: २१२ :

१८ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मैंने थोड़ा तो लिखवा दिया है। वह सुशीला बहन आप लोगोंको सुना देगी।

आजका दिन मेरे लिए तो है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा है कि आज ही गुरु गोविंदसिंहकी जन्म-तिथि है। उसी शुभ तिथिपर मै आपलोगोंकी दयासे फाका छोड़ सका हू। जो दया आप लोगोंने—दिल्लीके निवासियोंसे, दिल्लीमें जो दु खी शरणार्थी पड़े है, उनने, यहाकी हकूमतके सब कारोबारसे —मुझे मिली है उसे, मुझे लगता है, कि मैं जिंदगीभर भूल नही सकूगा। कलकत्तेमें ऐसे ही प्रेमका अनुभव मैंने किया। यहांपर मैं कैसे भूल सकता हू कि शहीद साहबने कलकत्तेमें बड़ा काम किया। अगर वह नही करते तो मैं ठहरनेवाला नही था। शहीद साहबके लिए हम लोगोंके दिलमें बहुत शकूक[1] थे। अभी भी है। उससे-

---

[1] संदेह।

क्या ? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उसमे हमको दोस्ताना तौरसे काम करना है। हम किसीके साथ किसी हालतमें दुश्मनी नही करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड मुसलमान पडे हैं। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं ही नहीं। ऐसे ही सब हिंदू और सिख भी फरिश्ते थोडे ही है ! अच्छे और बुरे हममे है, लेकिन बुरे कम है। हमारे यहा जिसको हम जरायम पेशा जातियां कहते है, वे भी पडी है। हमारे यहा जिनको जंगली जातिया कहते है, वे भी पडी है। उन सबके साथ मिल-जुलकर रहना है।

मुसलमान बडी कौम है, छोटी कौम नही है। यही नही है, सारी दुनियामे पडी है। अगर हम ऐसी उम्मीद करे कि सारी दुनियाके साथ हम मित्र-भावसे रहेंगे, दोस्ताना तौरसे रहेगे तो क्या वजह है कि हम यहाके जो मुसलमान है उनसे दुश्मनी रखें ?

मै भविष्यवेत्ता नही हू। फिर भी मुझे ईश्वरने अक्ल दी है, मुझको ईश्वरने दिल दिया है। उन दोनोको टटोलता हू और आपको भविष्य सुनाता हू कि अगर हम किसी-न-किसी कारणसे एक दूसरेसे दोस्ती न कर सके, वह भी यहाके ही नहीं, पाकिस्तानके और सारी दुनियाके मुसलमानोसे दोस्ती न कर सके, तो समझ लें, इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि हिंदुस्तान हमारा नहीं होगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पाई है उसे हम खो बैठेंगे।

आज इतने लोगोने आशीर्वाद दिए है। सुनाया है कि हम सब हिंदू, सिख, मुसलमान भाई-भाई बनकर रहेंगे और किसी भी हालतमें, कोई भी कुछ कहे, दिल्लीके हिंदू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब जो यहाके बाशिंदे है और सब शरणार्थी है वे भी दुश्मनी नही करनेवाले है। यह थोड़ी बात नही है। इसके माने यह है कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे जितने लोग पडे है वे सब एक मिलकर रहेगे। हमारी कमजोरीके कारण भले ही हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो गए, लेकिन वे भी दिलसे मिलाने है। अगर इस फाकेके छूटनेका यह अर्थ नही है तो बडी नम्रतासे कहूगा कि यह फाका छुडवाकर आपने

कोई अच्छा काम नही किया है, कोई काम ही नही किया। अभी फाकेकी आत्माका भलीभाति पालन होना चाहिए। भेद क्यो हो? जो दिल्लीमें हो, वही सारे यूनियनमें हो और जो सारे यूनियनमें होगा तो पाकिस्तानमें होना ही है, इसमें आप शक न रखे। आप न डरे, एक बच्चेको भी डरनेका काम नही। आजतक हम, मेरी निगाहमे, शैतानकी ओर जाते थे। आजसे मै उम्मीद करता हू कि हम ईश्वरकी ओर जाना शुरू करते है। लेकिन हम तय करे कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुह ईश्वरकी ओर रखा तो वहासे कभी नही हटेगे। ऐसा हुआ तो सारे हिंदुस्तान, पाकिस्तान, दोनो मिलकर इस सारी दुनियाको ढाक सकेंगे, सारी दुनियाकी सेवा कर सकेंगे और सारी दुनियाको ऊची ले जा सकेंगे। मैं और किसी कारणसे जिंदा रहना नही चाहता हू। इन्सान जिंदा रहता है तो इन्सानियतको ऊचा उठानेके लिए। ईश्वर और खुदाकी तरफ जाना ही इन्सानका फर्ज है। जबानसे ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल कुछ भी नाम लो, वह झूठा है अगर उनके दिलमें वह नाम नही है। सब एक ही हस्ती है तो फिर कोई कारण नही है कि हम उस चीजको भूल जाय और एक दूसरेको दुश्मन माने।

आज तो मै आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नही हू, लेकिन आजके दिनसे हिंदू निर्णय कर ले कि लड़ेंगे नही। मैं चाहूगा कि हिंदू कुरान पढे, जैसे वे भगवद्गीता पढते है। सिख भी वही करें। और मै चाहूगा कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरोमे ग्रंथ साहब पढे, उनके माने समझें। जैसे हम अपने धर्मको मानते है, वैसे दूसरेके धर्मको भी माने। उर्दू-फारसी किसी जबानमें भी बात लिखी हो, अच्छी बात तो अच्छी बात है। जैसे कुरान शरीफ वैसे गीता और ग्रंथ साहब है। मेरा मकसद यही है। चाहे आप माने या न माने, अभीतक मै ऐसा करता रहा हू। मै आपको कहूगा और दावेसे कहूगा कि मै पत्थरकी पूजा नही करता हू। मगर मै सनातनी हिंदू हू। पत्थरकी पूजा करनेवालोसे मै नफरत नही करता। खुदा पत्थरमें भी पड़ा है। जो पत्थरकी पूजा करता है वह उसमे पत्थर नही, खुदा देखता है ... पत्थरमें ईश्वर न माने तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह ... ?

तो यह क्या बुतपरस्ती नही है ? दिलोमें भेद न रखें तो हम सब यह सीख सकते हैं। ऐसा हो तो फिर यह नही होगा कि यह हिंदू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई-भाई हैं, मिल-जुलकर रहनेवाले हैं। ऐसा होना चाहिए। फिर ट्रेनमें आज जो अनेक किस्मकी परेशानी होती है--लडका फेंक दिया जाता है, आदमी फेंक दिया जाता है, औरतें फेंक दी जाती हैं, वह सब मिट जायगा, हर कोई आसानीसे हर जगह रह सकेंगे, कही किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा बने। पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। मुझको तबतक परम शाति नही होनेवाली है जबतक यहाके शरणार्थी, जो पाकिस्तानसे दुखी होकर आए है, अपने घरोंको वापस न जा सकें और जो मुसलमान यहासे हमारे डरसे, मार-पीटसे भागे हैं और जो वापस आना चाहते हैं वे आरामसे यहा न रह सकें।

बस इतना ही कहूगा। ईश्वर हम सबको, सारी दुनियाको अच्छी अक्ल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी ओर खीच ले, जिससे हिंदुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

(लिखित संदेश)

मैंने यह उपवास सत्यके, जिसका परिचित नाम ईश्वर है, नामपर किया था। जीते-जागते सत्यके बिना ईश्वर कहीं नही है। ईश्वरके नामपर हम झूठ बोले है, हमने बेरहमीसे लोगोंकी हत्याए की है और इसकी भी परवाह नही की कि वे अपराधी है या निर्दोप, मर्द है या औरतें, बच्चे है या बूढे ! हमने अपहरण व बलात् धर्म-परिवर्तन किए है और हमने यह सब बेहयाईसे किया है। मैं नही समझता कि किसीने यह काम सत्यके नामपर किए हो। इसी नामका उच्चारण करते हुए मैंने उपवास तोडा है। हमारे लोगोका दु ख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू हिंदुओ, मुसलमानो व सिखो, हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ व शरणार्थियोंके सौसे अधिक प्रतिनिधियोको लेकर मेरे पास आए। इन प्रतिनिधियोंके दलमें पाकिस्तानके हाई कमिश्नर जाहिदहुसैन साहब, दिल्लीके कमिश्नर व डिप्टी कमिश्नर और आजाद हिंद फौजके जनरल शाहनवाज भी शामिल थे। नेहरूजी भी एक मूर्तिकी तरह चुपचाप मेरे पास बैठे हुए थे और ऐसे

ही मौलाना आजाद। राजेन्द्र बाबूने एक दस्तावेज[1] पढ़कर सुनाया, जिसपर

---

[1] वह शांति-प्रतिज्ञा, जिसपर हिंदुओं, सिखों व मुसलमानोंके सौसे अधिक प्रतिनिधियोंने हस्ताक्षर किए और जिसपर गांधीजीने उपवास समाप्त किया, इस प्रकार है—

हम यह घोषित करना चाहते हैं कि हमारी दिली ख्वाहिश है कि हिंदू, मुसलमान और सिख और दूसरे धर्मके सब माननेवाले फिरसे आपसमें मिलकर भाई-भाईकी तरह दिल्लीमें रहें और हम उनसे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मुसलमानोंकी जान, धन और धर्मकी हम रक्षा करेंगे और जिस तरहकी घटनाएं यहां पहले हो गई हैं, उनको फिर न होने देंगे।

१. गांधीजीको हम इत्मीनान दिलाना चाहतेहैं कि जिस तरह ख्वाजा कुतुबुद्दीनके उर्सका मेला पहले हुआ करता था, वैसे ही अब भी होगा।

२. जिस तरह मुसलमान दिल्लीके सभी मुहल्लोंमें और खास तौर-पर सब्जीमंडी, करौलबाग और पहाड़गंजमें आया-जाया करते थे, वैसे ही बेखटके और बेखतरे फिरसे आ-जा सकेंगे।

३. उन मस्जिदोंको, जिनको मुसलमान छोड़कर चले गए हैं, या जो हिंदुओ और सिखोंके कब्जेमें हैं, वापिस दे देंगे। जिन जगहों-को खास मुसलमानोंके बसनेके लिए गवर्नमेंटने रख छोड़ा है, उनपर जोर-जबर्दस्तीसे कब्जा करनेकी कोशिश नहीं की जायगी।

४. जो मुसलमान दिल्लीसे बाहर चले गए हैं, वे अगर वापिस आना चाहें तो हमारी तरफसे कोई बाधा न दी जायगी और मुसलमान अपने कारबार जिस तरहसे करते थे, करने पाएंगे। हम यह इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि ये सब चीजें अपनी कोशिशसे पूरी करेंगे और सरकारी पुलिस या फौजकी ताकत इसकी खातिर इस्तेमाल करनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

५. महात्माजीसे हमारा अनुरोध है कि वे हमारी बातोंपर विश्वास करके अपना उपवास छोड़ दें और जिस तरह आजतक देशके रहनुमा रहे हैं, बने रहें।

आगत प्रतिनिधियोके हस्ताक्षर थे। इस दस्तावेजद्वारा मुझसे कहा गया कि उनपर अधिक चिंताका दबाव न डाला जाय और मै अपना उपवास तोड-कर उनके दु खका अत कर दू। पाकिस्तान व भारतीय यूनियनसे भी मेरे पास तार-पर-तार आए थे कि मै उपवास तोड दू। मै इन सब मित्रोकी सलाहका विरोध न कर सका। मै उनकी इस प्रतिज्ञापर अविश्वास नही कर सका कि हर हालतमे हिंदुओ, मुसलमानो, सिखो, ईसाइयो या पारसियो व यहूदियो सबमे मित्रता रहेगी और इस मित्रताको कभी भग नही किया जायगा। इस दोस्तीको तोडनेका मतलब राष्ट्रको तोडना होगा।

जब मै यह लिख रहा हू, मेरे पास सेहत और दीर्घ जीवनकी कामनावाले तारोका ताता लगा हुआ है। ईश्वर मुझे काफी सेहत और विवेक दे जिससे मै मानव-जातिकी सेवा कर सकू। यदि यह आश्वासन, जो आज मुझे दिया गया है, पूरा हो जाता है तो मै आपको विश्वास दिलाता हू कि मै चौगुनी शक्तिसे प्रार्थना करूगा कि वह मुझे अपनी पूरी जिदगी जीने दे और मै अततक मानव-जातिकी सेवा करू। विद्वानोका मत है कि पूरी उम्र कम-से-कम १२५ वर्ष है और कुछ लोग १३३ वर्ष कहते है। मेरी प्रतिज्ञा पूरी होनेमे जितना समय लगनेकी आशा थी वह दिल्लीके नागरिकोकी, जिनमे हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघके नेता भी सम्मिलित है, सद्भावनाके कारण उससे पहले पूरी हो गई। मुझे पता चला है कि कलसे हजारो शरणार्थी और दूसरे लोग भी मेरी सहानुभूतिमे उप-वास कर रहे है। तो ऐसी हालतमे इसका परिणाम दूसरा निकल ही नही सकता था। हजारो व्यक्तियोने मेरे पास लिखित आश्वासन भेजे है कि लोगोके दिलोमे परिवर्तन हो गया है और वे सबको भाई मानते है। सारी दुनियासे मेरे पास आशीर्वादके तार आए है। क्या इस बातका इससे अच्छा कोई सबूत हो सकता है कि मेरे इस उपवासमे ईश्वरका हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञाके शब्दोके पालनके बाद उसकी आत्मा भी है, जिसके पालनके विना शब्दोका पालन बेकार हो जाता है। मेरी प्रतिज्ञाका उद्देश्य यूनियन तथा पाकिस्तानमे हिंदू, मुस्लिम, सिखमे मित्रता स्थापित करना है। यदि यूनियन (हिंदुस्तान) मे ऐसा हो जाता है तो जैसे रातके बाद दिन होता है वैसे ही पाकिस्तानमे भी ऐसा होना ही चाहिए। यदि यूनियनमे अधेरा

हो तो पाकिस्तानमे उजालेकी आशा करना मूर्खता है, किंतु यदि यूनियनमे रात मिट जानेका कोई शक नही रह जाता तो पाकिस्तानमें भी रात मिट-कर ही रहेगी। पाकिस्तानसे बहुतसे सदेश आए हैं। उनमेंसे एकमें भी इस बातका विरोध नही किया गया है। ईश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि जिस तरहसे इन छः दिनोंतक हमारा पथ-प्रदर्शन किया है उसी तरह आगे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहे।

: २१३ :

१९ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

सारी दुनियासे हिंदुस्तानियो और दूसरे लोगोने मेरी सेहतके बारेमें चिंता और शुभेच्छा बतानेवाले अनेक तार भेजे हैं। उनके लिए मैं उन सब भाई-बहनोंका आभार मानता हू। ये तार जाहिर करते है कि मेरा कदम ठीक था। मेरे मनमे तो इस बारेमे कोई शक था ही नही। जिस तरहसे मेरे मनमें कोई शक नही कि ईश्वर है और उसका सबसे तादृश्य नाम सत्य है, उसी तरहसे मेरे दिलमे कोई शक नही है कि मेरा फाका सही था। अब मुबारकबादके तारोका तांता लगा है। चिंताका बोझ हल्का होनेमे लोग आरामकी सास लेने लगे है। मित्रगण मुझे क्षमा करेंगे कि मैं सबको अलग-अलग पहुच नही भेज सकता, ऐसा करना नामुमकिन है। मैं यह भी आशा रखता हू कि तार भेजनेवाले पहुचकी आशा भी नही रखते होंगे।

तारोंके ढेरमेंसे मैं दो तार यहा देता हू। एक पश्चिमी पजाबके प्रधान मत्रीका है और दूसरा भोपालके नवाब साहबका। उन लोगोका आज लोग काफी अविश्वास करते हैं। तार तो आप सुनेंगे ही। उस बारेमें मैं कुछ कहना नही चाहता। अगर ये तार उनके दिलोके सच्चे भावको जाहिर करनेवाले न होते तो क्यो वे उपवास जैसे पवित्र और गभीर मौके-पर मुझे तार भेजनेकी तकलीफ उठाते?

भोपालके नवाब साहब अपने तारमें लिखते हैं :

"सब कौमोंके दिली मेलके लिए आपकी अपीलको हिंदुस्तानके दोनों हिस्सोंके सब शांतिप्रिय लोग जरूर मानेंगे। इसी तरहसे, हिंदुस्तानके दोनो हिस्सोंमें दोस्ती और समझौता होने की इस अपीलको भी सब लोग जरूर मानेंगे। खुशकिस्मतीसे इस रियासतमें, पिछले सालमें हमारी कठिनाइयों-का सामना हम सब कौमोंके समझौते, प्रेम और मेलके उसूलपर कर सके हैं। नतीजा यह है कि इस रियासतमें शांति-भंग करनेवाला एक भी किस्सा नहीं बना। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हम अपनी पूरी ताक़तसे इस मेल-जोल और मित्र-भावको बढ़ानेकी कोशिश करेंगे।"

पश्चिमी पंजाबके प्रधान मंत्रीका तार भी मैं पूरा-पूरा देता हूं। वे लिखते हैं :

"आपने एक भले कामको बढ़ानेके लिए जो कदम उठाया है, पश्चिमी पंजाबकी वजारत[1] उसकी तहेदिलसे[2] तारीफ करती है और सच्चे हृदयसे उसकी कदर करती है। इस वजारतने अकलियतोंकी जान-माल और इज्जत बचानेके लिए, जो भी हो सके वह करनेका उसूल[3] हमेशा अपने सामने रखा है। यह वजारत मानती है कि अकलियतोंको अन्य नागरिकोंके बराबर हक मिलने चाहिए। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि यह वजारत इस नीतिपर अब और दुगने जोरसे अमल करेगी। हमें यही फिकर है कि हिंदुस्तानके भूखण्डमें एक जगह फौरन हालत सुधरे, ताकि आप अपना उपवास छोड़ सकें। आपके-जैसी कीमती जिंदगीको बचानेके लिए इसमें हमारी कोशिशमें कोई कसर नहीं रहेगी।"

आजकल लोग बिना सोचे-समझे नकल करने लगते हैं। इसलिए मुझे चेतावनी देनी होगी कि कोई इतने ही समयमें इस तरहके परिणामकी आशा रखकर इस तरहका उपवास शुरू न करे। अगर कोई करेगा तो उसे निराश होना पड़ेगा और ऐसे अचूक और शाश्वत उपायकी बदनामी होगी। उपवासकी शर्तें कड़ी हैं। अगर ईश्वरमें जीता-जागता विश्वास नहीं है और अंतरात्मासे आवाज, ईश्वरीय हुकम नहीं निकलता है तो

---

[1] मंत्रि-मंडल; [2] हृदयसे; [3] सिद्धांत।

उपवास करना फिजूल है। तीसरी शर्त भी लगानेकी इच्छा होती है, मगर इसकी जरूरत नही है । ईश्वरका हुकम तभी मिल सकता है जब उपवासका मकसद सच्चा हो, सही हो और बामौका[१] हो। इसमेंसे यह भी निकलता है कि ऐसे कदमके लिए पहलेसे लबी तैयारी करनी पड़ती है, इसलिए कोई झटसे उपवास करने न बैठे।

दिल्लीके शहरियोके सामने और पाकिस्तानसे आए हुए दु.खी लोगोंके सामने बहुत बडा काम है। उनको चाहिए कि पूरे विश्वासके साथ आपस-आपसमे मिलनेके मौके ढूढे।

कल बहुत-सी मुसलमान बहनोसे मिलकर मुझे निहायत खुशी हुई। मेरे साथकी लडकियोने मुझे बताया कि वे बिरला हाउसमें बैठी हुई है, मगर जानती नही कि अदर आएं या न आए। उनमेंसे अधिकतर पर्देमे थी। मैंने उन्हें लानेके लिए कहा और वे आईं। मैंने उनसे कहा कि वे अपने पिता और भाईके सामने पर्दा नही रखती तो मेरे सामने क्यों ? फौरन हरएकने पर्दा निकाल दिया। यह पहला मौका नही है कि मेरे सामने पर्दा निकाला गया है। मै इस बातका जिकर यह बतानेके लिए करता हू कि सच्चा प्रेम—और मै दावा करता हू कि मेरा प्रेम सच्चा है—क्या कर सकता है।

हिंदू और सिख बहनोको मुसलमान बहनोंके पास जाना चाहिए और उनसे दोस्ती करनी चाहिए। खास-खास मौकोंपर, त्योहारोंपर, उनको निमत्रण देना चाहिए और उनका निमत्रण स्वीकार करना चाहिए। मुसलमान लड़के-लडकियां आम स्कूलोंकी तरफ खिचें, साप्रदायिक स्कूलोंकी तरफ नहीं, वे स्कूलोंके खेलोमे हिस्सा ले।

मुसलमानोंका बहिष्कार नही होना चाहिए। इतना ही नही, बल्कि उन्हें अनुरोध करना चाहिए कि वे जो धधे करते थे उन्हें फिरसे करने लगे। मुसलमान कारीगरको खोकर दिल्लीने नुक्सान उठाया है। हिंदू और सिखोंके लिए यह ख्वाहिश रखना कि वे मुसलमानोंसे उनकी रोटी कमानेका जरिया छीन ले, बहुत बुरी कंजूसी होगी। एक तरफसे तो कोई

---

[१] समयानुसार।

चीज या कामपर किसी एकका इजारा नही होना चाहिए, दूसरी तरफसे किसीको बाहर करनेकी कोशिश नही होनी चाहिए। हमारा देश बडा है, उसमें सबके लिए जगह है।

जो शाति-कमेटिया बनी है वे सो न जायं। सब मुल्कोमें बहुत-सी कमेटिया दुर्भाग्यसे सो जाया करती है। आप लोगोके बीच मुझे जिंदा रखनेकी शर्त यह है कि हिंदुस्तानकी सब कौमें शातिसे साथ-साथ रहें। और वह शाति तलवारके जोरसे नही, मगर मुहब्बतके जोरसे हो। मुहब्बतसे बढकर जोड़नेवाली चीज दुनियामें दूसरी कोई नही है।

: २१४ :

२० जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

पहली बात तो मैं आपसे यह कह दू कि जिन लोगोने दस्तखत किए उन्होंने, मेरी उम्मीद है, सत्यरूपी ईश्वरको साक्षी रखकर दस्तखत किए है, तो भी कलकत्तेसे ऐसी आवाज आ रही है कि यहा जो काम हुआ है उसमें भी कुछ घोटाला न हो। अगर दिल्लीके निवासी और दिल्लीमें जो दु खी आ गए है, वे सब साबित कदम रहेंगे चाहे बाहरमें कुछ भी हो—हिंदुस्तानके और हिस्सेमें कुछ भी हो, पाकिस्तानमें कुछ भी हो—तो मेरा दृढ मत है कि आप हिंदुस्तानको बचा लेंगे और पाकिस्तानको भी बचानेवाले है। आखिर दिल्ली आजकलका नही, पुराना शहर है। आज दिल्लीमें जो काम हो गया है—इतना बडा काम, जो सत्यमय और अहिंसामय है—उसका प्रभाव सारे हिंदुस्तानमें, सारे पाकिस्तानमें और सारी दुनियामें पडेगा।

सरदारने बबईमें क्या कहा, उसे गौरसे पढे तो पता चल जायगा कि सरदार और पडित नेहरू दूर नही है, अलग-अलग नही है। कहनेका तरीका अलग हो सकता है, लेकिन करते एक ही चीज है। वे हिंदुस्तान या मुसलमानके दुश्मन नही हो सकते। जो मुसलमानका दुश्मन है वह

हिंदुस्तानका भी दुश्मन है, इसमें मुझे कोई शक नही। इसलिए मैं कहूंगा कि हम कम-से-कम इतना तो सीख लें। सारी दुनियामें लोग सीख चुके हैं। हां, अमरीका एक ऐसा मुल्क है, जहां हब्शी लोगोंको मार डाला जाता है। वहां काफी ऐसे गोरे लोग है जो बुरा नही मानते, उनके लिए दिलमें शर्म नही है, लेकिन दुनियाके दूसरे लोग इसे पसंद नही करते। उसको हम वहशियाना मानते हैं। हमारे ही अखबारोंने लिखा है कि वे लोग कितने वहशियाना काम करते हैं। अमरीकाके लोग इतने सुधारक हैं, तो भी ऐसा करते हैं। हम ऊंचे है, हम ऐसा कर नही सकते। वह तो है, लेकिन आज क्या होता है। तो मैं कहूगा कि आप सब बता दें कि गैर-इन्साफ, वाहर हो या यहा, उसका बदला हम न लेंगे, हकूमतपर छोड़ देंगे। कम-से-कम इतना करें, तब लोग आरामसे आ-जा सकते हैं।

मैंने कहा कि मुमकिन है, मैं यहांसे पाकिस्तान जाऊ, लेकिन पाकिस्तानको तब जाऊंगा जब हकूमत बुलाएगी और कहेगी कि तू तो भला आदमी है, ख्वाबमें भी मुसलमानोंका बुरा नही कर सकता, हिंदुओंका भी बुरा नही करता, सिखोंका भी बुरा नही करता। हर हालतमें तेरी हाजिरी पाकिस्तानमें चाहते हैं। या तो एक-एक हकूमत कहे—तीन हकूमतें हैं, बलूचिस्तानको छोड दो—या पाकिस्तानकी मरकजी[1] हकूमत है वह कहे तो जा सकता हू। तब आप समझें कि मैं चला गया। हां, डाक्टर कहते हैं कि फाकेसे जिस्मको इतना नुक्सान पहुचा है कि पद्रह दिन कही नही जा सकता— सूखी चीज भी नही खा सकता—तुमको तो पानी ही पीना है। पीछे पानीमें दूध आ जाता है, फलका रस आ जाता है। दूधसे तो आदमी जिंदगीभर रह सकता है।

दूसरी बात यह है। यहा जितने दुःखी लोग है, उनके लिए तो पंडितजी—उनको मैं बहुत पहचानता हू—ऐसे हैं कि दूसरोंको सुलाकर सोनेवाले हैं। मानो एक ही बिछौना है, जो सूखा है, बाकी गीला है, तो वह सूखेमें दुःखीको सुलाएंगे खुद चाहे घूमते रहें। मैं यह पढकर बहुत खुश हुआ। वे कहते हैं कि उनके घरमें जगह नही है, दूसरे आदमी भी चले आते हैं,

---

[1] केन्द्रीय।

इसलिए जगह नही रहती है। वह तो मुख्य प्रधान है। तो मिलनेवाले जाते है, दोस्त है, अंग्रेज भी जाते है तो क्या वहासे उनको निकाल दे ? तो भी कहते हैं कि मेरी तरफसे एक कमरा या दो कमरा, जितना निकल सकता है निकालूगा और दु खी लोगोको रखूगा। फिर दूसरे मुख्य प्रधान भी करे, फिर फौजके अफसर है वे भी ऐसा करे। इस तरहसे सब अपने धर्मका पालन करें तो कोई दु खी नही रहेगा। ऐसा जो जवाहरने किया, उसे देखा तो मै उनको और आपको धन्यवाद देता हू कि हमारे यहा एक रत्न है। पीछे कहते है कि दूसरे धनिक लोग जैसे बिडला या दूसरे है, उनको भी यही करना है। जब प्रधान ऐसा करता है तो और भी क्यों न ऐसा करे ? बडी तेजीसे दु खी लोगोके दु खको दूर करनेकी कोशिश हो रही है। इससे हम सीखे कि हम मुसलमानोसे दुश्मनी नही करेंगे।

एक खत आया है। मेरा फाका चलता था तब १५ जनवरीको आया था। लोगोमें बदमाश भी पड़े है। उन्होने सोचा कि व्यापार करो। उन्होने बडे-बडे नोट निकाल दिए और गरीबोको बेचने लगे। सस्ते मिलते है, इसलिए गरीब बेचारे ले लेते है। लेकिन इन नोटोकी तो कोई कीमत नही, आखिर मामूली कागजके ही होते है। ऐसे नोट निकालने-वालोसे मै हाथ जोड़कर कहूगा कि ऐसा मत करो। क्या सच्चा मार्ग नही मिलता है, जिससे अपना काम चला सके ? मै गरीबोको भी, जो भोले है, कहूगा कि कहांतक ऐसे भोले रहोगे ! करोड़ो भोले रहेंगे तो काम नही चलेगा।

मुझको एक तार लाहौरसे आया है। वे भाई काश्मीर स्वातन्त्र्य लीग-के अध्यक्ष है। वे लिखते है कि आप जो कर रहे है वह बहुत बुलद काम है, लेकिन उसमे कामयाबी नही मिल सकती, जबतक काश्मीरका जो मसला है उसका फैसला नही हो जाता। इसके लिए तुमको ऐसा करना चाहिए कि भारत-सरकारने वहा जो फौज भेजी है उसको हटाले, क्योंकि उस फौजने काश्मीरमें हमला किया है। और काश्मीर जिसका है उसको दे दो तब फैसला होगा। इससे मुझको दु ख होता है। क्या काश्मीरका फैसला नही होता है तो आज ऐसा ही रहेगा—क्या मुसलमान हिंदू-सिखके, दुश्मन रहेगे और हिंदू-सिख मुसलमानके दुश्मन रहेंगे, सिर्फ काश्मीर-

के लिए ? पीछे लिखा क्या है उसे समझना चाहिए। मैं तो ऐसा नही मानता हू कि हमारी हकूमतने जो फौज भेजी है वह हमला करनेके लिए है। काश्मीरकी सकटकालीन सरकारके प्रधान शेख अब्दुल्लाने लिखा और महाराजाने लिखा कि हमको इमदाद[1] भेजो, नही तो काश्मीर गया—वह तो उनकी निगाहसे है, लिखनेवालेकी निगाहसे नही सही। तो मैं उस भाईको और ऐसे जितने है उन सबको कहूगा कि वे ऐसा न करे। हा, यह ठीक है कि जिसका है उसको दे दो। तो जितने बाहरसे आए है—अफरीदी हो या कोई भी हो—हट जाय। पुछके लोग बागी बने है तो मुझको शिकायत नही है, वे रहे तो भी बागी बनकर समूचे काश्मीरको ले लें, यह अच्छा नही है। वहासे बाहरके सब लोग निकल जाय, बाहरसे कोई गोलमाल न करे, शिकायत न करे और बाहरसे भीतरवालोको मदद न करे तो मैं समझ सकता हू, लेकिन कहे कि हम रहेगे और उनको निकाल दो तो बात बनती नही है। पीछे यह कहना कि काश्मीर जिसका है उसको दे दो, तो किसका है ? मैं कहूगा कि अभी तो काश्मीर महाराजाका है, क्योकि महाराजा तो वहा है। आज हमारी निगाहमे, हकूमतकी निगाहमें, महाराजाको निकाल नही सकते। हा, ऐसा समझे कि महाराजा बदमाश है, रैयतके लिए कुछ करता नही है तो मेरा खयाल है कि हकूमतका हक है कि उसे निकाल दे, लेकिन अभी ऐसी बात तो है नही। वहा जो मुसलमान है वे कहे कि हमें महाराजा नही चाहिए, हम सीधा-सीधा पाकिस्तान या हिंदुस्तानमे जाना चाहते है तो इसमें कोई शिकायत नही हो सकती। मैं तो फाका करके उठा हू। मै किसीका दुश्मन नही हूं तो मुसलमानका दुश्मन कैसे हो सकता हू ! मेरे पास आए और समझाए कि मेरी क्या गलती है। समझा सको तो मैं मान जाऊगा।

पीछे एक भाई ग्वालियरसे लिखते है—तार रतलामसे आया है, मुसलमान भाईका है। सही क्या है, मैं नही जानता हूं। तो वे लिखते है कि हमारे वहा ग्वालियर रियासतमे कोई देहात है—हम वहा मजबूर हो गए तब हिंदुओने हमें ले तो लिया, लेकिन मारना शुरू कर दिया—एक-दो

---

[1] मदद।

मारे गए, अनाज वगैरा लूट लिया। मकानोंको जला दिया। पंद्रह-सोलह जनवरीको लिखा। उन दिनों मेरा फाका चलता था। फाकासे उसको क्या मतलब हो सकता है ? अगर यह सही है तो मैं ग्वालियरके हिंदुओंसे कहूंगा कि दिल्लीमें जो बन गया है उसको आप लोग बिगाड़नेवाले हैं। वे कहते हैं कि जो हकूमत चलानेवाले हैं वे भी इमदाद नहीं देते हैं। ऐसा कैसे हो सकता है ? हिंदुस्तानके एक कोनेमें भी ऐसा हो तो मैं कहूंगा कि हकूमतको शर्मिंदा होना है और हमको भी शर्मिंदा होना है। मेरी उम्मीद है कि ऐसा हुआ हो तो आखिरमें उसको ठीक कर दिया जायगा।

मैंने सुना है, अखबारोंमें पढ़ा है कि काठियावाड़के जितने राजा हैं— काफी है, दो सौसे ज्यादा हैं—उन सबने मिलकर इकरार कर लिया है कि हम सब एक रियासत बनाएंगे और असेम्बली बना लेंगे, प्रजाका भी काम करेंगे और अपना भी काम करेंगे। अगर अखबारोंमें जो बात आई है वह सही है तो बड़ी चीज है। इसके लिए काठियावाड़के सब राजाओंको और वहांके लोगोंको मैं धन्यवाद देता हूं। भावनगरमें सब सत्ता प्रजाके हाथ सौंप दी और राजा प्रजाका सेवक बन गया। इस बड़े कामके लिए मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं।

: २१५ :

२१ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

पहले तो मैं माफी मांग लूं कि मैं १० मिनिट देरसे आया हूं। बीमार हूं, इसलिए समयपर नहीं आ सका।

कलके बम फूटनेकी बात कर लूं। लोग मेरी तारीफ करते हैं और तार भी भेजते हैं। पर मैंने कोई बहादुरी नहीं दिखाई। मैंने तो यही समझा था कि फौजवाले कहीं प्रैक्टिस[1] करते हैं। बादमें सुना कि

---

[1] अभ्यास।

बम था। मुझसे कहा गया कि आप मरनेवाले थे, पर ईश्वरकी कृपासे बच गए। अगर सामने बम फटे और मै न डरू, तो आप देखेंगे और कहेंगे कि वह बमसे मर गया, तो भी हँसता ही रहा। आज तो मै तारीफके काबिल नही हूं। जिस भाईने यह काम किया, उससे आपको या किसीको नफरत नही करनी चाहिए। उसने तो यह मान लिया कि मै हिंदू-धर्मका दुश्मन हूं। क्या गीताके चौथे अध्यायमे यह नही कहा गया है कि जहा कही दुष्ट धर्मको नुकसान पहुंचाते हैं, वहां उन्हे मारनेके लिए भगवान किसीको भेज देता है। उसने बहादुरीसे जवाब दिया। हम सब ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वह उसे सन्मति दे। जिसे हम दुष्ट मानते है और वह दुष्ट है, तो उसकी खबर ईश्वर लेगा।

वह नौजवान शायद किसी मस्जिदमे बैठ गया था। जगह नही थी, तो वह हकूमतको दोषी ठहरावे, पर पुलिसका या किसीका कहना न माने, यह तो ठीक नही।

इस तरह हिंदू-धर्म नही बच सकता। मैंने बचपनसे हिंदू-धर्मको पढ़ा और सीखा है। मैं छोटा-सा था और डरता था, तो मेरी दाई कहती थी कि डरता क्यों है, राम-नाम ले। फिर मुझे ईसाई, मुसलमान, पारसी सब मिले, मगर मैं जैसा छोटी उमरमें था, वैसा ही आज भी हूं। अगर मुझे हिंदू-धर्मका रक्षक बनना है तो ईश्वर मुझे बचावेगा।

कुछ सिखोंने आकर मुझसे कहा कि हम नही मानते कि इस काममें कोई सिख शामिल था। सिख होता तो भी क्या? हिंदू या मुसलमान होता, तो भी क्या? ईश्वर उसका भला करे। मैंने इसपेक्टर जनरलसे कहा है कि उस आदमीको सताया न जाय। उसका मन जीतनेकी कोशिश की जाय। उसे छोड़नेको मैं नहीं कह सकता। अगर वह इस बातको समझ ले कि उसने हिंदू-धर्म, हिंदुस्तान, मुसलमानों और सारे जगतके सामने अपराध किया है तो उसपर गुस्सा न करें, रहम करें। अगर सबके मनमें यही है कि बूढेका फाका निकम्मा था, पर इसे मरने कैसे दें, कौन उसका इलजाम ले, तो आप गुनहगार है न कि बम फेंकनेवाला नौजवान। अगर ऐसा नही है, तो उस आदमीका दिल अपने आप बदलेगा ही; क्योंकि इस जगतमें पाप कभी अपने आप रह नहीं सकता। वह किसीके सहारे ही टिक

सकता है। सिर्फ भगवान और भगवानके भक्त ही अपने सहारे रह सकते है। इसीमेंसे हमारा असहयोग निकला। अहिंसात्मक असहयोग यहा भी ठीक है।

आप भी भगवानका नाम लेते है। हमला हो, कोई पुलिस भी मददपर न आवे, गोलिया भी चले और तब भी मै स्थिर रहू और राम-नाम लेता और आपसे लिवाता रहू, ऐसी शक्ति ईश्वर मुझे दे, तब मै धन्यवाद-के लायक हू ।

कल एक अनपढ बहनने इतनी हिम्मत दिखाई कि बम फेंकनेवालेको पकड़वा दिया। यह मुझे अच्छा लगा। मै मानता हू कि कोई मिस्कीन हो, अनपढ हो, या पढ़ा-लिखा हो, मन है तो सब कुछ है। मन चगा तो भीतरमे गगा। मुझपर तो सबने प्रेम ही बरसाया है ।

बहावलपुरवालोने लिखा है कि हमे जल्दी निकालो, नही तो सब मरनेवाले है। मै कहता हू कि वे घबराए नही। वहाके नवाब साहबने आज भी मुझे तार दिया है कि वे सब कोशिश करेगे। मै उस चीजको भूल नही गया हू ।

बबईके सिंधी सिख भाइयोकी तरफसे एक तार आया है। वे कहते है कि सिंधमे १५००० सिख है। कुछको तो मार डाला है। ये १५००० इधर-उधर पडे है। उनकी जान और उनका ईमान खतरेमें है। उन्हे वहासे निकालनेकी तजवीज कीजिए—हवाई जहाजसे ही कोशिश कीजिए। मै यहा जो कहता हू, वह बात उन तक जल्दीसे पहुचेगी। तार देरसे पहुचते हैं। मुझसे यह बरदाश्त नही होगा कि १५००० सिख काटे जाय, या उनके ईमान-इज्जतपर हमला हो। तो मै एक इन्सान जो कर सकता है वह करूगा। दूसरे, पडितजी तो सबका ध्यान रखते ही है। सिंध और पाकिस्तानकी हकूमतको मै कहूगा कि वे सिखोंको इतमीनान दिला दे कि जबतक वे वहा है, उनको किसी तरहका खतरा नही। अगर वे यह नही कर सकते, तो सबको एक जगह रखे या हिफाजतके साथ भेज दें। सिख बहादुर है। उनके ईमानपर हमला कौन करनेवाला है। तो सिख भाई इतमीनान रखे। मैने कुछ पारसी भाई वहा देखनेको भेजे है।

एक भाई लिखते है कि जब आप १९४२ मे जेलमे थे तब हमने हिंसाका भी काम कर लिया था। उपवासमे अगर कही आपका अत हो

गया तो देशमें ऐसी हिंसा फूटेगी कि आपका ईश्वर भी रो उठेगा। इसलिए आपका उपवास हिंसक होगा। आप उपवास छोड़ दीजिए। यह वात प्रेमसे लिखी है और अज्ञानसे भी। यह सही है कि मेरे जेल जानेके वाद हिंसा हुई। उसीका यह नतीजा है। उस वक्त सारा हिंद अहिंसक रहता तो उसका आजका हाल कभी न होता। मेरे मरनेसे सब आपस-आपसमें लड़ेंगे, इस वारेमें भी मैंने सोच लिया है। ईश्वरको वचाना होगा तो वचावेगा। अहिंसासे भरा आदमी मरता है तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा।' पर कृष्ण भगवानके मरनेके वाद यादव ज्यादा भले या पवित्र नहीं हुए। सब कट-कटकर मर गए। तो मैं उसपर रोनेवाला नहीं। भगवानने इरादा कर लिया है कि इन्हें मरने दो, तो ऐसा होगा। लेकिन मैं दीन, मिस्कीन आदमी हू। मेरे मरनेसे क्या लडना मारना? पर भगवान मिस्कीनको भी निमित्त वनाकर न मालूम क्या-क्या कर सकता है? कहते हैं, अव यहाके हिंदू-मुसलमान नहीं लडेंगे। मुसलमान औरतें भी दिल्लीमें घरसे बाहर आने लगी है। मुझे खुशी है। मैं सवसे कहता हू कि अपने-अपने दिलको भगवानका मदिर वना लो।

: २१६ :

२२ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

आप देखते हैं कि आहिस्ता-आहिस्ता ईश्वरकी तरफसे मुझमें ताकत आ रही है। उम्मीद है कि जल्दी पहले-जैसा हो जाऊगा। पर यह ईश्वरके हाथोंमें है।

एक भाई लिखते है कि जवाहरलालजी, दूसरे वजीर और फौजी अफसर वगैरा सब अपने-अपने घरोंमेंसे कुछ जगह शरणार्थियोंके लिए निकालें तो भी उनमें कितने लोग वस सकेंगे? कहनेवाले ज्यादा हैं, करनेवाले कम।

ठीक है, कुछ हजार ही उनमें रह सकेंगे। काम इतना वड़ा नहीं,

पर करनेवाले एक मिसाल कायम करेंगे। इंगलैंडके राजा कुछ भी त्याग करें, एक प्याली शराब भी छोड़ें, तो भी उनकी कद्र होती है। सब सभ्य देशोंमें ऐसा होता है। सब दुःखी लोगोंपर अच्छा असर होता है। अगर दूसरे लोग भी उनकी तरह करेंगे, तो उनके लिए मकान वगैरा बनानेवालोंको तसल्ली मिलेगी। अगर नतीजा यह होगा कि दूसरी जगहसे भी लोग दिल्ली आने लगे, तो काम बिगड़ेगा। लोगोंने समझा कि दिल्लीमें हमारी पूछ-ताछ ज्यादा होगी।

दूसरी कठिनाई यह है—लोग कहते हैं कि पहले कांग्रेसको एक लाख रुपये जमा करनेमें भी मुसीबत होती थी। लोग देते तो थे, पर हम भिखारी थे। आज करोड़ों रुपये हमारे हाथमें आ गए हैं। करोड़ों लेनेकी ताकत भले आई, पर खर्च तो वही अंग्रेजी जमानेवाला है। जितना रुपया उड़ाना है, उड़ावे। शानसे न रहे, तब उसका असर देशसे बाहर भी पड़ेगा। उन्हें समझना चाहिए कि पैसा शौकके लिए खर्चना चाहिए या देशके कामके लिए? यदि यह बात ठीक है कि हम इंगलैंडके साथ मुकाबला करें तो कर सकते हैं, पर वहां एक आदमीकी जो आमदनी है, उससे यहां बहुत कम है। ऐसा गरीब मुल्क दूसरे मुल्कोंके साथ पैसेका मुकाबला करे तो वह मर जावेगा। दूसरे देशोंमें हमारे प्रतिनिधि भी यह बात समझें। अमेरिकाका मुकाबला रहने दो। खानेमें, पीनेमें और पार्टियां देनेमें वे जो दावा करते थे कि हमारी हकूमत आवेगी तो हमारा भी रंग-ढंग बदल जायगा वह उन्हें झुठला देना चाहिए। हमारे त्यागी कांग्रेसवाले भी ऐसी गलती करे तो यह सोचनेकी बात है।

फिर लोग कहते हैं कि ये लोग इतने पैसे लेते हैं, तब हम हकूमतकी नौकरी करें, तो हमें भी ज्यादा पैसे मिलने चाहिए। सरदार पटेलको अगर १५०० रुपए मिलें, तो हमें ५०० तो मिलने ही चाहिए। यह हिंदुस्तानमें रहनेका तरीका नहीं है। जब हरएक आत्म-शुद्धिका प्रयत्न करता हो, तब यह सब सोचना कैसा? पैसेसे किसीकी कीमत नहीं होती।

ग्वालियर रियासतके एक गांवमें मुसलमानोंपर जो गुजरी है उसे बतानेवाले तारकी बात मैंने की थी। उस बारेमें मुझे वहांके एक कार्यकर्ताने सुनाया कि आपको मैं एक खुशखबरी देने आया हूं। ग्वालियरके

महाराजाने सब सत्ता प्रजाको दे दी है। थोडी जो रखी है उसमे भी हमारा बहुमत होगा। उन्होने मुझसे कहा कि लोगोको जो सत्ता मिलनी चाहिए वह मिली, यह सुनकर आप खुश होगे। हां, मगर प्रजा-मडलवालोमे भेद-भाव आ जाय और वे मुसलमानोको निकाले, तो मुझे क्या खुशी? अगर आप कहे कि भेदभाव नही होगा, क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या ईसाई, किसीके साथ वैर नही करेगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। उसमें मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही। महाराजाको लोगोका सेवक बनना है। इस आत्म-शुद्धिके यज्ञमे राजा-प्रजा सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनियाके सामने खडे रह सकते है। अगर हमे दुनियाकी चालको ठीक रखना है और उसके रक्षक बनना है तो इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नही है।

: २१७ :

२३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज मेरे पास काफी चीजे पड़ी है। जितना हो सकेगा उतना कहूगा।

आज सुभाषबाबूकी जन्म-तिथि है। मैने कह दिया है कि मैं तो किसीकी जन्म-तिथि या मृत्यु-तिथि याद नही रखता। वह आदत मेरी नही है। सुभाष बाबूकी तिथिकी मुझे याद दिलाई गई। उससे मै राजी हुआ। उसका भी एक खास कारण है। वे हिंसाके पुजारी थे। मैं अहिंसाका पुजारी हू। पर इसमें क्या? मेरे पास गुणकी ही कीमत है। तुलसीदासजीने कहा है न:

"जड़-चेतन गुन-दोषमय विश्व कीन्ह करतार।
संत-हस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार॥

हंस जैसे पानीको छोडकर दूध ले लेता है, वैसे ही हमे भी करना चाहिए। मनुष्यमात्रमे गुण और दोष दोनो भरे पड़े है। हमें गुणोको ग्रहण

करना चाहिए। दोषोको भूल जाना चाहिए। सुभाषबाबू बडे देश-प्रेमी थे। उन्होने देशके लिए अपनी जानकी बाजी लगा दी थी और वह करके भी बता दिया। वह सेनापति बने। उनकी फौजमे हिंदू, मुसलमान, पारसी, सिख सब थे। सब बगाली ही थे, ऐसा भी नही था। उनमे न प्रांतीयता थी, न रगभेद, न जातिभेद। वे सेनापति थे, इसलिए उन्हे ज्यादा सहूलियत लेनी या देनी चाहिए, ऐसा भी नही था।

एक बार एक सज्जन, जो बडे वकील थे, उन्होने मुझसे पूछा कि हिंदू-धर्मकी व्याख्या क्या है? मैने कहा, मै हिंदू-धर्मकी व्याख्या नही जानता। मै आप-जैसा वकील कहा हू? मेरे हिंदू-धर्मकी व्याख्या मै दे सकता हू। वह यह है कि जो सब धर्मोको समान माने वही हिंदू-धर्म है। सुभाषबाबूने सबका मन हरण करके अपना काम किया। इस चीजको हम याद रखे।

दूसरी चीज—ग्वालियरसे खबर आई है कि रतलामसे जो आपको एक गावके झगडेके बारेमे खबर मिली थी, वह सर्वथा ठीक नही है। वहा कुछ दगा हुआ तो सही, लेकिन आपस-आपसमे उसमे हिंदू-मुसलमानकी कोई बात न थी। मुझे इससे बडी खुशी होती है। उसपरसे मै मुसलमान भाइयोको जाग्रत करना चाहता हू। मै तो, जो चीज मेरे सामने आती है, उसे जनताके सामने रख देता हू। अगर ऐसी बनी-बनाई बात कहते रहेंगे, तो सबके दिलमे गलतफहमी हो जायगी। कोई भी चीज बढाकर न बतावे। अपनी गलती बढाकर बता दे, दूसरोंकी कम करके। तब यह माना जायगा कि हम आत्मशुद्धिके नियमका पालन करते है।

मैसूरसे तार आया है कि आपने जो व्रत लिया उसका मैसूरकी जनतापर असर नही पडा। वहा झगडा हो गया है। मै मैसूरके हिंदू-मुसलमानोको जानता हू। जिनके हाथमें हकूमत है उनको भी जानता हू। मैंने मैसूर सरकारको लिखा है कि वे, जो कुछ हुआ है, उसे साफ-साफ दुनियाको बता दें।

जूनागढसे मुसलमान भाइयोंका तार आया है। वे लिखते है कि जबसे कमिश्नर और सरदारने हकूमत ले ली है, तबसे यहा हमें न्याय ही मिल रहा है। अब कोई भी हममें फूट नही डाल सकेगा। यह मुझे बडा अच्छा लगता है।

मेरठसे एक तार आया है। उसमें लिखा है कि आपके उपवासका नतीजा ठीक आ रहा है। यहांपर जो नेशनलिस्ट[1] मुसलमान है, उनसे हमें कोई नफरत नही है। पर लीगी मुसलमान सीधे हो गए है या हो जाएंगे, ऐसा मानोगे तो आपको पछताना पडेगा। आपकी अहिंसा अच्छी है, मगर राजनीतिमें नही चल सकती। फिर भी हम आपको कहना चाहते है कि आजकी जो हकूमत है वह अच्छी है, इसमे किसी तरहकी तबदीली नही होनी चाहिए।

मै तो नही समझता कि तबदीलीका सवाल उठता कहा है। मगर तबदीलीकी गुजाइश हो तो जिनके हाथमे हकूमत है, उन्हे निकालना आपके हाथोमें है। मै तो इतना जानता हू कि उनके बिना आज आप काम नही चला सकेंगे।

आज यह कहना कि राजनीतिमे अहिंसा चल नही सकती, निकम्मी बात है। आज जो काम हम कर रहे है, वह हिंसाका है। मगर वह चल नही सकता। मेरठके मुसलमानोने आजादीकी लड़ाईमे काफी हिस्सा लिया है। आजकलकी राजनीति अविश्वाससे चल ही नही सकती। इसलिए हमें मुसलमानोपर विश्वास रखना ही होगा। यदि हमने तय कर लिया है कि भाई भाई बनकर रहना है, तो फिर हम किसी मुसलमानपर खामखाह अविश्वास न करेंगे; फिर भले वह लीगी हो। मुसलमान कहे कि हिंदू-सिख बदमाश है, तो यह निकम्मी बात है। ऐसे ही हरएक लीगीके लिए यह मान लेना भी बुरा है। अगर कोई,लीगी या दूसरा कोई भी बुरी बात करता है, तो आप उसकी खबर सरकारको दें। हमारा परम धर्म मैंने सबको बता दिया है कि न्याय हकूमतके हाथोमें रहने दे, अपने हाथमें न ले ले। वह वहशियाना काम होगा। मेरे पास बहुतसे तार आ रहे है। सबका जवाब नही दे सकता, इसलिए सभाके मारफत मै आप सबका अहसान मानता हूं। आपकी दुआ सफल हो।

---

[1] राष्ट्रीय।

: २१८ :

२४ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मैंने आपसे प्रार्थना की है कि सब लोगोंको प्रार्थना-सभामे शात रहना चाहिए। आज तो मैंने प्रार्थनाके आरभमे भी कहा था कि सब शात हो जाए। तब तो आप शात हो गए, लेकिन बादमे जब प्रार्थना चलती थी तब कुछ बहनें आपसमें बाते भी करती थी और बच्चे चीखते रहते थे। वह कोई अच्छा नही लगता था। मै बार-बार यही कहता हू कि सबको जब बच्चे चीखते हो या रोते हों, तो उनको बाहर ले जाना चाहिए। उन्हे भीतर लेकर बैठनेकी हिम्मत नही होनी चाहिए, अगर वे सभ्यता सीखना चाहती है तो।

आज एक तार मेरे पास है। इसकी बात तो मै कल ही करना चाहता था, लेकिन नही कर सका। बहुत लबा तार है; लेकिन उसमे इतना लिखा है कि दोनो हकूमतोमें यह समझौता तो हो गया है कि जो कैदी एक हकूमतमें हो गए थे, उनको दूसरी हकूमतमे भेज देना। जैसा कि अगर पश्चिमी पजाबमे या कहो पाकिस्तानके पजाबमे, जो आदमी कैदमे है, वे तो हिंदू और सिख ही हो सकते है, कोई अन्य और तरहसे हो, वह दूसरी बात है। इसी तरहसे जो पूर्वी पजाबमे है, वे मुसलमान कैदी है। उनमे वे लड़किया भी है जिन्हे लोग भगा ले गए थे। तारमें वे कहते है कि ऐसा समझौता हो तो गया, लेकिन थोडे अर्सेतक चला। अभी वह टूट गया है और कहा यह जाता है कि जो टूटा उसका कारण यह है कि पश्चिमी पंजाबकी जो हकूमत है उसने कैदियोको रख लिया और कहा कि यह तभी हो सकता है जब कि पूर्वी पजाबमे जितनी रियासतें है, या राजा है और जहातक उनका कार-बार चलता है, वहा भी जो कैदी है, वे वापिस आने चाहिए और वहा जो लडकिया है उनको भी वापिस करना चाहिए।

मुझे तो इसमे कोई दिक्कत नही हो सकती है। ऐसे ही पश्चिमी पजाबकी जो रियासते है, वहासे होना चाहिए। वहा कम रियासतें है और यहा ज्यादा है, उससे क्या हुआ? कही भी हो, इस बारेमे समझौता हो

जाना चाहिए। इसमें दिक्कत आती है, यह तो सही है। पूर्वी पंजाबसे जब यह समझौता कर लिया था तब तो यह नही था, ऐसा मैं अखबारोसे समझता हू। नही था, तो भी क्या ? जितनी लडकिया उठा ले गए हैं, इधर या उधर, वे सब वापिस होनी चाहिए। मेरी निगाहमे तो यह नही होता कि पश्चिमी पजाबसे दस लड़की आती है तो पूर्वी पजाबसे भी दस ही जानी चाहिएं, ग्यारहवी नहीं जा सकती। जितनी लड़किया पूर्वी पजावमे पडी है, औरतें है, पुरुष है या दूसरे कैदी हैं, उन सबको वापस कर देना चाहिए और यह सब विना शर्त होना चाहिए। लेकिन आज ऐसा नही होता है, क्योंकि वैमनस्य भरा हुआ है। वे ऐसा करनेमे कठिनाई महसूस करते हैं। लेकिन यह तो होना ही चाहिए कि पूर्वी पजाबसे तो सबको वापस कर दें। उसमें क्या होगा ? माना कि कुछ ज्यादा तादादमे पश्चिमी पजाबमे और थोड़ी तादादमें पूर्वी पजाबमे है। मैंने कहा है कि मुझको तो इसकी परवा नही है। सब गलती ही है, एकको ले गए वह गलती है और सौको ले गए वह भी गलती है। ज्यादा नही ले सके, उसका कोई दूसरा सबब नही है। दिलमें तो ऐसा नही था कि एक ही लड़कीको ले जाए या इतने पुरुष ही कैद रखे। जब सब बिगड़ा तो उसमे पीछे मुकाबला क्या करना था ! जो चलता रास्ता है उसमे तो रुकावट नही होनी चाहिए। मैं तो कहता हू कि दूसरी चीजे भी करें, समझौता करके। अगर दोनो हकूमत दोस्ताना तरीकेसे करें और यह समझें कि लड़ाई हम आपस-आपसमें नही करना चाहते है, तो फिर रास्ता सीधा और साफ हो जाता है। इसीलिए मैं दोनों हकूमतोंसे बड़े अदबसे कहूगा कि जो कुछ भी हो गया है उसे भूलकर अब भी दुरुस्त हो जाए। दिलको दुरुस्त करना है और अगर दिल दुरुस्त हो गया तो ठीक है और नही हुआ तो फिर हमें तो अपने धर्मका पालन करना ही है, लेकिन झगड़ेका सबब तो रह ही जाता है, फिर चाहे मुझको आप तार भेजते रहें कि हमारे झगड़ोंका कारण कोई रहता ही नही। ये सारी चीजें आत्मशुद्धिमे आ जाती हैं। आत्मशुद्धिके माने यही है कि हम अपने दिलोंको साफ करें।

लेकिन मेरे पास इल्जाम तो यह आ रहा है कि पश्चिमी पंजाबमें जो औरतोंको उठा ले गए है उनको वे उतनी तादादमें वापस नहीं करते।

ऐसी शिकायत पूर्वी पंजाबके बारेमें भी करते हैं। मैंने तहकीकात तो नहीं की है कि कौन झूठा है और कौन नहीं। मैं तो जानता नहीं हूं, लेकिन पश्चिमी पंजाबके बारेमे अगर यह शिकायत सही है तो शर्मकी बात है, पूर्वी पंजाबके बारेमे भी ऐसा ही है। लेकिन पश्चिमी पंजाबके बारेमें तो यह शिकायत भी है कि वे कहते है एक चीज, और करते है दूसरी। मैं इस बारेमे इतना ही कह सकता हू कि यह सब दुरुस्त होना चाहिए। नही होता है तो बडे शर्मकी बात है। और पीछे मैं तो यही कहू कि मैंने जो फाका किया उसके अक्षरोंपर तो दिल्लीमे अमल हो भी गया, लेकिन उसमे जो भेद या रहस्य है, उसका पालन नही हुआ।

: २१६ :

२५ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी हमारेमें दिलका समझौता हो गया है, ऐसा लोग कहते हैं। मैं मुसलमानोसे पूछता हू और हिंदुओसे भी। सब यही कहते हैं कि हम सब समझ गए है कि अगर आपस-आपसमे लड़ते रहेंगे तो काम हो नही सकेगा। इसलिए आप अब बेफिक्र रहें। मै यह पूछना तो नही चाहता हूं कि इस सभामे कितने मुसलमान है। मगर मै सबको भाई-भाई बननेको कहूगा। किसी भी मुसलमानको अपना दोस्त बना लें, या यह मानो कि जो मुसलमान हमारे सामने आता है वह हमारा दोस्त है और उससे कहो कि चलो, वहा आरामसे बैठो। यहा किसीसे नफरत तो है ही नही। दो दिनसे तो यहां काफी आदमी आ रहे है। अगर सब अपने साथ एक-एक मुसलमान लाते है तो बहुत बड़ा काम हो जाता है। इससे हम यही बता सकते हैं हम भाई-भाई हैं।

महरौलीमें जो दरगाह है, वहां कलसे मुसलमानोंका उर्सका मेला शुरू होगा। वैसे तो वह हर वर्ष होता है, लेकिन इस वर्ष तो हमने उसको ढहा दिया था या बिगाड दिया था। जो पत्थरकी चित्रकारीका काम

था वह भी ढहा दिया था। अब कुछ ठीक कर लिया है, इसलिए उर्स जैसा पहले मनता था ऐसा ही अब मनेगा। वहा कितने मुसलमान आते है इसका मुझको कुछ पता नही है। लेकिन इतना तो मुझे मालूम है कि वहा दरगाहमें मुसलमान भी काफी जाते थे और हिंदू भी। मेरी तो उम्मीद है सब हिंदू इस बार भी शातिसे और पक्की भावनासे जाए तो बड़ा अच्छा है। मुझको पता तो लग जायगा कि कितने हिंदू गए थे और कितने नही। लेकिन वे जो मुसलमान वहा जाते है उनका मजाक न करें और किसी तरहकी निंदा न करें। पुलिसके लोग वहा होगे तो सही, लेकिन कम-से-कम रहने चाहिए। आप सब पुलिस बन जाएं और सब काम ऐसी खूबीसे हो कि वह चीज सारी दुनियामें चली जाए। इतना तो हो गया कि आप बडे मशहूर हो गए है। अखबारोंमें भी आता है और मेरे पास तो तार और खत दुनियाके हर हिस्सेसे आ रहे है। चीनसे तथा एशियाके सब हिस्सोंसे आ रहे है और अमरीका तथा यूरोपसे भी। दुनियाका कोई भी देश बाकी नही बचा है और सब यही कहते है कि यह तो बहुत बुलद काम हो गया है। हम तो ऐसा मानते थे कि अग्रेज तो वहासे आ गए, अब वे तो जाहिल आदमी है और जानते नही है कि अपना राज कैसे चलाना चाहिए और आपस-आपसमें लड़ते-भिड़ते थे। १५ अगस्तको यह सारी चीज़ तो हो गई और हम तारीफ भी कर रहे थे कि हम तलवारके जोरसे नही लडे। हमने शातिसे लड़ाई की या ठडी ताकत की लड़ाई की, और उसका नतीजा यह हुआ कि हमारी गोदमें आकर आजादी देवीने रमण करना शुरू कर दिया। ऐसी घटना १५ अगस्तको हो गई।

मैं २ फरवरीको वर्धा चला जाऊंगा। राजेंद्र बाबू भी मेरे साथ जाएंगे; लेकिन मै वहांसे जल्दी ही लौटनेकी कोशिश करूंगा। अखबारोंमें प्रकाशित यह समाचार गलत है कि मैं वहा एक महीनेतक ठहरूंगा। लेकिन मैं वर्धा तभी जा सकता हूं जब आप लोग आशीर्वाद देंगे और यह कहेंगे कि अब आप आरामसे जा सकते है, हम यहा आपसमें लडनेवाले नहीं है।

उसके बादमें मैं पाकिस्तान भी जाऊंगा, लेकिन उसके लिए पाकिस्तान सरकारको कहना है कि तू आ सकता है और अपना काम कर सकता है।

अगर पाकिस्तानकी एक भी सूबेकी हकूमत बुलाएगी तो भी मैं वहा चला जाऊगा ।

जब-जब काग्रेसकार्य-समितिकी बैठक मेरी उपस्थितिमें होती है, तब-तब मै आपको उसके बारेमें कुछ-न-कुछ बता देता हू । आज कार्य-समितिकी दूसरी बैठक हुई और उसमें काफी बाते हुईं । सब बातोंमें तो आपकी दिलचस्पी भी नही होगी, लेकिन एक बात तो आपके बताने लायक है । काग्रेसने २० सालसे यह तय कर लिया था कि देशमें जितनी बडी-बडी भापाए है उतने प्रात होने चाहिए । काग्रेसने यह भी कहा था कि हकूमत हमारे हाथमें आते ही ऐसे प्रात बनाए जायगे । वैसे तो आज भी ९ या १० प्रात बने हुए है और वे एक मरकजके मातहत[1] है । इसी तरहसे अगर नए प्रान्त बने और सब दिल्लीके मातहत रहे तबतक कोई हर्जकी बात नही । लेकिन अगर वे सब अलग-अलग होकर आजाद हो जाए और एक मरकजके मातहत न रहे तो फिर वह एक निकम्मी बात हो जाती है । अलग-अलग प्रात बननेके बाद वे यह न समझ ले कि बबईका महाराष्ट्रसे कोई सबध नही, महाराष्ट्रका कर्नाटकसे और कर्नाटकका आध्रसे कोई सबध नही । तब तो हमारा काम बिगड जाता है । इसलिए सब आपसमें भाई-भाई समझे । इसके अलावा अगर भापावार प्रात बन जाते है तो प्रातीय भापाओंकी भी तरक्की होती है । वहाके लोगोंको हिंदुस्तानीमे तालीम देना तो वाहियात है और अग्रेजीमें देना तो और भी वाहियात है ।

: २२० :

२६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज २६ जनवरी स्वतन्त्रताका दिन है । जबतक हमारी आजादी-की लड़ाई जारी थी और आजादी हमारे हाथमें नही आई थी, तबतक इसका

---

[1] अधीन ।

उत्सव मनाना जरूर मानी रखता था। किंतु अब आजादी हमारे हाथमे आ गई है और हमने इसका स्वाद चखा है तो हमे लगता है कि आजादीका हमारा स्वप्न एक भ्रम ही था जो कि अब गलत साबित हुआ है। कम-से-कम मुझे तो ऐसा लगा है।

आज हम किस चीजका उत्सव मनाने बैठे है? हमारा भ्रम गलत साबित हुआ, इसका नही। मगर अपनी इस आशाका उत्सव हमे मनानेका जरूर हक है कि काली-से-काली घटा अब टल गई है और हम उस रास्तेपर है कि जिसपर आते-जाते हुए तुच्छ-से-तुच्छ ग्रामवासीकी गुलामीका अत आएगा और वह हिंदुस्तानके शहरोका दास बनकर नही रहेगा; बल्कि देहातोंके विचारमय उद्योगोके मालकी विज्ञप्ति और बिक्रीके लिए शहरके लोगोका उपयोग करेगा। वह यह सिद्ध करेगा कि वह सचमुच हिंदुस्तानकी भूमिका जायका[1] है।

इस रास्तेपर आगे जाते हुए अतमे सब वर्ग और सप्रदाय एक समान होगे। यह हर्गिज न होगा कि बहुसख्या अल्पसख्यापर—चाहे वह कितनी ही कम या तुच्छ क्यों न हो—अपना प्रभुत्व जमाए या उसके प्रति ऊच-नीचका भाव रखे। हमे चाहिए कि इस आशाके फलीभूत होनेमें हम ज्यादा देरी न होने दे कि जिससे लोगोके दिल खट्टे हो जाए।

दिन-प्रतिदिनकी हडतालो और तरह-तरहकी बदअमनी जो देशमें चल रही है वह क्या इसी चीजकी निशानी नही कि आशाए पूरी होनेमे बहुत देर लग रही है? यह हमारी कमजोरी और रोगकी सूचक है। मज-दूर-वर्गको अपनी शक्ति और गौरवको पहिचानना चाहिए। उनके मुका-बिलेमे वह शक्ति या गौरव पूजीपतियोमे कहां है, जो कि हमारे ग्रामवर्गमे भरा है। सुव्यवस्थित समाजमे हडतालोका बदअमनीके लिए अवसर या अवकाश ही नही होना चाहिए। ऐसे समाजमें न्याय हासिल करनेके लिए काफी कानूनी रास्ते होंगे। खुली या छुपी जोरावरीके लिए स्थान ही न होगा। कानपुर या कोयलेकी खानोमें या और कही भी हड-तालें होनेसे सारे समाज और खुद हड़तालियोको आर्थिक नुक्सान उठाना

[1] स्वाद—व्यंजन।

पडता है। मुझे यह याद दिलाना निकम्मा होगा कि यह लबा लेक्चर मेरे मुहमें शोभा नही देता, जब कि मैंने खुद इतनी सफल हडतालें करवाई हैं। अगर कोई ऐसे टीकाकार हैं तो उन्हे याद रखना चाहिए कि उस वक्त न तो आजादी थी और न इस किस्मके कानूनी जाब्ते थे जो कि आजकल हैं। कई वार तो मुझे ताज्जुब होता है कि क्या हम सचमुच ताकतकी सियासी शतरज और सत्तापर चुगल[1] मारनेकी बवा (बीमारी) से, जो कि पूर्व और पाश्चात्यके सब देशोमें फैल रही है, बच सकते हैं। इससे पहले कि मैं इस विषयको यहा छोड़ू, मैं यह आशा प्रकट किए बिना नही रह सकता कि यद्यपि भौगोलिक व राजनैतिक दृष्टिसे हिंदुस्तान दो भागोमें बट गया, पर हमारे दिल जुदा नही हुए और हम हमेशाके दोस्त बनकर भाइयोकी तरह एक दूसरेकी मदद करते रहेंगे और एक दूसरेको इज्जतकी निगाहसे देखेंगे। जहातक दुनियाका ताल्लुक है हम एक ही रहेंगे।

कपडेपरसे अकुश उठानेके फैसलेका सब तरफसे स्वागत किया गया है। कपडेकी कमी कभी थी ही नही, और हो भी कैसे सकती है, जब कि देशमें इतनी रुई, और कातनेवाले और बुननेवाले मौजूद हैं। कोयले और जलानेकी लकडीपरसे अकुश उठनेपर भी इतना ही सतोप प्रकट किया गया है। यह वडी देखनेकी चीज है कि अब बाजारमें गुड जरूरतसे ज्यादा आकर जमा हो रहा है, और गुड ही गरीब आदमीकी खुराकमें गर्मी देनेवाली चीजके अशको पूरा कर सकता है। गुडके इन जमा हुए ढेरोको घटाने या जहा गुड बनता है वहासे गुड पहुचानेकी कोई सूरत नही, अगर तेजीसे सामान ढोनेका बदोवस्त न हो। एक मित्र, जो इस विषयको खूब समझते हैं, एक पत्रमें लिखते हैं, वह ध्यान देने लायक है :

"यह कहनेकी जरूरत नही कि अकुश उठानेकी नीतिकी सफलताका ज्यादा आधार इस चीजपर ही है कि रेलगाड़ी या सड़कसे सामानकी नकली हरकत[2] का ठीक-ठीक बदोवस्त किया जाए। अगर रेलसे माल इधर-उधर ले जानेके तत्रमें सुधार न हुआ तो देशभरमें कहत[3] फैलने और

[1] चुगल (गुजराती) पंजा; [2] हरकत (गुज०) अड़चन।
[3] अकाल।

अकुश उठानेकी सब योजना अस्त-व्यस्त हो जानेका डर है। आज जिस तरहसे माल ले जानेका हमारा तत्र चल रहा है उससे दोनो, अकुश चलाने और उठानेकी नीति, सख्त खतरेमे है । हिंदुस्तानके जुदा-जुदा हिस्सोमें भावोंमे इतना भयकर फर्क होनेकी वजह भी माल उठानेके साधनोकी यह कमी ही है। अगर गुड रोहतकमें आठ रुपए मन और बवईमे पचास रुपए मनके हिसाव विकता है तो यह साफ वताता है कि रेलवे तत्रमे कही सख्त गडवड है। महीनोतक मालगाडीके डिब्बोमेंसे सामान नही उतारा जाता, डिब्बो और कोयलेकी कमी और तरह-तरहके मालको तरजीह[1] देनेके वहाने, मालगाडीके डिब्बोपर माल लादनेमे सख्त वेईमानी और घूसका वाजार गर्म है। एक डिब्बेको किरायेपर हासिल करनेके लिए सैकडो रुपए खर्च करने पडते है और कई-कई दिनोतक स्टेशनोंपर झक मारनी पड़ती है। डिब्बोंकी माग पूरी करने और डिब्बोको चलते रखनेमे ट्रासपोर्ट-के मत्रीकी भी अभीतक कुछ चली नही। अगर अकुश उठानेकी नीतिको सफल वनाना है तो ट्रासपोर्टके मत्रीको रेल और सडककी सारी ट्रांसपोर्ट-व्यवस्थाकी फिरसे जाच-पडताल करनी होगी । तभी यह नीति जिन गरीव लोगोको राहत देनेके लिए चलाई जा रही है, उनको फायदा पहुचा सकेगी। आज इस ट्रांसपोर्टके कसूरसे लाखो और करोड़ो देहातियोको सख्त तकलीफ उठानी पड़ती है और उनका माल मडीतक पहुचने ही नही पाता।"

जैसा मै पहले लिख चुका हू, पेट्रोलका राशनिंग वद करना ही चाहिए और सडकसे सामान ढोनेके साधनोका इजारा[2] और परमिटका तरीका बिल्कुल वद होना चाहिए। इजारेमें थोडी ट्रासपोर्ट कपनियोंका ही लाभ होता है और करोडो गरीवोंका जीवन दूभर हो रहा है। अकुश उठानेकी नीतिकी ९५ फी सदी सफलता उपरोक्त शर्तोंपर ही निर्भर है। जो सूचनाए ऊपर दी गई है उनपर अमल हुआ तो परिणामस्वरूप देहातोंमे लाखों टन खाद्य पदार्थ और दूसरा माल देशभरमें आने लगेगा। वेईमानी और घूसखोरीका विषय कोई नया नही है, केवल अव वह पहलेसे वहुत ज्यादा वढ़ गया है। वाहरका अकुश तो कुछ रहा ही नही है। इसलिए यह

[1] विशेषता; [2] (गुज०) ठेका।

घूसखोरी तबतक बद न होगी जबतक जो लोग इसमें पडे है वे समझ न ले कि वे देशके लिए है, न कि देश उनके लिए। इसके लिए जरूरत होगी एक ऊचे दर्जेके नैतिक शासनकी। उन लोगोकी तरफसे, जो खुद घूसखोरीके इस मर्जसे बचे हुए है और घूसखोर अमलदारोपर जिनका प्रभाव है, ऐसे मामलोमे उदासीनता दिखाना गुनाह है। अगर हमारी सध्याकालकी प्रार्थनामे कुछ भी सचाई है तो घूसखोरीके इस दौरको खत्म करनेमे उससे काफी मदद मिलनी चाहिए।

: २२१ :

२७ जनवरी १९४८

(आज गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे एक ही मुसलमान उपस्थित था। गाधीजीने कहा कि मै इतनेसे ही सतुष्ट नही हू। प्रार्थनामे आनेवाले सब हिंदू और सिख भाई-बहन अपने साथ एक-एक मुसलमान लाए।

इसके बाद गांधीजीने महरौलीकी दरगाह शरीफमे मुसलमानोके उर्सके मेलेका जिक्र किया जिसे वे स्वय आज सवेरे देखने गए थे। उन्होने कहा :)

किसीको वहा आने-जानेमे झिझक नही थी। मैने जान-बूझकर मुसलमानोसे पूछा कि हमेशा जितने आते थे उतने तो नही आ सके होगे, तो उन्होने कहा कि कुछ डर तो रहा होगा ही। हमारेमे ऐसे लोग भी है न, कि जो डर-सा बता देते है। वे कहते है कि इलाहाबादमे भी कुछ हो गया है, वही यहा हुआ तो हिंदू क्या करेगे। इन्सान इन्सानसे डरे, यह तो हमारे लिए शर्मकी बात है। लेकिन कम-से-कम इतना तो मैने पाया कि जितनी तादाद मुसलमानोकी थी उतनी ही तादाद हिंदुओकी थी और सिख भी काफी थे। पीछे एक दु खद बात भी मैने देखी। वह दरगाह तो बादशाही जमानेकी है, कोई आजकी थोड़े ही है। बहुत पुराने जमानेकी है। अजमेरकी दरगाह शरीफसे दूसरे नबरपर है, तो जो मुख्य वस्तु है वह तो वहा तक्काशीका काम ही था और बडा खूबसूरत था। वह सब तो

नही, लेकिन काफी ढहा दिया है और जो नक्काशीकी जालिया थी वे भी काफी तोड डाली। मुझको तो यह देखकर बहुत दु ख हुआ। मैं तो उसे वहशियाना चीज ही कह सकता हू। क्या हम इतने गिर गए है कि एक जगहपर किसी औलियाकी कब्र बनाई गई है और कब्र भी बहुत आलीशान, हजारो रुपया उसपर खर्च किया है—उसको हम इस तरह नुक्सान पहुचाए, माना कि इससे भी बदतर पाकिस्तानमे हुआ है। यहा एक गुना हुआ और वहा दस गुना हुआ, इसका हिसाब मै नही कर रहा। मेरे नजदीक तो चाहे थोडा गुनाह करो या ज्यादा, इसकी कोई तुलना मै नही करता। वह शर्मनाक बात है। अगर सारी दुनिया शर्मनाक बात करती है तो क्या हम भी करे? नही करना चाहिए, ऐसा आप भी मानेगे।

मुझको पता चला कि दरगाहमे हिंदू और मुसलमान दोनो काफी तादादमे आते है और मिन्नत भी करते है। उसका बडा दर्जा वे रखते है और जो औलिया हो गए है, यहा या अजमेर शरीफमे, उनके दिलमे भी हिंदू, मुसलमानका कोई भेदभाव नही था। यह तो एक ऐतिहासिक बात थी और सच तो है ही। झूठ बतानेमे तो उनका कोई फायदा नही होता। ऐसे जो औलिया हो गए उनका आदर होना ही चाहिए। पाकिस्तानमे क्या होता है, उस तरफ हम न देखे।

आज ही मैंने अखबारोमे देखा है कि पाकिस्तानमे एक जगह १३० हिंदू और सिख कत्ल हो गए है। और पीछे वहां लूटपाट भी हुई। किसने उनको कत्ल किया? सरहदी सूबेके ऊपर जो छोटी-छोटी कौमें मुसलमानोकी रही है, उन्होने बस उनपर हमला किया और उन्हे मार डाला। कोई गुनाह उन्होंने किया था ऐसा कोई नही कहता। पाकिस्तानकी हकूमतने जो कुछ लिखा है उसमे यह भी है कि हकूमतने कई हमलावरोको मार डाला। मार डाला या नही मार डाला, लेकिन जब वे कहते है तो हमे मान ही लेना चाहिए। इसपर हम गुस्सा करे और हम भी यहा मारना शुरू कर दे तो वह एक वहशियाना चीज होगी। आज तो आप भाई-भाई होकर मिलते है, लेकिन दिलमें अगर गदगी रखते है और वैर या द्वेष करते है तो फिर आपने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि हम दिलमें भी ऐसा नही रखेंगे, उसे आप झुठला देते है। पीछे हम सबका खाना खराब होनेवाला

है। यह वहां सबने महसूस किया। किसीसे मैंने पूछा तो नहीं, लेकिन आंखोंसे मैं समझ गया। पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ, उसका हिसाब लेना तो हमारी हकूमतका काम है, वह जाने। हमारा काम तो यही है कि एक दूसरेका दिल साफ करनेकी जो कसम हमने खाई है, उसे कायम रखें और वही चीज हम करें।

अभी अजमेरसे राजकुमारी बहन चली गई थीं। उन्होंने वहांकी एक बड़ी खतरनाक और हमारे लिए तो शर्मकी बात सुनाई। वहां जो हरिजन रहते हैं, उनसे वहांवाले काम लेते हैं और वे करते भी हैं। लेकिन जिस जगहमें वे रहते हैं वह बहुत गंदी और मैली है। वहां तो हमारी ही हकूमत है और अच्छी खासी हकूमत है। जो हिंदू और सिख वहां अमलदार हैं, वे इसी हकूमतके मातहत काम करते हैं। क्या उन्हें ख्याल नहीं आता कि ऐसा शर्मका काम हम कैसे करते हैं? वहां सुफेद पोशाक पहननेवाले बहुत हिंदू हैं। पैसा खासा कमाते हैं और खुश हालतमें रहते हैं। वे क्यों नहीं वहां एक दिनके लिए भी हरिजनोंकी बस्तीमें जाकर रहें? वे अगर जाएं तो कै[1] कर लेंगे और कोई तो शायद उसमेंसे मर भी जाएं। ऐसी जगह इन्सानोंको रखना—क्योंकि उनका यह गुनाह है कि वे हरिजन पैदा हुए हैं—बहुत बुरी बात है। यहां दिल्लीमें भी मैं हरिजनोंकी बस्तीमें गया हूं। वह भी खराब तो बहुत है, लेकिन अजमेर तो इससे भी बदतर है। यह तो बड़ी शर्मनाक बात है। क्या ऐसी शर्मनाक बातें ही हम लोग करते रहेंगे? हमने आजादी तो पाई, लेकिन इस आजादीकी कोई कीमत नहीं, जबतक हम इस तरहका काम भी नहीं बंद कर सकते। यह तो एक दिनमें हो सकता है। क्या हम इन हरिजनोंको खुली जगहमें नहीं रख सकते? उनको मैला उठानेका काम करना है, वह तो करें, लेकिन मैलेमें ही पड़े रहें, ऐसा तो नहीं हो सकता। हमारी तो आज अक्ल चली गई है, हमारा हृदय नहीं रहा है और ईश्वरको हम भूल गए हैं। इसीलिए तो गुनाहके काम हम करते जाते हैं। और पीछे हम दूसरोंका ऐब निकालें, दूसरोंको दोष दें और खुद निर्दोष बनें, यह बड़ी खतरनाक बात है।

---

[1] उल्टी।

अतमे एक और बात मै कहना चाहता हू और वह है मीरपुरके बारेमें। एक दफा तो थोडा-सा मैने कह भी दिया था। मीरपुर काश्मीरमे है। अब वह हमलावरोके हाथमे चला गया है। वहा हमारी काफी बहने थी। उनको वे उठा ले गए है। उनमें बुड्ढी भी है और नौजवान भी। वे उनके कब्जेमे पडी है और उनको वे बेआबरू भी कर लेते है, इसमे मेरे दिलमे कोई शक नही है। खाना भी उनको बुरा दिया जाता है। चद बहने तो पाकिस्तानके इलाकेमें है। गुजरात[1] जिलेमे झेलमतक तो शायद पहुची होंगी ही।

मै तो कहूगा कि जो हमलावर हमला कर रहे है, उसमें कुछ भी तो मर्यादा या कुछ हद तो होनी ही चाहिए। मै इन हमलावरोसे कहता हू कि आप इस्लामको बिगाडनेके लिए यह काम कर रहे है और कहते ये है कि आजाद काश्मीरके लिए करते है।

कोई खानेके लिए लूटपाट करे वह मै समझ सकता हू, लेकिन जो छोटी लडकियां है, उनको बेइज्जत करना, उनको खाने और पहननेको न देना, वह भी क्या आपको कुरान शरीफने सिखाया है? और जो पीछे पाकिस्तानमे लडकियोको उठाकर चले गए है, उनके बारेमे मै पाकिस्तान हकूमतसे मिन्नत करूगा कि इस तरहसे जो भी कोई लडकिया है, उनको वापस करो और उन्हे अपने घरोपर जाने दो।

बेचारे मीरपुरके लोग मेरे पास आए है। काफी तगडे है और शर्मिदा होते है। मुझको वे सुनाते भी है कि क्या वजह है कि हमारी इतनी बडी भारी हकूमत पडी है, वह इतना काम भी नही कर सकती। मैने समझानेकी कोशिश तो की। जवाहरलालजी खुद कोशिश कर रहे है और बहुत दु खी है। लेकिन उनके दु खी होनेसे और उनके कोशिश करनेसे भी क्या है! जो लोग लुट गए है, बरबाद हो गए है और जिन्होने अपने रिश्तेदारोंको गवा दिया है, उनको कैसे सतोष दिलाया जाय? आज जो आदमी आया उसके पद्रह आदमी वहा कत्ल हो गए। उसने कहा कि अभी जो वहा बाकी पड़े है उनका क्या हाल होनेवाला है? मैने सोचा कि

---

[1] पजाबमें 'गुजराना' नामका एक शहर है।

दुनियाके नामसे और ईश्वरके नामसे वे जो हमलावर पडे है, उनको और पीछे पाकिस्तानको भी मैं यह कहू कि आपको बगैर मागे हुए और शोहरत-के साथ उन बहनोको वापिस कर देना चाहिए। यह उनका धर्म है। मैं इस्लामको काफी जानता हू और काफी पढा भी है। वह कभी नही सिखाता कि औरतोको उठा ले जाओ और उनको इस तरहसे रखो। वह धर्म नही, अधर्म है। वह शैतानकी पूजा है, ईश्वरकी पूजा नही।

: २२२ :

२८ जनवरी १९४८

(आरभमें गाधीजीने बहावलपुरसे आए हुए कुछ लोगोकी शिकायतका जिक्र किया कि उन्हे उनसे मिलनेका समय नही दिया गया। गाधीजीने उनके लिए कुछ समय निकालनेका वचन दिया और उन्हें विश्वास दिलाते हुए कहा) उनके लिए जो भी किया जा सकता है वह हो रहा है। डा० सुशीला नायर और श्री लेसली क्रास बहावलपुर चले गए है और नवाब साहबने उनकी पूरी सहायता करनेके लिए कहा है। भगवानकी कृपासे यूनियनकी राजधानी दिल्लीमें तीनो जातियोमें फिरसे शाति कायम हो गई है। इससे सारे हिंदुस्तानमे हालत जरूर सुधरेगी।

आप जानते है कि दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोग अपने हकोके लिए लड रहे है। यहा तो कोई ऐसे हक छीनते नही है कि लोग कही जमीन न रख सके या कही भी रहना चाहते है, वहा न रह सके। हरिजनोका तो हमने जरूर ऐसा हाल कर दिया है, बाकी हिंदुस्तानमे ऐसा कुछ है ही नही। लेकिन दक्षिण अफ्रीकामें तो ऐसा है, इसका मैं गवाह हू। इसलिए वे वहा हिंदुस्तानका मान रखनेके कारण और हिंदुस्तानके हकके लिए लड रहे है। बहुत तरीकोंसे वे लड सकते है, लेकिन वे तो सत्याग्रही होनेका दावा करते है। इसलिए सत्याग्रहकी लडाई लड रहे है। उनके तार भी आ जाते है। वे बिना परवानेके कही जा भी नही सकते—जैसे नेटाल, ट्रासवाल, हिल स्टेट, केप कोलोनी वगैरा, ऐसा सिलसिला

वहा रहा है। दक्षिण अफ्रीका एक खड जैसा है, कोई छोटा-मोटा मुल्क नही है। वहुत वडा है। नेटालसे अगर परवाना मिले तो वे ट्रासवाल जाए, नही तो नही। तो उन सबने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है, तव क्यों हमारे इधर-उधर आनेमे किसी तरहकी रुकावट हो ? वहुतसे तो वहा चले भी गए और मुझको यह तो कहना ही पडेगा कि वहाकी हकूमतने इस वक्त तो कुछ शराफत वताई है। उनको अभीतक पकडा नही। ट्रासवालका जो पहला शहर आता है फाकसेस, वहा वे चले गए है। पीछे कही उनको पकड़ सकते है, लेकिन अभीतक पकडा नही है। हकूमतके सिपाही तो वहा मौजूद थे, लेकिन वे सब देखते रहे और उनको कुछ नही कहा। वहा तो उन्हे मोटर भी खड़ी मिली और उसमे बैठकर वे आगे चले गए और वहापर उनका जल्सा हुआ, जिसमे उनका स्वागत-सत्कार किया गया। वह सब हुआ। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो दे दू। यह एक वडी वहादुरीका काम है। वहां हिंदुस्तानी छोटी तादादमे है, लेकिन छोटी तादादमे रहते हुए भी अगर सब हिंदी सत्याग्रही वन जाए तो उनकी जय ही है। कोई रुकावट उनके आगे नही ठहर सकती। लेकिन ऐसा तो नही वना है। हर किस्मके लोग वहा रहते है जैसे यहा भी रहते है। वहा थोडे हिंदू भी हैं और मुसलमान भी हैं। वे सब मिल-जुलकर यह काम करते है। वे जानते हैं कि इसमे कोई गमानेकी वात नही है। और अकेले आदमियोसे तो यह लडाई लडी भी नहीं जाती। इसलिए वे जोहान्सवर्गमे पहुच तो गए हैं, लेकिन आखिरतक तो अलग नही रह सकते, ऐसा मेरा खयाल है। उनको चलते ही जाना है, आखिर तक भी जाना है जवतक कि पकडे न जाय। पकड़नेका वहाकी हकूमतको हक है, क्योंकि सत्याग्रहमे यह चीज तो पडी है कि जब कानून भग किया है तो उनको पकडें और जेलके भीतर जाकर भी वे कानूनकी पावदी करते है। मैं तो इतना ही कहूगा कि हमारी तरफसे धन्यवाद तो उनको मिलना ही चाहिए और वह है ही; क्योंकि मैं जानता हू कि इसमे कोई दूसरी आवाज निकल ही नहीं सकती। वहांकी हकूमतसे भी मै कहता हू कि जो लोग ऐसे लडते है और इतनी शराफतसे लडते है उनको हलाक क्या करना है ! उनकी चीजको समझ ले और फिर आपसमे समझौता क्यो न कर ले ? ऐसा

क्यों हो कि जिसकी सफेद चमडी है वह काली चमडीवालेके साथ कुछ वहस नही कर सकता ? या हिन्दुस्तानियोको जो सतोप देना है या इन्साफ करना है तो उसके लिए उनको लडना क्यो पडे ? अगर हिंदुस्तानी भी उसी जगहमे रहें तो उन्हे (गोरोको) कौन-सा कष्ट हो सकता है ? उन्हे कोई कष्ट नही होना चाहिए। दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको उनके साथ सलाह-मशवरा करके सलूकसे रहना चाहिए और उनको सतोप दिलाना चाहिए। आज हम भी आजाद है और वे भी आजाद है और एक ही हकूमतमें हिस्सेदारकी हैसियतमे रहते है। अर्थात् दक्षिण अफ्रीका भी एक डोमीनियन[1] है, इडियन यूनियन भी डोमीनियन है और पाकिस्तान भी डोमीनियन है। तव सव भाई-भाई जैसे वनकर रहे, यह सव उनके गर्भमे पडा है। इसके विपरीत वे आपस-आपसमे लडें और हिंदुस्तानको अपना दुश्मन माने—हिंदुस्तानियोको जव वहा शहरी हक भी न मिले तो फिर वे दुश्मन नही है तो और क्या हुए ? तो यह समझमे न आ सके, ऐसी चीज है। क्यो ऐसा माना जाय कि जो काली चमडीवाले है वे निकम्मे है या वे जो उद्यम कर सकते हैं और थोडे पैसेमें रह सकते है, तो क्या यह कोई गुनाह है ? लेकिन वह गुनाह वन गया है। इसलिए इस सभाकी मार्फत मै दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको कहता हू कि वह सही रास्तेपर चले। मै भी वहा २० वर्षतक रहा हू। इसलिए मेरा भी वह मुल्क वन गया है, ऐसा मैं कह सकता हू। यह सव कहना तो मुझको कल ही चाहिए था, लेकिन कह नही पाया।

मैसूरके मुसलमानोने कुछ दिन पहले एक पत्र भेजा था कि तुम्हारे उपवासका वहाँ कोई असर नही पडा और मुसलमानोको हलाक किया जा रहा है। इसके वारेमे मैंने कुछ कहा भी था। उसके उत्तरमें मैसूरके गृह-मत्रीकी ओरसे एक तार मिला जिसमे पहले तारका खडन किया गया और यह वताया गया है कि वहा मुसलमानोके साथ इन्साफ करनेकी पूरी कोशिश की जा रही है। जैसे मै सवसे कहता हू वैसे मैं मैसूरके उन मुसलमान भाइयोसे कहूगा कि वे किसी वातमे भी अतिशयोक्ति न करें।

---

[1] उपनिवेश।

ऐसा कहनेमे मेरे हाथ-पैर बध जाते है और मै कुछ काम नही कर सकता। मै पहले भी कह चुका हू और फिर मुसलमान भाइयोसे कहता हू कि वे किसी चीजको ज्यादा बढाकर न बताए। अगर कर सकते है तो कम करें। यही रास्ता है हिंदू, मुसलमान और सिखोके मिल-जुलकर तथा भाई-भाई बनकर रहनेका। मै तो इतना बूढा हो गया हू, तो भी सारी दुनियामे दूसरा कोई रास्ता मैने नही पाया।

हमारे लोग इतने भोले है कि डाकमे ही पैसा भेज देते है। मुझे अपने बापके समयसे तजुर्बा है। उनके पास कुछ जेवर था। एक छोटा-सा मोती था। लेकिन था कीमती। उसे उन्होने डाकसे भेज दिया। तबसे मै जानता हू कि ऐसा करना नही चाहिए। उसमें कोई चोरी तो नही थी, लेकिन खतरा तो लेना पडता ही है। कोई डाकमे देख ले और खोल ले तो फिर मोती कोई छुपा थोडे ही रह सकता है। और पैसे तो फिर भी देने ही पडे, क्योकि उसकी पहुचका तार मगवाया। तो मेरे पिताको इस चीजका दु ख हुआ। लेकिन आज भी मेरे पिताके जैसे भोले आदमी है। समझ लेते है कि पैसेको भेजना है, तो कौन बीचमे उसको छुएगा? आजतक तो खैर ऐसे ही पैसे आते रहे। एक भाईने तो एक हजारसे ऊपरके नोट बद करके भेज दिए। उसकी रजिस्टरी भी नही कराई और न बीमा। जो लिफाफेपर मामूली टिकट लगते है वे लगाकर भेज दिया। आजकल तो सब लोग बहुत बिगड़ गए है, पैसे खा जाते हैं और रिश्वत भी लेते है। तब यह तो अच्छी बात है और हमारे पोस्ट-आफिसके लिए यह कोई छोटी बात नही है कि इस तरहसे इतने सुरक्षित पैसे भी आ जाते है। उसे वे देखना भी नही चाहते कि उसमें क्या भेजा है। ऐसे जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते हैं तो दूसरोको भी इसी तरहसे भेज देते होगे। लेकिन जो लोग पैसा भेजते है वे चाहे इतना पैसा कम करके भेजें, लेकिन तो भी इस तरहसे खतरेमें नही पडना चाहिए, क्योकि कोई बदमाश भी तो रहते हैं। डाकको खोल लें तब मेरे और जिन हरिजनोके लिए पैसा भेजा है उनके क्या हाल होनेवाले है और जो दान देनेवाले है उनका क्या हाल होगा? लेकिन डाकखानेमे जो आदमी काम करते है उनको तो मै मुबारकबाद देता हू कि इस

तरहसे काम करते है कि कोई घूस नही लेते। बाकी जो सब महकमे हैं वे भी सब ऐसा ही करे कि जो लोगोका पैसा हो उसकी हिफाजत करे, किसीसे रिश्वतका पैसा न लें, तो हम बहुत आगे बढ जाते हैं। ऐसा लालच किसीको होना ही नही चाहिए। इसलिए मै इन दानियोंसे कहूगा कि आप मनिआर्डर भेज दें। उसमे कितना पैसा लगता है? ऐसा भी न करें तो रजिस्टरी करा दे। इसमे कुछ थोडा-सा पैसा ज्यादा भी लगता है तो वह खैरियतसे तो पहुच जाता है। ऐसा आप न करें कि मामूली डाकसे हजारो रुपयेके नोट भेज दिए।

: २२३ :

२६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरे सामने कहनेको चीज तो काफी पडी है, उनमेसे जो आजके लिए चुननी चाहिए, वे चुन ली है। छ चीजे है। पद्रह मिनटमे जितना कह सकूगा, कहूगा।

एक बात तो देख रहा हू कि थोडी देर हो गई है—यह होनी नही चाहिए थी। सुशीला बहन बहावलपुर चली गई है। बहावलपुरमें दु.खी आदमी है उनको देखनेके लिए चली गई है—दूसरा अधिकार तो कोई है नही और न हो सकता था। फ्रेंड्स सर्विसके लेसली क्रॉसके साथ चली गई है। फ्रेंड्स यूनिटमे से किसीको भेजनेका मैंने इरादा किया था, ताकि वह वहा लोगोको देखें, मिले और मुझको वहाके हाल बता दे। उस वक्त सुशीला बहनके जानेकी बात नही थी, लेकिन जब सुशीला बहनने सुन लिया तो उसने मुझसे कहा कि इजाजत दे दो तो मैं क्रास साहबके साथ चली जाऊ। वह जब नोआखालीमें काम करती थी तबसे वह उनको जानती थी। वह आखिर,कुशल डाक्टर है और पजाबके गुजरातकी है, उसने भी काफी गवाया है, क्योंकि उसकी तो वहा काफी जायदाद है, फिर भी दिलमे कोई जहर पैदा नही हुआ है। तो उसने बताया कि मैं वहा

क्यों जाना चाहती हूं, क्योकि मै पजाबी बोली जानती हूं, हिंदुस्तानी जानती हू, उर्दू और अंग्रेजी भी जानती हू तो वहां मै क्रास साहबको मदद दे सकूगी। तो मै यह सुनकर खुश हो गया। वहा खतरा तो है; लेकिन उसने कहा कि मुझको क्या खतरा है, ऐसा डरती तो नोआखाली क्यो जाती? पजाबमे बहुत लोग मर गए है, बिल्कुल मटियामेट हो गए है, लेकिन मेरा तो ऐसा नही है, खाना-पीना सब मिल जाता है, ईश्वर सब करता है। अगर आप भेज दे और क्रास साहब मेरेको ले जाय तो मै वहाके लोगोंको देख लूगी। तो मैने क्रास साहबसे पूछा कि क्या आपके साथ सुशीला बहनको भेजू? तो वे खुश हो गए और कहा कि यह तो बडी अच्छी बात है। मै उनके मार-फत दूसरोसे अच्छी तरह बातचीत कर सकूगा। मित्रवर्गमे हिंदुस्तानी जाननेवाला कोई रहे तो वह बडी भारी चीज हो जाती है। इससे बेहतर क्या हो सकता है? वे रेडक्रासके है। रेड क्रासके माने यह है कि लडाईमे जो मरीज हो जाते है उनको दवा देनेका काम करना। अब तो दूसरा तीसरा भी काम करते है। तो डाक्टर सुशीला क्रास साहबके साथ गई हैं या डाक्टर सुशीलाके साथ क्रास साहब गए है यह पेचीदा प्रश्न हो जाता है। लेकिन कोई पेचीदा है नही, क्योकि दोनों एक दूसरेके दोस्त है और दोनों एक दूसरेको चाहते है, मोहब्बत करते है। वे सेवा-भावसे गए है, पैसा कमाना तो है नही। वे जो देखेंगे मुझे बताएगे और सुशीला बहन भी बताएगी। मै नही चाहता कि कोई ऐसा गुमान रखे कि वह तो डाक्टर है और क्रास साहब दूसरे है। कौन ऊचा है कौन नीचा है, ऐसा कोई भेदभाव न करे; लेकिन क्रास साहब, उनके साथ औरत है तो औरतको आगे कर देते है और अपनेको पीछे रखते है। आखिर वे उनके दोस्त है। मै एक बात और कह देना चाहता हू कि नवाब साहब तो मुझको लिखते रहते है। मुझको कई लोग झूठ बात भी लिखते है तो उसे माननेका मेरा क्या अधिकार है। मैने सोचा कि मुझको क्या करना चाहिए। तो बहा-वलपुरके जो आए है उनको बता दू कि वे वहासे आएगे तो मुझको सब बात बता देंगे।

अभी बन्नूके भाई लोग मेरे पास आ गए थे—शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो है, लेकिन ऐसे नही है कि चल नही सकते थे।

-हा, किसीकी अगुलीमे घाव लगे थे, कही कुछ था, कही कुछ था, ऐसे थे। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना है बृजकिशनजीसे कह दे, लेकिन इतना समझ ले कि मैं उन्हे भूला नही हू। वे सब भले आदमी थे। गुस्सेसे भरे होना चाहिए था, लेकिन फिर भी वे मेरी बात मान गए। एक भाई थे, वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैंने पूछा नही। उसने कहा कि तुमने बहुत खराबी तो कर ली है, क्या और करते जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बडे है, महात्मा है तो क्या, हमारा काम तो बिगाडते ही हो। तुम हमको छोड़ दो, भूल जाओ, भागो। मैंने पूछा, कहा जाऊ? उन्होने कहा, तुम हिमालय जाओ। तो मैंने डाटा। वे मेरे-जितने बुजुर्ग नही है—वैसे बुजुर्ग है, तगडे है, मेरे-जैसे पाच-सात आदमीको चट कर सकते है। मैं तो महात्मा रहा, घबराहटमें पड जाऊ तो मेरा क्या हाल होगा। तो मैंने हँसकर कहा कि क्या मै आपके कहनेसे जाऊ, किसकी बात सुनू? क्योंकि कोई कहता है कि यही रहो, कोई तारीफ करता है, कोई डाटता है, कोई गाली देता है। तो मैं क्या करू? ईश्वर जो हुक्म करता है वही मैं करता हू। आप कह सकते है कि आप ईश्वरको नही मानते हैं तो इतना तो करे कि मुझे अपने दिलके अनुसार करने दे। आप कह सकते हैं कि ईश्वर तो हम है। मैने कहा तो परमेश्वर कहा जायगा? ईश्वर तो एक है। हा, यह ठीक है कि पच परमेश्वर है, लेकिन यह पचका सवाल नही है। दु खीका बेली[१] परमेश्वर है, लेकिन दु खी खुद परमात्मा नही। जब मैं दावा करता हू कि जो हरएक स्त्री है, मेरी सगी बहन है, लडकी है तो उसका दु ख मेरा दु ख है। आप ऐसा क्यो मानते हैं कि मैं दुखको नही जानता, आपके दु खोंमे मैं हिस्सा नही लेता, मै हिंदुओ और सिखोका दुश्मन हू और मुसलमानोका दोस्त हू। उसने साफ-साफ कह दिया। कोई गाली देकर लिखता है, कोई विवेकसे लिखता है कि हमको छोड दो, चाहे हम दोजखमे जाय तो क्या? तुमको क्या पड़ी है, तुम भागो? मैं किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हू? किसीके कहनेसे मैं खिदमतगार नही बना हू, किसीके कहनेसे मै मिट नही सकता हू, ईश्वरके चाहनेसे

---

[१] (गुज०) मुरब्बी, सहायता करनेवाला।

मैं जो हूं बना हूं। ईश्वरको जो करना है सो करेगा। ईश्वर चाहे तो मुझको मार सकता है। मैं समझता हू कि मै ईश्वरकी बात मानता हूं। एक डांटता है, दूसरे लोग मेरी तारीफ करते हैं तो मैं क्या करू। मैं हिमालय क्यो नही जाता? वहां रहना तो मुझको पसद पडेगा। ऐसा नही है कि मुझको वहा खाने-पीने-ओढ़नेको नही मिलेगा—वहां जाकर शाति मिलेगी, लेकिन मैं अशातिमेंसे शाति चाहता हू, नही तो उस अशांतिमें मर जाना चाहता हू। मेरा हिमालय यही है। आप सब हिमालय चले तो मुझको भी आप लेते चले।

मेरे पास शिकायते आती है—सही शिकायतें है—कि यहां शरणार्थी पडे है, उनको खाना देते है, पीना देते है, पहननेको देते है, जो हो सकता है सब करते हैं; लेकिन वे मेहनत नही करना चाहते है, काम नही करना चाहते है। जो उनकी खिदमत करते है उन लोगोने लंबा-चौडा लिखकर दिया है, उसमेंसे मै इतना ही कह देता हू। मैंने तो कह दिया है कि अगर दु:ख मिटाना चाहते है, दु खमेंसे सुख निकालना चाहते है, दु खमें भी हिंदुस्तानकी सेवा करना चाहते है, साथमे अपनी भी सेवा हो जाती है, तो दु.खियोंको काम तो करना ही चाहिए। दु.खीको ऐसा हक नही है कि वह काम न करे और मौज-शौक करे। गीतामें तो कहा है, 'यज्ञ करो और खाओ'—यज्ञ करो और शेष रह जाता है उसको खाओ। यह मेरे लिए है और आपके लिए नही है ऐसा नही है—सबके लिए है। जो दु:खी है उनके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नही, बैठा रहे और खाय तो ऐसा हो नही सकता। करोडपति भी काम न करे और खावे, तो वह निकम्मा है, पृथ्वीपर भार है। जिस आदमीके घर पैसा भी है वह भी मेहनत करके खाए तब बनता है। हां कोई लाचारी है—पैर नही चल सकता है या अधा है, या वृद्ध हो गया है तो बात दूसरी है; लेकिन जो तगड़ा है, वह क्यो न काम करे? जो काम कर सकता है वह काम करे। शिविरमें जो तगड़े पड़े हैं वे पाखाना भी उठाए। चर्खा चलाएं। जो काम बन सकता है करें। जो काम नही जानते है वे काम लडकोंको सिखाए, इस तरहसे काम लें। लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिजमे जैसे सिखाते है वैसे सिखाए। मै, मेरा बाबा तो केम्ब्रिजमे सीखा था तो लड़कोंको भी वहा भेजें, तो यह

कैसे हो सकता है ? मैं तो इतना ही कहूंगा कि जितने शरणार्थी है वे काम करके खाए। उन्हे काम करना ही चाहिए।

आज एक सज्जन आए थे। उनका नाम तो मैं भूल गया। उन्होंने किसानोंकी बात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बडा वजीर किसान होगा, सब कुछ किसान होगा, क्योंकि यहांका राजा किसान है। मुझे बचपनसे सिखाया था—एक कविता है, "हे किसान, तू बादशाह है।" किसान जमीनसे पैदा न करे तो हम क्या खाएगे ? हिंदुस्तानका सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाकर बैठे है। आज किसान क्या करें ? एम० ए० बनें ? बी० ए० बनें ?—ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नही चलाएगा। जो आदमी अपनी जमीनमेंसे पैदा करता है और खाता है, सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिंदुस्तानकी शकल बदल जाएगी। आज जो सड़ा पड़ा है, वह नही रहेगा।

मद्रासमे खुराककी तगी है। मद्रास सरकारकी तरफसे दूत यह कहनेके लिए श्रीजयरामदासके पास आए थे कि वे उस सूबेके लिए अन्न देनेका बदोबस्त करें। मुझे मद्रासवालोके इस रुखसे दुःख होता है। मैं मद्रासके लोगोको यह समझाना चाहता हू कि वे अपने ही सूबेमें मूगफली नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थोंके रूपमे काफी खुराक पा सकते है। उनके यहा मछली भी काफी है, जिन्हे उनमेसे ज्यादातर लोग खाते है। तब उन्हे भीख मागनेके लिए बाहर निकलनेकी क्या जरूरत है ? उनका चावलका आग्रह रखना—वह भी पालिश किया हुआ चावल, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते है—या चावल न मिलनेपर मजबूरीसे गेहू मजूर करना ठीक नही है। चावलके आटेमें वे मूगफली या नारियलका आटा मिला सकते है और इस तरह अकालके भेडियेको आनेसे रोक सकते है। उन्हे जरूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धाकी। मद्रासियोको मैं अच्छी तरह-से जानता हू और दक्षिण अफ्रीकामे उस प्रातके सभी भाषावाले हिस्सोके लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह-कूचके वक्त उन्हे रोजानाके राशनमें सिर्फ डेढ पौंड रोटी और एक औंस शक्कर दी जाती थी। मगर जहा कही उन्होंने रातको डेरा डाला, वहा जगलकी घासमेंसे खाने लायक चीजें चुनकर

और मजेसे गाते हुए उन्हे पकाकर उन्होने मुझे अचरजमे डाल दिया। ऐसे सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते है ? यह सच है कि हम सब मजदूर थे। और, ईमानदारीसे काम करनेमें ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक जरूरतोकी पूर्ति भरी है।

: २२४ :

पुण्यदिवस, ३० जनवरी १९४८

आज सायकाल ५ बजकर १० मिनटपर प्रार्थनाके लिए आते समय प्रार्थना-स्थलपर एक व्यक्तिने पिस्तौलसे गाधीजीके तीन गोलिया मारी और वही उनका स्वर्गवास हो गया। गिरनेसे पहले उन्होंने नमस्कार करनेके लिए हाथ उठाये और उनके मुहसे निकला :

"हे राम"

निर्देशिका